॥ प्रस्तावना ॥

आ "समरादित्य केवलीनो" रास बुद्धिनो विकास करनार सुबोधक ग्रंथ छे तेमा वैराग्य भावनाने प्रधानता आपवामा आवी छे बुद्धिना सर्व अंगुठे वैराग्य उपर महान् प्रकाश पामी शके एवी चमत्कारी योजना-ओनोज आ रासमां समह करेल छे मनुष्यनी जींदगीरूप नौका अनेक संसाररूपी समुद्रना तोफानोमाथी जीपलावी क्यां पहोंचे छे अने कर्मरूपी पवन ते नौकाने क्या लइ जाय छे तेनां असरकारक दृष्टांतोनो समह आ ग्रंथमा दाखल करेल छे हृदयनी वृत्तिओ बहु प्रबल अने वेगवाली छे, तेने न्यायमार्गे दोरवाना अने तेनो विलयकारक संयम करवानां अनेक उदाहरणो आ ग्रंथमां आपवामा आव्या छे.

कर्मोने वश थयेआ आत्माओना हृदय उपर केवा कठोर प्रहार पडे छे! आटलु छता आत्माओ तेने सहन करी केवी स्थितिमा आवे छे! एवा चमत्कारी चरित्रोथी आ ग्रंथ घणो अलंकृत करेल छे.

आ ग्रंथमा श्री समरादित्य केवली केवा प्रकारना जीवनमाथी केवी जातना उच्च जीवनने प्राप्त थया अने दरमीयान तेना आगलना भवोमा कइ कइ जातना फेरफारो थया तेनु चरित्र एटलुं बधु रसमय बनाववामां आव्युं छे के ते वाचवाथीज वाचकोने खात्री थशे आ रासना नव खंड करवामा आव्या छे अने ते दरेक खडमा महात्मा समरादित्यना एक एक भवनु वर्णन करवामा आवेल छे.

प्रथम खंडमा शरुआतथी बे नायकोना चरित्र आलेखवामा आवेल छे तेमा एकनु नाम गुणसेन छे अने बीजानु नाम अग्निशर्मा छे आ उभय आत्माओ दरेक भवमा सहचारीरूपे चाल्या आवे छे ज्यारे गुण-सेनना आत्मानु चरित्र निर्मल छे तेथी करी उच्च श्रेणीए चढतो जाय छे त्यारे बीजा आत्मानुं चरित्र मलिन अने दूषित छे तेथी नीच श्रेणीए उतरतो जाय छे

बीजा खंडमां गुणसेन अने अग्निशर्माना जीव अनुक्रमे सिंह अने आनद नामे पिता अने पुत्र थाय छे.

त्रीजा खंडमा तेओ बने अनुक्रमे शिखिकुमार पुत्र अने माता थाय छे

चोथा खडमां तेओ धन अने धनश्री नामे पति पत्नी थाय छे
पाचमा खन्मा तेओ जय अने विजय नामे जाइ थाय छे
छठा खन्मा तेओ धरण अने लक्ष्मी नामे पति पत्नी थाय छे
सातमा खन्मा तेओ सेन अने विषेण नामे पितराइ जाइ थाय छे
आठमा खडमा तेओ गुणचद्र अने वाणमतर विद्याधर थाय छे
नवमा खन्मा तेओ बने अनुक्रमे समरादित्य अने गिरिसेन थाय छे

आ रासना नवे खन्मा समरादित्यनो जीव जुदाजुदा मुनिओना स-
ागममा आवे छे दरेक प्रसगना मुनिओना वृत्तात घणा रसिक अने
राग्यमय जावनावाला होवाथी समरादित्य महात्मानो जीव वैराग्यनी
ाच जावनाने प्राप्त थतो जाय छे समरादित्यना जवमा बाल्यवयथीज
ाने वैराग्य आवे छे समरादित्यना पिता तेने ससारनो स्वाद चखाऊवा
ाणो प्रयत्न करे छे, पण ते महात्मा पोतानी वैराग्यमय जावनामा अऊग
ाहे छे विवाहित थयेला महात्मा समरादित्ये पोतानी बे नव वधूओने
वेषय रागमांथी मुक्त करी पोतानी अनुरागिणी बनावी ए प्रसग उत्तम
उपदेशरसथी जरपूर छे

ते पछी महात्मा समरादित्य प्रजासाचार्य गुरुना हाथथी चारित्र
ग्रहण करे छे महात्मा समरादित्यनी प्रशसा साजलीने गिरिसेन ईर्षालु
थाय छे ते महात्मा हवे विहार करता करता अयोध्या नगरीमा आवे छे
त्याथी रेकवाहपुरमा आवीने अशोक वनमा काउस्सग्गध्याने रह्या छे
त्या जवपरपरानो वैरी गिरिसेन आवी चडे छे ते महात्माने जोइने को-
पथी प्रज्वलित थाय छे पछी ते दुष्ट महात्माना शरीर पर लुगडा वींटा
ळीने तेना पर तेल रेडीने अग्नि लगाडे छे ध्यानमा लीन थयेला आ म-
हात्मानु आ समयनु चिंतवन एवु उचा प्रकारनु थतु जाय छे के ते क्षपक-
श्रेणी पर आरूढ थइ पोताना आत्माने निर्मल करी तेने योगमा स्था-
पन करे छे के तरतज तेने "केवलज्ञान" थाय छे अने तेथी करी "आ
महात्मा समरादित्य केवली" कहेवाय छे ते महात्माना महिमाथी वेलधर-
कुमारनु आसन चलायमान थाय छे, तेथी ते अवधिज्ञानथी जोइने

कुसुम वगेरे लइने अनेक देव सहित त्या आवे छे अने महात्माना शरीर उपरथी चींटालेला लुगडां काढी नाखे छे ते जोइने गिरिसेन क्रोध पामे छे आ अवसरे मुनिचद राजा पोतानी राणीउं सहित त्यां आवे छे अने वेलधर देवने पूछवाथी आ सघली हकीकत कहे छे आ वखते केवलज्ञानना महिमा माटे सोहमइन्द्र पण देव सहित आवे छे अने केवलीनी स्तवना करे छे लोको पण आ हकीकत सांभली वदनार्थे त्या आवे छे. गिरिसेनना मनमा अकार्य कर्यानु चितवन थाय छे अने कु-शल पक्षनु बीज रोपाय छे अने ते घर जणी जाय छे त्यारबाद म-हात्मा समरादित्य केवली धर्मदेशना आपे छे त्यारबाद इन्द्र पोताने स्थानके जाय छे पछी मुनिचद राजा समरादित्य केवलीने गिरिसेने करेला उपसर्गनो सबध पूछे छे, तेथी ते गुणसेन अने अग्निशर्माना भवथी मा-डीने सघली हकीकत कहे छे ते सांभलीने राजा, सामत, वेलधर देव वगेरेने सवेग आवी जाय छे वेलधर गिरिसेनने आनु परिणाम शु आवशे ते केवलीने पूछे छे, तेथी केवली कहे छे के ते नारकीमा जशे अने त्या तीव्र वेदना भोगवशे अने त्यांथी अनतो ससार रखडशे ते वखते मुनिचद राजानी राणी नर्मदा नारकीनी वेदनानु वर्णन, सुलस-मजरी देवताना विमानोनु वर्णन, अने बीजी राणी सुलोचना सिद्धना सुखनु वर्णन पूछे छे आ वर्णन अद्भुत अने रसिक वाणीथी कहीने के-वली श्रोताउंना हृदयने आर्द्र बनावी दे छे, त्यारबाद वेलधरे केवलीने सिद्धनु स्वरूप पूछवाथी तेनु वर्णन पण एक उत्तम दृष्टातथी आपे छे

आ बधी हकीकत सांभलीने राजा राणी वगेरे परम आनद पामे छे, अने केवलीनी पासे चारित्र ग्रहण करवा अभिलाषा देखाडे छे अने तेमना शिष्य शीलदेवनी पासे व्रत ग्रहण करे छे

आ समये वेलधर देव केवली महाराजने पूछे छे के जे गिरिसेने आपने उपसर्ग करेल छे ते भव्य छे के अभव्य छे, ते बीज पाम्यो के नथी पाम्यो अने ते पामशे के नहीं तेना उत्तरमा केवली महाराज कहे छे के ते भव्य छे पण हजी बीज पाम्यो नथी असख्य पुद्गलपरावर्त थया पछी ते शार्दूलसेन राजानो अश्व थशे त्यारे बीज (समकित) पामशे त्यार-

पछी असख्याता जव जमीने शख नामे ब्राह्मण थशे अने ते जवमा ते केवलज्ञान पामशे आ हकीकत साजलीने वेलधर पोताने स्थानके जाय छे अने केवली महाराज विचरता विचरता सिद्धगिरि आवे छे त्यां केवली समुद्घात करी लोकामे जाय छे आ प्रमाणे महात्मा समरादित्य केवलीनु चरित्र सपूर्ण थाय छे एकदर आध्यात्मिक रसनो उत्तेजक अने वैराग्य जावनानो दर्शावनार आ महान् ग्रथ आदरपूर्वक वाचवा लायक छे दरेक प्रसगे दर्शावेला विचारो निर्दोष, गहन अने वोधक छे समय समयना चित्रो उत्कृष्ट जावथी जरपूर छे केटलाएक प्रसगोमा स्वाजाविकपणे उपजेला वैराग्यना विचारोनो निर्णय धार्मिक तेमज व्यावहारिक विषयमा ग्रथकारना उत्कृष्ट ज्ञाननी प्रतीति आपे छे आ ग्रथमा वैराग्य दर्शावनारा विषयो प्रसगोपात घणा आवे छे तेउ दया, प्रेम, वैराग्य अने शातिनी उत्तमोत्तम जावनानु दर्शन करावे छे

अज्ञानता के बुद्धिनी अपूर्णता जूलोनु कारण छे जगतमा सद्गुणो हमेशा जय पामे छे, कर्मोना सयोगथी स्वजाव घडाय छे, स्वजाव प्रमाणे कार्यो थया करे छे, दुर्गुणो माणसोने दुर्मार्गे दोरी जाय छे, मन अने शरीरना स्वाजाविक वेगो तृप्ति पाम्या वगर विरमता नथी तेमज प्रेम, जय, काम, क्रोध, लोज, जाव अने अजाव वगेरे अत करणनी स्वाजाविक वृत्तिउनो तेना सम्यग्योगमा उपयोग थाय छे इत्यादि धार्मिक अने नैतिक तत्त्वोनु स्वरूप आ ग्रथमा आवे छे, तेथी आ ग्रथ जैन विद्वान् अज्यासी, वाचनोत्साही अने धार्मिक पुरुष के स्त्रीने सपूर्ण वाचवा योग्य छे

आवा उपयोगी ग्रथोना आविर्जावथी जैनसाहित्य पूर वेगथी वृद्धि पाम्या वगर रहेशे नहीं आ महान् ग्रथना रचनार महानुजाव श्रीपद्मविजय गणिए पोतानी सुवोधक कृतिथी सकल जैन सघने जारे उपकार करेलो छे आवा नि स्वार्थ परोपकारी महात्माना चारित्रजीवनने जेटलो धन्यवाद आपीए तेटलो थोमो छे एवा महात्माउ आ सृष्टि उपर पुन प्रगट थाय एवीज अतरनी प्रार्थना छे

विज्ञप्ति.

सुज्ञ जैन बधुर्ओने जणाववानु के आ समरादित्य केवलीनो रास अगाउ अमारा तरफथी प्रगट करवामा आव्यो हतो तेनी तमाम नकलो घणा वखत पहेलां खपी जवाथी तेमज तेनी मागणी वारवार आववाथी आ बीजी आवृत्ति यथामति सशोधन करीने अमोए बहार पाडी छे

क्षमापना

आ ग्रंथनी अंदर मतिदोषथी काइ पण भूलचुक रही होय अगर सिद्धात विरुद्ध लखायु होय तो ते सर्व वाचनार श्री सघनी समक्ष मिछा दुक्कड हो, अने वाचनारा सज्जनोए ते भूलो सुधारी वाचवी एवी अमारी भलामण छे

मुबई, मांडवी, शाकगली आसो सुदि पूर्णीमा १९७० ता ४ ऑक्टोबर १९१४	श्रावक भीमसिंह माणेकना कार्यप्रवर्तको

जाहेरखबर.

पांडव चरित्र (श्री पाच पांडव तथा नेमीश्वर भगवान् अने श्री कृष्णादिकनु सविस्तर गुजराती भाषातर) आ ग्रथमा श्री नेमीश्वर भगवान्, बलभद्र, वासुदेव जे श्रीकृष्ण, प्रतिविष्णु जे जरासध, पांडव, कौरव, भीष्मपितामह, कर्ण, द्रोणाचार्य अने कृपाचार्यादिक अनेक वीर पुरुषोना चरित्रो आवेला छे तेमज जिनधर्माभिलाषी शुद्ध श्रद्धावान् सम्यग्दृष्टि विवेकी सज्जनोना मनने आनद उत्पन्न करनारी कथाओ वैराग्य, नीति तथा सत्य प्रतिज्ञा प्रमुखनो बोध करे छे आ ग्रथ पहेला गुजराती अक्षरोमा छपायेलो हतो ते खपी जवाथी हमणा शास्त्री अक्षरमा छपाव्यो छे, अने तेनी साथे मन रजन करे तेवा रगीन चित्रो पण नाख्या छे किमत रु० ५-०-०

जाहेरखबर.

वैराग्य कल्पलता पूर्वार्ध (श्री यशोविजयजी उपाध्याय कृत)–आ ग्रंथ एटलो तो रसिक तथा जैनवर्गना श्रावको अने साधु साध्वीओने माटे उपयोगी छे के ते सर्वेने आदिथी ते अंत सुधी वांचवा जलामण करीए छीए

आ ग्रंथनी रचना काव्यरूपे गुंथेली छे अने तेमां जीवने संसारभ्रमणथी केवी केवी विटंबनाओ जोगववी पडे छे तेनो कथाओ द्वाराए आबेहुब चितार आप्यो छे तेम आ ग्रंथ रसिक बनाववा माटे साहित्यनो सार लइ तेमां रसालंकारोने पण घणीज उत्तम रीतथी प्रदर्शित करेला छे आ ग्रंथ जणवाथी काव्योनो बोध थवा साथे जैन दर्शनना तत्त्वोनो घणोज बोध थाय छे एटलुज नहीं, पण आ ग्रंथना अभ्यासथी अमारा स्वधर्मी बंधुओने जवनाटकनु स्वरूप केवु छे तेनो खरेखर ख्याल आय छे वली आ ग्रंथ मुनिराजो आदिकने व्याख्यानमां उपयोगी थइ पडे तेवो छे, माटे दरेक जैन बंधु आ ग्रंथनो लाभ लेशे (पानाआकारे) किंमत रु० ३–०–०

जैन कुमारसंभव महाकाव्य (श्री जयशेखरसूरि कृत)–आ नामनुं अति अद्भुत तथा काव्यचमत्कृतिवालुं अने साहित्यना सारथी भरेलुं रमणिक काव्य अमोए तेना गुजराती अर्थ सहित छपावी प्रसिद्ध कीधु छे

आ ग्रंथना काव्यनी रचना एटली तो मधुर अने विद्वत्ता भरेली छे के ते वांचवाथी दरेक विद्वानना मनने आश्चर्य थया विना रहेतुं नथी आ काव्यमां श्री ऋषभदेव प्रभुनुं भरतकुमारना जन्म पर्यंत वर्णन आपेलुं छे अने तेम करीने आ काव्यनुं नाम "जैन कुमारसंभव" एवुं नाम सफल कर्युं छे वली आज दिन सुधीमां जैन भाइओने तथा मुनिराजो वगेरेने संस्कृत भाषानु व्याकरण भणी अन्यदर्शनीओना जे काव्यो भणवानी जरुर पडती हती, ते अमोए गुजराती अर्थ साथे छपावी प्रसिद्ध करेला आ काव्यग्रंथथी दूर थइ छे वली आ काव्यग्रंथ बीजा काव्यग्रंथो करता कवित्वशक्तिमां चडीआतो होवाथी जैन बंधुओने उपयोगी छे

किंमत रु० १–१२–०

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ अथ ॥

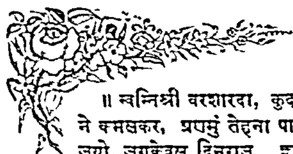
पण्डित श्रीउत्तमविजयशिष्य पण्डितप्रवर श्रीपद्मविजयजी विरचित

॥ श्रीसमरादित्य केवलीनो रास प्रारंभः ॥



॥ तत्र प्रथम खण्डस्य प्रारम्भोऽयं ॥

॥ दोहा ॥



॥ स्वस्तिश्री वरशारदा, कुंद चंद सम काय, कमलमुखी ने कमलकर, प्रणमुं तेहना पाय ॥ १ ॥ जगचूडामणि जग जयो, जगवल्लभ दिनराज, इभगजगति गति राजती, आदि-देव नमुं आज ॥ २ ॥ समन समन ने समय जे, समजो वली समान, समयपदे पद अतिशया, वंदुं श्रीवर्द्धमान ॥ ३ ॥

॥ अत्र व्याख्या—श्रमण भगवान् महावीरे, इहां प्राकृते समयपदे चार अतिशय सूचव्या छे, ते एम के रोगादिक उपद्रव शमावे माटे समन कहीये ॥ इति अपायापगमातिशय ॥ १ ॥ तथा अनुत्तर विमानना देव-ताना संशय टालवाने अर्थे द्रव्यमन प्रवर्त्तावे छे, माटे मन सहित वर्त्ते, ते माटे समन कहीये ॥ इति ज्ञानातिशय ॥ २ ॥ तथा सम्यक् एटले रुडी पेरे, सिद्धांत अविरोधिपणे अर्थपति कहेता थोडे ते समय कहीये ॥ इति वचनातिशय ॥ ३ ॥ तथा "सहमानेन वर्त्तते" माने करी सहित, एटले सुर असुरनी पूजारूप माने वर्त्ते छे, तेहने समान कहीये प्राकृत माटे ह्रस्व थाय ॥ इति पूजातिशय ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ परिसह सहता जे प्रभु सरया पद नम शेष, केवलज्ञान दिवा-कर, नमुं अजितादि जिनेश ॥ ४ ॥ गौतम प्रमुख गणधरा मुनि नमुं

॥ ७ ॥ २ ॥ गुणचंद वाण मंतर ॥ ८ ॥ समराइच्च गिरीसेण पाणोउ ॥ए॥ एकस्सतउ मुक्को, एतो वीअस्स संसारो ॥ ३ ॥ णगराइंखिइपइठ, ॥१॥ जयपुर २ कोस ३ सुसम्मनयर च ४ ॥ कायंदी ५ मायंदी,६ चंपा ७ उ स्साय ८ उयेणी ॥ए ॥ ४ ॥ गुणसेणस्सुववाउ ॥ सोहम्म १ सणकुमार २ वम्नेसु ३ ॥ सूक्का ४ णया ५ रणेसु, ६ गेविया ७ णुत्तरेसु च ॥ ८ ॥ ५ ॥ ध्यरस्सुववाउ, विद्युकुमारेसु होइ नायव्वो ॥ सेसो अणंतरोजण, रयणाइसु अह् क्मसो ॥६॥ सागरमेग पचय, नव पनरसेय तहय अध्यरा ॥वीस तीस तित्तीस, वीअस्स ठिइउणएसु" ॥७॥ श्रीहरिजद्रसूरीश्वरे, चौदशे चउ-च्यालीश, ग्रंथ आलोअणमा ग्रह्या, जगमा वर्होत जगीश ॥२॥ प्रथम भव प्रारंजीउ,क्रोधनिरासने काम, एह गुरु आम्नाय ठे,समतासंग सुगम॥३॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ महाविदेह क्षेत्र सोहामणु ॥ ए देशी ॥

जंबूद्वीप सोहामणो, पश्चीम महाविदेह ॥ लाल रे॥ खितिप्रतिष्ठ नामे जलु , नगर अनोपम जेह ॥ लाल रे ॥ १ ॥ गढ मढ मंदिर मालीआ, मानु सुरेंद्रविमान ॥ लाल रे ॥ जिहा महिला जन मोहती, रूपे रंज समान ॥ लाल रे ॥ ज० ॥ २ ॥ वदने कमल कोइल स्वरे, नयणे कुवलयपत्र ॥ ला० ॥ राजहंसगतिये करी, जीते रमणीय यत्र ॥ ला० ॥ ज० ॥ ३ ॥ जिहा विद्याव्यसनी जना, पापजीरु जस लोज ॥ ला० ॥ धनबुद्धि धर्मे करी, राखे थइ स्थिर थोज ॥ ला० ॥ ज० ॥ ४ ॥ पूर्ण मरुल परगमो, जन मन नयणाणंद ॥ ला० ॥ मयकलंके हीणमो, नर-पति पूरणचंद ॥ ला० ॥ ज० ॥ ५ ॥ कुमुदीनी नामे कामिनी, अंतेउर शिरदार ॥ ला० ॥ मदन धरे रतिवल्लहा, जोगवे जोग उदार ॥ ला० ज०॥ ६ ॥ गुणसेन कुंवर ठे तेहने, गुणगण रयण जंडार ॥ला०॥ क्रीमा प्रिय बालकपणे, व्यंतरसुर परे सार ॥ ला०॥ ज०॥७॥ अल्पारंज परिग्रही, तिहा पुरोहित एक ॥ला०॥ धर्मशास्त्र पाठक वली, यज्ञदत्त सुविवेक ॥ ला० ॥ जं० ॥ ८ ॥ सोमदेवा गर्जे थयो, अग्निशर्मा पुत्त ॥ ला० ॥ महोद्र त्रिकोण मस्तक सही, पिंगल नयण ते वृत्त ॥ ला० ॥ ज० ॥ ए ॥ चीपमु नाक बेसी गयु, विलमातर जस कान ॥ ला० ॥ दंत दंतोशलनी परे, देह ते बीजत्सवान ॥ ला० ॥ ज० ॥ १० ॥ लंबोदर कोट वांकडी, वांका

टूका हाय ॥ ला० ॥ एक पालुं उचुं वली, मानु पापनो साय ॥ ला० ॥ जं० ॥ ११ ॥ ॥ स्यूल कठिन लघु जेहनी, जंघ ने पोहला पाय ॥ ला० ॥ विपम उरू केश कावरा, विपम कटीतट थाय ॥ ला० ॥ जं० ॥ १२ ॥ गुणसेन कुंवर कौतुक थकी, ताल कंसाल मृदंग ॥ ला० ॥ नाटक नित्य करावनो, अग्निशर्मा संग ॥ ला० ॥ जं० ॥ १३ ॥ हसतो हस्त ताली दीये, गर्द्दभे करी आरोप ॥ ला० ॥ बालकवृंदे परवस्यो, उपजावे तस कोप ॥ ला० ॥ जं० ॥ १४ ॥ फाटुं त्रुटुं सूपडुं, छत्र करे शिरठाय ॥ ला० ॥ डिंडिम फूटा ढोल ज्युं, कहे ए जाय महाराय ॥ ला० ॥ जं० ॥ १५ ॥ राजपथे उतावलो, नित्य हींमावे तेह ॥ ला० ॥ इम करतो ते कदर्थना, उपजावे तस देह ॥ ला० ॥ जं० ॥ १६ ॥ इम खमता हवे उपनी, वराग्यभावना चित्त ॥ ला० ॥ चिंतवे एणी परे चित्तमा, पुण्य कशु न पवित्त ॥ ला० ॥ जं० ॥ १७ ॥ तो धिकार बहु जन करे, पर पराभवनु ठाम ॥ ॥ ला० ॥ हांसी करता लोकनु, सहीये सहुए आम ॥ ला० ॥ जं० ॥१८॥ धर्म न कीधो परभवे, तिणे ए पामु विराग ॥ ला० ॥ देखी न करु इणे भवे, तो किम लहु डु खत्याग ॥ ला० ॥ ज ०॥ १९ ॥ तिणे करीये हवे धर्मने, जिम नवि पामु डु ख ॥ ला० ॥ डुर्जन जनथी विडंबना, नवि सहीये बहु सुख ॥ ला० ॥ ज० ॥ २० ॥ एम चिंती वैराग्यथी, मूक्यो नयरीसग ॥ ला० ॥ संक्लेशस्थानक वर्जीये, एम जाणी एकग ॥ ला० ॥ ज० ॥ ॥ २१ ॥ देशअंते सीमा लगे, हींमता थयो एक मास ॥ ला०॥ तिहा तपोवन दीठु हवे, नामशु परितोप जास ॥ ला० ॥ ज० ॥ २२ ॥ चंपक बकुल अशोक तिहा, नाग अने पुन्नाग ॥ ला० ॥ मग मृगपति रमे एकठा, गरुड तथा वली नाग ॥ ला० ॥ ज० ॥ २३ ॥ धूमपमल घृतहोमनो, उपजे ताप सतोप ॥ ला० ॥ गिरि नदी नीझरणा वहे, पाम्यो सुग्घनो पोप ॥ ला० ॥ ज० ॥ २४ ॥ विसामो एणे इहा कर्यो, देखी जागि विशाल ॥ ला० ॥ पद्मविजये बीजी कही, ढाल अति सुरसाल ॥ ला० ॥ ज० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ ६० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ करी विसामो तिहा कणे, खेद थयो जब खीण, उतावलो, तापमशु ते लीण ॥ १ ॥ नयणे लागो नी

एह, नामे ते ध्याने रह्यो, कदलीहर कलु गेह ॥ २ ॥ लेइ रुद्राक्ष माला करे, जपतो बेठो जाप, गाकलु पहेलु वृक्षलु, प्रगट नहीं आलाप ॥ ३ ॥ जटाजूट जोगीसरो, जूति लगावी जाल, कमंमल मूक्यु कने, सोमदृष्टि सजाल ॥ ४ ॥ कमलपत्र उपरे कर्यु, आसन अतिहि उदार, जोग पटे आसन सज्युं, वर्ज्यो शेप व्यापार ॥ ५ ॥ नासाये जोड्या नयन, दृष्टि हरख्यो देखी, रोमांचित थइ हरखशुं, प्रणम्यो धरती पेखी ॥ ६ ॥ उत्तमाग अवनीतले, थापी थयो सनाथ, माने धन्य निज आतमा, पार लह्यो जवपाथ ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ त्रीजी ॥

॥ राग निहागडो ॥ मुज घर आवजो रे नाथ ॥ ए देशी ॥

॥ कर जोडीने कहे एणी परे, प्रजु पार पाम्यो आज ॥ तुम्ह दीठे छु ख सवि विसख्या, मुज नहीं अवरशु काज ॥ १ ॥ गुरुजी विनति मुज एह, मुज करो पावन देह ॥ गुरु० ॥ ए आंकणी ॥ एम सांजली तापस हवे, देखी ते अति बहुमान ॥ स्वागत पूछे इम तेहने, मूकी पोतानु ध्यान ॥ २ ॥ गुरु० ॥ दीये तापस आसन एहने, कहे बेस इणही ठाय ॥ तव बेठो कुशने आसने, कहे किहांथी आयो जाय ॥ ३ ॥ गुरु० ॥ जव कह्यु निज वीतक सवे, तव कहे तापस एम ॥ वत्स पूर्वकृत कर्म करी, सहु क्लेश पामे नेम ॥ ४ ॥ गुरु० ॥ तिणे जूपे पीड्या प्राणीआ, वली दरिद्री छुहव्या जेह ॥ दोनाग कलंके दूपीआ, होय प्राण वियोगीने एह ॥ ५ ॥ गुरु० ॥ इह जवे परजवे सुख करे, ए परम शीतल ठाण ॥ परसंगे छु ख नवि पामीये, लोकथी नहीं अपमान ॥ ६ ॥ गुरु० ॥ छुर्गति नवि जइये वली, तिणे धन्य ठे वनवास ॥ इम कहे बोल्यो तेहवे, स्वामी कह्यु ते ग्वास ॥ ७ ॥ गुरु० ॥ जो होय मुज उपरे कृपा, जो जाणो व्रतने जोग ॥ तो व्रत देइ अनुग्रह करो, तव बोल्या तपसी लोग ॥ ८ ॥ गुरु० ॥ तुम विना बीजो नृप होये, तुजने घणो वैराग ॥ पण मार्ग अमचो समकीने, तुम व्रत लीजे महाजाग ॥ ए ॥ गुरु० ॥ एम कही समकाव्यो जलो, हतो जेह निज आचार ॥ रही केइक दिनने व्रत दीयो, शुज तिथि नक्षत्र वार ॥ १० ॥ गुरु० ॥ कोइ छु खगर्जित वैराग्यथी, दीक्षादिने कहे एम ॥ मास मासने करुं पारणु, मुज महाप्रतिज्ञा प्रेम ॥ ११ ॥ गुरु० ॥

पारणादिने पहेले घरे, शुभ अशुभ जे मले आहार ॥ अथवा मिले नहीं तोहि पण, फिरी जाउं आपणे ठार ॥ १२ ॥ गुरु० ॥ पण जावु नहीं बीजे घरे, सहु सांजलो ए नेम ॥ पालतां प्रतिज्ञा वही गया, बहु लाख पूर्व एम ॥ १३ ॥ गुरु० ॥ इण अवसरे वन ढूकडु, एक वसंतपुर इण नाम ॥ तस लोक गुणरागी थयो, बहु नक्तिवंतो ताम ॥ १४ ॥ गुरु० ॥ अहो महातपस्वी एह छे, आ लोकनी नहीं आश ॥ निज शरीरनो प्रतिबंध नहीं, एहनो सफल जीवितवास ॥ १५ ॥ गुरु०॥ एम बहु प्रशंसा ते करे, हवे पूर्णचंद जे राय ॥ गुणसेनने परणावीउं वली कीधलो महाराय ॥१६॥ गुरु० ॥ तपोवने तापस नृप थयो, राणी सहित शुभ चित्त ॥ गुणसेन राज्यने पालतो, त्रण वर्ग साधे नित्य ॥ १७ ॥ गुरु० ॥ बहु राय सामंत पद नमे, साध्या ते बहुला देश ॥ दश दिशे निर्मल जश वधे, निज देश ने परदेश ॥ १८ ॥ गुरु० ॥ वसंतसेना नामथी, पटराणीशु एक दिन्न ॥ वसंतपुर आव्यो वही, तपोवनने आसन्न ॥ १९ ॥ गुरु० ॥ पेठो महा मंगल करी, विमानरुद प्रासाद ॥ पाउसनी लीला सूचवे, नाटिक गाजतो नाद ॥ २० ॥ गुरु० ॥ रयणावलीउं विजली, धूपघटी मेघ अधार ॥ चमरश्रेणी बगपंक्तिउं, मुक्तावली जलधार ॥ २१ ॥ गुरु० ॥ पंचवरणी पटांशुक जिके, लटके ते इन्द्रधनुष ॥ सुगंधे पृथवी महमहे, देखी न लागे नूख ॥ २२ ॥ गुरु० ॥ मोहनिंदमा जे धारीआ, तेणे सुपन सरीखुं थाय ॥ सहु नगर लोक विसर्जीआ, सुखमा ते दिवस गमाय ॥ २३ ॥ गुरु० ॥ जब सूर्य उदयो तब करे, गोसकृत्य ते नूपाल ॥ कहे पद्म त्रीजी ढाल ए, सुणता ते मंगलमाल ॥ २४ ॥ गुरु० ॥ सर्व गाथा ॥ ९१ ॥

॥ दोहा ॥

नरपति रमवा नीकल्यो, खेलावे बहु खास, आस अति उतावलो, पामे तेहथी प्यास ॥ १ ॥ तेहनो खेद उतारवा, बेठो सहसववन्न, इण समे तापस आवीआ, नरपतिने आसन्न ॥ २ ॥ नारीगान वरंगना, आपी दे आशीष, नृपति पण उनो थइ, साधु नामे शीश ॥ ३ ॥ आपे आसन आदरे, तव नाखे रीषि तेह, अम गुरु मोकलीआ इहा, दुःख सुख पूछन देह ॥ ४ ॥ कहे नरपति किहा कुलपति, तापस बोले ताम, इण तपोवनमा आवीये, देखो दरीसण ॥ ५ ॥ कौतकनो

लीधो थको, तपोवन पहोतो तेह, तापस बहु वली कुलपति, नमीउं आणी नेह ॥ ६ ॥ कुलपति नृपतिने कहे, साजल धर्म सनाथ, विनये साजली विनति, भाखे हवे नृनाथ ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ श्रीऋषभानन गुणनिलो ॥ ए देशी ॥

॥ नरपति कर जोडी कहे, मुक उपरे करो सुपसाय हो ॥ मुणींद ॥ ल्यो आहार माहारे घरे, सहु तापसनो समुदाय हो ॥ मु० ॥ आवो गुरु मुज मंदिरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ कुलपति कहे सुण नृपति, आ-वशु पण टाली एक हो ॥ मु० ॥ अग्निशर्मा ते नामथी, तेहने मास मासनी टेक हो ॥ मु० ॥ २ ॥ आ० ॥ ते वात सुणी कहे राजीउं, कीधो मुजने उपगार हो ॥ मु० ॥ पण किहां तपसी वरुजागीउं, करु दर्शन पामु पार हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ आ० ॥ कहे कुलपति उद्याने रह्यो, जिहां श्रेणी अछे सहकार हो ॥ मु० ॥ जइ दीठो पद्मासन रह्यो, प्रशांतचित्त व्यापार हो ॥ मु० ॥ ४ ॥ आ० ॥ बहु हर्ष धरी पुलकित थइ, प्रणमे तेहना वर पाय हो ॥ मु० ॥ तव दीए आशीष तापस तिहां, सुखे आव्या तुमे इण ठाय हो ॥ मु० ॥ ५ ॥ आ० ॥ तुम्हे बेसो इहां इण स्थानके, तव बेसी तेह नरींद हो ॥ मु० ॥ कहे किम दुक्कर ए आदर्यु, तव बोल्यो ते योगींद हो ॥ मु० ॥ ६ ॥ आ० ॥ एक दारिद्र दुःख ने विरू-पता, वली परपरिजव पण हेतु हो ॥ मु० ॥ तिम गुणसेन वली नृपसुत जलो, कल्याणमित्र शुज चेत हो ॥ मु० ॥ ७ ॥ आ० ॥ निज नामे शङ्यो नरपति, कहे ते कहो कारण केम हो ॥मु०॥ नृपतिसुत तुम हेतु थयो, तव अग्निशर्मा कहे एम हो ॥ मु० ॥ ८ ॥ आ० ॥ जे जे उत्तम नर होय ते, पामे प्रतिबोध स्वयमेव हो ॥ मु० ॥ पर प्रेर्या मध्यम नर लहे, जघन्य लहे न सदैव हो ॥ मु० ॥ ए ॥ आ० ॥ प्रेरे जे संसारी जीवने, धर्मे को-इक नयेण हो ॥ मु० ॥ काढ्यो तिणे कारागारथी, कल्याणमित्र कहु तेण हो ॥ मु० ॥ १० ॥ आ० ॥ निज वीतक संजारी मने, लज्जा अव-नत करी वयण हो ॥ मु० ॥ कहे किम प्रेर्या तुमने तिणे, किम ते थयो धर्ममां सयण हो ॥ मु० ॥ ११ ॥ आ० ॥ कहे ते अग्निशर्मा हवे, प्रेरणा तो छे अनेक हो ॥ मु० ॥ तिणे कोइ निमित्त प्रेरीउं, म्हे धरीउं

तेहथी विवेक हो ॥ मु० ॥ १२ ॥ आ० ॥ तव चिंते चित्तमा नृपति, अहो अहो एहनो परिणाम हो ॥ मु० ॥ माने ए उपगारने, छे जेह पराजव गाम हो ॥ मु० ॥ १३ ॥ आ० ॥ न करे ए निंदा केहनी, पण में तो कीध अकाज हो ॥ मु० ॥ पाप कह्यु ते प्रकाशीए, एम चिंतवी ते महाराज हो ॥ ॥ मु० ॥ १४ ॥ आ० ॥ महापापकारी हु तुम प्रभु, तुमने कीधो संताप हो ॥ मु० ॥ हु तेत्र गुणसेन जाणजो, कीधु घोर में अति पाप हो ॥ ॥ मु० ॥ १५ ॥ आ० ॥ एम नहीं तपसी कहे साजलो, तु मुज धर्म सखाय हो ॥ मु० ॥ नृप कहे गुणग्राहक तुमे, चडथी अग्नि न जराय हो ॥ मु० ॥ १६ ॥ आ० ॥ हवणा इण माते तो सखु, पण पारणु तुम केवार हो ॥ मु० ॥ तपसी कहे पांच दिवस पछे, पृथवीपति जाखे ते वार हो ॥ मु० ॥ १७ ॥ आ० ॥ माहरे घरे पारणु कीजीये, जो कीजे मुज सुपसाय हो ॥ मु० ॥ तुम प्रतिज्ञा निधिजीके, में जाणी कुलपति पाय हो ॥ मु० ॥ १८ ॥ आ० ॥ तिणे अनागत हुं विनवु, तव बोले तपसी वाणी हो ॥ मु० ॥ ते दिन आवे तव हा कहु, वे घनी ते विघ्ननी खाण हो ॥ मु० ॥ ॥ १९ ॥ आ० ॥ जीवलोक स्वपना समो, जीव चिंतवे आज ने काल हो ॥ मु० ॥ काम करशु पण जाणे नहीं, काळने तो हाथ छे काल हो ॥ मु० ॥ २० ॥ आ० ॥ तव नरपति बोले एम फरी, निर्विघ्ने आवे ते दिन्न हो ॥ मु० ॥ पारणे प्रभु आववु मुज घरे, आग्रहथी तिणे प्रतिपन्न हो ॥ मु० ॥ २१ ॥ आ० ॥ हवे राजा हरषे प्रणमीने, गयो नयरमा निज आवास हो ॥ मु० ॥ भक्ति करी कुलपतिनी घणी, गया पांच दिवस पण तास हो ॥ मु० ॥ २२ ॥ आ० ॥ कही चोथी ढाल एणी परे, सहु धर्मना अर्थी जीव हो ॥ मु० ॥ कहे पद्मविजय समझी करो, तो पामो सुख अतीव हो ॥ मु० ॥ २३ ॥ आ० ॥ सर्व गाथा ॥ १२१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पारणुं करवा पहोंचीने, गुणसेन रायने गेह, शिरवेदन अतिशय थइ, जालिम नृपने जेह ॥ १ ॥ आकुल व्याकुल सहु थया, आव्या वैद्य अशेष, वैदकशास्त्र वदे घणा, पण गइ पीडा न लेश ॥ २ ॥ रयण विचित्र चूरण करी, लेप लगाया खरू, बुद्धिमंत बलीआ बहु, निगुहा मनि विलख ॥ ३ ॥ होम हवन पुरोहित करे, शान्तिकर्म सजा[illegible]जर आश करे,

ज्ञान थइ फुलमाल ॥ ४ ॥ कुमलायु मुखकमल ते, कन्या कडुक
चित्रकर्म परिचय तज्यो, लागी न नाटिक लील ॥ ५ ॥ पडिहारा
प्राण जिम, कचूक्क तजे काम, सूपकार सुख नवि करे, सामत
विश्राम ॥ ६ ॥ तापस देखी तेहवु, वलीउं चित्त विचार, पाठु नवि
पूठीयु, पाहोतो तपोवन पार ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ जोगीशर चेलानी देशी ॥

॥ केम आव्या पाछा फरी रे, तापस पूछे वात रे ॥ जोगीसर ॥
शरीर तुमारडु रे लाल ॥ अग्निशर्मा बोलीउं रे, लाजतो कहु अ
रे ॥ जो० ॥ राय तणे घर हुं गयो हो लाल ॥ १ ॥ रायशरीरे शाता
रे, लोक करे उद्वेग रे ॥ जो० ॥ देखी न शक्यो हु सही हो ला
तुरत तिहांथी पाछो वल्यो रे, सहु कहे धरी विवेक रे ॥ जो० ॥
शाता न तेहने रे लाल ॥ २ ॥ अन्यथा जकिवतो घणो रे, किम नृ
सावधान रे ॥ जो० ॥ गुण तुमचा जाणे घणा रे लाल ॥ कुलपति अ
वहु कह्या रे, इण तुमचा गुणग्यान रे ॥ जो० ॥ अग्निशर्मा तव बो
रे लाल ॥ ३ ॥ नहीं प्रयोजन आहारनु रे, पण एहने थाउं शा
॥ जो० ॥ एम करी मास कह्यो वली रे लाल ॥ कोइक जावि जा
रे, शाता थइ नृपगात रे ॥ जो० ॥ पूछे तपस्वी वातमी रे लाल ॥
पारणदिवस ते आज छे रे, आव्या के नहीं तेह रे ॥ जो० ॥ अ
दीधो के नहीं रे लाल ॥ तव परिजन बोल्यो तदा रे, आवीने
जेह रे ॥ नरेसर ॥ सहुने विकल्प जाणी करी रे लाल ॥ ५ ॥ राय
धि क मुजने रे, चूक्यो लाज अपार रे ॥ जो० ॥ अनरथ थयो पी
मुनि रे लाल, बीजे दिन निहाणे गयो रे ॥ लाजतो राय अपार
जो० ॥ कुलपतिपाय जइ नम्यो रे लाल ॥ ६ ॥ आशीष देइ बेसाडीउं
पूछे वात शरीर रे ॥ जो० ॥ नीचु जोइ नृप बोलीउं रे लाल ॥ निश
नाखे वली रे, कुलपति कहे थाउं धीर रे ॥ नरे० ॥ कहो उद्वेग का
तुमे रे लाल ॥ ७ ॥ नृप कहे कहेवाये नहीं रे, कुलपति कहे कहो त
रे ॥ न० ॥ तव नरपति कहे इणी परे रे लाल ॥ निर्दयी चरित्र कहे
थया रे, चित्त न चाले मोहि रे ॥ जो० ॥ पण तुम आणाथी कहु

लाल ॥ ७ ॥ मात पिताने सारिखा रे, कुलपति कहे श्रम लोग रे ॥ न० ॥ तिहां लज्जा करवी कीसी रे लाल ॥ इम कहेतो विचारीये रे, टाल-णनो उपयोग रे ॥ न० ॥ तव नरपति कहे वातमी रे लाल ॥ ए ॥ मुज निमित्ते तापस थयो रे, में अविचारित कीध रे ॥ जो० ॥ वली दमणा पण एम वन्यु रे लाल ॥ बीजो मास थयो एहने रे, मे अपयश बहु लीध रे ॥ जो० ॥ तव कुलपति एणी परे भणे रे लाल ॥ १० ॥ तु तो धर्मकारण थयो रे, पहेला ने वली आज रे ॥ न० ॥ कहे तें शु हीणुं कस्यु रे लाल ॥ नरपति कहे निमंत्रणा रे, कीधी आहारने काज रे ॥ जो० ॥ मस्तक थइ मुज वेदना रे लाल ॥ ११ ॥ पारणु में न करावीयुं रे, उलटो कस्यो अंतराय रे ॥ जो० ॥ धर्ममां विघनकारी थयो रे लाल ॥ कुलपति कहे वछ सांभलो रे, तुज अपराध न काय रे ॥ न० ॥ रोगी कृत्याकृत्य नवि लहे रे लाल ॥ १२ ॥ अंतराय तुमे नवि कस्यो रे, उलटो कीधो सहाय रे ॥ न० ॥ खेद न करो मनमा तुमे रे लाल ॥ आहार न लीधो मुज घरे रे, तेहनो खेद मुज थाय रे ॥ जो० ॥ भूपति एणी परे विनवे रे लाल ॥ १३ ॥ माहारो खेद ते किम टले रे, लीधा विण गुरु आहार रे ॥ जो० ॥ तव कुलपति कहे रायने रे लाल ॥ मासखमणनु पारणुं रे, आवशे एहने जे वार रे ॥ न० ॥ तव तुज घरे करशे हवे रे लाल ॥ १४ ॥ अग्निशर्मा बोलावीउं रे, कही नरेंद्रनी वात रे ॥ जो० ॥ अपराध एहनो म चितवे रे लाल ॥ एहनो खेद निवारवा रे, वली करवा सुखशात रे ॥ जो० ॥ पारणुं एहने घरे करो रे लाल ॥ १५ ॥ एह भक्ति म उवेखीये रे, महारु वचन पण मान रे ॥ जो० ॥ तव ते तापस बोलीयो रे लाल ॥ स्वामी खेद ए शे करे रे, मुज तुम वचन प्रमाण रे ॥ जो० ॥ मुज उपकार कस्यो इणे रे लाल ॥ १६ राजा बहुमाने करी रे, प्रणमी पोहोतो गेह रे ॥ जो० ॥ इम करता वली आवीउं रे लाल ॥ पारणा केरो दिन्न रे ॥ जो० ॥ इण अवसर चर आवीआ रे लाल, भाखे नृपने पचल रे ॥ न० ॥ मानभग नृप आवीउं रे लाल ॥ १७ ॥ रातिवासो देइ मारीआ रे, आपणा सैन्यना लोक रे ॥ न० ॥ हवे जिम [illegible]णो तिम करो रे लाल ॥ तव राजा रीसे चढ्यो रे, आणी मन[illegible] रे ॥ [illegible] ॥ कोपानलपणे दीपतो रे लाल ॥ १८ ॥ निर[illegible]

वलना वयण रे ॥ न० ॥ तूर वजडावे प्रयाणना रे लाल ॥ गयनत्र हयवर सज करे रे, करी निकराल ते नयण रे ॥ न० ॥ रहवर जन सन्नद्ध हुआ रे लाल ॥ १९ ॥ चामर छत्र धरावतो रे, वाजते वर तूर रे ॥ न० ॥ चढी निरुट बोली जते रे लाल ॥ मंगलकलश चलावीउं रे, अग्निशर्मा तप शूरि रे ॥ जो० ॥ पारणाने इण अवसरे रे लाल ॥ २० ॥ आवीने देख्यो तिहां रे, सहु जन सज्ज संग्राम रे ॥ जो० ॥ देखीने पाछो वल्यो रे लाल ॥ कोइए उलख्यो पण नहीं रे, आव्यो ते निज गाम रे ॥ जो० ॥ ज्योतिषी इण अवसरे जणे रे लाल ॥ २१ ॥ लगन आवेशु छे वहु रे, कीजे तुरत प्रयाण रे ॥ रा० ॥ राजा कहे तव वातनी रे लाल ॥ अग्निशर्मा आव्या नहीं रे, मानी छे मुज वाणी रे ॥ जो० ॥ आव्या पछी जइये सहू रे लाल ॥ २२ ॥ तव एक नर बोल्यो तिहां रे, आवी गया इण वार रे ॥ रा० ॥ हजीअ हशे पुरमां सही रे लाल ॥ तव राजा विलखो थइ रे, चाल्यो तेहनी ल्हार रे ॥ रा० ॥ दीठो नीर लता थका रे लाल ॥ २३ ॥ उतरी रथथी पाये पडे रे, विनति करे महाराय रे ॥ जो० ॥ करीय पसाय पाछा वलो रे लाल ॥ महारे जाबु घणुये हतु रे, पण नवि गयो कुपिराय रे ॥ जो० ॥ वाट तुम्हारी जोवता रे लाल ॥ २४ ॥ तुम्हे अणजाण्या पाछा वल्या रे, तिणे चालो मुज गेह रे ॥ जो० ॥ अग्निशर्मा तव बोलीउं रे लाल ॥ तु जाणे सवि वारता रे, म्हारे प्रतिज्ञा जेह रे ॥ रा० ॥ सत्यसंधा तपसी होये रे लाल ॥ २५ ॥ लाभालाभ सम गणे रे, हवे बोले नरराय रे ॥ जो० ॥ म्हारा प्रमाद चरित्रथी रे लाल ॥ लाजु तु स्वामी घणो रे, ते मुखथी न कहेवाय रे ॥ जो० ॥ तुम्ह तप शरीर पीडा थकी रे लाल ॥ २६ ॥ मुज अति पीडा उपजे रे, उपजे हैये संताप रे ॥ जो० ॥ बोली न शकु वयणथी रे लाल ॥ हैये दुःख समाय नहीं रे, म्हें कीधु महा पाप रे ॥ जो० ॥ दुःख उपशम मुज चिंतवो रे लाल ॥ २७ ॥ तव तापस मन चिंतवे रे, राय बहु खेदाय रे ॥ रा० ॥ गुणवंतो ए अतिघणो रे लाल ॥ पारणु न करु एहने घरे रे, तो दुःख एहनुं न जाय रे ॥ रा० ॥ एम चिंती तपसीउं कहे रे लाल ॥ २८ ॥ करशु तुज घर पारणु रे, निर्विघ्न दिन तेह रे ॥ रा० ॥ तव राजा हरख्यो घणु रे लाल ॥ नृप कहे निमल वाणी तुम्हे

रे, प्रणमे आणी नेह रे ॥ जो० ॥ प्रभु मुजने निस्तारीउं रे लाल ॥ २९ ॥ समरादित्यना रासमां रे, ए कही पांचमी ढाल रे ॥ रा० ॥ विबुध जन मन राजी थया रे लाल ॥ पद्मविजय कहे सांभलो रे, आगले वात रसाल रे ॥ रा० ॥ गुणपक्षपाती राजा घणो रे लाल ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥ १५८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तपसीने कहे भूपति, तुम्हे जाउं तपोवन्न, कुलपति पासे किम-हिके, नहीं आवणनुं मन्न ॥ १ ॥ मुख देखाडी माहरु, न शकुं नाथ निदान, एम कही राजा घर गयो, तपसी गयो तेरान ॥ २ ॥ कुलपतिने सघलु कह्युं, कुलपति कहे वर काम, कीधुं एम परशंसीउं, मास त्रीजो वस्यो ताम ॥ ३ ॥ नवते परिणामे वली, तप पूरु तस थाय, राय तणे घर पारणे, पुत्रजनम प्रगटाय ॥ ४ ॥ प्रतिहारी मुखे पामीउं, अवल पुत्र अवतार, आपे आभूषण अगना, पूर्ण करी प्रतिहार ॥ ५ ॥ गुणसेन रायने आंगणे, उच्छव अतिहि उदार, मांड्यो ते महामोदथी, परिमल पुण्य प्रकार ॥ ६ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ इडर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ राय हुकम फरमावीउं रे, मूक्यो कारागार ॥ उद्घोषणा करी दीजीये रे, दान अनेक प्रकार ॥ १ ॥ भविक जन भावि भाव ते होय ॥ भावि न टाले कोय ॥ भवि० ॥ भावि भाव ते होय ॥ ए आंकणी ॥ जिनश-त्रु गुरु रायने रे, कहेवरावो ए वात ॥ नयरमां सहु सज्जावीये रे, जिणे बहु महोत्सव थात ॥ भवि० ॥ २ ॥ जे करवु ते सवे कर्यु रे, नाचे पगे पगे पात्र ॥ वर चीवर धरी रूपीउं रे, गावे ते गाली गात्र ॥ भवि० ॥ ३ ॥ दाने मनोरथ पोखना रे, वदी जय जय सद्द ॥ नाद कीधा मादल तणा रे, नाटकीये बहु नद्द ॥ भवि० ॥ ४ ॥ वधामणां आवे घणां रे, राज-भवन मकीर्ण ॥ इण अवसर तापस तिहां रे, हुउं प्रतिज्ञा तिम्न ॥ भवि० ॥ ॥ ५ ॥ पारणा निमित्त ते आवीउं रे राजकुले ते आय ॥ सहु ते हर्ष प्रमोदमां रे, नवि कोयने चित्त माय ॥ भवि० ॥ ६ ॥ आदुं अवलुं जोइने रे, वलीउं ते तनकाल ॥ अशुभ कर्म उदये करी रे, चिंतवे आवपणाउ ॥ भवि० ॥ ७ ॥ आर्तध्यान नदी चिंतवे रे, कहो [illegible] राजान ॥

मुज उपर बालजानथी रे, वेरजाव असमान ॥ जवि० ॥ ७ ॥ जूउं माया करे केटली रे, गूढाचार चरित्त ॥ सहु शाखे करे विनति रे, आचरे अति विपरीत ॥ जवि० ॥ ए ॥ एम चिंतवतो नीकल्यो रे, पुर बाहिर ते जाम ॥ टोप आज्ञाने आकरे रे, क्रोध तणे वली धाम ॥ जवि० ॥ १० ॥ वासित जैनमार्गे नहीं रे, धर्मश्रद्धा गउ तास ॥ परलोकनी वासना तजी रे, आवी अमैत्री जास ॥ जवि० ॥ ११ ॥ जूखे कलकली देहनी रे, आकर्प्यो बली जूरन ॥ द्वेप जाग्यो नृप उपरे रे, शुद्धि न रही तिल तुप ॥ ॥ जवि० ॥ १२ ॥ तपनु फल जो माहरु रे, तो एहनो वधकार ॥ करे नियाणु एहवु रे, जव जव दुःख दातार ॥ जवि० ॥ १३ ॥ शत्रुने दुःख दीधु नहीं रे, वाल्हाने सुख नवि दीध ॥ मात विगुवी ते नरे रे, जन्म लही शु कीध ॥ जवि० ॥ १४ ॥ एम नियाणु तिणे कलु रे, आलोयु नहीं ते ठाण ॥ क्रोधानल वलतो करे रे, कोडी विकल्प अजाण ॥ जवि० ॥ ॥ १५ ॥ पहोतो तपोवन तेहवे रे, कुलपति भूम्या दूर ॥ परिहारी शेप तापस जली रे, दीसतो महाक्रूर ॥ जवि० ॥ १६ ॥ जड सहकारश्रेणी रह्यो रे, चिंतवे वली एम चित्त ॥ अहो राजा मुज उपरे रे, प्रत्यनीक भली रीत ॥ जवि० ॥ १७ ॥ हासी योग्य मुजने कर्यो रे, तापस सर्व प्रकार ॥ जाणी प्रतिज्ञा माहरी रे, कीधो माया प्रकार ॥ जवि० ॥ १८ ॥ करीय निमत्रण एणी परे रे, नवि आप्यो मुज आहार ॥ इण वेला खलना करी रे, शो एहने अहंकार ॥ जवि० ॥ १ए ॥ तपसीने किम ए करे रे, शत्रु मित्र सम जास ॥ अथवा न तज्यो मूलथी रे, आहार तो पाम्यो विपास ॥ जवि० ॥ २० ॥ ते माटे हवे मुज सलु रे, जाव जीव लगे आहार ॥ न करु एम मन आदरयु रे, ठामी सर्व व्यापार ॥ जवि० ॥ २१ ॥ दीठो तापसे इण समे रे, जाएयु ध्यान अशुद्ध ॥ पूछे किम नवि पामीया रे, कुसुम निक्षेपण शुद्ध ॥ जवि० ॥ २२ ॥ गुणसेन राय तणे घरे रे, शु न गया प्रजु आज ॥ पारणुं किम नवि नीपनु रे, ते जाखो महाराज ॥ जवि० ॥ २३ ॥ अग्निशर्मा तव बोलीउं रे, हु गयो नृपने गेह ॥ शत्रु बालपणा थकी रे, आज लगी हजी एह ॥ जवि० ॥ २४ ॥ मीठे वचने बोलतो रे, करतो विनय अपार ॥ वैर न टल्यु मुज उपरे रे, जाण्यु में निर्धार ॥ जवि० ॥ २५ ॥ पण ए मायावी खरो रे, कीधु महारु हा-

स ॥ कीधो पराजव एणी परे रे, एह अनार्य विलास ॥ जवि० ॥ २६ ॥ सहसा उछव मानीउं रे, जाणी पारण दिन्न ॥ आदर दीठो न केहनो रे, वलीउं विलखित मन्न ॥ जवि० ॥ २७ ॥ कहे तापस नवि सजवे रे, एह नरींद्र गुणवंत ॥ अथवा विचित्र परिणाम ठे रे, शु न कषाये हुंत ॥ जवि० ॥ २८ ॥ जिनवर मत वासित विना रे, उत्तमता नवि होय ॥ तिणे जिनमत अंगीकरो रे, ज्ञान धरूा सहु कोय ॥ जवि० ॥ २९ ॥ उठी ढाल एणी परे रे, जाखी कर्मनिदान ॥ पद्मविजय कहे साजलो रे, उ लटाइ अज्ञान ॥ जवि० ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥ १०४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुलपनि पासे जइ कह्युं, अग्निशर्मा आज, पारण विण पाठा वल्या, महातपसी महाराज ॥ १ ॥ कुलपति आव्या तिहा कने, तपसीए पूज्या ताम, वछ पारणु नवि कस्यु, कीधुं दुःक्कर काम ॥ २ ॥ राये शु ए आचस्यु, असरिस जन आचार, अग्निशर्मा एम कहे, रायप्रमाद प्रकार ॥ ३ ॥ आहार तज्यो नहीं आदरे, पाम्यो आपद पेखी; जाव जीव हवे वर्जीउं, आशा देह उवेखी ॥ ४ ॥ विनति हवे हु विनवु, कहेशो हवे न काय, तव कुलपति कहे तेहने, एहमां हानि न काय ॥ ५ ॥ काल जता वारज कीसी, तपसी बोले तथ्य, पण नररायने उपरे, क्रोध न करो ए कथ्य ॥ ६ ॥ यत ॥ "सबो पुबकयाण, कम्माण पावए फल विवाग ॥ अवरा-हेसु गुणेसुअ, निमित्त मित्तपरो होइ ॥ १ ॥" दोहा ॥ एम शिखामण देइने, सेनावाल सवास, तापस सूरी कुलपति, पहोतो आसन पास ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ नानो के नानो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ पारणवेला अतिक्रमी रे, सांजरु रायने ताम ॥ लागी वेदना रे ॥ अहो महारी अधन्यता रे, उत्तरमा थयु आम ॥ लागी० ॥ १ ॥ आज पण पारणु नवि थयु रे, हैं हैं प्रगट्युं पाप ॥ ला० ॥ पूठे पासेना मनु-जने रे, आव्या न आव्यानी ठाप ॥ ला० ॥ २ ॥ गोली धरी नर ते कहे रे, आवी गया निज ठोर ॥ ला० ॥ जन्मदेउव धा[illegible]ना रे, चाल्युं न एहनुं जोर ॥ ला० ॥ ३ ॥ राय कहे में पापीए [illegible]ीने कस्यो अंत-राय ॥ ला० ॥ उदय आपद जरी मुज प[illegible] दुःख ने [illegible] थाय

॥ [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] पुण्य घरे नवि होये रे, वृद्धि चली [illegible] ॥ सा० ॥ [illegible] निद्रा नवि [illegible] रे, सुख न देखाडु लगार ॥ सा० ॥ ५ ॥ सोम [illegible] पुरोहितने रे [illegible] परे माण ॥ सा० ॥ अणजाण्यो थइ तु नि [illegible] रे, [illegible] नो निर्गमण ॥ सा० ॥ ६ ॥ तेहनी खबर करो तुमे रे, [illegible] ॥ सा० ॥ जोड कहे मुझ नीपनु रे, तव ते गयो नि [illegible] ॥ ७ ॥ पहु तापसश्री परिवर्यो रे, राज सखारे वेह ॥ सा० ॥ [illegible] दीठ ॥ सा० ॥ ८ ॥ गिरि नदी [illegible] रे, [illegible] करी प्रणमत ॥ सा० ॥ नाम देइ बेसारीयो रे, [illegible] ॥ सा० ॥ ए ॥ पूछे पुरोहित तेहने रे, किम प्रभु [illegible] ॥ सारन कहे सुणी कुशला रे, तपसी होये धीर ॥ सा० ॥ [illegible] पुरोहित कहे साचु प्रभु रे, होय तपसी निरीह ॥ सा० ॥ धन [illegible] रे, पण नहीं धर्मनी देह ॥ सा० ॥ ११ ॥ [illegible] धर्म सधाये तेण ॥ सा० ॥ इण नगरीमा उत्तम [illegible] ॥ सा० ॥ १२ ॥ तृण मणि पत्थर कनकसमा रे, [illegible] ॥ सा० ॥ मासखमणे तुमे आदर्यो रे, [illegible] ॥ सा० ॥ १३ ॥ तुमने आहार करी करी रे, तापस बोल्यो ताम [illegible] नरपति [illegible] ॥ सा० ॥ [illegible] रे, तुमे किम तारो पम ॥ सा० ॥ तपसी [illegible] ॥ सा० ॥ १५ ॥ जीति [illegible] रे [illegible] ॥ सा० ॥ सोमदेव चिंते तदा रे, [illegible] ॥ सा० ॥ १६ ॥ वेळा सथारे [illegible] रे, गय नगी नि [illegible] ॥ सा० ॥ [illegible] पामी अतिशय रोट ॥ सा० ॥ [illegible] ॥ [illegible] नहीं पूछा लाग ॥ सा० ॥ प्रानी [illegible] ॥ सा० ॥ १७ ॥ [illegible] ॥ सा० ॥ तेहने पूछे एणी परे रे, [illegible] ॥ सा० ॥ [illegible] ॥ आसु नही ते शोवीठ रे, ते [illegible] ॥ सा० ॥ [illegible] निज स्थानक गयो रे, सोमदेव [illegible] ॥ सा० ॥ [illegible] ॥ [illegible] रे, [illegible] अधिक [illegible] ॥ सा० ॥ [illegible] रे, [illegible] ॥ सा० ॥ २१ ॥

धर्मनो अर्थी राजवी रे, बाल तपस्वी तेह ॥ ला० ॥ सातमी ढाल सोहामणी रे, पद्म कहे ससनेह ॥ ला० ॥ १२ ॥ सर्व गाथा ॥ १२३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप अंतेउर लेइने, परिजन साथे प्रधान, पयचारी तपोवन प्रते, तपसी मेलन ताम ॥ १ ॥ पोहोतो ते परिवारथी, जाण्युं तापस जाम, कह्यु अग्निशर्मा कने, आव्यो नृपति आम ॥ २ ॥ क्रोधानल बलतो कहे, तेड्यो कुलपति तात, तव आव्या कहे तेहने, निनयनी मूकी वात ॥ ३ ॥ जो जो कुलपति हु जणु, सुणजो साची वात, एह अधम राजा इहां, तरु श्रेणी आयात ॥ ४ ॥ मुख न देखावे मुजने, करीये एहवु काम, जिम पाछो ए जाय तेम, रुडु थाये राम ॥ ५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ रामचंदके बाग ॥ ए देशी ॥

॥ कुलपति चिंते एम, एह कषाये हस्यो री ॥ दष्टिए न होये राय, तो वर काम कस्यो री ॥ १ ॥ सन्मुख चाल्यो जाम, कुलपति राय तणे री ॥ तव परिवारशु राय, दीठो खेद घणे री ॥ २ ॥ विनये प्रणमी पाय, आशीष शीश लहे री ॥ लह्यो आणंद जब राय, कुलपति ताम कहे री ॥ ३ ॥ आवो चपकश्रेणी, वेसीये तिहां सुमना री ॥ एम कही तिहां लेइ जाय, आसन कुश तरणा री ॥ ४ ॥ विमल शिला पट ठाम, कुलपति वेठा जीशे री ॥ नरपति वेठो भूमि, आणा लहीय तिशे री ॥ ५ ॥ कुलपति पूछे एम, किम पयचारी तुमे री ॥ आव्या एवमी भूमि, अचरिज पामु अमे री ॥ ६ ॥ वली साथे परिवार, तव बोल्यो भूपति री ॥ पुरुष अधमनी वात, कहेवी नहीं जुगति री ॥ ७ ॥ धर्म माहि अंतराय, तपसीने में कस्यो री ॥ पाप जराणु घोर, हवे किम जव उतस्यो री ॥ ८ ॥ अग्निशर्मा स्वामी, क्यिहां छे तेह कहो री ॥ देखाडो नमु आज, पातिक सर्व दहो री ॥ ९ ॥ कुलपति बोले ताम, मत संताप करो री ॥ तुम माटे नवि कीध, अणसण एह खरो री ॥ १० ॥ असचो एह आचार, अणसणे देह तजे री ॥ चरमनये अम लोक, तिणे अणसण ए भजे री ॥ ११ ॥ तव बोले नरराय, शु बहु तमने कहु री ॥ दरिशण तेहनु स्वामि, एक वार हु लहु री ॥ १२ ॥ कुलपति कहे सुण राय, ए घणी वात

[illegible] री ॥ म करो तम अंतराय, ध्यानमा वेगा सही री ॥ १३ ॥ वली [illegible] मही [illegible], दरिसण नाम करो री ॥ साजली बोले राय, जे तुमे [illegible] री ॥ १४ ॥ वली आवी शकु स्वामि, उठ्यो एम कही री ॥ [illegible] तह [illegible] सही री ॥ १५ ॥ प्रणमी कुलपति [illegible] नगर तणी री ॥ तव एक तापस आय, वय तस वात [illegible] री ॥ १६ ॥ [illegible] पश्चाताप, तात ने सर्व कहे री ॥ अग्निशर्मा य [illegible] री ॥ १७ ॥ हुने आवी शु होय, कुलपति कह [illegible] नयरे री ॥ १८ ॥ वली तव [illegible] गुणथी [illegible] री ॥ जिम तिम बोले तेह, ए पण वात [illegible] ॥ १९ ॥ [illegible] दिश, निज आवास जइ री ॥ जोशी गुण [illegible] री ॥ २० ॥ वालमुहूर्त ते मास, [illegible] री ॥ [illegible] वात, कालप्रयाण तणी री ॥ २१ ॥ सेना [illegible] प्रयाण करी री ॥ महीने पोहोंता तेह, आव्या [illegible] री ॥ २२ ॥ [illegible] शहेर पद्मनो निज भुवने री ॥ [illegible] विकल्प मने री ॥ २३ ॥ सर्वनोनन्द आवास, [illegible] री ॥ दीन दुःखी जन जेह ते सहुने उद्धरे री ॥ २४ ॥ [illegible] राम आवसी [illegible] री ॥ पद्म कहे सुरमाल, आगम [illegible] री ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ १५३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ [illegible] मुनिवर विचारे महाव्रता, [illegible] ॥ १ ॥ मिथ्यात्व [illegible] श्रमण ते, सुन्दर सर्व शरीर, [illegible] ॥ २ ॥ वय जोवन आव्या व्रती, गुण [illegible] निश्चय धर्मनो तेह ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ [illegible] ॥ ए देशी ॥

॥ [illegible]

साजखो ॥ नीतिवता नरपति जस्या रे हा, तेहवा सदल सगाय ॥ जवि० ॥ १ ॥ रूख ते वारि काठे रह्या रे हा, शोने अधोमुख तेह ॥ जवि० ॥ परस्त्री देखणने यया रे हा, उत्तम पुन्प सनेह ॥ जवि० ॥ २ ॥ विषय प्रसक्त पाखनीथ्या रे हा, लिंबन सोहे तेम ॥ जवि०॥ वृक्ष अशोक शोने यया रे हा, कुसुंज वस्त्र वर जेम ॥ ज० ॥ ३ ॥ जीवलोक मनोरथ परे रे हा, बहुविध पादप होय ॥ ज० ॥ हिमगिरि शिखर परे सही रे हा, जिनवरचैत्य ते जोय ॥ ज० ॥ ४ ॥ चरणकरणनी सित्तरी रे हा, पाळे संजम जार ॥ ज० ॥ इण अवसर राजा हवे रे हा, पूछे वात उदार ॥ ज० ॥ ५ ॥ कौतुक दीठु तो कहो रे हा, तव नामे कल्याण ॥ ज० ॥ एक अठेरु जे कहु रे हा, राय सुणो वर जाण ॥ ज० ॥ ६ ॥ अशोकवन उ-धानमा रे हा, पाउधारया ऋषिराय ॥ ज० ॥ जोवने जीत्यो मारने रे हा, सोवननरणी काय ॥ ज० ॥ ७ ॥ जो पण सग सहु तज्यो रे हा, सहुने करे उपकार ॥ ज० ॥ धर्ममूरति धरी आवीया रे हा, विजयसेन गणधार ॥ ज० ॥ ८ ॥ गधार देशनो अधिपति रे हा, समरसेन राजान ॥ ज० ॥ तेहनो नतुर्उ जाणीये रे हा, लक्ष्मीसेन सुत जाण ॥ ज०॥ ए॥ में वाया हर्षे करी रे हा, तव बोले नरराय ॥ ज० ॥ ताहारो जन स-फलो थयो रे हा, तुं कृतपुन्य जणाय ॥ज०॥ १० ॥ हु पण काले वादशु रे हा, एम हर्षे गइ रात ॥ ज० ॥ आनरवी वदीथ्या रे हा, साधु सवे परजात ॥ ज० ॥ ११ ॥ देखी देखी हरखतो रे हा, पुलकित थाये तन्न ॥ ज० ॥ आणदवाह जल पूरीथ्या रे हा, नयणनिकन्वर मन्न ॥ज०॥१२॥ लली लली प्रणम्यो प्रेमशु रे हा, माने धन्य अवतार ॥ ज० ॥ धर्मलाज दीधो गुरु रे हा, शाश्वत सुख दातार ॥ ज० ॥ १३ ॥ चिंता सिद्धिवधू तणी रे हा, तिणे दुर्बल पशु तन ॥ ज० ॥ अढार सहस शीलनारथी रे हा, नवि खेदायु मन्न ॥ ज० ॥ १४ ॥ एहवा मुनिवर प्रणमीने रे हा, बेठो गुरुने पाय ॥ ज० ॥ रूप चरित्र देखीकरी रे हा, मनमा विस्मित थाय ॥ ज० ॥ १५ ॥ पूछे राज्य जोजी करी रे हा, किम लीधो मननार ॥ ज० ॥ स्यो वैराग्य ते उपनो रे हा, किम छाड्यो संसार ॥ ज० ॥१६॥ मुनिवर कहे सुण नरपति रे हा, शु पूछे वैरा ॥ ज० ॥ जे ससारमा देखीये रे हा, ते वैराग्य सदाजाग ॥ ज० ॥ १७ ॥ ठाम ठाम निरंद ठे

रे हा, चिहु गतिमा सचाल ॥ज०॥ जन्म मरण नहीं केहने रे हां, सघ लाने शिर काल ॥ज०॥१८॥ लखमी अथिर नवि सुख दीये रे हा, आव्यो शु करी पुण्य ॥ ज० ॥ जावु किण गामे वली रे हा, ए ज्ञाने पण शून्य ॥ ज० ॥ १९ ॥ वली मानवनो जव जलो रे हा, रयणचिंतामणि तुल ॥ ज० ॥ डाजअणी जल जेहवु रे हा, जीवित हारे थूल ॥ ज० ॥ २० ॥ कुपित जुजगम सारिखा रे हा, कामजोग ससार ॥ ज० ॥ गजकर्ण वीज चचल यथा रे हा, ऋद्धि शरद जलधार ॥ ज० ॥ २१ ॥ तप चारित्र न आदरे रे हा, ते नर दुर्गति जाय ॥ ज० ॥ पामे विपाक वीहामणा रे हा, नारक तिरि गति थाय ॥ ज० ॥ २२ ॥ वहु दु खे करी वली रह्यो रे हा, रोग शोक विप्रयोग ॥ ज० ॥ जवनाटक नाटक समु रे हा, रीजी करे मूढ लोग ॥ ज० ॥ २३ ॥ मोक्षसाधन तिणे साधीये रे हा, ए दु ख टालणहार ॥ ए मुज निमित्त वैराग्यनु रे हा, सामान्ये ससार ॥ ज० ॥ २४ ॥ वलीअ विशेष सुण माहरु रे हा, जेह चारित्र निमित्त ॥ ज०॥ नवमी ढाले पढम कहे रे हा, मुनिवर चरित्र पवित्र ॥ ज० ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ २७३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जबूद्वीप इण विजयमा, देश गधार उद्दाम, निवसु गधार नयरीए, तिण पूरीए मुज ताम ॥ १ ॥ मित्र एक तिहा माहरे, सोमवसु सुत सार, विजावसु घणु वालहो, पुरोहित प्राणआधार ॥२॥ एक दिन ते आत कर्षी, देवे दीधो दक, मरण लह्यो मुज देखता, दु ख ते दीध प्रचक ॥३॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ जाजरीआ मुनिवर धन धन तुम्ह अवतार ॥ ए देशी ॥

॥ इण अवसर तिहा आवीया जी, विचरता मुनिवर चार ॥ चोमासु रहेवा जणी जी, करता उग्र विहार ॥ १ ॥ जवि जाव धरीने वदो ए अ णगार ॥ ए आकणी ॥ गधार पर्वतनी गुफा जी, तिहा आवीने ठाय ॥ मुनि मुजने वहाला घणा जी, चरपुरुषे कह्यु आय ॥ २ ॥ जवि० ॥ हु पण शीघ्र गयो तिहा जी, दीठा करता सजाय ॥ वदीया मे हर्षे करी जी, आणद अग न माय ॥ ३ ॥ जवि० ॥ धर्मलाज दीधो तिणे जी, पूछी मे सुखशात ॥ वदीने हु घरे गयो जी, नित्य करुं ए अवदात ॥४॥

॥ जवि० ॥ मासखमणने पारणु जी करे चारे मुनिराय ॥ नित्य वधते परिणामथी जी मुज तिहां समकित थाय ॥ ५ ॥ जवि० ॥ चार मास ते वही गया जी रयणीए चिंतव्युं एम ॥ कालें महा तपसी जशे जी, तव करशुं कहो केम ॥ ६ ॥ ज० ॥ वदन निमित्ते चालीउं जी, चार घनी लेइ रान ॥ थोनी जूमि गयो जेटले जी, श्राव्यो सुरजित वात ॥ ७ ॥ ॥ जवि० ॥ श्रतुश्रातु गगने थयु जी, गाज्यो गिरि गधार ॥ प्रचली तिहां वसुधरा जी जय जयरव विस्तार ॥ ८ ॥ जवि० ॥ अधिक हर्ष तव मुज थयो जी, आगले जाउं जाम ॥ पृथवी सम करीने तिहां जी, काट्या तृणादिक ताम ॥ ए ॥ जवि० ॥ गधोदक वरसे तिहां जी, पुष्पवृष्टि वली थाय ॥ थोके थोके देवता जी, आवी स्तवना कराय ॥ १० ॥ जवि० ॥ मानवजव जले पामीया जी, क्षय कस्या राग ने द्वेष ॥ कर्म सैन्य जीत्युं तुमे जी जवसायर कस्यो शोष ॥ ११ ॥ जवि० ॥ एम साजली में चिंतव्युं जी, गुरु लह्या केवलज्ञान ॥ जन्म मरण डुःख कापीयां जी, पाम्या शाश्वत थान ॥ १२ ॥ जवि० ॥ रयण सिंहासन सुर रचे जी, बेठा शांत स्वरूप ॥ मूर्तिमत गुणगण तणा जी, मूक्यो जवजय कूप ॥ १३ ॥ जवि० ॥ में कीधो देखी करी जी, निश्चय नहीं संदेह ॥ रोमांचित थइ प्रणमीउं जी, हर्ष न माये देह ॥ १४ ॥ ज० ॥ केवलीए तिहां देशना जी, दीधी करी विस्तार ॥ निज निज संदेह पूढता जी, सुर नरना बहु वार ॥ १५ ॥ ॥ जवि० ॥ में पण मनमां चिंतव्युं जी, पूठुं मुज संदेह ॥ विजावसु किहां ऊपनो जी, बोले जे मुज देह ॥ १६ ॥ जवि० ॥ पूढ्युं एम में चिंतवी जी, स्वामी थयो केइ काल ॥ महारो मित्र मुज देखता जी, तत्क्षण थयो विसराल ॥ १७ ॥ जवि० ॥ किहां जइने ते ऊपनो जी, हमणां अनुजवे काय ॥ जिनमत जाणुं डुःखरो जी, पण मुज डुःख किम थाय ॥ १८ ॥ जवि० ॥ केवली कहे तुमे साजलो जी, एहना जव विकराल ॥ धर्म कस्या विण प्राणीया जी, किम लहे सुख असराल ॥ १९ ॥ जवि० ॥ समरादित्यना रासमां जी, जाखी ए दशमी ढाल ॥ पद्मविजय कहे साजलो जी, केवली वचन रसाल ॥ २० ॥ जवि० ॥ सर्व गाथा ॥ ॥ ३०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रजक एक इण नयरमां, ब्रह्मदत्त इण नाम, श्रानी मधुपिंगा

नमे तेहने गर्ज नाम ॥ १ ॥ उपनो श्वानपणे इहां, रज्जुए बाध्यो र
नृपनो नारनो रामजी, निकटे करतो नेह ॥ २ ॥ रामजी पाडुमहारथी
नव पामे श्रवि जीन हमणा अनुजवे एहवु, पण तुफ पूरव प्रीति ॥३
पुष्करवरार्द्धे कुसुमपुरे, नरनकेत्रमा नाम कुसुमसार तु तिहां कणे, शेठ
सार निरधार ॥ ४ ॥ श्रीकांता ए स्त्री हती, नमीउं तेह सनेह, पोताना
जे पुत्र ते तेहना सूर तेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥

॥ राग अरडाम जीपरे करे जी ॥ ए देशी ॥

॥ सेठ पासर उगदिन धरे जी, जन्ने मुकावीउं श्वान ॥ आहार ने
पान दीधु बहुं नी, सेठ आव्या निज थान ॥ १ ॥ जुउं जुउं कर्म विचि
त्रता जी ॥ ए आंकणी ॥ कृमिकुले व्यापित देहनी जी बहु रे वादा
एहना मरम ॥ दीन नवु रुधिर श्रग करे जी, गति अति मद छे जास
॥ २ ॥ जुउं० ॥ नगर श्रावे ते दयावन्त जी, काढनो नीन निकास ॥
देखी संवेग मुक टरना नी, श्रहो श्रहो नवचकवाल ॥ ३ ॥ जुउं० ॥
श्वान एन पुत्र ह्यावना नी नाह जग नरीय ते नयण ॥ देखी मुफने
ते उल्लासउं जी नहि कहेरायें ते नयण ॥ ४ ॥ जुउं० ॥ ज्ञानीने
पुछु नव ते कहे जी, पूर्वनवना ए प्रेम ॥ राग विशेष जाणे नहीं जी,
ए सामान्यथी एम ॥ ५ ॥ जुउं० ॥ एह मनाव ससारनो जी,
नावे ते कीधा आराम ॥ शान्त साव श्रनातागथी जी, पहोंचे पूर्व
ना धाम ॥ ६ ॥ जुउं० ॥ पुत्रनु कहे स्वामी कुण कर्मथी जी, पामीउं एह
॥ ७ ॥ जातिमदथी कतरां कहे जी पूर्वांयु कहे धरी राग ॥ ७ ॥
॥ ८ ॥ कोण अतिमान एणे सचु जी, वार्त्तीश्रा नव गुणवन ॥ अननर
॥ ९ ॥ हरिरा नया जी हठ रमवा निरमन ॥ ८ ॥ जुउं० ॥ नगाजन
पु परनी री अनुनवे रमननी दीन ॥ एम मर्मे गजननी चयरी
रीरडां घट नम दीन ॥ ९ ॥ जुउं० ॥ जाति कुल धम गव रमी
दिन जावे नीर अन धाम ॥ सेर श्रतानथी निनवे जी कीधी
ना नाम ॥ १० ॥ जुउं० ॥ एमदिन मुख्य तेहना श्रवउं जी, करणी
ट कंठ ॥ हर्षित ने नोककारीउं जी एम करतो बहुत निज धव ॥ ११
॥ श्रम रतिकना बस पडी जी, वार्त्तीसु श्रमण नि

परलोके उत्तदिन्नने जी, ठोमव्यो करी सुपसाय ॥ १२ ॥ जुउं० ॥ वेश्या ते कर्मथी कूतरो जी उपनो ड्ण जव एह ॥ सांजली में तिहा चिंतव्यु जी, अहो ससार डु ख गेह ॥ १३ ॥ जुउं० ॥ में कर जोमीने पूठीयुं जी, कव एह कर्मनो अंत ॥ जव्य अजव्य के किम प्रजु जी, जाखीये मुज जगवन ॥ १४ ॥ जुउं० ॥ पामीउं वीज के ए नहीं जी, तव कहे गुरु गुणवत ॥ सांजलो तेह विस्तारथी जी, जिम एह कर्मनो अंत ॥ १५ ॥ जुउं० ॥ उत्तदिन्न घर एक रासजी जी, तेहनी कुखे ए श्वान ॥ उपजशे ए गईजपणे जी, जार वहतो अप्रमाण ॥ १६ ॥ जुउं० ॥ क्लेश खमतो बहु तिहा कणे जी, काल करीने तस गेह ॥ नाडदिन्न चमाल जार्या जी, अणहिंगा कुखे रह्यो एह ॥ १७ ॥ जुउं० ॥ तेह नपुसक नीपनो जी, रूप दोर्जाग्य देखाय ॥ सिंहे मार्यो वली तेहने जी, कुखे घडाखणी थाय ॥ १८ ॥ जुउं० ॥ नाग मलीउं वाल कालमा जी, मरी वली उत्तदिन्न धाम ॥ दत्तिया दासी कुखे थयो जी, जातिअध नपुंसक नाम ॥ १९ ॥ जुउं० ॥ वामणो ने सहु परिजवे जी, ड्ण समे नयरनो दाह ॥ तेहमा मरी वली तेहनी जी, कुखे स्त्रीजव तणो लाह ॥ २० ॥ जुउं० ॥ राजमार्गे हण्यो हाथीए जी, निणे कर्यो तिहा थकी काल ॥ हवे तेह रजकनी जारजा जी, कालजणी नामे निहाल ॥२१॥ जुउं० ॥ तास कुखे थइ पुत्रिका जी, पामी हवे जोवनवेद ॥ उत्तरक्षित नामे रजकने जी दरिद्रीने दीधी महालेद ॥ २२ ॥ जुउं० ॥ गर्जवती थइ अनुक्रमे जी प्रसवनी वेदना तास ॥ पचत्व पामी निज मातनी जी, कुखे उपनो सुत खास ॥ २३ ॥ जुउं० ॥ तेहवे बालक कालमा जी, गधार सरिताने तीर ॥ रमतो रमतो गयो तिहा किंपे जी जेहमा उंडा बहु नीर ॥ २४ ॥ जुउं० ॥ उत्तदिन्न मत्र एह निप समे जी आवीउं नाम विलात ॥ कोटे शिला बाधी खेपजी जी, नदीय करशे ते घात ॥ २५ ॥ जुउं० ॥ जातिमदथी इणी बांधीउ जी, कर्मनुं ए असमान ॥ जव्य ने सिद्धिगामी खरो जी, पण न लह्यो बीजनान ॥ २६ ॥ जुउं० ॥ पापना कर्म दीसे नहीं जी, जोगवता महा डुःख ॥ दाख अपारनी एम कही जी, धर्म कहे धर्मथी सुख ॥ २७ ॥ जुउं० ॥ सर्व गाथा ॥ ३३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ आचारिय कहे पूछीउं, में केवलीने ताम, जलमरणें जाशे नहीं, पय समकित किण ठाम ॥ १ ॥ केवली कहे सुण तिहां थकी, पामी शुज परिणाम, सुरवर व्यंतर थायशे, आगम काले आम ॥ २ ॥ तिणे जवमां तीरथपति, आठम इण अजिधान, पासे समकित पामीउं, सुरतरु सिद्धि समान ॥ ३ ॥ नवगइ ज्रमण जमी करी, सावली जवसरख्यात, इण ग धारह जगवये, थाशे पृथवीनाथ ॥ ४ ॥ विद्याधर वैरागीआ, अमर तेज अणगार, तेहने पासे व्रत लेड, पालशे प्रीति अपार ॥ ५ ॥ केवलज्ञान लही करी, पामशे जवनो पार, सांजलीने हु समकीउं, राग गयो स मार ॥ ६ ॥ ए वैराग्ये आदर्यु, पूछी मात पिताय, चारित्र चोखे चित्तशु, इंद्रदत्त गुरुपाय ॥ ७ ॥ विजयसेन गुरु वर्णव्यो, चारु निज वैराग, साधु कहे गुणसेन सुणो, जला तमे महाजाग ॥ ८ ॥ पण तुम्हे आयु पूरवे, मोक्षनुं साधन मुऊ, मोक्षनुं साधन कहो मुने, जेह होवे अविरुऊ ॥ ए ॥

॥ ढाल बारमी ॥ हसलानी देशी ॥

॥ मोरा साहिब हो, श्री शीतलनाथ के ॥ ए देशी ॥

सूरि जाखे हो, सांजल नरनाह के ॥ मोक्ष थानक शाश्वत कह्यु ॥ जरा मरण ने हो, नहीं जनम ने रोग के ॥ शोकादिक उपद्रव सहु ॥ १ ॥ नाव दरिद्राय हो, ते जास सरूप के ॥ चौद राज्य शिर जे रह्या ॥ हवे मोक्षनुं हो, कहुं ताम उपाय के ॥ नाण दर्शन चरणज कह्या ॥ २ ॥ विहुं जेदे हो, साधु श्रावक धर्म के ॥ चार प्रकार गृही तणो ॥ पाच अणुव्रत हो त्रण गुणव्रत सार के ॥ चार शिक्षाव्रत एम गणो ॥ ३ ॥ मुनिराजनो हो, दशविध यतिधर्म के ॥ दोयनुं मूल दर्शन जणो ॥ ते दुर्लज हो, आठविध कर्म के ॥ तेह कर्म आठज सुणो ॥ ४ ॥ ज्ञानावरण ने हो बीजो दर्शनावरण के ॥ वेदनी मोह आयु वली ॥ नामगोत्रने हो अंतराय ए आठ के ॥ एहनो हेतु कहे केवली ॥ ५ ॥ मिथ्यात्व हो अविरति ने प्रमाद के ॥ वली कषाय जोग जाणीये ॥ तिहु हुविहा हो, उत्कृष्ट जघन्य के ॥ एक परिणामे ते आणीये ॥ ६ ॥ तीव्र परिणामे हो उत्कृष्ट प्रकार के ॥ आदि प्रजने अंतरायनी ॥ त्रीश सागर हो,

कोडाकोडी जाण के ॥ तेत्रीश सागर आयनी ॥ ७ ॥ सीत्तेरनी हो, मोहनी कोडाकोडी के ॥ वीश कोडाकोडी शेषनी ॥ मध्यमना हो, होय बहु परकार के ॥ थिति परिणाम विशेषनी ॥ ८ ॥ आठ आठनी हो, नाम गोत्र मुहूर्त्त के ॥ वेदनीयनी वार ते. शेषनी भिन्न हो ॥ मुहूर्त्त जहन्न के ॥ थिति बांधे एक वार ते ॥ ए ॥ घसना ने हो घोलना परकार के ॥ यथाप्रवृत्ति करणे करी ॥ बहु क्षय करे हो, आयु विण सग कर्म के ॥ कोडाकोडी एकज धरी ॥ १० ॥ इत्यादिक हो, विधि ग्रंथीभेद के ॥ रागद्वेषनी आकरी ॥ पामे समकित हो, करी अनिवृत्ति करण के ॥ छोडवे मोहनी चाकरी ॥११॥यत ॥ "जा गंठिता पढम, गंठि समइच्छओ भवे बीय ॥ अनिअट्टिकरण पुण, समत्त पुरस्कडे जीवे ॥ १ ॥' सम संवेग हो, निर्वेद अनुकंप के ॥ इत्यादि विस्तार बहु ॥ त्रण करणनो हो, कह्यो बहु अधिकार के ॥ कर्मपयडीथी जाणो सहु ॥ १२ ॥ अपराधी हो, उपर पण क्रोध के ॥ न करे जाणी विपाकने ॥ चक्री शक्रना हो, सुख ते दुःख रूप के ॥ जाणे तुल्य किंपाकने ॥ १३ ॥ शिवसुख विण हो, नवि इच्छे अन्य के ॥ अनुकंपा दुःखीनी करे ॥ द्रव्य भावथी हो, होय शुभ परिणाम के ॥ शंकादिक दूषण हरे ॥ १४ ॥ वली जाणे हो, सत्यने निःशंक के ॥ जे जिनवर भाखी गया ॥ थोडा कालमा हो, एहवा जे जीव के ॥ अव्याबाध सुखी थया ॥ १५ ॥ तेह समकिती हो, अनुक्रमे देशविरति के ॥ तव थूल व्रत अंगी करे ॥ बार व्रतने हो, तेहना अतिचार के ॥ वधबंधादिक नवि धरे ॥ १६ ॥ व्रत भंगा हो, कोड्यो गमे थाय के ॥ तेह सवि देशविरति गणो ॥ तेह वातो हो, बहु शास्त्र मझार के ॥ इहा थाये ग्रंथज घणो ॥ १७ ॥ हवे वो थइ हो, अनुक्रमे जीव के ॥ सरय सागर क्षय जब करे ॥ तव संजम हो कोइ उपशम श्रेणी के ॥ कोइ क्षपक श्रेणी करे ॥ १८ ॥ यत ॥ भणीय च ॥ "समत्तमिउ लद्धे, पलिय पुहुत्तेण सावओ होज्जा ॥ चरणोवसमक्खयाण, सागरसंखतरा हुंती ॥ १ ॥ पूरी क्षपकनी हो, थाये जब श्रेणी के ॥ घातिक्षये केवल लहे ॥ अघाति हो करी कर्मनो घात के ॥ सादि अनंत सुखमा रहे ॥ १ए ॥ एम सांभली हो, गुणसेन राजन के ॥ शुभ परिणाम अनंत दहे ॥ कर्म्म इंधणा हो वाली समकित के ॥ देशविरति भावे लहे ॥ २० ॥ कर जोडी हो,

गुणसेन लाग्यो अनिठो रे ॥ क्रो० ॥ गुणसेन नरपति उपरे कोप्यो, क्रोधने अज्ञाने लोप्यो रे ॥ ९ ॥ क्रो० ॥ पडिमा रह्यो मुनिवर परे राय, आवी देखीने क्रोध जराय रे ॥ क्रो० ॥ नरक अग्नि समी बलती धार, धूलिवृष्टि करे ते वार रे ॥ १० ॥ क्रो० ॥ ते वेलुथी डाकतो अंग, करी शमनाशु अति रंग रे ॥ शमतारस जरीयो ॥ चित्ते गुरु सत्वे सपत्तो, जिनप्रणीत धर्ममां रत्तो रे ॥ ११ ॥ शमता० ॥ शरीर मानस डुःख जिहां लहीये, संसारे सुलज डुःख कहीये रे ॥श०॥ डुक्कर धर्म तणी पडिवत्ति, जेहथी सुख लहीये झत्ती रे ॥ १२ ॥ श० ॥ जवसायर जमता जवलक्खे, डुर्लज धर्मरयण जे रक्खे रे ॥ श० ॥ जाम प्रजावे पालना राज्य, नवि लहीये डुःख समाज रे ॥ १३ ॥ श० ॥ जव अनादिमां धर्म म लहीउं, अनाजरण दोषे करी रहीउं रे ॥ श०॥ एहज सफल थयु सहु जगमां, विजयसेन आचार्यनी नगमां रे ॥ १४ ॥ श० ॥ पण मुज हृदय मांहि घणु सालें, डुःख दीधु पूर्वकाले रे ॥ श० ॥ अग्निशर्माने जली अवते, करी तपमां कदर्थना घते रे ॥ १५ ॥ श० ॥ आदरयां मैत्रीजाव में तेहशु, सहु जीवथी विशेषे एहशु रे ॥ श० ॥ शुज परिणाम वधारो करता, तिणे पापीए रजशु जरता रे ॥ १६ ॥ श० ॥ आयु पूरे कीधो विनिपात, पण न थयो धर्म व्याघात रे ॥ श० ॥ चंडानन विमानमां जाय, सौधर्मे सागर एक आय रे ॥ १७ ॥ श० ॥ उत्पत्ति देव तणी इहां कहीयें, जेम सूत्रसिद्धांते लहीये रे ॥ श० ॥ ते विधि संक्षेपे सुणो सयणा, जिनवर जाषित जे वयणा रे ॥ १८ ॥ श० ॥ चोठमी ढाले चातुर पुण्ये, सत्यो दृढ परिणामज रूपें रे ॥ श० ॥ पद्मविजय कहे गुणसेन राजा, जाणो समरादित्य जीव ताजा रे ॥ १९ ॥ श० ॥ सर्व गाथा ॥ ४२५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ संक्षेपे करी सुर तणी, वात कहु विस्तार,
श्रुतसायरथी समजजो, अधिको जे अधिकार ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

पुण्य प्रशंसीये ॥ ए देशी ॥

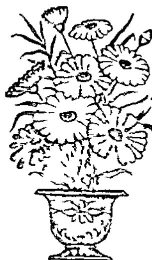
इंद्रधनुष जिम विजली रे जिम गगने घनवान ॥ तिम इहां माहे सुर तणो रे, शय्यामां उत्पातो रे ॥ १ ॥ पुण्य प्रशंसीये ॥ शय्याये तेह

उपजे रे, मूकी इह नवदेह ॥ दिव्य ते अंतरमुहूर्त्तमा रे, सुरनव शक्ति एह रे ॥ २ ॥ पु० ॥ गीत गाये देवांगना रे, कुसुमवृष्टी करे तेह ॥ वीणानाद विनोदथी रे, नाटक करती जेह रे॥ ३ ॥ पु० ॥ सिंहनाद सुर वर करे रे, हरखे देखी रे तास ॥ सुरनव दुर्लन पामीआ रे, जाणी होय उल्लास रे ॥ ४ ॥ पु० ॥ अनुनवतो पंच विषयने रे, हररयो उठे रे देव ॥ देवदृष्य जे वस्त्र ठे रे, ते मूके ततखेव रे ॥ ५ ॥ पु० ॥ परिकर प्रेम पमाम्तो रे, दिव्यरूप धर जेह ॥ पूरो शारद शशी परे रे, सहु जय जय ते करेह रे ॥ ६ ॥ पु० ॥ देव देवांगना सहु नमे रे, जय जय शब्द करत ॥ थुणता सुर सुरी देखीने रे, एम चित्त माहिं धरत रे ॥ ७ ॥ पु० ॥ शु होम्यु शु दीधलु रे, पाम्यो ए फल जास ॥ दीये उपयोग अवधि तणो रे, परनव जाणी ते खास रे ॥ ८ ॥ पु० ॥ पूठे सामानिक सुर प्रते रे, कहो मुक करणी जेह ॥ जिनप्रतिमा दाढा तणी रे, पूजा करो कहे तेह रे ॥ ए ॥ पु० ॥ वाची पुस्तक रतना रे, लेइ धर्म व्यवसाय ॥ सुरवरवृंदे परिवर्यो रे, सिद्धायतने जाय रे ॥ १० ॥ पु० ॥ पूजा करे जिनराजनी रे, फूलपगर वर धूप ॥ काव्य शक्रस्तवथी स्तवी रे, नक्ति दिखावे अनूप रे ॥ ११ ॥ पु० ॥ दाढ तणी पूजा करे रे, टाले अशातना त्यांहि ॥ सूर्यान सुरनवनी परे रे, रायपसेणी माहिं रे ॥ १२ ॥ पु० ॥ विजयदेव अधिकार ठे रे, जीवानिगमे प्रसिद्ध ॥ जबुद्वीपपन्नत्तिए रे, बहु सुरे पूजा कीध रे ॥ १३ ॥ पु० ॥ नंदीसर मेरु तणी रे, प्रतिमा नमीआ रे होय ॥ इहां नमी तेह अशाश्वती रे, चारण मुनिवर दोय रे ॥ १४ ॥ पु० ॥ नगवती वीशमा शतकमा रे, नारव्यो ए अधिकार ॥ तेम दशमे दाढा तणी रे, आशातन पण नार रे ॥ १५ ॥ पु० ॥ एम बहु सुर अधिकार ठे रे, तिम नावना रे सार ॥ तिणे जिनपूज माने नहीं रे, एखे तस अवतार रे ॥ १६ ॥ पु० ॥ हवे जे जागी मनोहरु रे, देखावे सुर तास ॥ देवांगना हावनावने रे, करती करे विलास रे ॥ १७ ॥ पु० ॥ पंच विषय सुख नोगवे रे, ते वर दिव्य विमान ॥ वली तीरथयात्रा करे रे, वंदे प्रजु विहरमान रे ॥ १८ ॥ पु० ॥ समकितदृष्टि सुर तणी रे, नाखी करणी एह ॥ चंद्रानन विमानमा रे, सुख नोगवे सुर तेह रे ॥ १ए ॥ पु० ॥ सुरसुंदरी साथे नला रे, पूरण सागर एक ॥ संपूरण सुख नोगवे

रे, धारे अतिहि निवेक रे ॥ २० ॥ पु० ॥ इणी परे प्रथमज नव कह्यो रे, सुरनर सहित रसाउ ॥ श्रीसमरादित्य रासनी रे, पन्नरमी ए ढाल रे ॥ २१ ॥ पु० ॥ श्रीविजयसिंह सूरींदना रे, सत्यविजय पन्यास ॥ कपूरविजय तस पाटवी रे, खिमाविजय तस खास रे ॥ २२ ॥ पु० ॥ तास शिष्य जिनविजयजी रे, उत्तमविजय तस शिष्य ॥ खींमनी नगर प्रारंभीउं रे, रास ए विसवावीस रे ॥ २३ ॥ पु० ॥ संवत् जाणी अढारसें रे, वली उंगणचालीश ॥ माड्यो आशो वदि त्रीज दिने रे, पद्मविजय सुजगीश रे ॥ २४ ॥ पु० ॥ कार्तिक सुदि आठम दिने रे, संपूरण थयो खंड ॥ संघ अखंडपणे सुख्यो रे, पामी पुण्य प्रचंड रे॥२५॥पु०॥ सर्व गाथा ॥४५१॥

॥ इति श्रीसंविज्ञपक्षीयपण्डितप्रवरश्रीमदुत्तमविजयशिष्यपंडितपद्मविजयविरचिते श्रीसमरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे गुणसेनाग्निशर्माभिधानयो प्रथमभव समाप्त ॥ १ ॥

॥ इति श्रीसमरादित्यचरित्रे प्रथम खंड संपूर्ण ॥ १ ॥



॥ अथ द्वितीयखंम प्रारंभ ॥



॥ दोहा ॥

सोळसमा जिन समरीये, शांतिनाथ सुखकार, परभव जिणे पारेवडु, उगार्यु उपकार ॥ १ ॥ गुणसेन अग्निशर्मा तणो, निदाणद हवे सार, पिता पुत्र प्रेमे करी, वर्णवशु विस्तार ॥ २ ॥ सांभळजो श्रोता सवे, आळस अंग उतार, तेर काठी आ माहि ते, प्रथम आळस परकार ॥ ३ ॥ विकथा वर्जो तेम वली, न करो विकथा जेण, वितथा ते विकथा वदे, स्वपर न सांभळे तेण ॥ ४ ॥ तेम निद्रा न करो तुमे, निद्राथी श्रुतनाश, सूतां श्रुत पण सुवे, श्री सिद्धांते भास ॥ ५ ॥ तिणे निद्रा विकथा तजो, आलस न करो अंग, सांभळता जे समजशे, ते लहे ज्ञानतरंग ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ ललनानी देशी ॥

जंबूद्वीप सोहामणो, तेहमां खेतर सात ॥ ललना ॥ भरत ने हिमवंत जाणीये, वली हरिवर्ष विख्यात ॥ ल० ॥ १ ॥ जं० ॥ महाविदेह रम्यग त था, छठु ऐरण्यवत धार ॥ ल० ॥ ऐरवत खेतर सातमु, मेरु विदेह मझार ॥ ल० ॥ २ ॥ जं० ॥ महाविदेह दोय भेदथी, पूर्व पश्चिम जाण ॥ ल० ॥ पश्चिम महाविदेहमां, जयपुर नगर वखाण ॥ ल० ॥ ३ ॥ जं० ॥ सुरपुरी सम नगरी तिहां, आराम ने उद्यान ॥ ल० ॥ गुण जेहना न गणी शके, भूतलतिलक समान ॥ ल० ॥ ४ ॥ जं० ॥ रूपाळी रमणी जिहां, महिला गुण असमान ॥ ल० ॥ परद्रव्य लेवा नर जिहां, संकोचे निज पाणि ॥ ॥ ल० ॥ ५ ॥ जं० ॥ परछिद्र जोवाने आंधला, परस्त्री उपर क्लीव ॥ ॥ ल० ॥ पर अपवादने बोलवा, जाणे मूक अतीव ॥ ल० ॥ जं० ॥ ६ ॥ पर उपगार परायणा, एहवा जन समवाय ॥ ल० ॥ पुरुषदत्त तिहां राजीउं, प्रजालोक सुखदाय ॥ ल० ॥ ७ ॥ जं० ॥ राणी श्रीकंता तेहने, भोगवे भोग रसाल ॥ ल० ॥ एणे अवसर ते देवता, चवीउं आउने काल ॥ ल० ॥ ८ ॥ ॥ जं० ॥ श्रीकंता उरे अवतर्यो, दीठु स्वपन ते रात ॥ ल० ॥ सिंहकि शोर सोहामणो, वदने उदर आयात ॥ ल० ॥ ९ ॥ जं० ॥ निर्धूम अग्नि

ज्वाला समो, केशरनो आटोप ॥ ल० ॥ स्फटिक हस सम उजलो, पिंगनेत्र विण कोप ॥ ल० ॥ १० ॥ ज० ॥ मध्यजाग जस पातलो, पहोलु वक्षस्थल जास ॥ ल० ॥ दीर्घ कुंडलित पूछडु, कटितट कठिन विशाल ॥ ल० ॥ ११ ॥ ज० ॥ एम हरि स्वपने देखीने जागी कहे जरतार ॥ज०॥ पुत्र पराक्रमी होयशे, संपद होशे अपार ॥ ल०॥ १२ ॥ ज०॥ सांजली हर्ष ते पामती, सुखमा काढे काल ॥ ल० ॥ गर्जप्रजावे दोहला, उपजे पुण्य-विशाल ॥ ल० ॥ १३ ॥ ज० ॥ अजयदान सहु सत्वने मुनिने उपष्टंज दान ॥ ल० ॥ दीन अनाथ कृपण प्रत्ये संपदा देउ अमान ॥ ल० ॥ १४ ॥ ज० ॥ जिनवर सयले देहरे पूजा करु बहु जक्ति ॥ ल० ॥ वात सुणावी वल्लने, ते पूरे निज शक्ति ॥ ल० ॥ १५ ॥ ज० ॥ ते देखी प्रजा सवे, हर्ष घणो पामंत ॥ ल०॥ धर्मकार्य करता थका, नव महीना वोलंत ॥ ल० ॥ १६ ॥ ज० ॥ शुज लग्ने सुत जनमीउं, कर पद कोमल काय ॥ ल० ॥ सयल प्रजा मन सुख थयु, मातने हर्ष न माय ॥ ल० ॥ १७ ॥ ॥ ज० ॥ शुजकरा दासी हवे नृपने वधाइ खाय ॥ ल० ॥ पुत्रजन्मथी हरखीउं, हवे दीये दान ते राय ॥ ल० ॥ १८ ॥ ज० ॥ बंधन मोचनादिक तिहां उंछव वली नरींद ॥ ल० ॥ नगर मार्ग शणगारीआ, उपजो छे आणंद ॥ ल० ॥ १९ ॥ ज० ॥ शणगारी हाट शेरीउं, मंगल तूर वाजंत ॥ ल० ॥ कुंकुमजले पथ सिंचीआ, कुसुम सर्वत्र धरंत ॥ ल० ॥२०॥ ॥ ज० ॥ एम महोछव करता थका, मास थयो तव नाम ॥ ल० ॥ सिंहकुमार सोहामणो थापे नंन अजिराम ॥ ल० ॥ २१ ॥ ज० ॥ पुण्ये प्रपथी लोकने नयण मने आणंद ॥ ल० ॥ देतो जोबन पामीउं, सरस कला गुणवृंद ॥ ल० ॥ २२ ॥ ज० ॥ एम समरादित्य गमना बीजे गडे ढाल ॥ ल० ॥ पहेली पद्ये कही जली, सुणता मंगलमाल ॥ ल० ॥ ॥ २३ ॥ ज० ॥ सर्व गाथा ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आव्यो यौवन ते अन्यदा, रति देखावी नारी, मदन गिरीसुन्दर मूकतो दिये लोक विचार ॥ १ ॥ कोयल कोलाहल करे जय जय नन्दने राज, विरह जनल धमज वनो, भ्रमर आन्न मानुं व्राज ॥ २ ॥

खेमा नव योजनी रे लो, मानलजो मद्द कोय रे ॥ ठ० ॥ २८ ॥ पु० ॥ बीजे खंडे एम कही रे लो,बीजी ढाल रसाल रे ॥ २०॥ पद्म कहे श्रोता सुणो रे लो, सुणना मगलमाल रे ॥ ठ० ॥ २९ ॥ पु० ॥ सर्व गाथा ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मदनलेखा कहे मानिनी, ल्यो कर मुक तंबोल, विश्रामण करु तुज पगु, मन धरिने तें बोल ॥ १ ॥ एण अवसर मुक अवरशु, काम नहीं सुण भाव, मन्दिरनी पर जठण रंगे, सदा तिहां शुच गाय ॥ २ ॥ कुसुमावली घर [illegible], [illegible] मनारी, कपुरबीडु कर दीध, मदनलेखा सुकु मारी ॥ ३ ॥ कथा [illegible] कौतुक करी, निजगे निजती वाय, शून्य हमारो [illegible], [illegible] ते नित्त लाय ॥ ४ ॥ अने विकार चित्त एहने, तेणे [illegible] वात, एम चिंती पुछु एणे, सुणी बहेनी सुखशात ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ बारी कुंवी अति नवी मनतमरा रे ॥ ए देशी ॥

॥ मदनलेखा कहे एणी परे ॥ सुण बेहेनी रे ॥ वसत क्रीडा गया आज ॥ तुमे सुणो बेहेनी रे ॥ अचरिज काठ दीठु तिहां ॥ सु० ॥ तर दोषी धरी लाज ॥ तु० ॥ १ ॥ क्रीडा सुदर उद्यानमा ॥ सु० ॥ रति विर हित पचबाण ॥ तु० ॥ रोहिणी विरहित चंद्रमा ॥ सु० ॥ मानु दीठो [illegible] ॥ तु० ॥ २ ॥ शचि विरहित जिम हरि होये ॥ सु० ॥ म [illegible] विनु कामराज ॥ तु० ॥ सोवन वरण शरीर छे ॥ सु० ॥ पाय अगु ली सुकमाल ॥ तु० ॥ ३ ॥ गूढशिरा पिंडी हती ॥ सु० ॥ मणहर मोरडी [illegible] ॥ तु० ॥ [illegible] सुंदर अति ॥ सु० ॥ पण पर नारी छुबार ॥तु०॥ ॥ ४ ॥ [illegible] सोहता ॥ सु० ॥ विपुल कटितट नाग ॥ तु० ॥ [illegible] अति पातलो ॥ सु० ॥ हृदय विशाल विभाग ॥ तु०॥ ५ ॥ [illegible] ॥ सु० ॥ [illegible] ते अतिपुष्ट ॥ तु० ॥ शुभ रेखाए [illegible] ॥ सु० ॥ [illegible] ॥ तु० ॥ ६ ॥ [illegible] ॥ सु० ॥ [illegible] ॥ तु० ॥ सम श्रेणी दत ते उज्जला ॥ सु० ॥ [illegible] ॥ तु० ॥ ७ ॥ दीर्घ विशाल माहि रक्तता ॥सु०॥ [illegible] ॥ तु० ॥ श्रवण सुमगन जेटला ॥ सु० ॥ पहेरी सु- [illegible] ॥ तु० ॥ ८ ॥ [illegible] कुलव नवा ॥ सु० ॥ चदन न

च्युं अग ॥ सु० ॥ निर्मल वस्त्र सूक्ष्म घणा ॥ सु० ॥ भूषारयण उत्तमांग ॥ सु० ॥ ए ॥ शुं कहीये घणुं तेहनु ॥ सु० ॥ जाणीये रूपनु रूप ॥सु०॥ लावण्यनु लावण्य मानु ॥ सु० ॥ तरुणनु तरुण अनूप ॥ सु० ॥ १० ॥ मनोरथनो मनोरथ जाणु ॥ सु० ॥ नृपसुत सिद्धकुमार ॥ सु० ॥ मदनलेखा सुणी चिंतवे ॥ सु० ॥ राग ए जुगते वार ॥ सु० ॥ ११ ॥ अथवा कमलाकर विना ॥ सु०॥ लक्ष्मी न करे वास ॥ सु०॥ कुसुमायुधने रति विना ॥ सु० ॥ नहीं कोइ योग्य ते खास ॥ सु० ॥ १२ ॥ सुबुद्धि रायशु मंत्रतो ॥ सु० ॥ सांजल्यो आज विचार ॥ सु० ॥ कुसुमावली कहे ते कह्यो ॥ सु० ॥ मदनलेखा कहे सार ॥ सु० ॥ १३ ॥ देवी प्रेषणने हु गइ ॥ सु० ॥ तिहां सांजली ए वात ॥ सु० ॥ सुबुद्धि कहे रायने ॥ सु० ॥ पुरुषदत्त नृप ख्यात ॥ सु० ॥ १४ ॥ काजे सिद्धकुमारने ॥ सु० ॥ कुसुमावली दीठं अम्ह ॥ सु० ॥ बहु बहु आग्रहथी करु ॥ सु० ॥ मुजने ते कथु तुम्ह ॥ सु० ॥ १५ ॥ वली एम मुजने जाखीयु ॥ सु० ॥ एवरवधू सजोग ॥ सु० ॥ अन्य अन्यने योग्य छे ॥ सु० ॥ एह प्रशंसे लोग ॥ सु० ॥ १६ ॥ अलिक कोप करी सांजती ॥ सु० ॥ कुसुमावली कहे ताम ॥ सु० ॥ हर्ष धरी मनमां कहे ॥ सु० ॥ शु असबध कहे आम ॥सु०॥ ॥ १७ ॥ मदनलेखा कहे जूठ शु ॥ सु० ॥ हसी हसने लाग ॥ सु० ॥ जुत वात छे नृप कहे ॥ सु० ॥ सुण मंत्री महाजाग ॥ सु० ॥ १८ ॥ इण अवसरे आवी तिहां ॥ सु० ॥ कुसुमावलीने पास ॥ सु० ॥ पाठविया दासी जली ॥ सु० ॥ उद्यानपाली ते खास ॥ सु० ॥ १९ ॥ राये कथु तुम मातने ॥ सु० ॥ मात कहावे तुज ॥ सु० ॥ जवन उद्यान शोजा करो ॥ सु० ॥ ए आणा छे मुज ॥ सु० ॥ २० ॥ राजकुमर सिद्ध नाम जे ॥सु०॥ आवशे रमवा आज ॥ सु० ॥ कुसुमावली तेह सांजली ॥ सु० ॥ कहे धन्य दिन थयो आज ॥ सु० ॥ २१ ॥ बीजे खंमे एम कही ॥ सु० ॥ त्रीजी ढाल रसाल ॥ सु० ॥ पद्मविजय कहे सांजलो ॥ सु० ॥ आगल प्रीति विशाल ॥ सु० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ७७ ॥

॥ दोहा ॥

सांजली जाख्यु सत्य ते, उठी सज्यु उद्यान, ते[illegible]
माए मेल्यु तान ॥ १ ॥ [illegible] करयो [illegible]

नि० ॥ १६ ॥ शु संसारमा सार छे, ते चित्त विचारो रे लो ॥ अहो ते०॥ वलीय विशेषे सांजलो, माहरो अधिकार रे लो ॥ अहो मा० ॥ १७ ॥ अवधिज्ञानीए जाणीयु, निज चरित्र रसाल रे लो ॥ अहो नि० ॥ ते मुज हेतु वैराग्यनु, सांजली नूपाल रे लो ॥ अहो सां० ॥ १८ ॥ कुंवर कहे प्रजु दाखीए, अवधिमुनि चरित्त रे लो ॥ अहो अ० ॥ गुरु कहे सांजल नरपति, कहु तेह पवित्त रे लो ॥ अहो क० ॥ १९ ॥ बीजे खंमे पांचमी, कही उत्तम ढाल रे लो ॥ अहो क० ॥ पद्मविजय कहे सां-जलो, घणी वात रसाल रे ॥ अहो घ० ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ १४५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणहिज विजयमा रायपुर, हु तिहांनो रहेनार, जवस्वरूप में जाणीठ, न खहु रति निर्धार ॥ १ ॥ विरक्त रहुं वैरागीउं,आव्या तव अणगार, साधु बहु शिरोमणि, विचरता करे विहार ॥ २ ॥ अमरगुप्त आचार्यने, उपनु अवधिज्ञान, थोमा दिन तेहने थया, धरता धर्मनुं ध्यान ॥ ३ ॥ वात लोकमा विस्तरी, अहो तपस्वी एह आश्रव करया अलगा डणे, ज्ञान तणो ते गेह ॥ ४ ॥ धर्मदेशना सांजलीया, जाणे नृपति जाम, नगरलो-कशु नरपति, आवे वंदन आम ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठही ॥

गेव सागरसी पाल उंची दोय नागरी ॥ म्हारा लाल ॥ ए देशी ॥

॥ अरिमर्दन नरपतिने धर्मलाज दीउं ॥ मारा लाल ॥ नरपति नगर-लोक सहु चित्त आणदीउं ॥ मा० ॥ गुरुवच सुणवानो हर्ष घणो मनमा धरे ॥ मा० ॥ पूठे सुखविहार मुनिने शुज परे ॥ मा० ॥ १ ॥ फरी पूठे नृप जाण नाण तुम अति घणु ॥ मा० ॥ कण काल भादक ठंरिनाण ते तुम तणु ॥ मा० ॥ करी उपकार कहो गुरु सनहिन कर खया ॥ मा०॥ शाश्वत सुख तस्वीज परिणाम तेहना कह्या ॥ मा० ॥ २ ॥ देशविरति पाम्या इणे जव के परजवे ॥ मा० ॥ साधुपणु पण कर खया, निम खया जर नवे ॥ मा० ॥ चपावास पुरी एह विजयमा मुनि कहे ॥ मा० ॥ सुधणु नाम गाथापति अतीनरातो रहे ॥ मा० ॥ ३ ॥ धणसिरी नामे घरणी तेहनी हु सुना ॥ मा० ॥ तेह नयर निवासी नदनपसा हुता ॥ मा० ॥ तेहनो सुत रुद्रदेव आपी मुज तेहने ॥ मा० ॥ यौवनवय अनु-

रूप विषयसुख गेहने ॥ मा० ॥ ४ ॥ एणे अवसर तिहां विहार अनु
क्रमे आवीया ॥ मा० ॥ तप संयमश्री आतम जली परे जावीआ ॥ मा
रूप थकी मानु शासनदेवता देखीए ॥ मा० ॥ अनरखे करी शोजि
गुरुणी पेखीए ॥ मा० ॥ ५ ॥ बालचन्द्रा नामे चन्द्रातप शीतल घणु
मा० ॥ दीठा शमसुख पुंज मानु तेहनु तणु ॥ मा० ॥ सासरेथी पीअ
जाता मुज एम थयु ॥ मा० ॥ ते देखी मुज मोदथी तनु पुलकित ज
॥ मा० ॥ ६ ॥ लोयण थया विकस्वर पाप नासी गया ॥ मा० ॥ उल्लस
अंग धर्म चित्त उल्लस्यु धन्य थया ॥ मा० ॥ करकज जोडी विनय धरी
पाये पडी ॥ मा० ॥ दीधो तेणीए धर्मलाज मानुं सफली घडी ॥ म
॥ ७ ॥ जक्तिप्रीतिथी तेहनुं आलय पूछीयु ॥ मा० ॥ ते साहुणीए
ताव्यो तिहां चित्त मूर्छीयु ॥ मा० ॥ उचित विधे हु एहनी सेवा नि
करु ॥ मा० ॥ जाणु जिम तिम हु जवसायर निस्तरु ॥ मा० ॥ ८ ॥
जगवतीए धर्म कह्यो जिन जाखीउं ॥ मा० ॥ शिवसुख फल वृक्ष चित
मणि परे दाखीउं ॥ मा० ॥ कर्मनो क्षय उपशम थयो समकित पामी
॥ मा० ॥ जाव्यो जिनधर्म जव चारक चित्त वामीउं ॥ मा० ॥ ए ॥ ह
मुज पति कर्मदोषथी द्वेष करे घणो ॥ मा० ॥ कहे तु धर्म ए ग
विषय विघ्न कारणो ॥ मा० ॥ मे कह्यु विषयसुखे सखु दारुण प
कह्या ॥ मा० ॥ ते कहे दृष्ट मूकी अदृष्ट कोणे लह्या ॥ मा० ॥ १० ॥
कह्यु पशु साधारण विषयमा शु लह्यु ॥ मा० ॥ प्रत्यक्ष सुख फल धर्म
दृष्ट ते किम कह्यु ॥ मा० ॥ एम कह्याथी अधिक द्वेष मुजशु करे ॥ म
॥ जोग तज्यो मुज साथ विवाह बीजो मन धरे ॥ मा० ॥ ११ ॥ ना
देवधूआ नागसिरी कन्या जली ॥ मा० ॥ पण तस ताते न दीधी
पिया जय कली ॥ मा० ॥ रुद्रदेव मन चिंतवे जीवता एहने ॥ मा
नवि दीए बालिका कोड करु शु तेहने ॥ मा० ॥ १२ ॥ मायाच
करी मारु एहने हवे ॥ मा० ॥ एम चिंती घट माहिं आशीविष सठवे
मा० ॥ घर एक खूणे ठोडी जणे रयणी समे ॥ मा० ॥ ए नव घटमा
कुसुममाल लावो तुमे ॥ मा० ॥ १३ ॥ हु अणजाणती तेह लेवा
जेटले ॥ मा० ॥ हाथ घाल्यो तिहां नाग डस्यो मुज तेटले ॥ मा
सत्रमथी ते नाठी दीउं जानीने एम कहे ॥ मा० ॥ करड्यो नाग

सांजली रुद्रदेव लवे ॥ मा० ॥ १४ ॥ नियमीथी आकुलव्याकुल थइ कोलाहल करे ॥ मा० ॥ मुफने विषना वेग अति डु समा धरे ॥ मा० ॥ परवश थइने हु तो तिहा धरणी ढली ॥ मा० ॥ परम अवाच्य अवस्था पामी चेतना चली ॥ मा० ॥ १५ ॥ समकितना परजावथी काल करी तिहा ॥ मा० ॥ सोहमे लीलावतस विमान अछे जिहा ॥ मा० ॥ पल्योपमस्थिति देवपणे हु उपनो ॥ मा० ॥ अप्सरा परिवृत दिव्य जोग मुफ निपनो ॥ मा० ॥ १६ ॥ रुद्रदेव परण्यो हवे नागदत्तधूआ ॥ मा० ॥ जोगवी विषयने काल करी नरके हुआ ॥ मा० ॥ रत्नप्रजाए खरूपमा नरकावासमा ॥ मा० ॥ पल्योपमने आयुखे डु ख आवासमा ॥ मा० ॥ १७ ॥ देवलोकमाथी चवी हुं थयो गजवरु ॥ मा० ॥ एहज विजयमां सूसमार रण सुदरु ॥ मा० ॥ सूसमार तिहा परवत माहि क्रीमा करु ॥ मा० ॥ नरकमाथी रुद्रदेव आव्यो अनतरु ॥ मा० ॥ १८ ॥ तेहज नगरमा थयो सूडो सोहामणो ॥ मा० ॥ बालअवस्था गये थयो जनमन कामणो ॥ मा० ॥ नलवनमा विचरंतो गजवर तिण समे ॥ मा० ॥ बहु करिणीशु आवीने ते शुक जिहा रमे ॥ मा० ॥ १९ ॥ मुफने रमतो देखीने द्वेष ते आवीउ ॥ मा० ॥ पूर्वजव अज्यासथी वेरशु जावीउ ॥ मा० ॥ चिंतवे ए करी एहवु सुख किम जोगवे ॥ मा० ॥ बचावु ए सुख थकी तो डु ख जोगवे ॥ मा० ॥ २० ॥ सोसे उपाय घणा पण तेहने नवि जमे ॥ मा० ॥ लीलारति विद्याधर एहवे आवी चमे ॥ मा० ॥ मृगाकसेन विद्याधरनी जगिनी हरी ॥ मा० ॥ चन्द्रलेखा इण नामे तेहनो जय धरी ॥ मा० ॥ २१ ॥ गिरि निकुजमां रहीश हु एम शुकने कहे ॥ मा० ॥ एक विद्याधर आवशे ते जिम नवि लहे ॥ मा० ॥ तिम करजे मुफने नवि दाखजे तु खरो ॥ मा० ॥ कहेजे आवीने मुफ तेह गये परो ॥ मा० ॥ २२ ॥ हु पण तुफ उपगार करीश इण अवसरे ॥ मा० ॥ ते जखु काम करु मुफ जाणीश एणी परे ॥ मा० ॥ छठी ढाल ए बीजा खन्म माहि कही ॥ मा० ॥ पद्मविजय कहे सांजलो आगल गहगही ॥ मा० ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ १७३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम कही विद्याधर गयो, महानिकुज मजार [illegible]ने अथ अव-

नीए, रह्यो ते सुख आधार ॥ १ ॥ नारिंगपादपे नीमर्मा, शुक रहे छे सुसमाधि, विद्याधर हवे आवीउं, मृगाकसेन असमाधि ॥ २ ॥ जोयु चिहु दिश जेटले, नवि दीठु तस नाम, गयो एण अवसरे गयवरु, आव्यो हथणीशु आम ॥ ३ ॥ मुज देखी चिंत्यु मने, अवसर छे ए आन, समीहित माहरु साधवा, करु मायाए काज ॥ ४ ॥ सूकीशुं समजण सवे, करी आव्यो मुज कान, सूडीने कहे साजले, ज्ञानीए जाएयु ज्ञान ॥५॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ मोरा आतम राम कुण दिन शेत्रुजे जाशु ॥ ए देशी ॥

॥ सूममार ए पर्वतमा छे, सर्व कामित एण नामे ॥ ऊपापात करे तिहा जइने, जे वाछे ते पामे ॥ मोरी साजल वात ॥ अवसर एह छे रूमो ॥१॥ ॥ ए आकणी ॥ तव पूछे सूकी सुणो स्वामी, तेह वतावो ठाम ॥ शुक कहे शीतल ए तरुवरथी, जइये पासे वाम ॥ २ ॥ मो० ॥ तिणे कारण सुणी आपण थइए, विद्याधर मन धारी ॥ तिर्यंचना जवथी हवे सरीयु, चालो तमे शुज नारी ॥ ३ ॥ मो० ॥ जइने ऊपापात ते करीये, सूकीए वात स्वीकारी ॥ एम करी ऊपापात ते कीधो, गजवरे पण चित्त धारी ॥ ४ ॥ मो० ॥ जइने कहु लीलारति खगने, आवी गयो तुज वेरी ॥ तव लीलारति नीकल्यो तिहाथी, चडलेरा लेइ खयरी ॥ ५ ॥ मो० ॥ आकाशे जातो ते दीठो, मनमा धाल्यु साचु ॥ जुउं सूको सूकी लह्या नरजव, ए तीरथ नहीं काचु ॥६॥ मो० ॥ ए तिर्यंचना विद्याधर थया, जोता वार न लागी ॥ ते कारण ए तीरथ साचे, म्हारी पण लय लागी ॥ ७ ॥ मो० ॥ देव तणी प्रणिधि करी मनमा, अमे पण इहा पमीये ॥ ए तिर्यंचनो जव ठामीने, देव तणी गति चढीये ॥ ८ ॥ मो० ॥ एम चिंतीने तिहा अमे पमीया, शुकयुग तिहा चाल्यु ॥ कपटे करीने अमे छेतरीआ, पण नवि नयणे जाल्यु ॥ ९ ॥ मो० ॥ चूरण थया अमे अग उपागे, पाम्या बहु तिहा क्लेश ॥ पण यकामनिर्जराए खपीआ, कर्म घणा सुविशेष ॥ १० ॥ मो० ॥ कुसुमशेखर नामे व्यतर पूरे, पल्योपम ऊणुं देशे ॥ एहवो व्यतर सुर हाथी थयो, अध्यवसाय विशेषे ॥ ११ ॥ मो० ॥ उदार जोग जोगवु तिहा हु पण, सूको पण तिहा मरीने ॥ लोहितमुख नामे रत्नप्रजाए, उपनो नीयकी करीने ॥ १२ ॥ मो० ॥ पल्यो

पम देशे जपी स्थिति, हवे हु व्यंतरदेव ॥ एहवी देहे अन्य विजयमा, चक्रवालपुर हेव ॥ १३ ॥ मो० ॥ अप्रतिहत चक्र सार्थवाहने, सुमंगला नामे नार ॥ तेहनी कुखे पुत्र हु हुओ, विनयी गुणजकार ॥ १४ ॥ मो० ॥ चक्रदेव मुक अजिधा ठवीउ, पाम्यो बालकजाव ॥ उदवर्यो नारक शुक एहवे, आयुजवे तिहां ताव ॥ १५ ॥ मो० ॥ तेह नयरमा एक पुरोहित, सोमशर्मा तस नारी ॥ नंदिवर्द्धना तेहनी कुखे, उपनो सुत अवतारी ॥ १६ ॥ मो० ॥ कालक्रमे यज्ञदेव ठव्यु अजिधा, कुवरजाव ते पाम्यो ॥ म्हारे तेहने प्रीति वनी तब, हुओ अति विश्रामो ॥ १७ ॥ मो० ॥ पण घणी प्रीति म्हारे मनजावे, एह तो कपटे राखे ॥ पूर्वना अन्यास कर्मना, दोष ए नजरे दाखे ॥ १८ ॥ मो० ॥ सरल घणो हुं पण ए वांको, म्हारी संपदा देखी ॥ मत्सर धरे वली धवे ठजवी, ठिद्र तणो वली पेखी ॥ १९ ॥ मो० ॥ यत ॥ ' खल सत्क्रियमाणोऽपि, ददाति कलहं सता ॥ दुग्धधौतोऽपि किं याति, वायस कलहंसता ॥ १ ॥ " न जव्यु ठिद्र विचारे निवारे, एम ए ठजी नवि शकीये ॥ तेणे ह्वा एह उपाय ते कीजे, जिम डणे ह्वा नव टकीये ॥ २० ॥ मो० ॥ चंदन सारथवाहना घरथी, लावु डव्य हु मूषी ॥ मूकवा आपुं एहना घरमा, राखशे ए पण हुशी ॥ २१ ॥ मो० ॥ नृपतिने सजलावीश जइने, राजा दंम ते देशे ॥ मारशे कूटशे ने वली एहनु, घर पण लूटी लेशे ॥ २२ ॥ मो० ॥ जेम चिंतव्यु तेम कामज कीधु, लावी डव्य मुक पासे ॥ मित्र सुणो ए डव्य मुक राखो, गोपवजो मुक आसे ॥ २३ ॥ मो० ॥ कुवेलाए लाव्यो तेणे शस्यो, डव्य न राख्यु जाम ॥ तोपण दाक्षिण्यता घणी आणी, डव्य गोपव्यु ठाम ॥ २४ ॥ मो० ॥ सज्जन तेहज सज्जन होवे, खल ते दुर्जन थाय ॥ काक ते काळा सघळे देखो, शुक नीला सुखदाय ॥ २५ ॥ मो० बीजे खंडे सातमी ढाळे, पद्मविजय एह दाख्यो ॥ कस्तूरी ने हिंग पटंतर, नविजने चित्तमा राख्यो ॥ २६ ॥ मो० ॥ सर्व गाथा ॥ २०१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नयरमा जनरव नीकल्यो, शेठ चंदन सथवाह ॥ [illegible] मूष्यु तेहनुं घणु, हरीयु डव्य अथाह ॥ १ ॥ सांजली मुक [illegible] देव गेह, पूछ्यु में परपंचीने, ए किम पणी [illegible]

[illegible] मुजना सदेह, तातजये घर ताहरे, आणी मृत्यु [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] आयु नहीं शका गड तव साल, नृपने वात सुणावनो, [illegible] ॥ ४ ॥ मुक घर कोड मूपी गयो, जणे तदा [illegible] ॥ ५ ॥ द्रव्य विगारुं [illegible] कहेगे वजकारीये, सघले कर्यो संवाद ॥ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

[illegible] देशी ॥

[illegible] दोका ॥ मदी थोके थोका, [illegible] ॥ १ ॥ चदन [illegible] गयो [illegible] नेरो, नेरो रे आवी [illegible] ॥ २ ॥ आव्यो [illegible] व्यापारमां जो द्रव्यनो देश ॥ [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] नहीं [illegible] ॥ ४ ॥ कहेरो फेरी [illegible] ॥ नहीं [illegible] यजदेव नरपति [illegible] ॥ ५ ॥ [illegible] ॥ मित्रनु [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ७ ॥ मित्रने [illegible] जणावीये [illegible] ॥ [illegible] ॥ ८ ॥ यजदेव [illegible] मान, [illegible] जो मान, [illegible] ॥ १० ॥ [illegible] ॥ ११ ॥ [illegible] ॥ १२ ॥ [illegible] नहि [illegible] ॥ १३ ॥ [illegible]

पण शु हु राचुं, लोके होये काचु, जाचुं होय रे मन जेहनुं रे ॥ १४ ॥ एहमा कुलनो शो वाक रे, सुरली होय फूल ॥ कीटक प्रतिकूल, ते मेले धूल, ठगण माहि रे वींछी उपजे रे ॥ १५ ॥ एहनु घर जोवरावीये, कोइ करी प्रकार ॥ सुणी वात विचार, वात युगति धार, चक्रशासन हवे राजीउं रे ॥ १६ ॥ कारणिआ तेम्नी कहे, हवे एणी परे राजा ॥ महाजन सहु साजा, जे होय अतिन्नाजा, काजा रे न्याय करे जीके रे ॥ १७ ॥ चदन सछवाह गेहनो, जप्तारी लीजे ॥ सहु मिलीअ गमीजे, चक्रदेव घरे कीजे, नाठी जे लखमी तेहनी खोजना रे ॥ १८ ॥ कारणिआ तव चितवे, श्यो रायनो बोल ॥ न करे काय तोल, ए राजे अमोल, चोल मजीठरग धर्मनो रे ॥ १९ ॥ अथवा आपणे काय रे, आणाना करता ॥ एम चित्तमा धरता, काय आंसु जरता, करता रे जेला सहुने तिहा गया रे ॥२०॥ पोहोर दिवस रह्यो पाछलो, तव सहुए आव्या ॥ मुफ मन सोहाव्या, वेगा सहु जाया, माया रे मुफ उपरे घणी रे ॥ २१ ॥ बीजे खमे एह रे, कहे आठमी ढाल ॥ गुरु उत्तम वाल, घणी वात रसाल, माला मगलनी पामो सहु जना रे ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ २२९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ महाजन कारणिआ मली, मुफने पूछे एम, सार्थवाह सुत साजलो, पूछु नियमे प्रेम ॥ १ ॥ कोइ व्यवहार करता थका, किमहिक लाव्यो कोय, तो अमने जाखो तुम्हे, हमणा वात जे होय ॥ २ ॥ सहुने कह्यु निःशकथी, नवि काइ जाणु नेम, तव कारणिआ तेहने, जलपे साजलो जेम ॥ ३ ॥ कोप न करजो को मने, आणा नरपति एम, तुम घर जोवु तनपरे, कहो तिणे करीये केम ॥ ४ ॥ हु बोल्यो हमणा नहीं, कोपनो अवसर काय, प्रजापरीक्षा परगको, नरपति होवे न्याय ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ लाखननी देशी ॥

॥ नगरना वृद्ध पुरुष लेइ साथे, रायपुरुपे जोयु निज हाथे ॥ लाखन ॥ जोयु निज हाथे ॥ द्रव्य दीठु निहा वहु प्रकार, मूक्यु प्रयत्न करीने अपार ॥ ला० ॥ क० ॥ १ ॥ जाड चदन नामाक्ति सार, हिरण्य

[illegible] जडो, [illegible] मुजमा सदेह तातनये घर ताहरे, आणी मूस्यु [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] नहीं शका गड तत साल, नृपने वात सुणावतो, [illegible] ॥ ४ ॥ मुफ घर कोइ मूधी गयो, जणे नठा [illegible] [illegible] ले जाणीये, कने शेत ततकाल ॥ ५ ॥ [illegible] [illegible], [illegible] हुकम करे [illegible], फडेरो राजकाजीये, सघले करो सनाल ॥ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

ढांडानी देशी ॥

[illegible] गाम रे, [illegible] लोका ॥ मली थोके थोका, [illegible] [illegible] रे [illegible] गुरु [illegible] रे ॥ १ ॥ चदन सत्रवाह गेहथी, गयो [illegible] ॥ [illegible] नरो, जेह होय जसेरो, नेरो रे आगी [illegible] रे ॥ २ ॥ आयो होय व्यापारमा जो [illegible] देश ॥ [illegible], [illegible], क्लेश सहो रे [illegible] रे ॥ ३ ॥ [illegible] रे, जा नहीं [illegible] ॥ [illegible] तेहने टाले, नहीं [illegible] रे ॥ ४ ॥ फडेरो फेरी रह्या, [illegible] [illegible] ॥ मूकी [illegible], [illegible] परपच, [illegible] नरपति [illegible] रे ॥ ५ ॥ रे नरपति तुम्हे [illegible], ते जुगतु नाहि ॥ [illegible] [illegible] माहि केम नवि [illegible] तुम्हे [illegible] रे ॥ ६ ॥ [illegible] विरुद्ध आचार ॥ [illegible] निरधार, [illegible] दातार, [illegible] रे ॥ ७ ॥ तेह [illegible] केम [illegible] [illegible] नजरे [illegible], तिणे तुमने [illegible] जणावीये रे ॥ ८ ॥ [illegible] कहो वात रे, जे तुम्हे मन [illegible] ॥ [illegible] वात जे [illegible], [illegible] अन्यायी न [illegible] रे ॥ ९ ॥ [illegible] कहे [illegible] ॥ तुमने [illegible] माने, [illegible] जो माने, [illegible] रे ॥ १० ॥ [illegible] पाम रे, मे [illegible] ॥ [illegible] तेम, [illegible] रे [illegible] निज घरे रे ॥ ११ ॥ [illegible] ॥ [illegible] थाय, [illegible] [illegible] रे ॥ १२ ॥ नृप कहे नवि [illegible] रे, [illegible], विरुद्ध [illegible], [illegible] रे ॥ १३ ॥ [illegible] कहे [illegible], तुम्हे [illegible] ॥

पण शुं हु राचु, लोने होये काचु, जाचुं होय रे मन जेहनुं रे ॥ १४ ॥ एहमा कुलनो शो वाक रे, सुरत्री होय फूल ॥ कीटक प्रतिकूल, ते मेजे धूल, ठगण माहि रे वींठी उपजे रे ॥ १५ ॥ एहनु घर जोवरावीये, कोड करी प्रकार ॥ सुणी वात विचार, वात युगति धार, चंकशासन हवे राजीउं रे॥ १६॥ कारणिश्रा तेमी कहे, हवे एणी परे राजा ॥ महाजन सहु साजा, जे होय अतिताजा, काजा रे न्याय करे जीके रे ॥ १७ ॥ चदन सठवाह गेहनो, जमारी लीजे ॥ सहु मिलीअ गमीजे, चकदेव घरे कीजे, नाठी जे लखमी तेहनी खोजना रे ॥ १० ॥ कारणिश्रा तव चितवे, इयो रायनो वोल ॥ न करे काय तोल, ए राजे अमोल, चोल मजीठरग धर्मनो रे ॥ १९ ॥ अथवा आपणे काय रे, आणाना करता ॥ एम चित्तमा धरता, काय आसु जरता, करता रे जेजा सहुने तिहा गया रे॥२०॥ पोहोर दिवस रह्यो पाठलो, तव सहुए आव्या ॥ मुक मन सोहाव्या, वेगा सहु जाया, माया रे मुक उपरे घणी रे ॥ २१ ॥ वीजे खमे एह रे, कहे आठमी ढाल ॥ गुरु उत्तम वाल, घणी वात रसाल, माला मगलनी पामो सहु जना रे॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ २२९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ महाजन कारणिश्रा मली, मुजने पूठे एम, सार्थवाह सुत साजलो, पूछु नियमे प्रेम ॥ १ ॥ कोइ व्यवहार करता थका, किमहिक लाव्यो कोय, तो अमने जाखो तुम्हे, इमणा वात जे होय ॥ २ ॥ सहुने कह्युं नि:शकयी, नवि काइ जाणु नेम, तव कारणिश्रा तेहने, जलपे साजलो जेम ॥ ३ ॥ कोप न करजो को मने, आणा नरपति एम, तुम घर जोवु ततपरे, कहो तिणे करीये केम ॥ ४ ॥ हु वोल्यो इमणा नहीं, कोपनो अवसर काय, प्रजापरीक्षा परगमो, नरपति होवे न्याय ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ लालननी देशी ॥

॥ नगरना वृद्ध पुरुष लेइ साथे, रायपुरुषे जोयु निज हाथे ॥ लालन ॥ जोयुं निज हाथे ॥ द्रव्य दीठु तिहा वहु प्रकार, मूक्युं प्रबल करीने अपार ॥ ला० ॥ क० ॥ १ ॥ जाड चदन नामाकित सार, हिरएय

नांख्यो जटो, श्यो मुक्यो सदेह, तातजये घर ताहरे, आणी मूक्युं एह ॥ ३ ॥ परनु द्रव्य आपु नहीं, शका गइ तव साल, नृपने वात सुणावतो, चदन चतुर नाचाज ॥ ४ ॥ मुक्र घर कोइ मूकी गयो, जगे तदा जू पाल, शु शु गयु ते जाणीये, कहे शेठ ततकाल ॥ ५ ॥ द्रव्य लिखाव्यु टपनगे, हवे हुकम करे हाल, ऊडेरो गजमावीये, सघले करो सजाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

हाडानी देशी ॥

॥ ढंढेरो फेरवे ताम रे, सांभलजो लोका ॥ मली थोके थोका, दरु गेथे गेया, दे ठे नृप अन्यायीने रे ॥ १ ॥ चदन सवगाह गेहथी, गयो द्रव्य घणेरो ॥ कोट कह्यो तस केरो, जेह होय जलेरो, नेरो रे आवी वहो मुक्र प्रत्ये रे ॥ २ ॥ आव्यो होय व्यापारमा जो द्रव्यनो देश ॥ अथवा ते अशेष, कह्यो तेह नरेश, क्लेश सह्यो रे रखे वापडा रे ॥ ३ ॥ पग्नामन ए गय छे, जो नहीं कोइ नासे ॥ दरु तेहने दासे, नहीं नासे मगासे, धन खेड शरीरने दडशे रे ॥ ४ ॥ ऊडेरो फेरी रह्या, पछे दिन गया पच ॥ मूकी मन सच, जइ कहे परपच, यक्षदेव नरपति कने रे ॥ ५ ॥ रे नरपति तुम्ह जागवु, ते जुगतु नाहि ॥ मित्रनु द्रिद्र आदि, गावटरमार माहि, केम नहि कहुं तुम्ह हित नणी रे ॥ ६ ॥ आ लोक ने परलोकनो, विरुद्ध आचार ॥ मेरे निरधार, दु मनो दातार, निज आतमनो पण जीको रे ॥ ७ ॥ तेह मित्रने शु करु, केम राय दडेवु ॥ अन्याय हु देखु, नजरे करी पेखु, तिणे तुमने ए जणावीये रे ॥ ८ ॥ राय कहे कहो वात रे, जे तुम्ह मन नाइ ॥ खरी वात जे काइ, मक्षकरणे आइ, न्यायीने अन्यायी न जागजो रे ॥ ९ ॥ यक्षदेव कहे सांभलो, मे सुणीयु काने ॥ तुमने बहु माने, चक्रदेव जो माने, ठानेशु एहनु घर जोइये रे ॥ १० ॥ पामेना परिजन पास रे, मे सांभल्यु एम ॥ चक्रदेवे प्रेम, चदनवर नेम, देमे रे गोपव्यु निज घरे रे ॥ ११ ॥ हवे मन माने तिम करो, तुमे मटोटा राय ॥ माफी पण थाय, मादारु शु जाय, भाइ छे मादारो ए मोटिको रे ॥ १२ ॥ नृप कहे नहि सजवार रे, एहनी एम वात ॥ उत्तम कुल जात, विरुद्ध अवदात, थाय न ए हुवी एहनु रे ॥ १३ ॥ यक्षदेव कहे सांभलो, तुम्हे कयुं ते साचु ॥

पण शु हु राचु, लोक्ने होये काचु, जाचुं होय रे मन जेहनुं रे ॥ १४ ॥ एहमा कुलनो शो वाक रे, सुरजी होय फूल ॥ कीटक प्रतिकूल, ते मेले धूल, उगप माहि रे वींछी उपजे रे ॥ १५ ॥ एहनु घर जोवरावीये, कोड करी प्रकार ॥ सुणी वात विचार, वात युगति धार, चक्रशासन हवे रा-जीउं रे ॥ १६ ॥ कारणिआ तेमी कहे, हवे एणी परे राजा ॥ महाजन सहु साजा, जे होय अतिप्राजा, काजा रे न्याय करे जीके रे ॥ १७ ॥ चंदन सछवाह गेहनो, जनारी लीजे ॥ सहु मिलीअ गमीजे, चक्रदेव घरे कीजे, नाठी जे लखमी तेहनी मोजना रे ॥ १८ ॥ कारणिआ तव चितवे, ज्यो रायनो बोल ॥ न करे काय तोल, ए राजे अमोल, चोल मजीठरंग ध-र्मनो रे ॥ १९ ॥ अथवा आपणे काय रे, आणाना करता ॥ एम चि-त्तमा धरता, काय आसु जरता, करता रे मेला सहुने तिहा गया रे ॥२०॥ पोहोर दिवस रह्यो पाछलो, तव सहुए आव्या ॥ मुज मन सोहाव्या, वेगा सहु जाया, माया रे मुज उपरे घणी रे ॥ २१ ॥ बीजे खन्ने एह रे, कहे आठमी ढाल ॥ गुरु उत्तम वाल, घणी वात रसाल, माला मगलनी पामो सहु जना रे ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ २२९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ महाजन कारणिआ मली, मुजने पूछे एम, सार्थवाह सुत साचलो, पूछु नियमे प्रेम ॥ १ ॥ कोइ व्यवहार करता थका, किमहिक लाव्यो कोय, तो अमने जागो तुम्हे, हमणा वात जे होय ॥ २ ॥ सहुने कहु नि:शकपी, नवि काइ जाणु नेम, तव कारणिआ तेहने, जखपे साचलो जेम ॥ ३ ॥ कोप न करजो को मने, आपा नरपति एम, तुम घर जोवु ततपरे, कहो तिपे करीये केम ॥ ४ ॥ हु बोल्यो हमणा नहीं, कोपनो अवसर काय, प्रजापरीक्षा परगजो, नरपति होवे न्याय ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ साजननी देशी ॥

॥ नागरना वृक्ष पुष्प लेइ साथे, रायपुष्पे जोवु निज हाथे ॥ सा-जन ॥ जोवुं निज हाथे ॥ द्रव्य दीठु निहा बहु प्रकार मूक्युं प्रबल करीने अपार ॥ सा० ॥ क० ॥ १ ॥ गाइ चदन नानाविन सार, हिरण्य

गोल्यो जटो, स्यो मुझमा सदेह, तातजये घर ताहरे, आणी मृत्यु एह ॥ ३ ॥ परन्तु द्रव्य आपु नहीं, शका गइ तत्र साल, नृपने वात सुणावतो, चदन चतुर वाचाल ॥ ४ ॥ मुझ घर कोइ मूयी गयो, जणे तदा मृ पाउ, शु शु गयु ते जाणीये, कहे शेठ ततकाल ॥ ५ ॥ द्रव्य लिखावु दफतरे, हवे हुकम करे हाल, ढंढेरो वजडावीये, सघले करो सजाल ॥६॥

॥ ढाल आठमी ॥

हांडानी देशी ॥

॥ ढंढेरो फेरवे ताम रे, साजलजो लोका ॥ मली थोके थोका, दम गेवे गेका, दे छे नृप अन्यायीने रे ॥ १ ॥ चदन सठवाह गेहथी, गयो द्रव्य घणेरो ॥ कोइ लह्यो तस केरो, जेह होय जलेरो, नेरो रे आरी यहो मुझ प्रत्ये रे ॥ २ ॥ आव्यो होय व्यापारमां जो द्रव्यनो देश ॥ अथवा ते अशेष, कहो तेह नरेश, क्लेश लहो रे रखे बापमा रे ॥ ३ ॥ घरनागमन ए गय छे, जो नहीं कोइ नासे ॥ दम तेहने दासे, नहीं रासे मगासे, धन लेइ शरीरने दटशे रे ॥ ४ ॥ ढंढेरो फेरी रह्या, पछे दिन गया पच ॥ मूकी मन खच, जइ कहे परपच, यज्ञदेव नरपति नणी रे ॥ ५ ॥ रे नरपति तुम्ह जाणवु, ते जुगतु नाहि ॥ मित्रनु विरु आहि, रायदरबार माहि, केम नवि कहु तुम्ह हित नणी रे ॥ ६ ॥ आ लोक ने परलोकनो, विरुद्ध आचार ॥ सेवे निरधार, हु मनो दातार, नित आनमनो पण जीशे रे ॥ ७ ॥ तेह मित्रने शु करु, केम राय दवेरावु ॥ अन्याय हु देखु, नजरे करी पेखु, तिणे तुमने ए जणावीये रे ॥ ८ ॥ राय कहे कहो वात रे, जे तुम्ह मन जाइ ॥ खरी वात जो कांइ, नहाअरपे आर, न्यायीने अन्यायी न जाणजो रे ॥ ९ ॥ यज्ञदेव कहे मानजो, में सुणीयु काने ॥ तुमने कहु साने, चक्रदेव जो माने, वानेशु एहनु घर जोवरो रे ॥ १० ॥ पामेना परिजन पास रे, में साजल्यु एम ॥ चक्रदेवे प्रेम, चदनपर नेम, केमे रे गोपव्यु निज घरे रे ॥ ११ ॥ हवे मन माने तिम करो, तुने मद्रोटा राय ॥ माफी पण थाय, माहारु शु जाय, बाइ छे माहारो ए मोटिको रे ॥ १२ ॥ नृप कहे नवि संजवाय रे, एहनी एम वात ॥ उत्तम कुल जात, विरुद्ध अवदात, थात न ए हवी एहनु रे ॥ १३ ॥ यज्ञदेव कहे मांनजो, तुम्हे कर्युं ते साचु ॥

पण शुं हु रालु, लोके होये कालु, जालुं होय रे मन जेहनुं रे ॥ १४ ॥ एहमा कुलनो शो वाक रे, सुरली होय फूल ॥ कीटक प्रतिकूल, ते मेले धूल, ठगण माहि रे वींठी उपजे रे ॥ १५ ॥ एहनु घर जोवरावीये, कोइ करी प्रकार ॥ सुणी वात विचार, वात युगति धार, चंकशासन हवे राजीने रे॥ १६॥ कारणिआ तेमी कहे, हवे एणी परे राजा ॥ महाजन सहु साजा, जे होय अतिवाजा, काजा रे न्याय करे लीके रे ॥ १७ ॥ चंदन सथवाह गेहनो, जनारी लीजे ॥ सहु मिलीअ गमीजे, चकदेव घरे कीजे, नाठी जे लखमी तेहनी खोजना रे ॥ १८ ॥ कारणिआ तव चिंतवे, श्यो रायनो दोल ॥ न करे काय लोल, ए राजे अमोल, चोल मजीठरग धर्मनो रे ॥ १९ ॥ अथवा आपणे काय रे, आणाना करता ॥ एम चित्तमा धरता, काय आलु करता, करता रे जेला सहुने तिहा गया रे॥२०॥ पोहोर दिवस रह्यो पाछलो, तव सहुए आव्या ॥ मुज मन सोहाव्या, वेगा सहु जाया, माया रे मुज उपरे घणी रे ॥ २१ ॥ वीजे खमे एह रे, कहे आठमी टाल ॥ गुरु उत्तम वाल, घणी वात रसाल, माला मगलनी पामो सहु जना रे ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ २२९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ महाजन कारणिआ मली, मुजने पूछे एम, सार्थवाह सुत साजलो, पूछु नियमे प्रेम ॥ १ ॥ कोइ व्यवहार करता थका, किमहिक लाव्यो कोय, तो अमने जाखो तुम्हे, हमणा वात जे होय ॥ २ ॥ सहुने कह्यु निःशकथी, नवि काइ जाणु नेम, तव कारणिआ तेहने, जलपे साजलो जेम ॥ ३ ॥ कोप न करजो को मने, आणा नरपति एम, तुम घर जोवु ततपरे, कहो तिणे करीये केम ॥ ४ ॥ हु वोल्यो हमणा नहीं, कोपनो अवसर काय, प्रजापरीक्षा परगमो, नरपति होवे न्याय ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ लालननी देशी ॥

॥ नगरना वृद्ध पुरुष लेइ साथे, रायपुरुषे जोयु निज हाथे ॥ लालन ॥ जोयुं निज हाथे ॥ द्रव्य दीठु तिहा वहु प्रकार, मूक्यु प्रयल करीने अपार ॥ ला० ॥ क० ॥ १ ॥ जाड चंदन नामांकित सार, हिरण्य

बोल्यो जटो, थ्यो मुजमा संदेह, तातजये घर ताहरे, आणी मूक्यु एह ॥ ३ ॥ पन्नु द्रव्य आपु नहीं, शका गइ तब साल, नृपने वात सुणावतो, चदन चतुर राचाल ॥ ४ ॥ मुज घर कोइ मूकी गयो, जणे तटा जू पाल, शु शु गयु ते जाणीये, कहे शेठ ततकाल ॥ ५ ॥ द्रव्य लिखावु दफतरे, दने हुकम करे हाल, फडेरो नजमाणीये, सघले करो सजाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

हांडानी देशी ॥

॥ ढंढेरो फेरवे नाम रे, साजलजो लोका ॥ मली थोके थोका, दश गेश गेशा, दे छे नृप अन्यायीने रे ॥ १ ॥ चदन सठगारु गेहथी, गयो द्रव्य घणेरे ॥ कोट लह्यो तस केरो, जेह होय जलेरो, नेरो रे आवी कहो मुज प्रत्ये रे ॥ २ ॥ आव्यो होय व्यापारमा जो द्रव्यनो देश ॥ अपत्ता ते अशेष, कह्रो तेह नरेश, क्लेश लहो रे रखे बापका रे ॥ ३ ॥ धन्नासन ए गय छे, जो नहीं कोइ जाणे ॥ देम तेहने दाखे, नहीं राखे मराखे, धन लेइ शरीरने दडशे रे ॥ ४ ॥ फडेरो फेरी रह्या, पछे दिन गया पच ॥ मूकी मल लच, जइ कहे परपच, यज्ञदेव नरपति नणी रे ॥ ५ ॥ रे नरपति तुम्ह नाणवु, ते जुगतु नाहि ॥ मित्रनु छिद्र चाहि, रायदरबार माहि, केम नवि कहु तुम्ह हित भणी रे ॥ ६ ॥ आ लोक ने परलोकनो, विरुद्ध आचार ॥ सेवे निरधार, दुःखनो दातार, निज आतमनो पण जीको रे ॥ ७ ॥ तेह मित्रने शु कर, केम राय ढंकेगु ॥ अन्याय हु देखु, नजरे करी पेखु, तिणे तुमने ए जणावीये रे ॥ ८ ॥ राय कहे कहो वात रे, जे तुम्ह मन नाइ ॥ खरी वात जे काइ, मजावरणे आइ, न्यायीने अन्यायी न नागजो रे ॥ ९ ॥ यज्ञदेव कहे सांभळो, में सुणीयु काने ॥ तुमने कहु माने, चक्रदेव जो माने, छानेशु चहनु घर जोडवे रे ॥ १० ॥ पासेना परिजन पास रे, में साजळ्यु एम ॥ चक्रदेवे प्रेम, चदनघर नेम, केमे रे गोपव्यु निज घरे रे ॥ ११ ॥ हवे मन माने तिम करो, तुमे मह्रोटा राय ॥ मारी पण थाय, माहारु शु जाय, पण छे मारो ए मोटिको रे ॥ १२ ॥ नृप कहे नवि सजवार रे, एहनी एम वात ॥ उत्तम कुल जात, विरुद्ध अवदात, थात न ए दूषी एहनु रे ॥ १३ ॥ यज्ञदेव कहे मानजो, तुम्हे कयुं ते साचु ॥

केरां [illegible] उदार ॥ सा० ॥ मु० ॥ बाहेर लावी महुने देखाड्युं, चढन [illegible] पुर [illegible] ॥ सा० ॥ री० ॥ २ ॥ जोइने [illegible] मीथानी परे गोडो, [illegible] चित्त डोडो ॥ सा० ॥ ग० ॥ पण संशय मुज चित्तमां [illegible] कारणिया कहे इण वारे ॥ सा० ॥ क० ॥ ३ ॥ पत्र वाचो जे लख्या [illegible] नहींग्र आलाप ॥ सा० ॥ न० ॥ दीठु रे लखीयु [illegible] देखीने तेह ॥ सा० ॥ दे० ॥ ४ ॥ कारणिया [illegible] मुज घर किहांथी आइ ॥ सा० ॥ कि० ॥ मैं [illegible] नाम, [illegible] इण गाम ॥ सा० ॥ म० ॥ ५ ॥ [illegible] नारी, तो मुज सज्जनता किम हारो ॥ [illegible] निज उगारी, हुं बोल्यो निद्रा [illegible] ॥ सा० ॥ [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible] घरना, तव [illegible] ॥ सा० ॥ रे० ॥ म [illegible] नथी मुज काय, [illegible] ने थाय ॥ सा० ॥ हो० ॥ ७ ॥ कारणिया कहे शी [illegible] जेह लख्या छे ॥ सा० ॥ जे० ॥ म [illegible] पोतानी [illegible] ते [illegible] ॥ सा० ॥ जु० ॥ ८ ॥ [illegible] ते [illegible] ॥ सा० ॥ [illegible] ते [illegible] मेलीया, नागर कारणिया मन धसीया ॥ सा० ॥ [illegible] ॥ विस्मय [illegible] केम होय, चक्रदेवने [illegible] ॥ सा० ॥ [illegible] ॥ [illegible] मूर्ख जो [illegible] परद्रव्य [illegible] ॥ सा० ॥ [illegible] ॥ १० ॥ [illegible] प्रगट [illegible], [illegible] ॥ सा० ॥ न० ॥ [illegible] गयनी [illegible], मैं [illegible] ॥ सा० ॥ [illegible] ॥ ११ ॥ [illegible] देखने [illegible] निरधारी ॥ सा० ॥ [illegible] ॥ नोहि न [illegible] रिसाम्यु ॥ सा० ॥ [illegible] ॥ १२ ॥ [illegible] महाजे ॥ सा० ॥ [illegible] ॥ [illegible] मुज [illegible] ॥ सा० ॥ [illegible] ॥ १३ ॥ [illegible] न थाये तुम [illegible] ॥ सा० ॥ [illegible] कह्यो [illegible] ॥ सा० ॥ नि० ॥ १४ ॥ [illegible] ने [illegible] न [illegible],

थयो साचो तु तुज साथ, म्हें चिंत्यु माठु थयु, नृपनी सांजली वात ॥ ३ ॥ अग्निशर्म कहे तुम्ह सामीये, गमतु करी मन खात, परमारथ न पिग्राणीउं, धमधम्यो क्रोधे घात ॥ ४ ॥ करी कदर्थना आकरी, नाख्यु कष्ट अथाय, म्हें सांजली चिंत्यु मने, अहो अनरथ अथाय ॥५॥ रमणन यज्ञदेव आवीयु, एह थयो अनरथ, कहे नृपने काढो परो, य ज्ञदेव निज देश ॥ ६ ॥ प्रजा तणा तुमे पालकु, किम तुम दोष कहाय, कुबुद्धि पापी अमे, ए सज्जन दु सदाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ मोहन मोरम्योने मोहाव्युं, तथा शीतल जिन सहजानंदी ॥ ए देशी ॥

॥ यज्ञदेव कहे सुणो राय, एहथी अकार्य न थाय, यज्ञदेव मित्र अम्ह ताय, तेणे बूरी न कराय ॥ १ ॥ सज्जन एम जाणीए नली रीति ॥ धुर वेर सगे धरे प्रीति ॥ स० ॥ ए आंकणी ॥ न होये होय तो थोडो काल, पाणी रहे तो निष्फल नाल, एम सज्जन क्रोध सनाल, दुरज ननो नेह निहाल ॥ २ ॥ स० ॥ राय कहे अम जाण्यु माय, नगरनी ते अविक न थाय, कही वात ते सघली राय, यज्ञदेव जे पूछे कहाय ॥ ३ ॥ स० ॥ में चिंतव्यु एह शी वात, केम यज्ञदेव मुज ब्रात, करे एहवु काम विख्यात, नवि मनवा एहनो थात ॥ ४ ॥ स० ॥ एहने राय दुःखे आण्यो, यज्ञदेव धारीने ताण्यो, राये हुकम कर्यो निगे जाणो, जीम केदन करो मन जाण्यो ॥ ५ ॥ स० ॥ वली आण्यो दोय उपाडी, एहना घरनो हवे डाली, यष्टि मुष्टि प्रहारे ते नाखो, एहने देशथी वली निरवाखो ॥ ६ ॥ स० ॥ तव हु नृप पाये पडीयो, रायनी उत्तगमा अ डीउं, ए दोष ते हुज आपणीउं, एम हु नृपशु घणु निडीउं ॥ ७ ॥ स० ॥ यज्ञदेवने मूक्यो स्वामी, दीनी वस्तुनो हु नहीं कामी, यज्ञदेवे जो आरस पाली तो तुम्हा आवसे गामी ॥ ८ ॥ स० ॥ राय कहे नहीं तुम्ही वात, एह दुष्ट छे मांते घात, ए तो करे विश्वासनो घात, एहने स्वेर शु दान ॥ ९ ॥ स० ॥ वाद माग्य तु वीजु आपु, शिरदार करी तुज थापुं, पण यज्ञदेवने नापु सीना नाटरा दुष्ट कापु ॥ १० ॥ स० ॥ में कह्यु जो तुज बहुमान, तो एहने जीवितदान, नृप कहे शु कर तम तणा एहवुं मननो मह नेहान ॥ ११ ॥ स० ॥ में रच्यु कीधो सुरमान,

पमीउं नरपतिने पाय,यज्ञदेव मूकाव्यो जाय, नरपति आदर बहु दाय ॥१२॥ ॥ स० ॥ बहु ऋद्धि मुज बोलाव्यो, सज्जन चित्तमा घणु जाव्यो, राहनो जल राहे आव्यो, एम लोकवचने सोहाव्यो ॥ १३ ॥ स० ॥ यज्ञदेव जघन्यता जूउं, ए जीवतो जाणीए मूउं चक्कदेव केणी परे हुउं, गजीर ज्युं ऊमो कूउं ॥१४॥ ॥ स० ॥ सवैउ ॥ " बहिरे गीत नहु सुण्यो, जमर चपे नहु दीगे ॥ सोल कला सपूर्ण चद, अधले न दीगे ॥ करहीणे पागुले, कठिन को थाण न ताण्यो ॥ जुवतीकठ विलग्ग, मुग्धरस जेद न जाण्यो ॥ कुणही पूत कपूत रस, गीतनाद चित्त नवि धर्यो ॥ कवि गग कहे रे ठकुरो, तो गुणवना द्विगुण गर्यो ॥ १ ॥' ढाल पूर्वली ॥ मुजने उपनो निर्वेद, एहवा मित्रने एम खेद, कर्म परिणतिना बहु जेद, ससार असारता वेद ॥ १५ ॥ स० ॥ परचित्तनो पार न लहीए, जो मित्त ते डोही कहीए, कोए देखी चित्त गहगहीए, एहने त्यागे सुखमा रहीए ॥ १६ ॥ स० ॥ यत ॥ श्लोक ॥ " वर न राज्य न कुराजराज्य, वर न मित्रं न कुमित्रमित्र ॥ वर न दारा न कुदारदारा, वर न शिष्यो न कुशिष्यशिष्य ॥ १ ॥' ढाल पूर्वली ॥ इण अवसर मुनिवर आया, अग्निजूति गणधरराया, सजम जोगे अतिहि सोहाया, उद्यान माहि ते गया ॥ १७ ॥ स० ॥ में बाहिर गया थका दीग, मुज मनमा लाग्या मीग, म्हारा दूर गया सब रीग, प्रणम्या धरी राग उक्कीग ॥ १८ ॥ स० ॥ धर्मलाज दीधो गुरुराय, वेगे गुरु केरे पाय, पूछ्यो में धर्म उपाय, जेहथी सवि दुःख जाय ॥ १९ ॥ स० ॥ कह्यो खति प्रमुख मुनि धर्म, सानली उपन्यु घणु शर्म, दीधा मुज विवर ते कर्म, तजीउं मिथ्यामत जर्म ॥ २० ॥ स० ॥ थयो देशविरति परिणाम, वधते सवेग उद्दाम, वैराग्य तणो थयो धाम, करे आतममा आराम ॥ २१ ॥ स० ॥ बीजे खके दशमी ढाल, जाखी अतिहि सुरसाल, कहे उत्तमविजयनो बाल, सुणता होय मगलमाल ॥ २२ ॥ स० ॥ सर्व गाथा ॥ २०७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पुण्यउदय मुज पाधरो, कर्म ते गया कगोर, वीर्यउल्लास घणो वध्यो, चद ज्युं देखी चकोर ॥ १ ॥ थधस्थिति त्रूटी बहु, व्रतपरिणाम विशेष, जगवतने जाख्यु तदा, अनुमह कीध अशेष [illegible] विरस्यो [

[illegible]सामग्री, करो आणा करु तेह, श्रुतज्ञानी ते सांभली, एहवु योग्य [illegible] ॥ ३ ॥ साधुपणु तुम्हे समहो, योग्य जीव तुं जाणी, पूर्व पुण्ये करी [illegible], मजमसुखनी खाणी ॥ ४ ॥ गुरुवयणा सुणी ज्ञानथी, चारित्र लीने [illegible] आदरीउ अति आदरे, पाल्यु तेह पवित्त ॥ ५ ॥ आराध्यु आयु [illegible], [illegible]मागे करी काल, देह तजी देवलोकमा, वाध्यो पुण्य विशाल ॥ ६ ॥ नव सागर निर्धार थयो, पचम कल्प ते पाम, वीजो वीजी नर [illegible], [illegible] गयो जाम ॥ ७ ॥ ताम नरकपासे तिहा, दीधु महा तम [illegible], [illegible] अपुर नर, सुरभवमा महा सुख ॥ ८ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ [illegible] नाण्यु अवधि प्रयुजीने ॥ ए देशी ॥

१ [illegible] महाविदेहमा, लाला विजयगंधिलावइ सार ॥ जीहो [illegible] एक [illegible], लाला नाम तेहनु रयणसार ॥ १ ॥ नविकजन, [illegible] समार ॥ जीहो जाम विपाक अपार ॥ नवि० ॥ ए आंकणी ॥ [illegible] तेहनी नार्यां, लाला उदरे उपनो हु ताम ॥ जीहो [illegible] चवी, लाला मानवभव लयो गाम ॥ २ ॥ नवि० ॥ [illegible] हवे नगरथी लाला थयो आहेडी रे आन ॥ जीहो पाप [illegible], लाला त्रण सागर आयु मान ॥ ३ ॥ नवि० ॥ [illegible] नीकलीने वली, लाला नमीउ तिरिगति माहि ॥ जीहो [illegible] हवे, लाला बहु जिहा उपजे त्याहि ॥ ४ ॥ न० ॥ [illegible] चौथा, लाला नमेदा नम अतिथान ॥ जीहो [illegible] थयो, लाला कर्मनी गति असमान ॥ ५ ॥ न० ॥ जीहो [illegible] अवसरे, लाला नाम कर्यां अम तान ॥ जीहो [illegible] थई, लाला [illegible] विख्यात ॥ ६ ॥ न० ॥ जीहो जोवन [illegible], लाला [illegible] वली ताय ॥ जीहो विषय आम[illegible] [illegible] लाला [illegible] गयो न जणाय ॥ ७ ॥ न० ॥ जीहो पूर्व [illegible], लाला [illegible] उसरे परिणाम ॥ जीहो यवनानो न गयो [illegible] लाला [illegible] काम ॥ ८ ॥ न० ॥ जीहो [illegible] अवसर तिहा [illegible], लाला विजयवर्द्धन सूरिगर ॥ जीहो मासकष्ट विहारी [illegible] लाला [illegible] मन [illegible] ॥ ९ ॥ न० ॥ जीहो आरकर्म [illegible]

लाला एक दिन हुं गयो गाम ॥ जीहो अमचो राय गयो वली, लाला मूलकगिरिने काम ॥ १० ॥ ज० ॥ जीहो इण अवसर तिहां आवीउं, लाला समर सेनापति नाम ॥ जीहो विंध्यकेतु आवी करी, लाला हत-विहत कयु गाम ॥ ११ ॥ ज० ॥ जीहो केइक लोकने लइ गयो, लाला अमे सांजल्यु तेणी वार ॥ जीहो आवी जोयु नयरमां, लाला दीवु मलाण आगार ॥ १२ ॥ ज० ॥ जीहो घर माणस खोलावीआ, लाला न जमी माहारी रे नारी ॥ जीहो चडकाला मुज अपहरी, लाला उपनुं डुःख अपार ॥ १३ ॥ ज० ॥ जीहो चिंता थइ मुज चित्तमां, लाला अहो नवि दीठ वियोग ॥ जीहो किम जीवित धरती हशे, लाला तपस्वीनी अ-बलालोग ॥ १४ ॥ ज० ॥ जीहो देवशर्मा विप्र एणी समे, लाला गरडे जाण्यु एम ॥ जीहो कल्पना म कर ए वातमा, लाला सांजली कहु मुज प्रेम ॥ १५ ॥ ज० ॥ जीहो पूर्वे श्रीयल नगरने, लाला एणी परे समरे रे कीध ॥ जीहो शील अखंडित आपीउं, लाला पुनरपि लोक प्रसिद्ध ॥ १६ ॥ ज० ॥ जीहो द्रव्य लेइ लेइ आपीआ, लाला सहु माणस तिणे ताम ॥ जीहो सांजली केइक दिन रह्यो, लाला पहोतो समर निज ठाम ॥ १७ ॥ ज० ॥ जीहो अपहरण साथे लेइने, लाला द्रव्य लीउं सार सार ॥ जीहो स्निग्ध स्निग्ध जातुं थयु, लाला पये करवा आ-हार ॥ १८ ॥ ज० ॥ जीहो चडकाला मूकाववा, लाला चाल्यो धरी अ-ति राग ॥ जीहो इण अवसरे मुज नारी ते, लाला नासपनो धरे लाग ॥ १९ ॥ ज० ॥ जीहो मन चिंते मुज शीलनी, लाला करशे रक्षणा एह ॥ जीहो मुज विजोग कायर थयी, लाला डुःख तणी मानु रेह ॥ २० ॥ ज० ॥ जीहो साथ ते समर पल्ली तणो, लाला शून्यगामने आसन्न ॥ जीहो पासे जीरण कूपने, लाला उतरी उद्यासन्न ॥ २१ ॥ ज० ॥ जीहो पाछली रात परोनीए, लाला मस्ते टीघ प्रयाण ॥ जीहो कामव्यग्र महु चालता, लाला ठथा सघला ठाण ॥ २२ ॥ ज० ॥ जीहो जीवित आशा नवि धरी, लाला पडी ते जीरण कूप ॥ जीहो जडमें पडी तिणे ठ-गरी, लाला दीठो तिहां प्रतिरूप ॥ २३ ॥ ज० ॥ जीहो वेली ते प्रति-रूपना, लाला पडे धरती प्राण ॥ जीहो इण अवसरे आव्या अने, लाला चाडता तिणहिज ठाण ॥ २४ ॥ ज० ॥ जीहो अपहरण पूर्वे अन्यानमी,

दमी जाशी सोहामणी जीरे जी ॥ जीरे० ॥ पद्मविजय कहे एम, सा
नलो वात ङोणक तणी जीरे जी ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ४१० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नारकनवथी नीकली, ठेहले मायर मत्स, पाप करी पोहु तिहां,
बीजी वार निजत्स ॥ १ ॥ पाचमी नरके पापथी, अयर वारनु आय, ति
हांथी नीकली तिरि तणा, नव वहु लगे नमाय ॥ २ ॥ एहज नयरमा
डण समे, नदावर्त्त इण नाम, शेठ घणु सोहामणो, ऋद्धि तणो विशराम
॥ ३ ॥ श्रीनदा सोहामणी, नारी रूपनिधान, कुखे तेहनी कुअरी, उपनी
अप्सरवान ॥ ४ ॥ जनम थयो तस जेटले, नदा थाप्यु नाम, आवी
योवन अनुक्रमे, आपी मुजने आम ॥ ५ ॥ पाणिग्रहणे परणीआ, श्यामा
उपरे नेह, मुजने उपनो मूलथी, आणुराग अछेह ॥ ६ ॥

॥ ढाल पदरमी ॥

॥ निङ्रुी वैरण हुइ रही ॥ ए देशी ॥

॥ पच विषय सुख नोगवु, तेह साथे हो गयो केइ काल के ॥ पूर्व
कर्म दोषे करी, नारी थुये हो मन आलजजाल के ॥ १ ॥ कर्म तणी
गति साजलो ॥ ए आकणी ॥ घर सार सोंप्यु सवि एहने, पण न गयो
हो माया परिणाम के ॥ कपटे वात सवे करे, हु जाणु हो ए सत्यनु
धाम के ॥ २ ॥ परिजन सयण आवी कहे, तुज नारी हो कपटी शिर
दार के ॥ पण हुं काय मानु नहीं, सरल नावे हो वली रागने धार के
॥ ३ ॥ क० ॥ एक दिन मायाए कह्यु, गया कुम्हल हो जुग जे घर सार के
॥ पोते उलवी एम कह्यु, आकुल व्याकुल हो वली थाय असार के
॥ ४ ॥ क० ॥ खेद म कर तु सुदरी, गयो अगनो हो मल ताहरो आज
के ॥ कुम्हलजुगल करु नवा, पछी आवशे हो ङव्य शे मुज काज के
॥ ५ ॥ क० ॥ एम कही नविन करावीया, वेला एक दिन हो अन्यगत
जाणी के ॥ नामाङ्कित निज मुद्रिका, आपी नारीने हो राखवा निज
पाणि के ॥ ६ ॥ क० ॥ निज आनरण करमीए, मूकी तेणे हो मुद्रा
घटु मोल के ॥ ष्हाए नोयण करी डण समे, अगरागने हो वली लीध
तबोल के ॥ ७ ॥ क० ॥ शका रहित करमीउं, उघामी हो मुद्रा में लीध
के ॥ कुम्हलयुगल दीठु तिहां, गयुं पूर्वे हो जस सार न कीध के ॥ ८ ॥

क० ॥ चिना मुजने उपनी जब्या कुमजहो दीसे वे नारी के ॥ थावी नदा एण समे, दीठी मुझा हो मुक हाथे उदार के ॥ ए ॥ क० ॥ वि-लखी थइ निज चित्तथी, में जाएयो हो एहनो तव नाव के ॥ नीकल्यो हु घर माहिथी, चित्त चिंतव्यु हो हमणा एह दाव के ॥ १० ॥ क० ॥ नारी विचारे चित्तमा, मुज लघुता हो थइ इण ठाम के ॥ कुमरजुगल दीठा इणे, हवे करवु हो एह किणी परे काम के ॥ ११ ॥ क० ॥ ए पण नासीने गयो, हवे सयणमा हो ज्या नवि करे वात के ॥ लघुता सयणमा नवि होवे आगलथी हो मारु करी घात के ॥ १२ ॥ क० ॥ कामणयोग करु जिणे, मरे वहेलो हो वहेलु थाय काम के ॥ द्रव्य सजोग बहु कस्यो तिणे एकली हो कूम कपटनी धाम के ॥ १३ ॥ क० ॥ एकांत प्रदेशे दाटवा, जाये जेटले हो तेटले तिहा नाग के ॥ करज्यो कर्मवशे करी, जिहा जाये हो तिहा कर्मनो लाग के ॥ १४ ॥ क० ॥ वरप लगे अन्न नवि मल्या, जिन ऋषभजी हो कम्या कर्म न जाय के ॥ गोपे खीला ठोकीया, जिन वीरने हो अतिहे डु खदाय के ॥ १५ ॥ क० ॥ पट् म-हीना लगे नवि मल्यो, आहार ढढणा हो कीधो अतराय के ॥ पचभ-र्तारी द्रौपदी, सीताने हो कलक ते आय के ॥ १६ ॥ क० ॥ कलावती कर कापीआ, खधकनी हो उतारी खाल के ॥ तिम एहने नागे मशी, बीजानी हो पडे जातिने रयाल के ॥ १७ ॥ क० ॥ यत ॥ "कृतकर्मक्षयो नास्ति, कल्पकोटिशतैरपि ॥ अवश्यमेव भोक्तव्य, कृत कर्म शुभाशुभ" ॥ १ ॥ रुद्रदेव पुरोहिते कह्यु, तुज नारीने हो करज्यो वे साप के ॥ हु पण गयो उतावलो, एम जाणु हो केम आव्यु पाप के ॥ १८ ॥ क० ॥ थइ अचेत दीठी तदा, श्याममरुल हो थया तास शरीर के ॥ आसु-पात करतो थको, न खमाये हो में तेहनी पीर के ॥ १९ ॥ क० ॥ धिक् ससार असारने, जिम स्वपनु हो माया इन्द्रजाल के ॥ गद् गद् वाणीए में कह्यु, तुजने किम हो थयु एम अकाल के ॥ २० ॥ क० ॥ शी तुजने पीना अवे, एम पूछ्यु हो पण न दीए बोल के ॥ तव मुज खेद घणो थयो, गइ जीवित हो आशा दर बोल के ॥ २१ ॥ क० ॥ गारुडी तेड्या तिण समे, करी खेदने हो कहे इणी परे तेह के ॥ काले मशी ए ना-रीने, नहीं चारो हो नरमात्रनो एह के ॥ २२ ॥ [illegible] इम कही

घर गया, नवि मननी हो काय चाली शक्ति तो ॥ काल करी परजन गउ, मह्नु निजखे हो करे आक्रंद कत्ति के ॥ २३ ॥ क० ॥ मृतकारज करी वेदना, तेह निमित्ते हो वधते परिणाम के ॥ क्लेशकारण सग गणीउं, संसार ते हो जाणी दुःखधाम के ॥ २४ ॥ क० ॥ लीधी दीक्षा में गुरु कने, छठी नरके हो पोहोती तेह नारी के ॥ एकवीश सागर आउखे, एह माहरु हो चरित्र अनधारी के ॥ २५ ॥ क० ॥ राय नयरजन मानसी, गुरु जाग्यो हो हवे आगले वात के ॥ निपजशे शु एहने, तु मनो पण हो जाग्यो अवदात के ॥ २६ ॥ क० ॥ अमरगुप्त गुरु बोलीआ, एहने तो हो छे अनत ससार के ॥ मुक्ति जशे अंते सही, हु तो इण जव हो पामीश जवपार के ॥ २७ ॥ क० ॥ ए जव मुनिना सांजली, तेहु पासे हो में लीधी दीक्ष के ॥ बहु जने नगरमा आदरी, मुक्त साथे हो धरी गुरुनी शीख के ॥ २८ ॥ क० ॥ ए मुक्त हेतु निशेष छे, वैरा ग्यनु हो सुणी सिंहकुमार के ॥ बीजे खडे पनरमी, ढाल जाखी हो पद्मे मनोहार के ॥ २९ ॥ क० ॥ सर्व गाथा ॥ ४४५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिंहकुमार ते सांजली, कहे म्हु कस्तु काम, हवे जाग्यो गुरु हित करी, गुरु तुम्हे गुणगणधाम ॥ १ ॥ कति गति रूप गुरु कह्यो, ए ससार अपार, सुख दुःख मनने शरीरना, श्या श्या होय ससार ॥ २ ॥ जव अटवी जमना घणा, धर्म कीउं आधार, गुरु कहे सुण ससार ए, चिहु गतिरूप विचार ॥ ३ ॥ नरक तिरि सुर नरगति, ससारे नहीं सुख, जरा मरण ने जन्मथी, दुःखीयाने नित्य दुःख ॥ ४ ॥ रागद्वेष रागे करी, वेदन विषय विषाद, सुख तो नहीं तस स्वपनमां, पामे दुःख प्रमाद ॥ ५ ॥ ते उपरे दृष्टांत तु, सांजल चतुर सुजाण, मधुबिंदु मानव तणो वीरे कीध वखाण ॥ ६ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ पन्नवीशानी तथा त्रुटकनी देशी ॥

॥ ढाल ॥ एक नर कोउ रे दारिद्र दुःख संतापीउं ॥ मूकी देशने रे परदेशे गयो पापीउं ॥ गाम आगल रे पाटण बहु जमता हुवे ॥ जूआ देवधी रे एक अटवीना पहवे ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ शाल ताल तमाल नि

वड, कुटज न्यग्रोध खेर ए ॥ सल्लकी अर्जुन वकुल अकोल, अंब जंबू केर ए ॥ बकुल तिलक कदंब रायण, निंबीस धव ने पलाश ए ॥ जिहां सिंह चित्ता फाळ देता, जीववा शी आश ए ॥ २ ॥ ढाल ॥ वाघ जंबुक रे रोझ शरभ बहु जय करे ॥ वनजैसा रे युद्ध करे ते परपरे ॥ जलचर जीव रे पाणी उछाळे वेगशुं ॥ तेह नरने रे चिंता न माय उद्वेगशुं ॥ ३ ॥ त्रु० ॥ भूख्यो तरस्यो खमे वेदन, श्वापदना सुणे साद ए ॥ उ-भ्रान्तलोचन स्वेद गलतो, करे बहु विषवाद ए ॥ दीर्घ पथे थाकपाम्यो, विषम मार्ग खलाय ए ॥ इण समे गजवर एक दीठो, पूठे आवे धाय ए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ महा दुर्दंत रे पथीलोकने मारतो ॥ गाजतो वली रे शुंढ घणी फुफारतो ॥ शुंढादंड रे उंचो करीने चालतो ॥ चालतो नग रे दीसे मेघ ज्युं म्हालतो ॥ ५ ॥ त्रु० ॥ तेमज एक राक्षसी देखे, महा दुष्ट कराल ए ॥ महाकाय विकराल वयणे, निशित कर करवाल ए ॥ भीम अट्टहास मूके, वरण अति तस श्याम ए ॥ देखी बीहीनो मरणभयथी जुवे दश दिश ठाम ए ॥ ६ ॥ ढाल ॥ पूर्व दिशे रे देखे वड एक ताम रे ॥ उदयाचल रे शिखर परे अभिराम रे ॥ सिद्धगंधर्व रे मारग रोक्या तास रे ॥ मन चिंते रे किमहिक जाउं ए पास रे ॥ ७ ॥ त्रु० ॥ जगरू तो एह भयथी, चढु वड उपरे जइ ॥ एम चिंतवीने शीघ्र चाल्यो, पद भेदाये कुशसुइ ॥ पहोंतो वडनी पास तव ते, देखी मनमा चिंतवे ॥ गगन गोचरथी न लघाये, केम करु एहने हवे ॥ ८ ॥ ढाल ॥ आरोही रे न शके हवे ते कोइ परे ॥ गज देखी रे तेहनु तन बहु थरहरे ॥ एम करता रे दीठो जीरण एक रे ॥ कूपक निद्रा रे उनो ते अति छेक रे ॥ ९ ॥ त्रु० ॥ जीवनानी छाणिव आशा, धरी मरणनो भय मने ॥ निरालंब आरंभ मूक्यो, नहि आधार को तिहां कने ॥ बीनि झंप्यो सरनो पनो, वलगो तेहने उल्लमी ॥ पकणानीवाते हेठ फणिधर, चार कोप्या धमधमी ॥ १० ॥ ढाल ॥ चार कांठे रे तेह रहे कोपाकुला, फणा-टोपे रे करडवाने थया व्याकुला ॥ एक अजगर रे दिग्गज सम दीसे त्रो ॥ आव्ग गनी रे कृष्णकाय मुख मोकलो ॥ ११ ॥ त्रु० ॥ चिंते मनमा एह पनो तिहां लगे जीविन बहु ॥ उंचे जुवे जव जोइउ नर, दीठु ते सुणजो सहु ॥ एक धवळने एक कृष्ण ए बे उंदरा मोटा हवे ॥ दाढ

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] पण जुउ ते हवे ॥ १२ ॥ ढाल ॥ नवि पहाने रे ने नगने [illegible] हाथीउ, धधोले रे कोपे वरू उन्माथीउ ॥ तेणे हाल्यो रे [illegible] [illegible] [illegible] ॥ मधुभमरी रे उडी ते चिहु दिशि सचरे ॥ १३ ॥ त्रु० ॥ भमरी समूहे नाम गात्रे, दीये चटका अति घणा ॥ मधुनाउ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]नी नहीं मणा ॥ एक बिंदु मधुनो तिहां [illegible], [illegible] [illegible] ताम ए ॥ आनोटतो ते [illegible] आव्यो, तास मुख [illegible] ए ॥ १४ ॥ [illegible] डंखे रे वली एक बिंदु आवतो ॥ पण न गणे [illegible] [illegible] पातनो ॥ करी मुखा रे अजगर ने वली साप रे ॥ कूउ [illegible] [illegible] न गणे संताप रे ॥ १५ ॥ त्रु० ॥ मधुबिंदुरस आस्वाद [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] तदा ॥ सुणो उपसंहार एहनो, मोहधूम जाये [illegible] ॥ [illegible] [illegible] जीव जाणो, चार गति अटवी कही ॥ [illegible] ते [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] लही ॥ १६ ॥ ढाल ॥ [illegible] ते रे [illegible] [illegible] जाणीये ॥ मृत्यु गजवर रे नय जेह स्थानक नाणीये ॥ [illegible] रे [illegible] आगली नवि शक्या ॥ पापस्थानक रे परिग्रह [illegible] [illegible] ॥ १७ ॥ त्रु० ॥ [illegible] चार कषाय समजो, कूउ नरनव जाणीये [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], धार दुःख [illegible] [illegible] ॥ कार्याकार्य न [illegible] ते नर, जीवित [illegible] गणो ॥ दोय पक्ष जे [illegible] अर्जुन, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ १८ ॥ ढाल ॥ [illegible] भमरीउ रे व्याधि विविध [illegible] [illegible] रे ॥ [illegible] [illegible] रे सुख नवि लहे कोट [illegible] रे ॥ घोर अजगर रे [illegible] ते अति दुःसहाय रे ॥ विषे मोहित रे नरके गया दुःख थाय रे ॥ १९ ॥ त्रु० ॥ मधुबिंदु सम ए भोग जाणो, तुछ ने दारुण कहे ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], भोगवतां उमहे ॥ तेण कारणे करो धर्म [illegible] [illegible] ते कुमबिंदु सनो ॥ [illegible] विजली सम समागम, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ २० ॥ ढाल ॥ [illegible] रे सरिखु यौवन जाणीये, [illegible] [illegible] रे धर्म सदा [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] रे सोवमी ढाल [illegible], [illegible] रे [illegible] जैन चिंतामणि ॥ २१ ॥ त्रु० ॥ [illegible] [illegible] [illegible] धर्म कीजे, [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] ए [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] जाणो, [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible], धर्म [illegible] ए ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ८३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिंहकुमर कहे सांजलो, कतिविध धर्म कहाय; धर्मी कहे दश-
धर्म, मुनिनो ए निरमाय ॥ १ ॥ यतः ॥ " खंति मद्दव अज्जव,
ते तव संजमेय वोधवे ॥ सत्तं सोयं आकिं, चएं च बंजं च जइधम्मो
॥ " सम्यक् वस्तुस्वजावनो, अंतर करी आलोच क्रोध तणो अणु-
करे, करे उदये संकोच ॥ २ ॥ मद्दव पण एम माननो, अनुदय वि-
अपार, अज्जव माया अणउदय, उदये विफल अविकार ॥ ३ ॥
ते ते लोज तणो मुणो, अनुदय उदय अजाव, उदय सलाथी करे
फल, प्रजुने वचन प्रजाव ॥ ४ ॥ तप ते दुविध परे तपे, बाह्य अत्य-
बाह्य ॥ षटविध ने अतरंग षट, जेहसां कोइ न लाह्य ॥ ५ ॥ यत ॥
अणसण मूणोअरिया, वित्तीसंखेवण रसचाउं ॥ कायकिलेसो संली-,
या य बज्झो तवो होइ ॥ १ ॥ पायछित्त विणउं, वेयावच्चं तहेव स-
उं ॥ झाणं उस्सग्गोऽवि य, अप्तिंतरउं तवो होइ ॥ २ ॥ ' सत्तर जेद
जम सुणो, सत्य ते निरवद्य जाप, शौच ते निर्लेपी सदा, आतमो
रे आश ॥ ६ ॥ आकिंचन ते एणी परे, धरमोपगरण धार परिग्रहने
खे परो, बंज ते पटने वार ॥ ७ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

चंडानलानी अथवा ध्रुवाख्याननी देशी ॥

॥ ए यतिधर्मने सांजली रे, बोले सिंहकुमार ॥ शोजनधर्म ए साधुनो
, जाख्यो तुम्हे अणगार ॥ १ ॥ जाख्यो तुम्हे ते में नवि थाय, हु तो
समर्थ नहि मुनिराय ॥ मुजने योग्य होय जे काय, ते जाखो मुज करी
सुपसाय ॥ २ ॥ जीमोहनजी जीरे ॥ ए आकणी ॥ धर्मघोष मुनि बो-
लीआ रे, श्रावक थाउ महाजाग ॥ सिंह कहे ते केहवो रे, श्रावकध-
र्मनो लाग ॥ ३ ॥ श्रावकधर्म कह्यो मुनिराय, द्रव्य जावथी अंगीकराय॥
जाने कृत्याकृत्य आतमराय, मुनिवर सेव करे सुखदाय ॥ ४ ॥ जीमो० ॥
वंदना विनय थकी करी रे, पोट्टोता नयरी माहि ॥ कुसुमावलीने जइ कहे
र, ते पण धरे उत्साहि ॥ ५ ॥ ते पण धरी उत्साहने
पशमे मिथ्यात वामे ॥ समकित अणुव्रत लहे
सेवा सुखकाम ॥ ६ ॥ जीमो० ॥ मास कल्प ५ जीण

र्वाध विस्तार ॥ जैनधर्म दृढ ते थयो रे, तत्वातत्व विचार ॥ ७ ॥ तत्वा तत्व विचार ते थाय, एक दिन पुरुषदत्त ते राय ॥ अमिततेज गुरुनीने पाय, धर्मदेशना सुणी सुखदाय ॥ ८ ॥ जीमो० ॥ सिंहकुमर राये ठवी रे, आप थयो मुनि भूप ॥ राणी श्रीकांता सह वली रे, लहे शि वमार्ग अनूप ॥ ९ ॥ लही शिवमार्ग अनूप ते पाले, सिंहराय निज नृप अनुष्ठाने ॥ कर्म अन्याय अरिने टाले, त्रण वर्ग पाले निज काने ॥ १० ॥ जीमो० ॥ सहु लोकने आणंद करे रे, सामंतमंडल आणि ॥ निर रहे चपरमाम ज्यु रे, करे उपकार सुजाण ॥ ११ ॥ करे उपकार सुजाण वैरागी, राजऋद्धि कहेवाये त्यागी ॥ काढे काल ए रीति सोभागी, चारित्रधर्म तणो अनुरागी ॥ १२ ॥ जीमो० ॥ अगनिशर्मा तापसो रे, विद्युतकुमर ते देव ॥ तिहांथी चवीने वहु भम्यो रे, तिरिगतिनी करे सेव ॥ १३ ॥ तिरिगतिनी करी सेवने आव्यो, अनंतर भवे बाल तपसी सोहाव्यो ॥ तिहांथी मरी कर्मवासना छाव्यो, कुसुमावलीने कुखे आव्यो ॥ १४ ॥ जीमो० ॥ दीठो स्वपनमा तेणीए रे, उदरमा पेसतो नाग ॥ दाहिन नीकली गयने रे, करड्यो ते लही लाग ॥ १५ ॥ करड्यो तिणे ते पडीउं तप, सिंहासनथी पड्यु सरूप ॥ देखी स्वपनु एह निरूप, जागी अमंगल नारी अनूप ॥ १६ ॥ जीमो० ॥ नवि संभलाव्यु रायने रे, गर्भ ते वधतो जाय ॥ तेह तणा परभावथी रे, नवि वहु माने राय ॥ १७ ॥ खेद धरे बहु राणा नाम, परिजन कहे राणीने उल्लाम ॥ एम न घटे तुम करवु माम, तव राणी तेहने कहे नाम ॥ १८ ॥ जीमो० ॥ शु कम तव परिजन कहे रे, नृपने आदर दीजे ॥ तव जाण्यु इम रा णीए रे, गर्भनो दोष कहीने ॥ १९ ॥ गर्भना दोष विना नवि होय, अन्यथा रायनु नेम न कोय ॥ दोहद उपनो एक दिन जोय, हवे मा नवो ते नाथ मोय ॥ २० ॥ जीमो० ॥ रायना आनरका तणु रे, राणी विचारे नाम ॥ गर्भ ए पापकारी घणो रे, एहनु नहीं मुज काम ॥ २१ ॥ काम नहीं मुज इनि नारी, गर्भ खेद ते चित्त विचारी ॥ नारी मेताकारक विधारि, पाडु गर्भ ए पण नार ॥ २२ ॥ जीमो० ॥ नाम उगा दल करता रे पण ते निरावित गर्भ ॥ कोट प्रकारे पड्यो नहीं रे भवना नर्म ॥ २३ ॥ पाडवा कारण औषध पीधा, तिणे दुर्बल तन अ

गज कीधा ॥ दोहलाना पण कार्य न सीधा, कर्म कन्या ते गाढे लीधा ॥ २४ ॥ जीमो० ॥ कुवली देखी पूछतो रे, राय राणीने एम ॥ शु तुजने नवि सपजे रे अथ जणो मुज प्रेम ॥ २५ ॥ अथवा कोइए आण खमी, दीसे तु जिम दैवे दमी ॥ पाणी रहित जिम माछली खमी, अथवा कुमुदिनी उदके दमी ॥ २६ ॥ जीमो० ॥ रायरागे राणी कहे रे, मुज मनमा एम आवे ॥ मरण वहु इण अवसरे रे तो मुजने सुख थावे ॥ २७ ॥ शु निमित्त पूछे तस ताम, देवी कहे मुज दैव छे वाम ॥ एम कही आलुं रेडे तिण ठाम, राजा चिंते नव पूछण काम ॥ २८ ॥ जीमो० ॥ वात कथा वीजी करी रे, आक्षेप्यु मन तास ॥ तेमी परिजनने कहे रे, वात सुणो उल्लास ॥ २९ ॥ वात कहे हवे राजा सारी, ढाल सत्तरमी ए मनोहारी ॥ वीजे खंडे मनमा धारी, पद्मविजय कहे सुणो सुखकारी ॥ ३० ॥ जीमो० ॥ सर्व गाथा ॥ ५१० ॥

॥ दोहा ॥

॥ देवी केम ए कुमली, उवेखी केम एह, वहुल पक्षना चंदवल, सरिखी दीसे केह ॥ १ ॥ सारभूत सवि विश्वमा, राणी रयणसरूप, प्राण धरते न निपजे, एहवु शुं छे अनूप ॥ २ ॥ मदनरेखा तव मानती, वोली एहवा वोल, राजन कहो छो ते खरु, तोपण स्त्री रमे तोल ॥ ३ ॥ अविवेकीपणु अगमा, पण साजल एक भूप, कही शकीये एहवी कथा, राजन नहीं सरूप ॥ ४ ॥ अन्य उपाय नहीं एहमा, तिणे कहु साजल तुज, सजलाव्यु एम कही सवे, गर्भ दोहदनु गुज ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ सुणी वहेनी पीउडो परदेशी ॥ ए देशी ॥

॥ नृपति चिंते रागविलुद्धो, जुओ राणी शु कहे छे रे ॥ पुत्रजनम पण नवि वहु माने, राग ए एम वहे छे रे ॥ १ ॥ नृप० ॥ जो दोहद नवि पूरु एहनो, थाये गर्भ विनाश रे ॥ विसरज्यो राणीनो परिकर, चिंते उपाय हवे तास रे ॥ २ ॥ नृप० ॥ मतिसागर महामंत्री तेड्यो, सजलाव्यु वृत्तांत रे ॥ करीय विचार नृपने भाखे, साभलो कहु अवदात रे ॥ ३ ॥ नृप० ॥ वुभुक्षित रही उदरे वाधो, अन्न कृत्रिम करी वेसो रे ॥ कोइ प्रकारे लक्षण करी सुंदर, पण कोइने मन कहेशो रे

॥ ४ ॥ नृप० ॥ राणी देखता कापी देशु, पछे मनमान्यु करशु रे ॥ वात सुणी [illegible] बहु हरख्यो, एम प्रतिज्ञा करेशु रे ॥ ५ ॥ नृप० ॥ राणीने [illegible] तुम्ह सुत करशु राणी गरज अनुजावे रे ॥ अंगीकार करी अप [illegible] [illegible] उपाय गुन दावे रे ॥ ६ ॥ नृप० ॥ दोहद संपूर्ण थयो [illegible], [illegible] विसाद बहु पामी रे ॥ मन्त्रीए राय देखाड्यो अनुक्रमे, हवे [illegible] [illegible] स्वामी रे ॥ ७ ॥ नृप० ॥ मन्त्री कहे जब जन्म ते थाये, [illegible] [illegible] कहेजो राय रे ॥ सुत कहेजो हु योग्य करीश ते, साचवी [illegible] रे ॥ ८ ॥ नृप० ॥ अनुक्रमे जन्म थयो ते सुतनो, मति [illegible] रे ॥ मतिसागर कहे गर्भ थकी पण, रायने दुःख बहु [illegible] रे ॥ ९ ॥ नृप० ॥ तेणे ए गर्भे नाहि प्रयोजन, राणी चिन [illegible] रे ॥ रायने मत ए वात प्रकाशो, एम कही लेइ नीकसीउ रे ॥ १० ॥ नृप० ॥ रायने कहे मृतबालक आव्यो, एम कही दासी [illegible] रे ॥ [illegible] अशोक वाडीमा जाना, दीठी पृथवीनाथे रे ॥ ११ ॥ नृप० ॥ [illegible] दासीने [illegible] साथे, मन्त्रमथी कहे दासी रे ॥ काय नथी एम कहेता [illegible] राये जोयु चकासी रे ॥ १२ ॥ नृप० ॥ बालक देखी [illegible] [illegible] [illegible] नृपे एम न कीने रे ॥ तुम हृदय थी कायर [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] रे ॥ १३ ॥ नृप० ॥ लीधो राये बालक [illegible], [illegible] [illegible] न [illegible] रे ॥ [illegible] हाथे पूरण थाये, आपु पाले तेहने रे ॥ १४ ॥ नृप० ॥ [illegible] धावीने सावता आप्यो, कहे [illegible] काय थाशे रे ॥ [illegible] [illegible] विनाश करेशो, लोकमा [illegible] [illegible] रे ॥ १५ ॥ नृप० ॥ [illegible] [illegible] करी राणीने, तेमज मन्त्रीने जाणो रे ॥ देखी मन्त्री [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करे राणो रे ॥ १६ ॥ नृप० ॥ आणद नाम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ते थाय रे ॥ कलाकलाप भण्यो तिणे [illegible], [illegible] [illegible] न [illegible] रे ॥ १७ ॥ नृप० ॥ पूर्व कर्मदोषे नृप उपरे, [illegible] [illegible] बहु [illegible] रे ॥ [illegible] युवराज [illegible] [illegible] राजऋद्धीनी [illegible] रे ॥ १८ ॥ नृप० ॥ [illegible] अवसर [illegible] [illegible], दुर्मति नाम [illegible] रे ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] सिंह [illegible] रे ॥ १९ ॥ नृप० ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लाग्या रे ॥ कोप करी [illegible] सिंह [illegible], [illegible] [illegible] रे ॥ २० ॥ नृप० ॥ [illegible] प्रधाने [illegible]

सन्मुख, जय थया त्रण प्रयाणो रे ॥ इण अवसरे सिंधु नदीकांठे, वहेते प्रयाण ते ठाणो रे ॥ २१ ॥ नृप० ॥ समरादित्यना रासमा जाणी, बीजे खंडे ढाल रे ॥ एह अधिक उल्लासे अढारमी, पद्मविजय सुरसाल रे ॥ २२ ॥ नृप० ॥ सर्व गाथा ॥ ५३७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नदीकांठे तिहां निरखीउ, अचरिज एक उदार, गजशिर वेगा गेलशुं, मनुष्यवृंद मनोहार ॥ १ ॥ अहो कष्ट अहो कष्ट ए, बोले एम बहु लोय, राजा पोहोतो रीझशुं जइने तिहां एम जोय ॥ २ ॥ जीर्ण नाग दीठो यदा, कृष्णदेह महाकाय, मंडुकग्रास ते मोटिको, लीधो वदन लपाय ॥ ३ ॥ पोहोले वदने पेखीये, दु खथी ध्रूजे देह, महोटे कूररे मुखमा, नाग ग्रस्यो न संदेह ॥ ४ ॥ अजगर दिग्गज कर समो, नयन रक्त नहीं सोम, ग्रस्यो कूरर वली अजगरे, राजी थयो रोम रोम ॥ ५ ॥ अजगर जिम जिम आहारतो, तिम तिम नागने तेह, मंडुक रोतो अहिमुखे, जानो देखे जेह ॥ ६ ॥ अचरिज देखी एहवुं, जय पाम्यो नृपाल, देखी ए दृष्टांतने, चिंते चित्त विचाल ॥ ७ ॥

॥ ढाल ओगणीशमी ॥

॥ वाहाजो महारो वाय छे वासली रे ॥ अथवा शीतल जिनवर साहेबो रे ॥ ए देशी ॥

॥ नरपति मन माहि चिंतवे रे, ए संसार असार ॥ मत्स गलागल यइ रह्यु रे, कोहनो कोण आधार ॥ १ ॥ वाल्हो मारो जावे छे भावना रे ॥ ए आंकणी ॥ मूढ हैयामा आणंद लहे रे, सत्पुरुषा निर्वेद ॥ देखीने पामे एम चिंतवी रे, राय थयो बहु खेद ॥ २ ॥ वा० ॥ राय विचारे करवु किशु रे, अजगरे नहु ग्रस्यो एह ॥ कूररे भुजंगम बहु गल्यो रे, नागे मंडुक देह ॥३॥ वा०॥ कंठगत प्राण थया सहु रे, पण न मूके कोय ॥ अधिक अधिक गलवा करे रे, एह विषम गति जोय ॥ ४ ॥ वा० ॥ एक विनाशीने ठोडवु रे, पण नवि जीवे कोय ॥ नवि उपाय ए वातमा रे, भावी भाव ते होय ॥ ५ ॥ वा० ॥ हवे जोवु ते जुगतुं नहीं रे, गजवर प्रेर्यो ताम ॥ कटकसंयुत आवासीउ रे, करे उचित निज काम ॥ ६ ॥ वा० ॥ राति गइ अरधी जिसे रे, तव जाग्यो नरराय ॥ दीठु

न ते मांजरु रे, अजगर मुख चित्त लाय ॥ ७ ॥ वा० ॥ विषम
ाक ठे जेहना रे, फल किंपाक समान ॥ विषय आपात मात्र मीठडा
ूरख करे बहु मान ॥ ८ ॥ वा० ॥ वरजे पंमित एहने रे, वली ए
यने काज ॥ लोक करे बहु पापने रे, करता बहुत अकाज ॥ ९ ॥
॥ शाश्वत धर्म गणी करी रे, थड सुखलंपक जीव ॥ जीवित अर्थी
ा केहने रे, तेम करे पाप सदैव ॥ १० ॥ वा० ॥ दुःख ते पापथु
रे रे, दुःखीया म करो पाप ॥ सुखीआ पण करो धर्मने रे,
ु पण सही आप ॥ ११ ॥ वा० ॥ मकुक सम तुछ लोक छे रे, सर्प
ग्रा जेह ॥ तेह ग्रसी जाये तेहने रे, तेहने कूरर सम तेह ॥ १२ ॥
॥ कूररने पण अजगर ग्रसा रे, अजगर सम पण आप ॥ नहीं
ा वश जिनशासने रे, यमदेवे संताप ॥ १३ ॥ वा० ॥ एह अनर्थनय्या
हर्ता रे, जे करे विषय प्रसंग ॥ ते महा मोहविलास छे रे, तेणे
करीए रंग ॥ १४ ॥ वा० ॥ दुःख अनेक तस्वीज छे रे, राज्य अन
ी स्वाद ॥ पाताल परे पूराये नहीं रे, एहवी जिनवरवाण ॥ १५ ॥
॥ विवर सुवन जीर्ण घर परे रे, रमलसगति परे जास ॥ विरमा
ाग ते विषयीये रे, राज्यथी नरकमा वास ॥ १६ ॥ वा० ॥ वेश्याहृदय
बालको रे, द्रव्य अनेक प्रकार ॥ भुजग वड़ु वल्मीक परे रे, दुःख
दक दुःखकार ॥ १७ ॥ वा० ॥ जीवलोक परे जाणीये रे, काम न पूरा
य ॥ सर्वरक्तनी परे रे, यले पाछु जाय ॥ १८ ॥ वा० ॥ अति
ा वडु नन करे रे वेश्या यौवन रीति ॥ नवि विश्राम कोयनो होय
ोर पणी नो प्रीति ॥ १९ ॥ वा० ॥ परनवनुं नो साधन नहीं रे,
ि नवी गर्भप्रसंग ॥ वीर पुरुषे सेवित आदर रे, दीक्षा मन धरी रंग
॥ वा० ॥ एह नव परनव सुख करे रे, श्रमणपणु जग सार ॥ जेम कर
ुन शासने रे, अनुना होय पणी वार ॥ २१ ॥ वा० ॥ अथवा एह
ुन करी रे, एक जन्मना स्यो नार ॥ नव नवना दुःख उपशमे रे, छेड
न वार ॥ २२ ॥ वा० ॥ एम करता मननी गढ रे, दीने सवे टाड ॥
ीसनी पदमे वली देखशे उद्योत विशाल ॥२३॥वा०॥ सर्व गाथा ५७

॥ दोहा ॥

॥ वेलो दाक्षन धार्मीने, हर्षी द्रव्य आश्चर्य थान, मत्रिमकुल सट

प्रणमीउं जव उदयो दिनराज ॥ १ ॥ निजया प्रतिहारी व
नरपतिपाय, वेगे एणी परे विनवे, माने जो महाराय ॥ २ ॥
शासन घणु, करतु प्रयाण मुज काज, सिह राय एम शकीउं,
मेति आज ॥ ३ ॥ आणा तुमची अतिक्रमी, तस थयो पश्चा
ते परशु करी, परवर्यो केड नर आप ॥ ४ ॥ दर्शन इच्छे दुर्मति
आगण आय, करो हुकम एहने कशो, एम सुणी हवे महाराय
मतिसागर जे मन्त्रवी, सनमुख जोयु तास, अंगित आकार उलख
कहे निमास ॥ ६ ॥ शरणागत वत्सल सवे, भूपति होय एम
दोष न एहमा देखीये तेनो इहा इण ताल ॥ ७ ॥ आणा करी
आवीउं, अवनीपतिने एम, कहे कुठारने कोटिये, तुम्ह मन होय
तेम ॥ ८ ॥ कहीने चरणकमल नम्यो दान अजय तव दीध,
आदर सत्कारीउं, करतु ते सत्रि कीध ॥ ९ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ घरे आवोजी आवो मोरीउं ॥ ए देशी ॥

॥ निज नयरे वली आवीउं, सिह नरपति जयपुर माहि ॥ निज अ
राय मन्त्रिमरूल प्रत्ये, जारयो अति अग उत्साह ॥ १ ॥ गति कर्म त
वैचित्र छे ॥ ए आंकणी ॥ कहे मन्त्रिमरूल सुण साहिबा, तुम्ह कु
ते एहज सार ॥ तुम्ह वश थया जे राजवी, ते एमहिज पाम्या पा
॥ २ ॥ गति० ॥ सहु जीवने ए करवु घटे, तो तुमची केही वात ॥ जि
नवयण जावितमनि तुम्ह तणी, तुमचो उत्तम अवदात ॥ ३ ॥ गति० ॥
सफलो मानवजव तुम्ह तणो, नन्दन सरिखा ए जोग ॥ जिम जिम
इधण क्षेपीये, तिम तिम वधतो जाये रोग ॥ ४ ॥ गति० ॥ किंपाकना
फल सम जेहना, अये नाग्या छे विपाक ॥ वली मृत्यु अकाले आवी
अने, जेहनो सुर असुरमा लाग ॥ ५ ॥ गति० ॥ एम साजली हर्ष
वध्यो घणो, नृप दीधु अति बहुमान ॥ कुअर अजिपेकने कारणे, राये
जोशी तेड्या जाण ॥ ६ ॥ गति० ॥ कहे कहो अजिपेक दिवस हवे,
तव लगन जोड कहे एम ॥ आजथी पाचमे दाहाडे, कीजे अजिपेक
ते प्रेम ॥ ७ ॥ गति० ॥ मगल मेल्या तस कारणे, मछजुगल प्रमुख बहु
जेट ॥ नरपति मनमा एम चिंतवे, आपी चित्तमा निर्वेद ॥ ८ ॥ गति०॥

राज्यनो अभिषेक करी चलो, राज्य थापी आणंद कुमार ॥ पछे जाशु दीक्षाकारणे, जिहां धर्मघोष अणगार ॥ ए ॥ गति० ॥ एम चिंतवी लगन लगे रहे, एण अवसर तेह कुमार ॥ नृपनो अभिप्राय अजाणतो, पूर्वकृत कर्मविकार ॥ १० ॥ गति० ॥ कुमतिशु एम उराजीउ, आपणे हणवो ए राय ॥ वली सांजली अभिषेक वारता, तव चिंता इणी परे थाय ॥ ११ ॥ गति० ॥ मिथ्याभिनिवेशे चिंतवे, दुष्ट चित्ते विपरीत वात ॥ जुर्ज ए अभिषेकना मिष थकी, करशे मुजने एम घात ॥ १२ ॥ गति० ॥ एम ठलीउं हु जाउ किमे, अथवा हो साची वात ॥ पण एहनु आप्यु लेवु नहीं, एहमा शो जस अम थात ॥ १३ ॥ गति० ॥ जो रायने मारी लीजीए, बलथी तो जस बहु थाय ॥ एण अवसरे राय बोलावीउं, तुम्हे आवो तुम्ह करु राय ॥ १४ ॥ गति० ॥ पण इछे नहीं ते आवबु, तव साथे लेइ प्रतिहार ॥ नृप चाल्यो कुमर जवन जिहां, जजो जइ सह साकार ॥ १५ ॥ गति० ॥ तव आणंद मनमा चिंतवे, आ छे सुंदर प्रस्ताव ॥ ईर्ष्याए करीने बोलीउं, मार मार तणो आराव ॥ १६ ॥ गति० ॥ लेइ तरवारने मारीउं, जे पासे हतो प्रतिहार ॥ पछे आव्यो नरपति उपरे, कीधो वली गाढ प्रहार ॥ १७ ॥ गति० ॥ तिहां कोलाहल बहु उछल्यो, नृपसैन्ये कस्यो संक्षोज ॥ आणंदकुमरने वींटीउं, माड्यो संग्राम अथोज ॥ १८ ॥ गति० ॥ निज देहद्रोह शपथे करी, राखे निज सैन्यने एम ॥ मुज व्यापद न थयु देखजो, हवे एहने मारो केम ॥ १९ ॥ गति० ॥ करो राज्याभिषेक ते एहने, ए जाणजो तुमचो राय ॥ इणे अवसरे कुमरे हुकम कस्यो, कुमतिने तिहां बोलाय ॥ २० ॥ गति० ॥ बांधो निबरू बंधने करी, तव आव्यो रायने पास ॥ कुलपुत्र पाकीने वाचीउं, नृप एकाकी कस्यो पास ॥ २१ ॥ गति० ॥ विश्वासी पुरुषने सोंपीउं, पुरलोक निवरुठी ताम ॥ करी सर्व व्यवस्था राज्यनी, पोते थयो रायने ठाम ॥ २२ ॥ गति० ॥ एम समरादित्यना रासमा, पन्न वर वीशमी ढाल ॥ कही वीजे खरू ए सांजली, म करो कोइ कर्म जंजाल ॥ २३ ॥ गति० ॥ सर्व गाथा ॥ ५९९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सामंतमंडल वश करी, रायने चारक माहिं, नाख्या ते चारक

हवे, धर्मनशु दुःख दयाद्दि ॥ १ ॥ अशुचि मयता आकरी, दाखे जिम दुर्गंध, नरीहूप फूटी जीतमां, देखाडे बहु धध ॥२॥ माखी मसा मठर घणा, जणजणना जणकार, रज उकेरी मूसा करे, अधिको जिहां अंध कार ॥ ३ ॥ शिर पर कानजी सर्पनी, घणी लटके खरायमान, लूतातंतु जाला घणी, दीसन नरय समान ॥ ४ ॥ विषम कालनु वासघर, सयल दुःखनो सराय, अधर्मनी लीला अवनी, कुलघर दुःख कहाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ जीव जीवन प्रभु किहां गया रे ॥ ए देशी ॥

॥ कर्म तणी गति सानखो रे, करजो विचारी कर्म रे ॥ एक पखे वयरे लहे रे, दुःख तो अन्यनो जर्म रे ॥ १ ॥ कर्म० ॥ राणी एणी परे साजली रे, चारक मूक्या गय रे ॥ आक्रंद जेरव मूकती रे, म्लान थड जस काय रे ॥ २ ॥ कर्म० ॥ महोटा मुक्ताफल सारिखा रे, आंसु करे तेणी वार रे ॥ हार उपम पामे तदा रे, रोके चोकीदार रे ॥ ३ ॥ कर्म० ॥ मणिवलये करी रणकणे रे, एहवे करे करी जेह रे ॥ दुःखआवेश घले करी रे, ठेली काटया तेह रे ॥ ४ ॥ कर्म० ॥ कूटे हृदय ओडे केशने रे, मुखमा सास न माय रे ॥ नयन केशे करी टाकीया रे, रखे पति- अवस्था देखाय रे ॥ ५ ॥ कर्म० ॥ कुसुमावली परमुख सहु रे, पोहोतु अतेउर तत्र रे ॥ लोहनिगडे पूरयो नरपति रे, दीठो चारक जत्र रे ॥ ६ ॥ कर्म० ॥ अनुचित सेव्यु वहु अमे रे, मानु देखावती एम रे ॥ हारपमण मानु दुःखधी रे, अधिक कूटे धरी प्रेम रे ॥ ७ ॥ कर्म० ॥ नरपति देखी एहवु रे, रक्षकपुरुपनी पास रे ॥ कहेवरावे ए शु करो रे, निःफल एह प्रयास रे ॥ ८ ॥ कर्म० ॥ जेहथी अधर्म परपरा रे, ते केम करीये शोक रे ॥ लक्ष्मी चचल ज्यु विजली रे, माने स्थिर मूढ लोक रे ॥ ए ॥ कर्म० ॥ स्वप्न समा सगम कह्या रे, नवि समजे एह जीव रे ॥ ठेहवा रागविलासना रे, एहवा एम सदैव रे ॥ १० ॥ कर्म० ॥ अवि- वेकी जन आचरे रे, तेम करीये न विलाप रे ॥ सुख दुःख सन्ने अनु- जवे रे, केवल कीधा आप रे ॥ ११ ॥ कर्म० ॥ [illegible] रे, श्रीजिनवयण रसाल रे ॥ जवसायर तरीने [illegible] निसाल रे ॥ १२ ॥ कर्म० ॥ ते पाम्या तो [illegible]

सार रे ॥ एह टाली बीजो नहीं रे, दुःख ओळखणहार रे ॥ १३ ॥
कर्म० ॥ नृपतिए एम जे कह्यु रे, सांभळ्यु सहुये तेह रे ॥ एह एमन
एम मानता रे, नहीं अन्यथा कांइ एह रे ॥ १४ ॥ कर्म० ॥ नृपतिनी
आणा लही रे, आणंदनी वळी एम रे ॥ बलात्कारे आणा लही रे,
धारी धर्मशु प्रेम रे ॥ १५ ॥ कर्म० ॥ गंधर्वदत्ता विद्याधरी रे, आया
श्रमणी गुरू रे ॥ पासे प्रव्रज्या आदरे रे, तत्त्वजाण अति शुरू रे ॥ १६ ॥
कर्म० ॥ धन्य ए राणी एहनी रे, धन्य ए राय सुजाण रे ॥ जाण्यु पण
एहनु सरु रे, एहनुज तत्वनिर्वाण रे ॥ १७ ॥ कर्म० ॥ बीजे खंडे
निरमळी रे, एकवीशमी ए ढाळ रे ॥ समरादित्यचरित्रनी रे, पद्म कहे
सुरसाल रे ॥ १८ ॥ कर्म० ॥ सर्व गाथा ॥ ६२२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर आणंद अति, कदर्थना करे नित्य, उपशम नृप अति
आदरे, क्रोध न करे कुमित्त ॥ १ ॥ मन चिंते नहीं माहरु, आयु अ
धिक ए वार, अणसण हुं हवे आदरु, पामु जिम भवपार ॥ २ ॥ ए
करी अणसण आदर्यु, आणंद अवनीपाल, सांभळी अणसण सिंह
कोप्यो कपुत कराल ॥ ३ ॥

॥ ढाळ बावीशमी ॥

॥ हारे म्हारे जोबनीयानो लटको दहाडा चार जो ॥ ए देशी
॥ हारे म्हारे देवशर्मा नामे कोइ पुरुष महंत जो, तेहने रे एम
शिखावे जइ कह्यो रे लो ॥ हारे० ॥ भोजन करव्य के नहींतर म
हाथ जो, एम सांभळीने गयो नृप पासे दुःख भर्यु रे लो ॥ १ ॥
॥ जइने दीठो राय बेठो शुभ ठाय जो, बोले रे एम वाणी सुजा
हामणी रे लो ॥ हारे० ॥ देवशर्मा प्राणीने सुख दुःख होय जो,
सहु अवगुणमांही शिरोमणि रे लो ॥ २ ॥ हारे० ॥ विनय
भवि आराधना योग्य जो, उचित अवसर पण ओळखे ए क
॥ हारे० ॥ केवळ जनने अनरथ वेरु ठाण जो, मत्त हस्ती
आचारी ए सदा रे लो ॥ ३ ॥ हारे० ॥ गंगप्रवाह परे
सहाय जो, अंधकार परे करे निपात सहु तणो रे लो ॥ हा
पंचेंद्रिय परे सर्व साद प्रतिकूल जो, अनुकूल ए तो जाणो अ

तणो रे लो ॥ ४ ॥ द्वारे० ॥ यद्यपि एम छे तोपण पुरुषाकार जो, नवि छोडीजे सत्पुरुषे क्षण मातजी रे लो ॥ द्वारे० ॥ पूर्वे उपार्जित कर्म परिणाम ते देव जो, ते पुरुषाकारे कीनाये जानिथी रे लो ॥ ॥ ५ ॥ द्वारे० ॥ ते कारण अवलंबो पुरुषाकार जो, आहार ग्रहण करीने जिम धरीये देहने रे लो ॥द्वारे०॥ जीवता प्राणी आपद् आणी अंत जो, पामे रे संपद् जाये आपद् तेहने रे लो ॥ ६ ॥ द्वारे० ॥ राजा बोले साचा वयण रसाल जो,देवशर्मा शुभकर्मा सानल माहरी रे लो॥द्वारे०॥ वान सुजान न भूक्यो पुरुषाकार जो,देश काल सजाली वात में आवरी रे लो ॥७॥द्वारे०॥ लीधी दीक्षा जावथी शिक्षा धारी जो,संपद् अभिलाषा नहीं भाषा शी कहो रे लो ॥ द्वारे० ॥ उचित काल सजाली में अणसण कीव जो, आहार ग्रहण नवि करीये कोइ परे लहो रे लो ॥ ८ ॥द्वारे०॥ तव ते बोल्यो चित्त नवि डोल्यो तुम जो, आहार लेवामा पण तुम सुत ते कोपशे रे लो ॥ द्वारे० ॥ राजा कहे ए लहे अकारण कोप जो, एह कोपी शुभलोपी शुं आरोपशे रे लो ॥ ए ॥ द्वारे० ॥ सच पश्चा क्रिया ते नवि जाय जो, तव ते कहे तुमे सुत वृत्तांत जाणो सवे रे लो॥ द्वारे० ॥ तुम्ह शरीरने पीम करे रखे एह जो, इवणा वयण कटुक टुक मुखथी ते चवे रे लो ॥ १० ॥ द्वारे० ॥ चिंतवे केतवे इण अवसर नृप-पुत्र जो, केम नवि आव्यो जाव्यो मनमा भूपति रे लो ॥ द्वारे० ॥ अ-मर्ष जरी उदीरीउं क्रोध कषाय जो, खड्ग लेइ आव्यो जाव्यो निज रूपथी रे लो ॥ ११ ॥ द्वारे० ॥ आहार ग्रहण करय नहींतर छेडुं शीश जो, इण करवाल कराल उपम जमजीहनी रे लो ॥ द्वारे० ॥ राय कहे कोण बीक लहे छे एह जो, काया माया प्राहुणी कोइक दीहनी रे लो ॥ १२ ॥ द्वारे० ॥ मरण शरण तो अवश्य करे ए जीव जो, जाणे जेह अशाश्वत नाणे ते खेदने रे लो ॥ द्वारे० ॥ गर्भसमयथी समय समय मरे नित्य जो, जीवतो किम कहीये ए पण वेदीने रे, लो ॥ १३ ॥ द्वारे० ॥ परलोकनो बहु लोक तणे ए साथ जो, चालेवो वर [illegible] कोइ आगले रे लो ॥ द्वारे० ॥ पोहतो वहेलो कहो [illegible]
आयु अनित्य व्यतीत थये [illegible]
बादे आव्यो जीव जो, तेहने

हारे० ॥ जन्म मरणमा नही को शरण विचार जो, व्रत आदरता धरता चित्त जिनवाणीए रे लो ॥ १५ ॥ हारे० ॥ जरा मरण ने रोग शमण जिनवयण जो, एह रसायण अमयसुसायण सार ठे रे लो ॥ हारे० ॥ पीधु कीधु काम तिणे नहीं जीति जो, जन्म मरणनी जाणु तिणे मुफ पार ठे रे लो ॥ १६ ॥ हारे० ॥ शोध्यो आतम पापमेल सनि धोय जो, स्वजन कुटव निगम ते जागी लोहनी रे लो ॥ हारे० ॥ मरण काल वि कराल करे शु तास जो, जेह मनुष्ये पयमी जींती मोहनी रे लो ॥१७॥ हारे० ॥ एह कलेवर घरमा पण न पीपास जो,तप धन जेहने तेहने श रीरसलेपीज रे लो ॥ हारे० ॥ सुनिहित निहित मरण विधिपूर्वक जेण जो, तेहनु रे वर मरण ते उत्सव देखीयु रे लो ॥ १८ ॥ हारे० ॥ तप पाथेय ग्रह्यु जिणे साथे शुरू जो, मरण समाधे निर्बाधे मार्गे मुनि रे लो ॥ हारे० ॥ जे मरणे करी स्वर्ग के होय अपवर्ग जो, तेहवु मरण तो उत्सवजूत मागे गुणी रे लो ॥ १९ ॥ हारे० ॥ एणी परे नरपति शुभ मति बोले बोल जो, बीजे खडे ढाल ए बावीशमी कही रे लो ॥ हारे० ॥ धीरज रायनु वीर्य अतिशय देखी जो, पद्मविजय कहे एम राखो दृढता सही रे लो ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ ६४५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कालो सर्प कृतांत ठे,रोग व्यसन विषराशि, दीर्घ दाढी ते देखीये, पूठी न मूके पास ॥ १ ॥ जालमशु जुरू नवि होये, नासी शकाये नाहि, सुर असुरा नहीं आशरो, जरा रोग नहीं जाहि ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

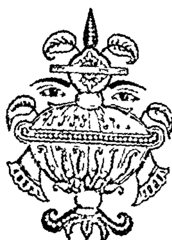
॥ करकंडूने करु वदना हु वारी लाल ॥ ए देशी ॥

॥ रोग शोक मानव घणा ॥ हु वारी लाल ॥ व्याधि जरा ने वियोग रे ॥ हु० ॥ तेहनो शो आशरो हुए ॥ हुं० ॥ तेणे ए धर्म सयोग रे ॥ हु० ॥ १ ॥ जिनवयणे एम दृढ रहो ॥ हु० ॥ ए आंकणी ॥ पण एक निमेष जे जीवीये ॥ हुं० ॥ ते जमराय प्रमाद रे ॥ हु० ॥ कायर सेनित मत दीजे ॥ हु० ॥ मुफ अपयशनो वाद रे ॥ हु० ॥ २ ॥ जि० ॥ मृत्युदाढे जे आवीउं ॥ हु० ॥ होय जो इंद्र नरींद्र रे ॥ हु० ॥ पण ते नीकली नवि शके ॥ हु० ॥ एणी परे यमनृपफंद रे ॥ हु० ॥ ३ ॥ जि० ॥ मृतमा

रण मात्रे करी ॥ हुं०॥ खागे निज कुल लाज रे ॥हु०॥ ए मुफ चिंता मुफ घणी ॥ हु० ॥ नहीं मुफ जीवित काज रे ॥ हु० ॥ ४ ॥ जि० ॥ आहार-त्याग निज वयणथी ॥ हुं० ॥ ते केम लेउं आज रे ॥ हु० ॥ मरण रुडुं नहीं जीववु ॥ हु० ॥ व्रत खंनी सुण राज रे ॥ हु०॥ ५ ॥ जि०॥ यत ॥ " वरमग्गिमि पवेत्तो, वर विसुद्धेण कम्मुणा मरणं॥ मा गहियवयजंगो, मा जीय खलियसीलस्स ॥१॥" एणो परे वयण ते सांजली ॥हु०॥ कोपानले व्याप्यो तेह रे ॥हु०॥ नयन कस्या अति रातमां ॥हु०॥ खड्गप्रहार करेह रे ॥हु०॥ ६ ॥जि०॥ मातु कीधु मूरखे ॥हु०॥ कीधो शिर पर घाय रे ॥हु०॥ नमो जिणाण कहे मुदा ॥ हु० ॥ तत्वज्ञानी तेह राय रे ॥ हु० ॥७॥जि०॥ कर्म कस्यां जे जे नरे ॥ हु० ॥ ते ते जोगवे आप रे ॥ हुं० ॥ जोगवता जय शु करे ॥ हुं० ॥ करता न बीये पाप रे ॥ हु० ॥ ८ ॥ जि० ॥ परतो निमित्ते मल्यो तने ॥ हु० ॥ नहीं एहनो अपराध रे ॥हु०॥ गुण अपराध पोते कस्या ॥ हु० ॥ आवे तेह अगाध रे ॥ हु० ॥ ए ॥ जि० ॥ यत ॥ "सवो पुवकयाण, कम्माणं पावए फलविवाग ॥ अवराहे सुगुणेसु य, निमित्तमेत्तं परो होइ ॥ १ ॥ अप्पा अरिहो अपवठियस्स, अप्पा जसो सीलमउ नरस्स ॥ अप्पा डुरप्पा अपवठियस्स, अप्पा जीअप्पा सरण गइय ॥ २ ॥ " एम चिंतवता रायने ॥ हुं० ॥ कीधो बीजो घाय रे ॥ हुं० ॥ पापीए पाप कलु घणुं ॥ हु० ॥ कलुषित अध्यवसाय रे ॥ हु० ॥ १० ॥ जि० ॥ मरण लही ते महातमा ॥ हु० ॥ अध्यवसाय शुज जास रे ॥ हु० ॥ सनत्कुमारमा उपना ॥ हु० ॥ कांति द्युति वर खास रे ॥ हु० ॥ ११ ॥ जि० ॥ पाच सागरने आउखे ॥ हुं० ॥ लीलाराम वि-मान रे ॥ हुं० ॥ सुखसागरमां जीलना ॥ हुं० ॥ काढे काल अमान रे ॥ हु० ॥ १२ ॥ जि० ॥ आपद राज्य पाली करी ॥ हु० ॥ मरीने ना-रकी थाय रे ॥ हु० ॥ एक सागरने आउखे ॥ हुं० ॥ रत्नप्रजाने ठाय रे ॥ हु० ॥ १३ ॥ जि० ॥ मिंद आपद पूरा थया ॥ हु० ॥ बाप बेटा संबध रे ॥हुं० ॥ खंम बीजो पूरण थयो ॥ हुं० ॥ ढाल त्रेवीश प्रबध रे ॥ हुं० ॥ १४ ॥ जि० ॥ पटधर सिंह सूरीशना ॥ हु० ॥ सोनानी गिरदार रे ॥ हु० ॥ सत्यविजय गुरु संयमी ॥ हु० ॥ कपूरविजय व्रतधार रे ॥हु० ॥ १५ ॥ जि० ॥ तास अंतेवासी रूडा ॥ हु० ॥ खिमाविजय जस नाम

रे ॥ हु० ॥ गीतारथ गुण आगला ॥ हु० ॥ जिनविजय तस नाम रे ॥ हु० ॥ १६ ॥ जि० ॥ तेहना शिष्य सोहामणा ॥ हु० ॥ ज्ञानी गुणभंडार रे ॥ हु० ॥ उत्तमविजय ए नामथी ॥ हु० ॥ उत्तम चरित्र विचार रे ॥ हु० ॥ १७ ॥ जि० ॥ अढार ओगणच्यालमा ॥ हु० ॥ संवत्सर गुरु वार रे ॥ हु० ॥ उत्सव महोत्सव अति घणा ॥ हु० ॥ तिणे वरसे तप कार रे ॥ हु० ॥ १८ ॥ जि० ॥ पोष शुक्ल तेरश दिने ॥ हु० ॥ खींमडी नगर मझार रे ॥ हु० ॥ बीजो खंड पूरण कर्यो ॥ हु० ॥ संघआग्रह सुखकार रे ॥ हु० ॥ १९ ॥ जि० ॥ ते गुरु उत्तमविजयनी ॥ हु० ॥ सान्निध्य लही सुरसाल रे ॥ हु० ॥ पद्मविजय कह्यो प्रेमशुं ॥ हु० ॥ सुणतां मंगलमाल रे ॥ हु० ॥ २० ॥जि०॥ इति श्रीसंविज्ञपक्षीय पंडित प्रवर श्रीमदुत्तमविजयगणिशिष्यपंडित श्रीपद्मविजयगणिविरचिते श्री समरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे सिंहनृपानंदकुमारयो संगतयो द्विती यो भवभव समाप्त ॥ द्वितीयखंडे सर्व गाथा (६६७) उक्त गाथा (११)

॥ इति श्री समरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे द्वितीय खंड संपूर्ण ॥ २ ॥



॥ अथ ॥

॥ तृतीय खंडस्य प्रारंभोऽय ॥

॥ दोहा ॥



॥ शांति जिनेसर सोलमा, दान अजय दातार,
अही व्रत उंपम नव गएया, बहु वारंवार ॥ १ ॥
अहि अहिपति कीधो अधिक, अवलपुरुष आदेय,
कमठ हठी हठ काढीउं, बहु श्री वामेय ॥ २ ॥
वामा सगथी वेगला, वामेतर गुणवंत, गुरु गुरुगुण-
गण आगला, महिमावंत महंत ॥ ३ ॥ बीजो नव
एम बोलीउं, बाप बेटा संबध, मावकी तनु मत्सर
मने, धारे अतिशय धध ॥ ४ ॥ तेह शिखि जाखि-
णी तणो, कहुं रुमो अधिकार, त्रीजे खडे ते सुणो,
आणी हर्ष अपार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

आठे लावनी देशी ॥

॥ जंबूद्वीप अनुप, वसें सीत्तेर एक रूप ॥ आठे खाल ॥ पाठ तेहमा पट कुजगिरि जी ॥ १ ॥ वृत्त वैताट्य ते चार, चोत्रीश दीरघ सार ॥ आ० ॥ दो चित्र विचित्र दो जमग छे जी ॥ २ ॥ गजदंता वर चार, सोल वख्या वखार ॥ आ० ॥ दो शय कंचनगिरि वली जी ॥ ३ ॥ मेरु पर्वत एक, वचमा ते सुविवेक ॥ आ० ॥ तेहथी पश्चिम दिशे जइ जी ॥ ४ ॥ नगरी नामे कोश, जेहनो सबलो जोश ॥ आ० ॥ लोक बहु वाले वसे जी ॥ ५ ॥ व्याधि वेदन नहीं रोप, नहीं परचक्रनो शोप ॥ आ० ॥ सुरपुर सम शोभा मली जी ॥ ६ ॥ नारीनो सरल स्वभाव, स्थि-रस्नेही गत पाव ॥ आ० ॥ राजधानी पंचवाणनी जी ॥ ७ ॥ लोक बोले सत्य वाच, नहीं कोइ होय जिम काच ॥ आ० ॥ राजा अजितसेन तिहां किणे जी ॥ ८ ॥ संग्रामे जयवाद, पाम्यो ते अविवाद ॥ आ० ॥ नृप घणा पाये नमे जी ॥ ९ ॥ तेहने [illegible] एक, ते परधान विवेक ॥ आ० ॥ इन्द्रशर्मा नामे थयो जी ॥ १[illegible] [illegible]करा तस नारी, तेहनी कूख मझारी ॥ आ० ॥ आणंद [illegible] जी [illegible] करी

सागर आय, वली ससार जमाय ॥ आ० ॥ ऊणा चार सागर पछी जी ॥ १२ ॥ पुत्रीपणे ते आय, जालिणी नाम ते ठाय ॥ आ० ॥ आवी योवनवय तदा जी ॥ १३ ॥ ते नृपनो परधान, बुद्धिसागर अभिमान ॥ आ० ॥ तेहनो ब्रह्मदत्त सुत जलो जी ॥ १४ ॥ तेहने दीधी तेह, सुख जोगवे ससनेह ॥ आ० ॥ काल गयो वही केटलो जी ॥१५॥ इण अवसरे सिहदेव, जालिणी कूखे हेव ॥ आ० ॥ उपनो कर्मशक्ति घणी जी ॥ १६ ॥ देखे सुपने तास, कनककलश अभिराम ॥ आ० ॥ पूर्ण मुखमा पेसतो जी ॥ १७ ॥ मातने नवि सतोप, नीकलीउं निज जोष ॥ आ० ॥ जागो ते पण किमहीके जी ॥ १८ ॥ जागी स्वपनु देख, नवि कछु पतिने रेख ॥ आ० ॥ शुज अशुज सकीर्णथी जी ॥ १९ ॥ गर्ज ते वधतो जाय, देह मन पीमा थाय ॥ आ० ॥ जाणे पाडु ए गर्जने जी ॥ २० ॥ करे उपाय अनेक, कर्मविपाक अतिरेक ॥ आ० ॥ गर्ज कुशल क्षेमे रह्यो जी ॥ २१ ॥ जाणी ब्रह्मदत्ते वात, परिजनने समजात ॥ आ० ॥ जालवजो तुमे गर्जने जी ॥ २२ ॥ प्रसवसमय जिम एह, मारी न नाखे जेह ॥ आ० ॥ सावचेत रहेजो सहु जी ॥ २३ ॥ जब ए जन्म ते थाय, कहेजो मुजने आय ॥ आ० ॥ जेम नवि जाणे ब्राह्मणी जी ॥ २४ ॥ उपनो दोहद तास, जिन पूजु सुविलास ॥ आ० ॥ तपसीनी जक्ति करु जी ॥ २५ ॥ प्राणीने देउ दान, धर्म साजलीये कान ॥ आ० ॥ ते जरतारे पूरीया जी ॥ २६ ॥ गर्जप्रजावे एम, उत्तम वस्तुनो प्रेम ॥ आ० ॥ जन्मसमय जण्यो पुत्रने जी ॥ २७ ॥ चिन्तवे तेहनी माय, मिलीउं ए समुदाय ॥ आ० ॥ केम मारी शकीये इहा जी ॥ २८ ॥ जाणी तस अजिप्राय, वधुजीवा सखी थाय ॥ आ० ॥ जाखे एम तस वयणमा जी ॥ २९ ॥ एह गर्ज छे पाप, दीये तुमने सताप ॥ आ० ॥ एह गर्जने परठवो जी ॥ ३० ॥ अतर जरीउं कषाय, बोली शुजस्वरा माय ॥ आ० ॥ साजती कहे जाणो तुमे जी ॥ ३१ ॥ लीधो बालक तेह, कछु ब्रह्मदत्तने एह ॥ आ० ॥ छानो पाले तेहने जी ॥ ३२ ॥ लोकमा काढी वात, बालक मून आयात ॥ आ० ॥ एम करता केइ दिन गया जी ॥ ३३ ॥ थापे तेहनु नाम, शिखिकुमार अजिराम ॥ आ० ॥ वधतो कला ग्रहतो थको जी ॥ ३४ ॥ समरादित्यनो रास, त्रीजे खडे उल्लास

श्रा० ॥ ढाल प्रथम पूरी कही जी ॥ ३५ ॥ सर्व गाथा ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

॥ जाण्यो विचार निज जननीनो, वाध्यो अति वैराग, जननीए पण जाणीयो, एह सनेह अजाग ॥ १ ॥ क्रोध थकी ते कलकली, चाखे पतिने चाल, जो तुझ एहवु काज छे, तो हवे मुझ मन राख ॥ २ ॥ सयल काम तज्या नामटो. पाणी न करे पान, शिखिकुमर एहवु सुणी, छद्वेग करे असमान ॥ ३ ॥ घरनी नीरजीई पणु, चिंते चातुर चित्त, नाना पण नातुं करे. अथ श्रावतु अपवित्त ॥ ४ ॥ इपे करनिकरनी कुंवरीई, नान अति रेवान, झुगतु नवि रहेवु जग, एम चिंती अवदान ॥ ५ ॥ नीरजीई पूछ्या विना, अशोकवन उद्यान, पोहोतो तव निहां पेखीया, मुनिवरजी महिराय ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ मोहनगारा हो राज म्हा म्हारा लाखल सुगुणा सुना ॥ ए देशी ॥ अथवा शालिजद्र जोगी रस्यो, ए देशीमा पण चाले छे ॥

॥ वहु दिवसे करी परिवरया जी, गुणनणि रयणभंडार ॥ एक अनजम टाळता जी. दोष ध्यान परिहार के ॥ १ ॥ मुनिवर वान हो राज वदो, तुमे चर नार पाप निवदो ॥ मु० ॥ ए आकणी ॥ अण उनथी विरमीया जी, न करे चार कषाय ॥ पांच इंद्रिय निग्रह करे जी, पाळे जे षट्काय के ॥ २ ॥ मु० ॥ मृषाया नय माननी जी टाल्यां आठ मदठाय ॥ नव ब्रह्मचर्य शुत्ति धरे जी, टाळे पाप निपाय के ॥ ३ ॥ मु० ॥ दशविध मयन पाळता जी, भा अग्यारना जाग ॥ बारे भेदे तप करे जी, एम तपरमपनी नाव के ॥ ४ ॥ मु० ॥ विजयसिंह नामे गणी जी, देखी वहो आणंद ॥ चिनवे धन्य ए मुनिवर जी सेवे धर्म अमंद के ॥ ५ ॥ मु० ॥ इंदिर ममाननेह छे जी, केम कीधो ए त्याग ॥ पूछु कारण हवे जी, केम टाळ्यो संसार के ॥ ६ ॥ मु० ॥ जइ प्रणम्या मुनिगणीया जी, मुनिए दीधे धर्मलाभ ॥ बेसो मुनिवरने [illegible] सारखवा धरे चाह के ॥ ७ ॥ मु० ॥ पूछे केम मने [illegible] [illegible] उद्वेग ॥ मरणि सुंदर मने जी. सारख [illegible] ॥ ८ ॥ मु० ॥ हृदुस्था सुवे [illegible] [illegible]

सचने जी, स्वजन कुटुंब विस्तार के ॥ ए ॥ मु० ॥ स्वजनवर्ग ठामी करी जी, थया निर्मम निःसंग ॥ कहो कारण गुरु तेहनुं जी, सुण वानो मुज रंग के ॥ १० ॥ मु० ॥ गुरु नाखे ए शरीरमा जी, शुं दीतु ते सार ॥ हाड चाम शोणित जलु जी, अशुचि तणो नंमार के ॥ ११ ॥ मु० ॥ अर्थ अनर्थनुं मूल छे जी, तेहमा श्यो प्रतिबंध ॥ श्यो प्रतिबंध सुपन समो जी, सयण तणो संबंध के ॥ १२ ॥ मु० ॥ सयण बचे रह्यो टलवले जी, रोग लह्यो जब आप ॥ वहेंची न लीये रोगने जी, सयण करे संताप के ॥ १३ ॥ मु० ॥ मरी जाय वली एकलो जी, सयण जोइ रहे ताम ॥ रोने नयण आंसु झरे जी, सयण कुटुंबनो ग्राम के ॥ १४ ॥ मु० ॥ नावे कर्म ते एकलो जी, नोगवे तस फल एक ॥ कोण स्वजन परजन कहो जी,चिंतजो धरीय विवेक के ॥ १५ ॥ मु०॥ वेरी थाये मावनी जी, पुत्र ते वेरी थाय ॥ अनवस्थित ए नावमा जी, सयणमा किम मुकाय के ॥ १६ ॥ मु० ॥ इहा दृष्टांत ते माहरो जी, सानल थइ सा वधान ॥ इणहिज विजयमा नीपन्यो जी, लक्ष्मीनिलयपुर जाण के ॥१७॥ मु० ॥ सार्थवाह नामे तिहा जी, सागरदत्त सुजाण ॥ श्रीमती तेहनी नार्या जी, हुं तस पुत्र वखाण के ॥ १८ ॥ मु० ॥ कुमर अवस्थाए वर्त्ततो जी, गयो ते नगर आसन्न ॥ लक्ष्मी पर्वत उपरे जी, क्रीमा करवा मन्न के ॥ १९ ॥ मु० ॥ तिहा दीठी एक स्थानके जी, नालीएरी सुविशाल ॥ गंध पत्र मंचय मल्यो जी, दीठे कौतुक ते नालि के ॥२०॥ मु० ॥ एक पाद ते नीकली जी, पेठो पृथवी माहि ॥ कौतुकथी जोतो थको जी, चिंते ते मन माहि के ॥ २१ ॥ मु० ॥ एहनो वृक्ष एणडे थकी जी, उतरीउं ए पाद ॥ धरतीमा पेठो नली जी, कारण कोइ अगनाद के ॥ २२ ॥ मु० ॥ त्रीजे गमे एणी परे जी, बेठो करे विचार ॥ बीजी ढाल पदम कहे जी, पुण्ये जय जयकार के ॥२३॥ मु०॥ सर्व गाथा ॥६०॥

॥ दोहा ॥

॥ एणे अवसर मुज उपनो, मनमा अति प्रमोद, नाया सुरजि गंगा, आवे अति आमोद ॥ १ ॥ सहज वेर विसारीने, सावज प्रमुख सनेह, षट्ऋतु कुसुम फल्या खरा, भ्रमर गुंजत जमेह ॥ २ ॥ लक्ष्मी पर्वत सहुकीउं, देतो अति आणंद, ताप विना सूरज तपे, पाम्यो पर

माणइ ॥ ३ ॥ इ चिंतु अहो एहवुं, भुवन अलेग जूत, इणे अवसर तिहां आवीउं, देवसमूहे दित्त ॥ ४ ॥ रविमंगल परे राजतुं, जय जयरवथी जोर, कुसुमवृष्टि बहु कीजते, रयण मणिन तिणे ठोर ॥ ५ ॥ पश्चिम दिशिथी परिवर्युं देवसमूहे दीठ, धर्मचक्र धर्मधोरीतुं, आव्युं अति उत्कृष्ट ॥ ६ ॥ श्वेताम्बर बहु साधुजी, पाठ धारया परिवार, आव्या हवे इणे अवसरे प्रभुजी परम कृपाल ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

करेलणा घमी दे रे ॥ ए देशी ॥

॥ चक्र चले आकाशमां, छत्र चले आकाश ॥ देवदुंदुभि वली वाजती, गाजी रह्युं आकाश ॥ १ ॥ भविक जन हरखो रे, जगतमां जोता देव नहीं एह सरिखो रे ॥ भ० ॥ ए आंकणी ॥ गगने चामर चालता, सिंहासन पायपीठ ॥ कनककमल उपर ठवे, पादकमल मे दीठ ॥ २ ॥ भ० ॥ अजितदेव तिर्थंकरु, सुर नर बहु गुण गाय ॥ धूपघटी महके वली, पाठ धारया तिणे ठाय ॥ ३ ॥ भ० ॥ भवसायर तरीया जीके, परीया नाख्या जेण ॥ सरीया कारज आपणा, दीठा जन नयणेण ॥ ४ ॥ भ० ॥ हर्ष थयो मुजने घणो, नाठो रोग मिथ्यात ॥ समकित अमृत पामीयो, हरख्यो साते धात ॥ ५ ॥ भ० ॥ चिरयुं चित्तमां एहवुं, धन्य थयो हुं आज ॥ जगचिंतामणि सारिखा, दीठा श्री जिनराज ॥ ६ ॥ भ० ॥ रजत कनक रयणा तणा, देव रचे प्राकार ॥ कनक रयण मणिमय तणा, कोसीसा सुप्रकार ॥ ७ ॥ भ० ॥ केतु पताका सोहती, तोरण विचित्र प्रकार ॥ वृक्ष अशोक बारस गुणो, द्वादश छत्र उदार ॥८॥भ०॥ दिव्य वैडूर्य सिंहासणे, चामर चोवीश जोमी॥ धर्मध्वज मणित वली, सहस जोयण नहीं जोमी ॥ ९ ॥ भ० ॥ समवसरण वेठा प्रभु, अजितदेव भगवान ॥ धर्मकथा प्रारभता, भवजल नाव समान ॥ १० ॥ भ० ॥ बे पासे होय देवता, वेणु वजावे सार ॥ प्रभु वाणीने पूरता, दिव्य ध्वनि परकार ॥ ११ ॥ भ० ॥ बीजा पण गाजा करे, देशना राग प्रमाण ॥ उतरे एम अतिशय प्रभु, स्या [illegible] १२ ॥ भ० ॥ देशनामां हवे जाणीउं, एह अथिर [illegible] परिणम्यो, उपनो हर्ष अपार [illegible] ॥ भ० ॥ [illegible]

वत ॥ एक अचरिज मुज मोटकु, केम होशे जगवत ॥ १४ ॥ ज० ॥ पाद नालीएरी केरमो, केम उतरीयो एह ॥ एहनी हेठल द्रव्य छे, के नहीं मुज संदेह ॥ १५ ॥ ज० ॥ छे तो श्ये परिमाण छे, कोणे थाप्यु एह ॥ तेहनो किश्यो विपाक छे, परजने जोगवे जेह ॥१६॥ज०॥ परमेश्वर जाखे हवे, उतरीउं एह पाय ॥ लोजदोषथी जाणजो, द्रव्य अहें इण गाय ॥ १७ ॥ ज० ॥ सोनझ्या सात लाख छे, तुम्हे ने पादनो जीव ॥ निहु जणे मली दाटीउ, तास विपाक अतीव ॥ १८ ॥ ज० ॥ धर्मसा धक विपाक छे, एम बोल्या जन स्वामी ॥ तव में फरीने पूछीउ, विनये करी परणाम ॥ १९ ॥ ज० ॥ किम म्हे ने नालीएरीए, दाट्यु धन ए एम ॥ विपाकमा अंतर पड्यो, एह थइ गयु केम ॥ २० ॥ ज० ॥ प्रभुजी कहे विस्तारथी, एह विपाकनी वात ॥ देखीतु होय थोमजु, पण बहु उदये आयात ॥ २१ ॥ ज० ॥ समरादित्यना रासमा, त्रीजे खंडे एह ॥ ढाल त्रीजी पद्मे कही, मधुर सितायी जेह ॥२२॥ ज० ॥ सर्व गाथा ॥६७॥

॥ दोहा ॥

॥ एह विजयमा अमरपुर, अमरदेव अजिधान, गाथापति तस गुण जरी, सुंदरी स्त्री शुजवान ॥ १ ॥ दोय पुत्र तुमे दीपता, आदि गुणचंद एक, बालचंद बीजो वली, कही न जाये टेक ॥ २ ॥ यौवन पाम्या जे टले, जरी करीयाणा जाय, इणहिज देशे आवीया, वेगे करी व्यवसाय॥३॥ आव्यो लाज मन उल्लीउं, इणे अवसर एक राय, विजयधर्म नामे वलो, आवे रण करणाय ॥ ४ ॥ ते नगरीनो अधिपति, सूरतेज निज माय, सार मार निज साथ ल्ये, इण परंत करी आय ॥ ५ ॥ चढीउं नरपति चोपखु, परबलनो जय पामी; तुमे पण निज पोतातणो, दोहरा लेइ दाम ॥ ६ ॥ इणे अवसर आवी करी, निहु जणे करी विचार, द्रव्य जूमिमा दाटीयु, सुपरे कीधी सार ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥

॥ कोइक दिन हवे गुणचंद चिंतवे, लोजदोषथी एम जी ॥ नाग ए लेशे रे नाट माहरो, मरण सहे कर्म तेम जी ॥ १ ॥ गतिपरिणामे रे मति एम उपजे ॥ ए आकणी ॥ उपप्रयोगे माम्यो ज्ञानने, सारथीया

सवि शोक जी ॥ लोजदोपथी रे न गएयो जाइने, करवो मोह ते फोक जी ॥ २ ॥ ग० ॥ शुद्ध स्वजावे रे तुमे तिहांथी मरी, व्यंतरमां थया देव जी ॥ नाग ते करज्यो रे गुणचदने तिहां, मरण लह्यु ततखेव जी ॥ ३ ॥ ग० ॥ डव्य न जोगव्युं रे कर्म वधाइजं, रत्नप्रजाए जाय जी ॥ तुमे पण देशो रे जाणु पचनु, चरीया जोगवी आय जी ॥ ४ ॥ ग० ॥ इणहिज विजये रे ढकणापुरवरे, हरिनंदी सववाहो जी ॥ वसुमती जार्या रे कुखे जपनो, मातने हर्ष अथाहो जी ॥ ५ ॥ ग० ॥ देवदत्त तुऊ नाम ते थापीज, हवे नारक गुणचंदो जी ॥ कालथी उपनो तिहांथने ट्रकनो, नाग कषायनो वृंदो जी ॥ ६ ॥ ग० ॥ डव्यपरिग्रह करी वेगो तिहां, तव तिहां उत्सव थाये जी ॥ लक्ष्मी पर्वतवासी देवीनो, तु पण तेणे समे जाय जी ॥ ७ ॥ ग० ॥ देवता पूजी रे दीन अनाथने, दीधु करणाए दान जी ॥ करी रसोइनी सामग्री सवे, करी जोजन वली पानो जी ॥ ८ ॥ ग० ॥ पूर्वजनना रे स्नेहथी जोयवा, रमणिक पर्वत तेहो जी ॥ जमतो जमतो रे आव्यो तिहां कने, दीगे नागे तेहो जी ॥ ए ॥ ग० ॥ लोजे जाणुं रे डव्य ए लेइ जशे, करट्यो चरणने देश जी ॥ विष अनि उग्रे रे पजीजं धरणीए, नहीं कोइ सज्ञाविशेषो जी ॥ १० ॥ ग० ॥ ताहरे लोके रे मास्यो नागने, उपनो इणहिज गामो जी ॥ सिंहपणे ते रे पूर्वअज्यासथी, डव्यपरिग्रह तामो जी ॥ ११ ॥ ग० ॥ तु पण काल करी एह विजयमां, रूपगजा पुरी सारो जी ॥ शिवदेव नामे रे कुलपुत्रक वसे, यशोधरा तस नारी जी ॥ १२ ॥ ग० ॥ तेहनी कुखे रे इन्द्रदेव थयो, पाम्यो यौवन वेदो जी ॥ काल गयो वेइ हवे तुऊ जूपति, वीरदेव नामे नरेंदो जी ॥ १३ ॥ ग० ॥ लक्ष्मीनिलयनो रे स्वामी जाणीए, मानजग नामे रायो जी ॥ मोकलीजं तुऊ ते नरपति कहे, वेइ पुरिम समुदायो जी ॥ १४ ॥ ग० ॥ अनुक्रमे आव्यो रे इणहिज स्थानके, नींवपादपने हेठ जी ॥ जव तु वेगो रे तव दरीमुख रह्यो, सिंह ते सावज जेठ जी ॥ १५ ॥ ग० ॥ लोजथी नटा रे धरीने मारीजं, एह अनादि अज्यासो जी ॥ तुमे पण मास्यो रे सिंहने दोय मरी, उपना एहज वासो जी ॥ १६ ॥ ग० ॥ श्रीपुरवर पाटण माहि वसे, जक्षदास चंडालो जी ॥ माइ जक्का जस नारी चंडालिनी, तस

हुवे घणा ताजो जी ॥ १७ ॥ ग० ॥ अनुक्रमे जन्म्या रे नाम ते था पीनां, कानमेन तारुं थाय जी ॥ चरमेन नालीएरी जीवनु, अनुक्रमे जोवन पाय जी ॥ १८ ॥ ग० ॥ एक दिन लक्ष्मी रे पर्वते ते गया, त्या देखने काम जी ॥ कोप ते माग्यो रे आव्या डण देशे, ज्वलने पचाव्यो नामो जी ॥१९॥ग०॥ जक्षण करता रे नेगा ते बिहु, तव एक क्षेड कटारो जी ॥ धनरमदडे रे भरती खोदतो, चडसेन ते तिवारो जी ॥२०॥ग०॥ तस्करपारनी कीनारिहो देखतो, गोपन तागो तेह जी ॥ ते पण दीठो रे एगुरुमारीउं, उपयोग न अलेहो जी ॥२१॥ग०॥ काल करीने रे त्रीजी नरकमां, सात सागरने आय जी ॥ तु तिहां उपनो रे एह तो इहां रह्यो, मूढ म जाणतो जाय जी ॥२२॥ग०॥ एम तिहां रहेता रे केइ वरस गया, एक दुरगो नर्की जाग जी ॥ वयरी चमाले रे आवी मारीउं, सर्व अथिर संजोग जी ॥ २३ ॥ ग० ॥ अष्टादश सागरने आउखे, छठी नरके जाय जी ॥ तु हवे नीरख्या रे श्रीमती गामसा, पुण्ये नरनर पाय जी ॥ २४ ॥ ग० ॥ श्री समरादित्य रासमा ए कही, त्रीजे भवे ढाल जी ॥ पद्मविजय कहे चोथी सांभलो, आगल वात रसाल जी ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥१३०॥

॥ दोहा ॥

॥ शालिग्राम नित्य शेठीउं, नदणी नामे नारी, सुत तेहनो मोटो थयो, जन्म ते थयो तिवार ॥ १ ॥ बालसुंदर नामे रह्यो, योवन पाम्या जाम, दीक्षित्र सोहामणा, मलीया मुनिवर ताम ॥ २ ॥ सांभली ते देशना, तथा वैराग्य नाम, एक थयु तिणे पामीउं, श्रद्धाधर्म सुराम ॥ ३ ॥ श्रावकव्रत पण मेलीया, अणगमण विधि आराधी, उपना सुरम अमर ते अवतरी गद उपाधि ॥ ४ ॥ तेर सागर आउखे, पुण्य प्रभु रह्यो उपजे ते वह आगले, सांभलनो सनाली ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ सहेलडी हे फरेडु पेटुं नाम, साचरा उने आपणी हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ सहेलडी हे भारतीय क्षेत्र मझार, हस्तिनापुर नयरे वसे हो लाल ॥ सहे० ॥ सुधर्मा नाम, नरसेन सहु मन वसे हो लाल ॥ १ ॥ सहे० ॥ कांतिमती तस नारी, तेहनी कूखे उपन्यो हो लाल ॥

॥ ढाल वठी ॥

॥ आघा आम पधारो पूज्य, अम घर गोहोरण वेजा ॥ ए देशी ॥

॥ एम सांजली तु मन खेदाणो, चित्तमा चिंतवे एहवु ॥ श्राव
कुलमा उपनी श्राविका काम करे कुर्ड केहवु ॥ १ ॥ जिनमत शुद्ध
जाणी हो बाल, न करे काम ए एहवु ॥ आंकणी ॥ जिनमत स
जाण्यो युवतीए, इह परलोक विरुद्ध ॥ किम आचरण करे विपरीत
जस नर समकित शुद्ध ॥२॥ जिन०॥ अथवा हु कर मोही जीवने, क
नहीं एम जाणु ॥ तिणे हवे घरवासे मुक पोहोतु, हवे प्रव्रज्या टा
॥ ३ ॥ जिन० ॥ खेहनधना एहज ठेमा, तिणे घरे पण नवि जइये
अनगदेव गुरु पासे जइने, श्रमणधर्म आदरीये ॥ ४ ॥ जिन० ॥
गल घर जाउं सुखे इहांथी, क्लेश स्थाने देउ एहने ॥ एम विचारी
गखने कहे, हु नहीं छु रव देउ केहने ॥ ५ ॥ जिन० ॥ तव मगल ह
चित्त विचारे, मुजशु ए करे माया ॥ पण मायाए हु न वचाउ, प
चिंती कहे वाया ॥ ६ ॥ जिन० ॥ तुमने नवि मूकु अयविचमा, जि
वगे घेर न जाउ ॥ तव ते कहु जो तुक थानह वे, तो चालो
आउ ॥ ७ ॥ जिन० ॥ तिहा जइ पूठीश कोइ साधुने, अनगदेव
केरी ॥ वात चिंती चाल्या एम निह जण, मगल जुवे हवे हेरी ॥ ८
जिन० ॥ केइक दिन एम वही गया वाटे, आव्या अटवी माहि
शून्य स्थानक देखी मध्याह्ने, चिंते चित्त उगाहि ॥ ९ ॥ जिन०
महा साहस धरी क्रुड हृदयवी, लोजदोप चित्त धारी ॥ मगल
ठुरी पूठेथी, कूर चित्तथी मारी ॥ १० ॥ जिन० ॥ मगल नामे
अपमगल, नाव थकी ए दीसे ॥ जिम मगल मइ तिम वली नाम
शीतलिका कहे जीसे ॥ ११ ॥ जिन० ॥ दाढा दीधा कणनी
आखे आंवी वली नाखे ॥ तेम ए मगल नाम मात्रथी, शु कीजे
पाखे ॥ १२ ॥ जिन० ॥ इण अवसर तिहा विहार करता, अनग
गुरु आव्या ॥ दीठो अग्रगामी मुनिराजे, समतासग सोहाव्या ॥ १
जिन० ॥ मगल ठुरिका मूकी नाठो, ते मन माहि विचालु ॥ चोर
हरे शु पूठे आव्या, एम करी पूठे धालु ॥ १४ ॥ जिन० ॥ तव नास
मगल दीठो, चोर न दीठो कोइ ॥ मन चिंते त श ए अचरिज,

दीठी तव जोइ ॥१५॥ जिन०॥ रुधिरे खरडी लीधी करमा, देखी चिंते एम ॥ चोर नथी कोइ ए मद्दा रणमा, नासे मगल केम ॥१६॥ जिन०॥ छुरी पण उंखखी पोता केरी, तव ते निश्चे जाएयु ॥ काम मगलीए कीधुं तोपण, कारण नविय पिछाएयु ॥ १७ ॥ जिन० ॥ तिणे बोलावु मगलीथाने, कहेशे वात जे होइ ॥ एम करी मगलने बोलाव्यो, दोडे तव अति सोइ ॥ १८ ॥ जिन० ॥ तव सघलो विकल्प ते शमीउं, काम ते कीधु एणे ॥ जिनमतीनी पण वात कही ते, नवि दीठी में नयणे ॥ १९ ॥ जिन० ॥ जिणे जिनवयणा सुधा जाण्या, महोटा कुलमा थाइ ॥ उजय लोकनु विरुद्ध करे ते, किम सतवीचे वाइ ॥ २० ॥ जिन० ॥ एम करता मुनिवर पण पासे, थावी उंलख्यो तुरु ॥ ते वधा धर्मलाज दीउं तेणे, पुछ्यु तादरूं गुरु ॥ २१ ॥जिन०॥ इण थानिक तुं आ अवस्थाए, किहांथी थाव्यो केहने ॥ तव ते मूलथी सघलु जाएयु, थाशासन करी तेहने ॥ २२ ॥ जिन० ॥ थनगदेव पण गुरुजी थाव्या, थाशासना करी सुधी ॥ थशरण शरण गुरु ते साचा, थापे धर्मनी बुद्धि ॥ २३ ॥ जिन० ॥ गुरु साथे हवे तिहांथी चाल्यो, थाणेसरपुर ठाणो ॥ मास कल्प गुरु रह्या तिहां तहांरे, प्रहार पण रुझाणो ॥ २४ ॥ जिन० ॥ जिनमतीनी पण वात सही ते, तव चिंत्यु ते चित्ते ॥ यहो प्रकार मगलनो देखो, थहो थहो मोह विचित्त ॥ २५ ॥ जिन० ॥ जो पण शील थखंमित नारी, तोपण हवे पण सरीउ ॥ उजय लोक साधन हवे करशु, मगडे रुधु करीउ ॥ २६ ॥ जिन० ॥ जिनमतीपणे जिन सार लह्यु छे, परिणामे सुख सरसी ॥ महारो व्यतिकर सांजली ए पण, दीक्षा लेशे हरखी ॥ २७ ॥ जिन० ॥ एम करी म तेहने तारी, जवसायरथी नारी ॥ बहु दुःखरीउं ए ससारह, दीक्षा शिवसुखकारी ॥ २८ ॥ जिन० ॥ विण दीक्षाए नो घर जाउं, विघन चरणमा थावे ॥ एम चिंती थनगदेव पासे, दीक्षा लीधी जावे ॥ २९ ॥ जिन० ॥ त्रीजे खंडे ढाले, कहे थाचारज शिविने ॥ तीर्थंकर कहे थाचारजने, सुण हवे जे थयु दिने ॥ ३० ॥ जिन० ॥ सर्व गाथा ॥ १९६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ काल गयो हवे केटलो, जिनमतीए हवे जाम, वात सुणी कोइ

त्यणथी, तरुणी चिंते ताम ॥ १ ॥ अहो अहो कहु एहने, कीधुं मोहोटु काम, यौवनेकामने जीतीए, माम न राखे ताम ॥२॥ खेद गमे खमीजे घणु, मूक्यो माहरो मोह ॥ मगलीजे मागे मल्यो, दीधो स्वामीद्रोह ॥३॥ संवेगे चिंते इस्युं, आर्यपुत्र इण वार, कारय कीधु कामनु, सयल संसार असार ॥ ४ ॥ क्लेशायास बहु कह्यो, डुल्लहि मानवदेह, संयोग होय वियोगशुं, सहित तिणे श्यो सनेह ॥ ५ ॥ विषयविपाक वारु नहीं, तेणे करु आतम हित, उभय लोक आराधीये, चतुरा चिंते चित्त ॥ ६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ देशी हमिरीयानी ॥ सत्तत्र जिनवर विनति ॥ ए देशी ॥

॥ मात तातने पूछीने, आज्ञा पामी तास ॥ सनेही ॥ आवी खोलती आवी खोळती, सुंदरी ताहरी पास ॥ स० ॥ १ ॥ जिनवचने मन दृढ करो ॥ ए आंकणी ॥ मोक्षमार्गमा चालतो, देखी नावे एम ॥ स० ॥ आर्यपुत्र रुडु कयुं, मुजने तारी नेम ॥ स० ॥ २ ॥ जि० ॥ छेदी मोहनी वेलडी, उत्तम पुरुषनो पंथ ॥ स० ॥ आदरीजे आदर करी, भावथी थया निग्रंथ ॥ स० ॥ ३ ॥ जि० ॥ भवसायरथी आतमा, उतार्यो तें पार ॥ स० ॥ एम प्रशंसा करी घणी, आतम कीधो उद्धार ॥ स० ॥ ४ ॥ जि० ॥ दीक्षा एणी परे आदरी, अनगदेव गुरु पास ॥ स० ॥ काल गयो हवे केटलो, चारित्रने अभ्यास ॥ स० ॥ ५ ॥ जि० ॥ चारित्र पाली तु हवे, कालकमे करी काल ॥ स० ॥ पचवीश सागर आउखे, सुर हुउ सुवरसाल ॥ स० ॥ ६ ॥ जि० ॥ ग्रैवेयके ते उपन्यो, हवे मंगल गयो तठ ॥ स० ॥ तिहां जइ तेहने जाणवे, ढांके शीला लेइ हठ ॥ स० ॥ ७ ॥ जि० ॥ ते धनने ममते करी, नवि मूके तेह ठाय ॥ स० ॥ मास आहार ह्रेशे करी, पाम्यो तिहां यम डाय ॥ स० ॥ ८ ॥ जि० ॥ मरी छठी नरगे गयो, बावीश सागर आय ॥ स० ॥ नहा दुःख सही तिहांथी वली, आयु पूरु जव थाय ॥ स० ॥ ९ ॥ एहज विजयमा उपन्यो, रयवर्द्धनपुर गाम ॥ स० ॥ नेत्रिक चानालने घरे, दगळपणे थयो ताम ॥ स० ॥ १० ॥ जि० ॥ एक दिन रयवर्द्धन थकी, बहु दगलशुं तेह ॥ स० ॥ लेइ जाता जयनयपुरे, ड्व्यस्थानक आव्यो एह ॥ स० ॥ ११ ॥ जि० ॥ पूरव अभ्यासे करी, जातिस[illegible] पामी ॥ स०

वेह्निक खेचे पण नवि, मूके तेहज गाम ॥ स० ॥ १२ ॥ जि० ॥ हाके पण पाठो वले, फरी फरी आवे गाय ॥ स० ॥ चमाले क्रोधे हएयो, पूरण कीधु आय ॥ स० ॥ १३ ॥ जि० ॥ उदरपणे ते उपन्यो, उग्र सहाए एण ॥ स० ॥ तेह द्रव्य परिग्रह कस्यो, पाल्युं कर्मजरोण ॥ स० ॥ १४॥ जि० ॥ एक जुवटीउं एक दिने, सोमचड जस नाम ॥ स० ॥ जमतो ज मतो आवीउं, शालिपादपने गाम ॥ स० ॥ १५ ॥ जि० ॥ वेगे पासे निधानने, लोह अन्नाणने दोप ॥ स० ॥ मूलो जमे अमरस नस्यो, उ पन्यो तेहने रोप ॥ स० ॥ १६ ॥ जि० ॥ माख्या ते मरी उपन्यो, एहनी नारीने कुख ॥ स० ॥ डुरगिला नाम छे तेहनु, कुखमा रहे बहु जूख ॥ स० ॥ १७ ॥ जि० ॥ कान नाक गया जेहना, तेणीए जनम्यो पुत्त ॥ स० ॥ अनुक्रमे नाम ते थापीयु, रुद्रचन्द्र ते युत्त ॥ स० ॥ १८ ॥ जि० ॥ पाम्यो योवन अनुक्रमे, बहु जीवने डुखदाय ॥ स० ॥ निपटहनी परे वाधीउं, सेवे अकार्य सदाय ॥ स० ॥ १९ ॥ जि० ॥ चोरी करता एकदा, खात्रमुखे ग्रहेवाय ॥ स० ॥ समरजासुर रायनो तदा, मारवा हूकम ते थाय ॥ स० ॥ २० ॥ जि० ॥ शूलिए दीधो तिहा कणे, कोटवाले करी सोर ॥ स० ॥ मरी बीजी नरके गयो, वशामा डुख घोर ॥ स० ॥२१॥ जि० ॥ त्रण सागर काय हीणमा, आयु पाली करी काल ॥ स० ॥ इप निजये हवे उपन्यो, लछीनिलये सुरसाल ॥ स० ॥ २२ ॥ जि० ॥ एणी परे त्रीजा खडमा, सातलो सातमी ढाल ॥ स० ॥ पद्मविजय नाखी इसी, लोनथी बहु जजाल ॥ स० ॥ २३ ॥ जि० ॥ सर्व गाथा ॥२२५॥

॥ दोहा ॥

॥ लछीनिलय माहे वसे, अशोकदत्त अनिधान, शेठघरे सोहामणी, सुहंकरा शुनगान ॥ १ ॥ तेहनी कुखे तेहने, उपन्यो नारक आय, पुत्रीपणे तस थापीयु, अनिधा सिरिया ताय ॥ २ ॥ योवन पामी जेटले, दीधी सागरदेव, समुद्रदत्त सुत सुगुणने, निवाह वस्यो हेव ॥ ३ ॥ जोग जडी परे जोगवी, जत्तांशु नली नात, ग्रैवेयक सुर गर्नमा, आव्यो आयु अत ॥ ४ ॥ पुत्रपणे ते उपन्यो, सागरदत्त श्रीकार, नाम ठव्यु निरतु तदा, योवन पाम्यो ज्यार ॥५॥ धर्माचारज धारीआ, देवशर्म दयाल, श्रावक

जन पाले सखर, प्राणीनो प्रतिपाल ॥ ६ ॥ इसरखध श्रावक अवल, ते
हनी पुत्री ताम नंदिनी नामे परणीजं, कमनीय जोगवे काम ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ सुण मेरी सजनी रजनी न जाय रे ॥ ए देशी ॥

॥ जोग जोगवता सुत एक आयो रे, सुतनो महोत्सव करवा तायो रे ॥
सगा सनधी लेइ परिवार रे, ऊजाणी करवा सुखकार रे ॥ १ ॥ साजल-
जो सहु कर्मनी वातो रे, कर्मथी जलीजं कोइ न यातो रे ॥ तेह निधा-
ननी पासे आव्यो रे, पुत्र कोजीका करवा जाव्यो रे ॥ २ ॥ खोदे खान
ते कारण जाणी रे, द्रव्यस्त्रशनो कठ पिछाणी रे ॥ पाछी खान जली
परे पूरी रे, वीजी खोदी खाड सनूरी रे ॥ ३ ॥ जोजन करी हवे गयो
निज घेर रे, तब ते चितवीयु एणी पेर रे ॥ पूछु मातने के नवि पूछु
रे, जो नवि पूछु तो मानशे ऊंछु रे ॥ ४ ॥ एम जाणीने कही सवि वात
रे करवु एहनु कशुं कह्यो मात रे ॥ तब ते बोली सुफ देखाजो रे, सुफ
देख्या विण तुम्हे मन काढो रे ॥ ५ ॥ जोइने जुगताजुगतु कहेशु रे,
तें पण दाख्यो जड निज करशु रे ॥ अन्नाण दोपे तेणे एम धाल्यु रे,
कोइ उपाय करी पुत्रने मार रे ॥ ६ ॥ एम विचारी कहुं सुण पुत्त रे,
हमणा काढवु ठे नहीं जुत्त रे॥काढता जाणे जो नरराय रे, तो ठलटु
घरमाथी जाय रे ॥ ७ ॥ अवसरे लेशु आपण जाइ रे, उतावळ मत
करो तुमे नाइ रे ॥ तब तुं बोल्यो एम प्रमाण रे, एम करी पोहता ते
निज ठाण रे ॥ ८ ॥ केइ दिन काल्या ते पठी सुखमा रे, तुफ माताए
काल्या फुखमा रे ॥ लोजदोष पूर्व जव अन्न्यास रे, तुफ मारणनु चित्त ते
तास रे ॥ ए ॥ तेह फुखे नित्य नित्य रहे वळती रे, मनमा एम उपाय
चिंतवती रे ॥ पोसह उपवास पारणु जिहारे रे, जोजनमा विष देशुं
तिहारे रे ॥ १० ॥ ते उपवासथी होय लघु शरीर रे शीघ्र होवे विपनी
तिहा पीर रे ॥ दीधु विष पोतानी माय रे, जेहनु शरण ते मारवा धाय
रे ॥ ११ ॥ विपप्रयोगे नु लेवाणो रे,नंदिनी नारी जाणे तिणे ठाणो रे ॥
कोलाहल कर्यो तिणे आवी रे, मा पण रुवे कपटे चावी रे ॥ १२ ॥
लोक मळ्या जोवा सहु कोय रे, निरूपुत्र एक तेहमा होय रे ॥ श्रावक
श्रद्धावंत प्रमाण रे, मंत्र यंत्रना तेह सुजाण रे ॥ १३ ॥ सिद्धपुत्र ते

कहीये तेह रे, मनमां चिंतवे एहवु जेह रे ॥ जीवाडु हु मंत्रनी शक्ति रे, साधर्मिकनी करु एम नक्ति रे ॥ १४ ॥ मंत्रनी शक्ते जीव्यो जेह रे, चिंता उपनी तुऊने एह रे ॥ मनुज जीवितमा बहु अपाय रे, घरवासे रह्या हवे शु थाय रे ॥ १५ ॥ वली कोइक दिन एम बनी जाय रे, नव पचरकाण विना नव जाय रे ॥ ते कारण हवे लेउ दीक्षा रे, पालु पामी गुरुनी शिक्षा रे ॥ १६ ॥ देवशर्मा गुरु पासे लीधी रे, उचित विधिए दीक्षा हवे सुधी रे ॥ निरतिचार ते चारित्र पाली रे, उपन्यो ग्रैवेयके डु ख गाली रे ॥ १७ ॥ त्रीश सागरने आउखे जाणो रे, ग्रैवेयक सुर थयो सपराणो रे ॥ तुऊ माताए कस्यु काम कूडु रे, पीठ वाध्यु धन उपर रूडु रे ॥ १८ ॥ पुत्रना वधनो जे परिणाम रे, ऊव्यलोन पण अति उद्दाम रे ॥ ऊव्य न नोगव्यु वाध्यु पाप रे, धूमप्रनाए पहोती आप रे ॥ १ए ॥ पन्नर सागर तेहनु आय रे, तिहांथी मरी तिर्यंचमा जाय रे ॥ तिर्यंच माहि नाना नव करीया रे, तिहां बहु नोगव्या डु खना दरिया रे ॥ २० ॥ पूर्व नव अन्यासनो दोष रे, नालीएरी एह लोनविशेष रे ॥ तु चवी सागरदत्त शेठघेर रे, सिरिमति कुखे पुत्र एणी पेर रे ॥ २१ ॥ इण नवमा तुम्ह विहु इणी रीत रे, तीर्थंकर कहे मुऊ जे अतीत रे ॥ वात सुणी मुऊ थयो वैराग रे, शिखिकुमर सुण तु महानाग रे ॥२२॥ नरपतिए सुणी आणा दीधी रे, काढी लखमी तेह वहेंची दीधी रे ॥ दीन अनाथने करी उपगार रे, विजयधर्म गणधर अणगार रे ॥ २३ ॥ तेहनी पासे दीक्षा लीधी रे, माहरी वात हती ते कीधी रे ॥ विचरतो आव्यो हु आंही रे, तिणे जगमा कोय कोयनु नांही रे ॥ २४ ॥ शिखिकुमर कहे नगवन साचु रे, जिणे तुम्हे जाण्यु सघलु काचु रे ॥ पण दीक्षा वेवी प्रनु दोहेली रे, वातो करवी सहुने सोहेली रे ॥ २५ ॥ त्रीजे खंमे आठमी ढाल रे, मुनिगुण गाता मंगलमाल रे ॥ श्रीगुरु उत्तमविजयनो शिष्य रे, पद्मविजय कहे निशदीश रे ॥ २६ ॥ सर्व गाथा ॥ २५८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शिखिकुमार कहे मुणो, नाख्यो धर्मना नेद, दानादिक जे दाखीया, नेदना तस प्रनेद ॥ १ ॥ चार नेद सानल चतुर, दान शील तप दान

भावना चोथी भावीये, सर्वज्ञ केरी शाख ॥ २ ॥ त्रण भेद दानज तणा, पहेलु ज्ञान प्रधान, अनय धर्मउपग्रह अधिक,नाप सुणो हवे दान ॥३॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ कर्म न छूटे रे प्राणीया ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञाननु दान देता थका, जाणे बध ने मोख ॥ शिवसुखसंपद्द बीज छे,उपजे अतिघ्र संतोष ॥१॥ धर्म ए सेवो रे भवि जना ॥ ए आंकणी ॥ जे दाने लहे पुण्यने, जाणे पाप अशेष ॥ जाणी पुण्यने आदरे, पापने टाले विशेष ॥ २ ॥ धर्म ० ॥ यत ॥ "सुच्चा जाणइ कल्लाण, सुच्चा जाणइ पावग ॥ उजयपि जाणइ सुच्चा, ज छेय त समायरे ॥ १ ॥ " पुण्य करतो रे प्राणीउ, पामे नर सुर सुख ॥ पापथी दूरे थाता थका, तिरि नारक टले दु ख ॥ ३ ॥ धर्म० ॥ जिनवर जाषित नाणनु, दीधु दान विशाल ॥ इह परलोकना सुख घणा, दीधा तिणे सुरसाल ॥ ४ ॥ धर्म० ॥ राग द्वेष मोह टालीने, पामे केवलनाण ॥ अनुक्रमे सिद्धि वरे तिको, जे दीये नाणनु दाण ॥ ॥ ५ ॥ धर्म० ॥ दाण नाण एणी परे कह्यु, संक्षेपे करी एम ॥ दाता ग्राहक ए दोयने, एकाते हित प्रेम ॥ ६ ॥ धर्म० ॥ पृथवी पाणी अगनि वली, वायु वनस्पति काय ॥ बि ति चउ पचिंदिय जीवने, हणता हित नवि थाय ॥ ७ ॥ धर्म० ॥ मन तनु वचने ए जीवने, हणवो नाही लगार ॥ दान अजय एह जाणीये,सेव्यु मुनिजने सार ॥ ८ ॥ धर्म० ॥ अति दु खीयापणे जीववु, इछे सर्व सदाय ॥ तिणे कारण मुनिराजीया, राखे छे षट काय ॥ ए ॥ धर्म० ॥ यत ॥ "सव्वेवि जीवा इछंति, जीविउ न मरिज्जीउ ॥ तम्हा पाणवहं घोर, निग्गथा वज्जयंति ण ॥ १ ॥ ' नरपति पण मरवा पड्यो,आपे जीववा राज्य ॥ राज्य थकी पण जीववु, अधिकु कहे जिनराज ॥ १० ॥ धर्म० ॥ जे सहु जीवने इष्ट छे, देवु तेहज सार ॥ इन्द्र कीटक दोय जीववु, सरिखु इछे उदार ॥ ११ ॥ धर्म० ॥ आयु दीरघ पामीये, रूप सुरूप नीरोग ॥ परजव पण ते प्रशसीये, अजयदानो जे जोग ॥ १२ ॥ धर्म० ॥ यत ॥ " आयुर्दीर्घतर वपुर्वरतर गोत्र गरीयस्तर, वित्त जूरितर बल बहुतर स्वामित्वमुच्चैस्तर ॥ आरोग्य विगतांतर त्रिजगत श्लाघ्यत्वमल्पेतर, ससाराबुनिधि करोति सुतरा चेत कृपार्द्रांतर ॥ १ ॥" अजयदान एणी परे कह्यु, साजउ श्राव-

क तु नाण ॥ धर्मउपग्रह दान जे, जाग्यु तेह विनाण ॥ १३ ॥ धर्म० ॥ अशन पान खादिम वली, स्वादिम ने वस्त्र पात्र ॥ ओषध भेषज योग्य ते, दीजे मुनिवर पात्र ॥ १४ ॥ धर्म० ॥ सज्झायध्यानमा मग्न जे, जे वहे संजमभार ॥ कर्म हलका ते मुनि तरे, उतारे पर पार ॥ १५ ॥ धर्म० ॥ कर्म गुरु पोते बूडतो, केम तारे पर तेह ॥ तिणे चउकारण शुद्ध जे, दीजीये धरी ससनेह ॥ १६ ॥ धर्म० ॥ दायक ग्राहक शुद्ध जे, काल भावे करी शुद्ध ॥ दायक शुद्ध ताणु हवे, सांभली थाउं विबुध ॥ १७ ॥ धर्म० ॥ दाता ज्ञानी होये भलो, नहि अरु मद अहंकार ॥ श्रद्धा आदर अति घणो, रोमाचित ने उदार ॥ १८ ॥ धर्म० ॥ न्याये आव्यो जे द्रव्य ते, प्रासुक ने शुद्धमान ॥ अविरोधी जेह लोकमा, करतो निर्जराध्यान ॥ १९ ॥ धर्म० ॥ इहलोक ने परलोकनी, न धरे काय आशंस ॥ शुभ क्षेत्रे बीजनी परे, बहु फल पामे असंश ॥ २० ॥ धर्म० ॥ नर सुर शिव सुख संपदा, आपे एहज दान ॥ जे हवे श्रद्धा विना दीये, जस कीरति मन आण ॥ २१ ॥ धर्म० ॥ अभिमाने अयला दीये, एह दीये छे जो एम ॥ हु केम उंणो तु एहथी, नवि आपु कहो केम ॥ २२ ॥ धर्म० ॥ श्रद्धाभाव विनु बीज ते, न फले तास लगार ॥ दान बहु पण कु खीज, कलुषित चित्त अपार ॥ २३ ॥ धर्म० ॥ प्राणनो वध करी जे दीये, धर्मश्रद्धा मन राग ॥ चंदन बाली अगारनो, करे व्यापार निज लाग ॥ २४ ॥ धर्म० ॥ लोकविरुद्ध जे आपतो, धर्मविरुद्ध वली जेह ॥ पोते ग्राहक निहजणा, पडे संसारे तेह ॥ २५ ॥ धर्म० ॥ ग्राहक शुद्ध हवे जाणीये, धारे महाव्रतभार ॥ गुरुनी शुश्रूषा जे करे, जोग समाधिमा सार ॥ २६ ॥ धर्म० ॥ रति मदन अज्ञान, लोहनो कीधो रे त्याग ॥ त्रण गुप्ते गुपतो रहे, सज्झायध्याननो लाग ॥ २७ ॥ धर्म० ॥ पंचेंद्रियनो निग्रह करे, पाले साधुनो मग्ग ॥ चरणकरणनी रे सित्तरी, परभावेशु अलग्ग ॥ २८ ॥ धर्म० ॥ इह भव ने वली परभवे, होये अप्रतिबंध ॥ मेरु परे जे चले नहीं, उपसर्ग वायुने बंध ॥ २९ ॥ धर्म० ॥ एहवा जे मुनिराजने, रागे दीजे जे दान ॥ ग्राहक शुद्ध ते जाणीये, भेद ए बीजो अमान ॥ ३० ॥ धर्म० ॥ नवमी त्रीजा ए भवनी, ढाल कही सुपवित्र ॥ उत्तम पद्मविजये भली, समरादित्यचरित्र ॥ ३१ ॥ धर्म० ॥ सर्व गाथा ॥ २९२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शीलरहित जे साधुने, दीये कुपात्रे दान, अशुभ फल पामे अधिक, सर्पने जिम विषपान ॥ १ ॥ रुधिरे खरड्यु रुधिरथी, वस्त्र धुवे निण नीर, तिम कुपात्रे आपता, भाजे केम तस भीर ॥ २ ॥ थोडु पण जे सुपात्रथी, पामे सुख भरपूर, तरणा गो आहारे तुरत, दुध ज्यु दीये अविदूर ॥ ३ ॥ पात्रविशेषे आपीयु, एकज दान असमान, एकज जल गावि उरग, यथा पीये फल जान ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

आदर जीव क्षमागुण आदर जीव ॥ ए देशी ॥

कालशुद्ध हवे दान कहीजे, तपसीने दीये काले जी ॥ देहने उपगारी जिम होवे, तो फल तस बहु थाले जी ॥ १ ॥ सेवो रे नविआ धर्म ए वारु ॥ ए आकणी ॥ जिम काले जो करषण कीजे, ता बहु फल तस थाय जी ॥ एम काले जो दान दीये तो, फल बहु लीये अमायो जी ॥ २ ॥ सेवो० ॥ तप पारण ने उत्तर वारण, वली कीधो होय लोच जी ॥ थाका विहार थकी वली ग्लान जे, कारणनो आलोच जी ॥ ३ ॥ सेवो० ॥ ज्ञानाभ्यास करे बाल साधु, एहवा काल विचारी जी ॥ आहार घृतादिक बहु आपीजे, तो होय तस सुखकारी जी ॥ ४ ॥ सेवो०॥ काल विना जो बीज वावीजे, तो होवे बीजनी हाणि जी ॥ दायक ग्राहकने एम जाणो, काल ते शुभ गुण खाणी जी ॥ ५ ॥ सेवो० ॥ भावशुद्ध ते दान कहीजे, श्रद्धापूर्वक आपे जी ॥ रोमांचित थइ माने कृतज्ञता, ते भावशुद्धपणु थापे जी ॥ ६ ॥ सेवो० ॥ आर्त्तवशे नवि दान देइजे, कलुषित चित्त नवि कीजे जी ॥ आशसा नवि काइ करीने, भावशुद्ध ए लीजे जी ॥ ७ ॥ सेवो० ॥ यत "अनादरो विलंबश्च, वैमुख्यमप्रिय वच ॥ पश्चात्तापश्च पचामी, सद्दान दूषयत्यहो ॥ १ ॥ अत्यादरोऽविलंबश्चो,-दार्यं च प्रियवाक्यता ॥ सन्मुखत्व च पचामी, सद्दान भूषयत्यपि ॥ २ ॥" मोहने अर्थ दान जे दीजे, ते ए विधि जाणोजी ॥ अनुकंपा जे दानज भाख्यु, तेहनो नि माणो जी ॥८॥ सेवो० ॥ द्रव्यहाणि होवे दान देयता, न जी

घरकुठ सम कृपणनी लक्ष्मी, नगरमांहि व्यवहारी जी ॥ अधिकारीनी सरोवर सरिखी, नृपनी नटी अनुहारी जी ॥ १० ॥ सेवो० ॥ दान भोग ने नाश ए त्रण गति, द्रव्य तणी जग जाणी जी ॥ नवि दीधी नवि भोगवी जेणे, तस त्रीजी गति टाणी जी ॥ ११ ॥ सेवो० ॥ यत ॥ "मोरकउ ज दाण, पढ्ढणसो विहिमुणेयव्वो ॥ अणुग पादाण पुण, जिणेहि न कहि विपमी सिद्ध" ॥ १ ॥ दानधर्म संक्षेपे भाख्यो, शील सुणो नवि प्राणी जी ॥ प्राणिवधादिक पच महाव्रत, पालवा बहु हित आणी जी ॥ १२ ॥ सेवो० ॥ क्रोधादिकनो निग्रह करवो, अजार मदर गति ना ॥ श्रद्धा संवेग संतोष फरसन, निरीह चित्त वली मेलि जी ॥ १३ ॥ सेवो० ॥ गृह शीलमय धर्म आराधी, मानव सद्गति पामे जी ॥ थारणा दुर्गतिना ते देवे, रमे ते आतमरामे जी ॥ १४ ॥ सेवो० वर्गीय विशेष जे ब्रह्मचर्य पाले, ते पण शील कहीजे जी ॥ ते पण आ नव परतर केरा, सुख शाश्वत वली लीजे जी ॥ १५ ॥ सेवो० ॥ यत ॥

व्याघ्रव्यालजलानलादिविपदस्तेषां व्रजति क्षयं, कल्याणानि समुल्लसंति विबुधाः सान्निध्यमासते ॥ कीर्तिः स्फूर्तिमियर्त्ति यात्युपचयं धर्मः प्रणश्यत्यघं, स्वर्निर्वाणसुखानि संनिदधते ये शीलमाबिभ्रते ॥ १ ॥"

शील संवर कहु हवे तप, तप नामे हवे त्रीजु जी ॥ तेह दुर्भेद बाह्य प्रथम निहा, अभ्यंतर तप बीजु जी ॥ १६ ॥ सेवो० ॥ बाह्य तणा षट भेद प्रकाश्या, अणसण पहेलो भेदो जी ॥ ऊणोदरी व्रतसंक्षेपण, रसत्यागे नवि खेदो जी ॥ १७ ॥ सेवो०॥ कायक्लेश ने संलीनता ए, षट् विध बाह्य उदार जी ॥ अभ्यंतर प्रायश्चित्त ने विनयो, वैयावच्च सज्झाय ॥ १८ ॥ सेवो० ॥ ध्यान ने उत्सर्ग ए षट कहीये, अभ्यंतर निरमाय जी॥ जी ॥ विशेषे बहुविध तप छलना, भेद पचास कहाय जी ॥ १९ ॥ सेवो० ॥ वर्गीय विशेषे तप बहु भेदे, भाख्या आगम माहि जी ॥ व रत्नावलीनो तप नाने, परतर तप उत्साहि जी ॥ २० ॥ सेवो० ॥ कनका वली रत्नावली जाणो, मुक्तावली मनोहार जी ॥ लघुसिंह ने वृद्ध सिंह निःक्रीडित, वर मध्यम मध्यसार जी ॥ २१ ॥ सेवो० ॥ प्रति भद्र महाभद्र कहीये, सर्वतोभद्र मन आणी जी ॥ पंच कल्याणक तप वली स्थानक, सिद्धचक्र गुण खाणी जी ॥ २२ ॥ सेवो० ॥ सव स-

त्तमीआ अठ अठमीआ, नव नवमीआ होय जी ॥ दसमी एकादमी वली बारसी, भिक्षुप्रतिमा जोय जी ॥ २३ ॥ सेवो० ॥ इंद्रियजय ने संसारतारण, कषायजय तप नाम जी ॥ जोगजय ने वली करमसूदण, पचमी तप गुणधाम जी ॥ २४ ॥ सेवो० ॥ दर्शन ज्ञान चरण आराधन, दश पच्चख्खाणनी डेंजी जी ॥ समवसरण ने नंदीश्वर तप, करीये शक्तिने तोली जी ॥ २५ ॥ सेवो० ॥ अक्षयनिधि पुंडरिक रोहिणी तप, अनिका तप सुविचारो जी ॥ सर्व सुख संपत्ति अभिधा, परमभूषण तप सारो जी ॥ २६ ॥ सेवो० ॥ श्रुतदेवता तप सर्वांग सुंदर, अष्टु म डेसी श्रीकार जी ॥ सौभाग्यकल्प वृक्ष ए नामे, एकादशी मन धारो जी ॥ २७ ॥ सेवो० ॥ चंद्रायण तप आठम चौदश, आंबिल वर्द्धमान मोहोटु जी ॥ अशोकवृक्ष ने मुकुट सप्तमी, माणिक्यप्रभा नहीं खोटु जी ॥ २८ ॥ सेवो० ॥ अवन दशमी वली अमृत तप, तप वली एकादशाग जी ॥ दवदती तप दीक्षानु तप, निर्वाण तप वली चग जी ॥२९॥ सेवो० ॥ गौतम पडघो ने स्वर्गदंडो, पद्मोत्तर तप जाण जी ॥ जिनपूजा ने द्वारज तप वली, ऊणोदरी अभिधान जी ॥ ३० ॥ सेवो० ॥ धर्मचक्रवाल तप वली भाख्यु, कमचकवाल होय जी ॥ नवीश विजयनु तप घणु सुदर, मेरुमदर जोय जी ॥ ३१ ॥ सेवो० ॥ सूरायण ने वली पखवा तप, घन तप कमल उदार जी ॥ अष्टापद पावडीआ नामे, वर्ग तपस्या विचार जी ॥ ३२ ॥ सेवो० ॥ गुणरतन सवछर जाणो, भद्रोत्तर अववार जी ॥ अभिग्रह तपनो पार न लहीये, तेह अनेक प्रकार जी॥३३॥ सेवो० ॥ द्रव्य क्षेत्र ने काल भावथी, भाख्या ग्रंथ मझार जी ॥ तपावलिथी विधि सहु जाणो, इहा थाये विस्तार जी ॥ ३४ ॥ सेवो० ॥ एम तपधर्म संक्षेपे भाख्यो, आराधो भवि प्राणी जी ॥ इह भव परभवनु सुख लहीने, परणे शिववधू राणी जी ॥ ३५ ॥ सेवो० ॥ त्रीजे खंडे ढाल ए दशमी, पद्मविजय कहे एम जी ॥ सांभळीने श्रोता जन धर्मे, करजो अविहड प्रेम जी ॥ ३६ ॥ सेवो० ॥ सर्व गाथा ॥ ३३२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ भावधर्म चोथो भलो, सम्यग्दर्शन साच, नाण चारित्रनी भावना, मत भावन विनु माच ॥ १ ॥ वैराग्यभावना तेम वली, तीर्थभक्ति तत

[illegible], मातुजननी सेवना, कदर्पजय विकराल ॥ २ ॥ अतिचार जो आ[illegible] [illegible], निंदा [illegible] नाद [illegible] सुगमा साचतो, आयतने आह्लाद ॥३॥ [illegible] धर्म [illegible], [illegible] चोथो [illegible], [illegible] [illegible] ॥ ४ ॥ चार प्रकारे सुणी चतुर, सेवी धर्म सुशुद्ध, जीव [illegible] [illegible], शाश्वत सुख सुविशुद्ध ॥ ५ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ [illegible] ॥ ए देशी ॥

[illegible] ॥ साहिबाजी मारा ॥ जिनवरधर्म ॥ शिवि [illegible] धर्मनो जी ॥ [illegible] एणी परे हे ॥ सा० ॥ [illegible] संदेह ॥ कोण कहे भेद मर्मनो जी ॥ १ ॥ [illegible] ॥ सा० ॥ धर्म अशेष ॥ नवि करी शकीये कोय ॥ [illegible] जी ॥ तिण कारण हे ॥ सा० ॥ चारित्रधर्म ॥ [illegible] ॥ [illegible] मुज मही जी ॥ २ ॥ गुरुनी [illegible] ॥ सा० ॥ [illegible] ॥ [illegible] आर्य देश ॥ कुल ने जातिविशेषित [illegible] ॥ सा० ॥ निर्मलबुद्धि ॥ जाणे संसारस्वरूप ॥ [illegible] जी ॥ ३ ॥ [illegible] ते मरण निमित्त ॥ सा० ॥ चपल ते [illegible] ॥ [illegible] वियोग ॥ [illegible] जी ॥ विषय [illegible] हेतु ॥ सा० ॥ [illegible] नित्य ॥ [illegible] विपाक ॥ [illegible] जी ॥ ४ ॥ एम जाणीने विरक्त ॥ सा० ॥ [illegible] ॥ [illegible] गुणनो [illegible] जी ॥ नवि [illegible] ॥ सा० ॥ [illegible] ॥ [illegible] नवि होय ॥ [illegible] जी ॥ ५ ॥ [illegible] ॥ सा० ॥ [illegible] ॥ [illegible] जी ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ सा० ॥ करे विचार ॥ [illegible] जी ॥ [illegible] अवधि ज्ञान [illegible] ॥ सा० ॥ [illegible] ॥ [illegible] जी ॥ ७ ॥ [illegible] ॥ सा० ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] जी ॥ [illegible] ॥ सा० ॥ [illegible]

ए संसार असार ॥ तेहमा कोण एणी परे वहे जी ॥ ८ ॥ दुकर जाणो हे ॥ सा० ॥ वेबु जेह ॥ श्रमणपणु जग सार ॥ शत्रु मित्र सम जाणवा जी ॥ नवि हणवो कोइ जीव ॥ सा० ॥ कहेवु साच ॥ दतशोधन मात्र काय ॥ पचक्खवु अदत्त आणवा जी ॥ ए ॥ त्रिविधे पचक्खवु हे ॥ सा० ॥ अब्रह्मचर्य ॥ उपगरण वस्त्र ने पात्र ॥ उपर पण मूर्छा नहीं जी ॥ रात्रिजोजननो त्याग ॥ सा० ॥ लेवो आहार ॥ बेंतालीश दोष शुद्ध ॥ आगममा जाख्यो सही जी ॥ १० ॥ संयोजनादिक हे ॥ सा० ॥ टालवा पंच ॥ मितकाले लेवो आहार ॥ सुमति गुपति वर पालवी जी ॥ ईर्यामुख पचवीश ॥ सा० ॥ जावनी होय ॥ बाह्य अभ्यंतर ज्ञेद ॥ तप करवु क्रोध जालवी जी ॥ ११ ॥ प्रतिमा वहेवी हे ॥ सा० ॥ मुनिनी अनेक ॥ विचित्र अजिग्रह जेह ॥ द्रव्यादिक जे चाखीआ जी ॥ सूये सूवु हे ॥ सा० ॥ केशनो लोच ॥ कायक्लेश अनेक ॥ करता शमरस चाखीआ जी ॥ १२ ॥ नि प्रतिकर्मा हे ॥सा०॥ जास शरीर ॥ वहेवी गुरुनी आण ॥ सर्व काल प्रजुआणथी जी ॥ परिषह जीतवा बावीश ॥ सा० ॥ उपसर्ग जेह ॥ दिव्यादिक बहु ज्ञेद ॥ जय करवो गुण खाणथी जी ॥ १३ ॥ लाधे अलाधे हे ॥सा०॥ सम चित्त राख ॥ अढार शीलाग सहस ॥ जार ते वहेवो नित्य पडे जी ॥ तिणे तरवो ए समुद्र ॥ सा० ॥ चरम कहेवाय ॥ ग्राहि करीने तेह ॥ तोलवो मेरु निज कर नडे जी ॥ १४ ॥ जखवो कोलीर्ज हे ॥सा०॥ स्वादरहित ॥ वेलु तणो जे असार ॥ खड्गधारा परे चालवु जी ॥ पीवी अग्निनी ज्वाल ॥ सा० ॥ गंगप्रवाह ॥ चालवु साहमे पूर ॥ निज आतम सुखे मालवु जी ॥ १५ ॥ कोथलो पवननो हे ॥ सा० ॥ जरवो हाथ ॥ चतुरंग नव संघात ॥ जीतवु एकले प्राणीये जी ॥ साधवो राधावेध ॥ सा० ॥ जयनी पताक ॥ ग्रहेवी अग्रही पूर्व ॥ दुकर मुनिपणु जाणीये जी ॥ १६ ॥ एम सांजली हे ॥ सा० ॥ हरख्यो कुमार ॥ कर जोडी कहे एम ॥ गुरु जतु साधुपणु कयु जी ॥ दुकर कयु तिम तेह ॥ सा० ॥ पण नहीं मुज ॥ जाएयु संसारनु गुज ॥ जाणु हवे पह कर वहु जी ॥ १७ ॥ गुरु तव जाखे हे ॥ सा० ॥ साचु एह ॥ जाणे संसारस्वरूप ॥ पण बहु जव जावना थकी जी ॥ मुकावे बहु जीव ॥ सा० ॥ याचे

मूढ ॥ तेणे न विचारे स्वरूप ॥ न गणे अनागत बुद्धि थकी जी ॥१८॥ कुल नवि देखे छे ॥ सा० ॥ न करे धर्म ॥ नवि माने उपदेश ॥ मूर्ख न गणे गुरु प्रत्ये जी ॥ न करे अपजश बीक ॥ सा० ॥ आचरे तेह ॥ आलोक ने परलोक ॥ क्लेशनु भाजन जिण गते जी ॥ १९ ॥ तिण कारण सुखी छे ॥ सा० ॥ हणतो मोह ॥ कुमर कहे प्रभु साच ॥ पण ए उपाय हणवा तणो जी ॥ कार्य साधे तेह ॥ सा० ॥ कारण सेव ॥ जे करे प्रगट नाग ॥ साध्य तणु पूरणपणुं जी ॥ २० ॥ ते तुम्ह पासे छे ॥ सा० ॥ तुम पसाय ॥ पामु भवजल पार ॥ जिम सायरनिर्यामके जी ॥ अल्प पुन्य होये जास ॥ सा० ॥ कुशल न बुद्धि ॥ गुणवंता गुरुलाभ ॥ न होये नवि पामी शके जी ॥ २१ ॥ तेणे मुज उपरे छे ॥ सा० ॥ करो उपगार ॥ गुरु बोले नर नाणी ॥ अम स्थिति ए आगम तणी जी ॥ गणधारी नवि मग्ग ॥ सा० ॥ केताक दिन्न ॥ शिखवीये आवश्यक ॥ पछी दीक्षा दीजे शिष्य तणी जी ॥ २२ ॥ बोले कुमरजी छे ॥ सा० ॥ करवो उपगार ॥ दीक्षा पण खेद मुज ॥ पालवी आगमस्थिति भली जी ॥ तेह एमज हो स्वामी ॥ सा० ॥ एम कहु जाम ॥ बहु परिजनसु ताहि ॥ कुमर पिता आव्यो सानली जी ॥ २३ ॥ हायणीए बेठो छे ॥ सा० ॥ ते ब्रह्मदत्त ॥ गुरुनी प्रणमे पाय ॥ धर्मलाभ गुरुए दीओ जी ॥ बोले म्हडे हाथ ॥ सा० ॥ थइ अगीआर ॥ पद्मविजय कहे एम ॥ बेठो चित्त सुपात्रा कीओ जी ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ ३६१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर तातने एम कहे, काम करो मुज एह, तात कहे जे कह्यां तुम्हे, करीशुं तुम सुविवेक ॥ १ ॥ ए संसारस्वरूप एम, जाणतां सुदकृत्य, सब अनित्य चपला सिरी, एहमा नहीं अवश्य ॥ २ ॥ यौवन जाये चोरसु, अना करे अकस्मात, मृत्यु तो मूके नहीं, जाणो तो तुम्हे तात ॥ ३ ॥ यो आशा खेल टीगरी, सफल करु ममार, सुत बोले गद्गद स्वरे, पुत्रने कहे प्रकार ॥ ४ ॥ बालक तु बोले किस्यु, काल न दीक्षा कोर, कुमर कहे नवि काल छे, जमनो नवी परे जोय ॥ ५ ॥ देखो एक वडदन्तना, परिवारना पुरुष, पिणक नामे पाप पुन्य, नवि छे पुरे तिरन ॥ ६ ॥ मह यशो ते बोलीओ, पद गुरु बेठा प्राय, नवि

ोडवु ए ज्ञानथी, कुंवर न बोल्या काय ॥ ७ ॥ समजाव्यो शुन्न युक्तिथी, ंत कहेता विस्तार, ग्रंथ वधे तिणे नवि मह्यो, परगट एह प्रकार ॥ ८ ॥ समज्यो श्रावकव्रत ग्रहे, साथे ब्रह्मदत्त गुरू, दीक्षानी अनुमति दीये, ब्रह्मदत्त अतिशुद्ध ॥ ९ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ तट जमुनानुं रे अति रलिआमणुं रे ॥ ए देशी ॥

पुत्रनी साथे रे आव्या नयरमां रे, घोषणापूर्वक दान ॥ देतो करतो जिनवर चैत्यमां रे, अठाइ महोत्सव ज्ञान ॥१॥ धन धन एहने रे जाएयुं एणे खरुं रे ॥ ए आंकणी ॥ शुन्न तिथि करणे रे मुहूर्त्त जोगे नले रे, शिबिकारूढ तिवार ॥ महा हर्ष करी बहु परिवारशुं रे, देतो दान अपार ॥२॥ धन० ॥ मंगल तूर वजावते नीकल्यो रे, बिरुदावली रे बोलाय ॥ लोकप्रशंसा देखी बहु करे रे, पोहोता गुरुने रे पाय ॥ ३ ॥ धन० ॥ शिबिकाथी उतरी गुरु वंदीया रे, गुरुए दीक्षा रे दीध ॥ साधुवेष लीधो हरखे करी रे, आतम कारज कीध ॥ ४ ॥ धन० ॥ केइक दिन रही मास कल्प थये रे, गुरु साथे करे विहार ॥ लाख अनेक वरस एम वही गया रे, पालता निरतिचार ॥ ५ ॥ धन०॥ इण अवसर जे जालिणी मावडी रे, थयो तस पश्चात्ताप ॥ काम हीणुं कर्खु जिणे मार्यो नहीं रे, गयो मुज देइ संताप ॥ ६ ॥ धन० ॥ तेण कारण काय मोकलुं भेटणुं रे, संदेशो मीठी वात ॥ जो काइ करतां फिरी आवे इहां रे, पछे करशुं सुखे घात ॥ ७ ॥ धन० ॥ जिम चिंत्युं तिम कीधुं तेणीए रे, मोकल्युं कंबलरत्न ॥ संदेशो बहु शिखवी मोकल्यो रे, सोमदेव करी घणुं जत्न ॥ ८ ॥ धन० ॥ देशविख्यात प्रवृत्ति आचार्यनी रे, पूछी पोहतो ते गाम ॥ शिखिकुमार साधुने जणावता रे, देखी वद्या ते ठाम ॥ ९ ॥ धन० ॥ धर्मलान्न देइ पूछे उंजली रे, किहांथी आवबुं तुम्ह ॥ तिणे पण व्यतिकर सघलो जाखीउ रे, जालिणी मोकल्या अम्ह ॥ १० ॥ धन० ॥ पश्चात्तापे दाधी देहनी रे, तुम्ह प्रवृत्ति निमित्त ॥ ऋषि कहे पश्चात्ताप शो एहनो रे, तव ते बोल्यो सुचित्त ॥ ११ ॥ धन० ॥ तुम्हे दीक्षा लीधी ते कारणे रे, सुणी चिंते मुनिराय ॥ स्नेहकायर परमार्थ देखे नहीं रे, जुउ एम किम करे माय ॥ १२ ॥ धन० ॥ प्रत्युपकार न करी शकीये किमे

रे, मातपितानो रे कोय ॥ एम चिंती कहे सोमदेवने सुणो रे, मुज न वनिर्वेद होय ॥ १३ ॥ धन० ॥ तिणे दीक्षा लीधी एम जाणजो रे, पण नहीं माय निरवेद ॥ तव ते कहे खरु पण तुम मातने रे, उपने छे अति खेद ॥ १४ ॥ धन० ॥ कहेवराव्यु छे इणी परे सांभलो रे, तुम हृदय होय नारी ॥ चपल स्वभाव ने अविवेकज घणो रे, कामकर अनिचार ॥ १५ ॥ धन० ॥ होय कदाग्रह स्त्रीमा अति घणो रे, पछे होये पश्चात्ताप ॥ पुरुष तो महा गंभीर होये घणा रे, कोयने न करे संताप ॥ ॥ १६ ॥ धन ० ॥ महारो भाव जाण्या विण शु कह्यु रे, आदर्यो परलोक मग्ग ॥ पण एकवार वदाववा आवजो रे, नहींतर केम होय सग्ग ॥१७॥ धन० ॥ कम्बरल लेजो मुक हित करी रे, बोल्या शिखि अणगार ॥ उत्तर म्हे तुज सघलो भाखीउं रे, अने गुरु आधीन विहार ॥ १८ ॥ धन० ॥ हु म्हारे आधीन नहीं कदा रे, पालवी श्रीगुरुआण ॥ मुनिने कम्बरल घटे नहीं रे, वली गुरु कहे ते प्रमाण ॥ १९ ॥ धन० ॥ तव कोइ मुनिए गुरु देखावीया रे, जइ कह्यु सकल वृत्तांत ॥ कुमर तणा वर्त्तमानथी गोहरीउ रे, कम्बरल ते खाति ॥ २० ॥ धन० ॥ वर्तमान योगे वली आवशे रे, मात्यु भणवा जे सुत्त ॥ ते संपूरण थाशे जव सही रे, तव ए आवशे पुत्त ॥ २१ ॥ धन० ॥ ए सांभलीने घणु राजी थया रे, त्रीजे खंडे ए ढाल ॥ समरादित्यना रासमा बारमी रे, कही पद्म सुरसाल ॥ २२ ॥ धन० ॥ सोरठा ॥ सोमदेव गुरु पास, काल केतोइक रही करी॥ आव्यो निज आवास, तप संजम मुनिवर तपे॥ १ ॥ सर्व गाथा ॥ ३९२॥

॥ दोहा ॥

॥ अन्य दिने गुरु आवीया, नयरकोश आसन्न, कोइक नरना मुख थकी, सांभले गुरु चासन्न ॥ १ ॥ परलोके पहोतो पिता, शिखिकुमरनी साच, मुनि साथे केइ मोकले, शिखिकुमर शुभ वाच ॥ २ ॥ पोहोता अश नयर पछे, उतरीआ उद्यान, वात लोकमा विस्तरी, सांभलजो सावधान ॥ ३ ॥ शिखिकुमर साधु जिके, आव्या अहो अणगार, राय नगर जन परिवरया, वांद्या नारी नार ॥ ४ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ हवे नहीं जाउ मइ वेचवा रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ वदना करी गुरुरायने रे लो, बेठा सुणवा धर्म ॥ मारा वाल्हाजी हो ॥ गुरु पण आक्षेपिणी कथा रे लो, कहेता दीये शिवशर्म ॥ १ ॥ मा० ॥ एहवा गुरु रे फिरी नहि मजे रे लो ॥ ए आकणी ॥ आवर्ज्या सवि लोकने रे लो, गया सहु निज निज गेह ॥ मा० ॥ हवे बीजे दिन मुनिवरु रे लो, शिखिकुमर सनेह ॥ २ ॥ मा० ॥ एह० ॥ गया निज मात पासे हवे रे लो, विधवारूप ते तास ॥ मा० ॥ ब्रह्मदत्त जेह मरी गया रे लो, अतिदुर्लभ दुःखवास ॥ ३ ॥ मा० ॥ एह० ॥ तेणे निज मात न उंलखी रे लो, तेणे उंलख्यो मुनिराय ॥ मा० ॥ मायाखजावे रोती थकी रे लो, अश्रुपात बहु थाय ॥ ४ ॥ मा० ॥ एह० ॥ आशासना मुनिवर करे रे लो, देशना देवे ताम ॥ मा० ॥ मातजी खेद न कीजीये रे लो, ए ससार दुःखधाम ॥ ५ ॥ मा० ॥ एह० ॥ डव्वे सयणे पराक्रमे रे लो, वल चतुरगे जोय ॥ मा० ॥ देव असुर पमुहा मिले रे लो, मरण न जीते कोय ॥ ६ ॥ मा० ॥ एह० ॥ मरण हरि जगमा भमे रे लो, आपदाशत नखजाल ॥ मा० ॥ व्याधिज्वर दढ दात छे रे लो, वहु जनने करे काल ॥ ७ ॥ मा० ॥ एह० ॥ एम जाणीने आदरे रे लो, धर्मनो अर्थी जीव ॥ मा० ॥ राज्य गमी मतजारने रे लो, पण नवि आदरे क्लीब ॥ ८ ॥ मा० ॥ एह० ॥ तिणे माता तुम्ह नवि घटे रे लो, मोहरूप विषपान ॥ मा० ॥ धर्मअमृत वर पीजीये रे लो, जगतमा सार निधान ॥ ९ ॥ मा० ॥ एह० ॥ मायावती माननी रे लो, जाविणी कहे कर जोडी ॥ मा० ॥ पुत्र ए धर्म मुजने गमे रे लो, नहि जेहनी जग जोडी ॥ १० ॥ मा० ॥ एह० ॥ मारी अवस्था देखीने रे लो, मन आपो मुज जोग ॥ मा० ॥ तव अणगार आलोचीने रे लो, काढवा भवनो रोग ॥ ११ ॥ मा० ॥ एह० ॥ सर्वविरतिनी योग्यता रे लो, नवि दीठी तेह माहि ॥ मा० ॥ देशविरति विस्तारथी रे लो, सभलावे उत्साह ॥ १२ ॥ मा० ॥ एह० ॥ दीधा अणुव्रत मातने रे लो, तिणीए कर्या अगीकार ॥ मा० ॥ तम विश्वास पमाडवा रे लो, कूडकपटभडार ॥ १३ ॥ मा० ॥ एह० ॥ यत ॥ "अनृत साहस माया, मूर्खत्वमतिलोभता ॥ अशौच निर्दयत्व च, स्त्रीणा

दोषा सन्नावजा ॥ १ ॥" एहने मारी तो शकु रे लो,जो पामे विश्वास ॥ मा० ॥ एम चिंती अंगीकर्यां रे लो, देसीये जक्तिआवास ॥ १४ ॥ मा० ॥ एह० ॥ हवे मुनिवर जव उठीआ रे लो, तव विनवे मुनि माय ॥ मा० ॥ आज नोजन तुम्हे इहां करो रे लो, तव वोल्या ऋषिराय ॥ १५ ॥ मा० ॥ एह० ॥ मातजी अमने घटे नहीं रे लो, जाएयो ए अणाचार ॥ मा० ॥ मधुकरवृत्ति वालीने रे लो, मुनिवर नवि करे आ हार ॥ १६ ॥ मा० ॥ एह० ॥ तव जालिणी बोली तिहां रे लो, तुमे जाणो वछ एह ॥ मा० ॥ मुनिवर निज स्थानक गयो रे लो, एम प्रति दिन ससनेह ॥ १७ ॥ मा० ॥ एह० ॥ हवे चित्त चिंतवे जालिणी रे लो, मारवा एहने उपाय ॥ मा० ॥ सूक्ष्म नवि जव्यो मुऊने रे लो, करीये हवे कहो काय ॥ १८ ॥ मा० ॥ एह० ॥ चउदशी दिन हवे आवीउं रे लो, सद्गुरु कस्वा उपवास ॥ मा० ॥ गोचरी कोइ न नीकल्या रे लो, करता ध्यान अन्यास ॥ १९ ॥ मा० ॥ एह० ॥ जालिणी जाणी चिंतवे रे लो, मारु नहि जो काल ॥ मा० ॥ तो हवे एह जाशे सही रे लो, पक्षसधी थयो काल ॥ २० ॥ मा० ॥ एह० ॥ बीजो उपाय इहां नहीं रे लो, काल करु कसार ॥ मा० ॥ तालपुट विषयुत लाडुउं रे लो, आपु काल सवार ॥ २१ ॥ मा०॥ एह०॥ मुनिवर संजम म्हालता रे लो, न लहे छुर्जन वात ॥ मा० ॥ परमा ते पेसे नहीं रे लो, धर्म रंगाणी धात ॥ २२ ॥ मा० ॥ एह० ॥ त्रीजे खमे तेरमी रे लो, पद्मविजय कहे ढाल ॥ मा० ॥ मुनिगुण गाता मोदशु रे लो, पामे मंगलमाल ॥ २३ ॥ मा० ॥ एह० ॥ सर्व गाथा ॥ ४२० ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम करता जो नवि लीये, आग्रहथी दीउ आहार, हाथे आपु हर्षे जिम, ते मोदक तइयार ॥ १ ॥ मारु इणी परे मोदशु, कस्यु ते स घलु काम, नोजन लेइ चली नातशु, जालिणी चाली जाम ॥ २ ॥ ताम प्रजात थयो तिहां, पोहोती उपवन पास, दीठी मुनिए हर्षथी, नणे ते एहवी नास ॥ ३ ॥ माता किम आव्या तुम्हे, एकाकी ए वार, अणघटतो कांइ आहारने, लेइ आव्या छो द्वार ॥ ४ ॥ जटिणी बोली जालिणी, सांजलो साची वात, पोते पुण्य उपायवा, नोजन लावी नात ॥५॥

॥ ढाल चौदमी ॥
चित्रोना राजा रे ॥ ए देशी ॥

॥ साचलो तुमे मात रे, अणाचार ए स्यात रे ॥ निपजात ए आ-
र अम्हारे कारणे रे ॥ १ ॥ साहमो वली आवो रे, तेणे अम्ह न लो-
यो रे ॥ सजलावो सघलो विधि मुनिरायनो रे ॥ २ ॥ तव बोली तेह
, देखाने सनेह रे ॥ वत्र एह परे मुज शाता नवि होवे रे ॥ ३ ॥ जो
लीर्ज आहार रे, म्हारो धिक् अवतार रे ॥ तुम्ह विहार ते अम पुरे
प्फल मन लहु रे ॥ ४ ॥ तेणे अवश्य ए करवु रे, बीजु वयण न धरवु
॥ मरवु अन्यथा मुज ताहरा नेहथी रे ॥ ५ ॥ पगे पडी एम जाखी
, सहु मुनिवर साखी रे ॥ माखी जिम मध उपर तिम उठे नवि किमे
॥ ६ ॥ मुनि सरल स्वजाव रे, चिंते एम ताव रे ॥ जूर्ज सद्भाव मातानो
हवो रे ॥ ७ ॥ धर्मश्रद्धा केहवी रे, पुत्र स्नेही न एहवी रे ॥ रखे जे-
वी ए थाय जल विष पोयणी रे ॥ ८ ॥ बोले मुनिराय रे, साजलो तुम्हे
ाय रे ॥ नवि थाय ए आहार दोषीलो अम थकी रे ॥ ९ ॥ गुरु ला-
व दोष रे, चितवी नतरोष रे ॥ शुज पोष कारण कहे मातने एणी परे
॥ १० ॥ तुम आग्रहे एह रे, लेशु गतनेह रे ॥ मुनि माटे रेह आरज
कीजीये रे ॥ ११ ॥ जाविणी तव जपे रे, कोण तुम्हने लुपे रे ॥ इमणा
ो सपे अहार करो सहु रे ॥ १२ ॥ बोले मुनि तुम्हे आपो रे, सहु
पिने थापो रे ॥ करी जापो ने हु पण लेशु आहारने रे ॥ १३ ॥ जा-
उणी कहे वारु रे, मात वात्सल्य चारु रे ॥ कस्यु काम दिदारु राखी मुज
ीवती रे ॥ १४ ॥ मुज हारे कीजे रे, पारणु मानीजे रे ॥ नवनु फल
ीजे मानी मुज कह्यु रे ॥ १५ ॥ शिखिकुमरने वयणे रे, वेला सहु मुनि
यणे रे ॥ जायणे जोजन कसार ते पीरस्यो रे ॥ १६ ॥ सहुए कीधो
ाहार रे, हवे शिखि अणगार रे ॥ जाजने कसार शेष ते पीरस्यो रे
॥ १७ ॥ तालपुट विष घाल्यो रे, ते लाडुर्ज आल्यो रे ॥ जोजनमा
ाल्यो ते पण अनुक्रमे रे ॥ १८ ॥ विष वेगे घाल्यो रे, शिखिकुमरे वि-
ाख्यो रे ॥ केम ए मुज धाख्यो चित्तमा एणी परे रे ॥ १९ ॥ मुनिवर
सहु जोया रे, सावधान पलोया रे ॥ अगित आकार गोपाया एहवे रे
॥ २० ॥ थइ वेला जाम रे, गइ वाचा ताम रे ॥ मन चिंते आम हवे नवि
जीववु ॥ २१ ॥ पड्यो धरणीपीठ रे, मुनिए तव दीठ रे ॥ देखी तव

रिढ आकुल व्याकुल थया रे ॥ २२ ॥ जालिणी पण एम रे, मुनि चिंते केम रे ॥ जननी थइ प्रेम मूकी करे एहवु रे ॥ २३ ॥ जाणी केर विशेष रे, अणशण उद्देश रे ॥ करे लेश न खेद ते शिखि मुनि कोयशु रे ॥ २४ ॥ मन चिंते एह रे, थइ वात ए केह रे ॥ ससारसनेह धिक् हो एम कहे रे ॥ २५ ॥ चिंत्यु हतु एम रे, मातने जइ नेम रे ॥ धरी प्रेमने धर्म पमाडशु नली परे रे ॥ २६ ॥ क्लेशथी मूकावु रे, नली धर्मना गवु रे ॥ एम मन लावु पण हवे शु करु रे ॥ २७ ॥ अपजश वहु थाशे रे, शका सहु लाशे रे ॥ पण एम न विमासे माता ए किम करे रे ॥२८॥ वात पूर्वली जाणे रे, लोक कहे अन्नाणे रे ॥ धिक् मुफ इण टाणे जननी डु ख दीउं रे ॥ २९ ॥ ससार ए रीति रे, नवि करीये अनीति रे ॥ पण अप्रीते अपजश विस्तरे रे ॥ ३० ॥ केइक करे दोष रे, पण जशनो पोष रे ॥ एहमा नहीं रोष कस्या सहु नोगवे रे॥३१॥ कस्या कर्म ते आव्या रे, ए कारण नाव्या रे॥ मुफ डु खथी धाव्या माता किणी परे रे॥३२॥ अथवा श्यो शोक रे, शिववीज ते रोक रे ॥ धर्म जे उंकनो तेह पमानोउं रे॥३३॥ तेणे चिंता न कीजे रे, नवपद समरीजे रे ॥ लीजे एम लाहो नरनव केरडो रे ॥ ३४ ॥ शुन नावना युत्त रे, नवकार सजुत्त रे ॥ निज आतम गुत्त करी करी कालने रे ॥ ३५ ॥ ब्रह्मलोकमा जायो रे, नवसागर आयो रे ॥ देव पायो लही समागम विमानमा रे ॥ ३६ ॥ जालिणी पण मुइ रे, अनुकरमे हुइ रे ॥ अधारी कुइ सम शर्करा नरगमा रे ॥ ३७ ॥ त्रण सागर आयो रे, ए तो महा डु ख पायो रे ॥ मुनिरायनी हिंसानु फल एहवु रे ॥ ३८ ॥ त्रीजो नव एम रे, सुरनवशु प्रेम रे ॥ नरनव सुखे खेमे समरादित्यनो रे ॥ ३९ ॥ खम त्रीजे नासी रे, ढाल चौदमी दाखी रे ॥ इहा साखी ते समरादित्यचरित्र छे रे ॥ ४० ॥ माहा सुदि दिन त्रीजे रे, सपूरण कीजे रे ॥ गाम लिंबडी माहि वदीजे हेजशु रे ॥ ४१ ॥ गुरु खिमाविजयो रे, जिनविजयो सुजयो रे ॥ तस शिष्य थयो उत्तमविजय मनोहरु रे ॥ ४२ ॥ सिद्धात अन्यासी रे, तस अंते वासी रे ॥ वचन विलासी पद्मविजय कहे रे ॥ ४३ ॥ इति श्रीसविझप क्षीय पन्डितप्रवरश्रीमडुत्तमविजयगणिशिष्यपन्डित पद्मविजयगणिविरचिते श्रीसमरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रवंधे शिखिकुमारजालिण्यो सगत्यो स्तृतीयो नरनव समाप्त ॥सर्व गाथा तृतीय सर्ग (४६७) उक्त गाथा (८)॥

॥ अथ ॥

॥ चतुर्थ खमस्य प्रारंभोऽय ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्री सीमधर साहिबा, विचरता वीतराग, समवसरणमा शोजता, समनु जस सोजाग ॥ १ ॥ श्रीगुरु ने वली शारदा, प्रणमु प्रेमे पाय, समरादित्यना रासमा, चोयो खम चित्त लाय ॥ २ ॥ धनकुमार ने धनसिरि, दपती याचे दोय, सज्ञान सुणजो ते सवे, हवे ते केणी परे होय ॥ ३ ॥ सुणशे ते सुणशे सखर, समरादित्यनो स्वाद, जास प्रमादे जायशे, खहेशे न ते थाह्लाद ॥ ४ ॥ वरजो विकथा वेगशु, सहुने टले सताप, विकथाथी वारु वको, उथ्यो न सुणे थाप ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ प्रथम गोवाला तणे जी ॥ ए देशी ॥

॥ जंबुद्वीपना जरतमां जी, सुशर्म नयर उदार ॥ नित्य उत्सव आणदना जी, देवलोक अनुहार ॥ १ ॥ जविजन सुणीये चरित्र रसाल ॥ पापनिवारण टाल ॥ ज० ॥ जेहथी होय जजाल ॥ जवि० ॥ सु० ॥ ए आकणी ॥ नित्य नाटक ते नयरमा जी, गुणिजन गुण गवराय ॥ रूप वेश रति आगली जी, नारी तणो समुदाय ॥ २ ॥ ज० ॥ परउपगार परायणो जी, महाजन निवसे अपार ॥ अरि गजशु केसरी समो जी, सुभटनु जूजरनार ॥ ३ ॥ ज० ॥ नायरशेठ ते नयरमा जी, राज्यमान गुणवत ॥ दीन अनाथ जन रक्षणु जी, वेसमण नाम कहत ॥ ४ ॥ ज० ॥ पण वैश्रमण जिणे करी जी, हृष्को हुर्ते निदान ॥ प्रण वर्ग नित्य साधवे जी, साहगाह सुजाण ॥ ५ ॥ ज० ॥ कुल रूप विनये सारिखी जी, सिरिया नामे नारी ॥ पच विषय सुख जोगवे जी, सेहे खी जरतार ॥ ६ ॥ ज० ॥ सुमनीनु केनु नहीं जी, पण सतान न

कोय ॥ थाय उपाय घणा करे जी, पण नवि कारय होय ॥ ७ ॥ ज० ॥ इण अवसर ते नयरमा जी, जक्ष नामे धनदेव ॥ सान्निध्य करनो लो कनी जी, इणे पण कीधी सेव ॥ ८ ॥ ज० ॥ पूजा करी एम नाखीउ जी, जो मुऊ तुऊ अनुनाव ॥ पुत्र होशे तो नयरशु जी, पूजा करुं शुज नाव ॥ ए ॥ ज० ॥ नाम तुमारु थापशु जी, सुतनु हु निरधार ॥ मध्यम वये ते वर्त्तता जी, दंपती इण समे सार ॥ १० ॥ ज० ॥ ब्रह्मलोकनी देवता जी, चवी लीधो अवतार ॥ जीव शिखिकुमारनो जी, सिरिया कुखे मऊार ॥ ११ ॥ ज० ॥ स्वपने गजवर पेखती जी, उज्ञ्ज्वल उंची रे काय ॥ मद ऊरतो मोहे घणु जी, मधुकरने समुदाय ॥ १२ ॥ ज० ॥ शुंडादंम चपल घणो जी, रक्त तालु चउदंत ॥ कनक साकले सोहतु जी, घटायुगल महंत ॥ १३ ॥ ज० ॥ लोचन जेहना नूमता जी, रक्त चमरे सोहे वयण ॥ कुंजस्थले अंकुश रही जी, प्रातसमे ने रयण ॥ १४ ॥ ज० ॥ वदने उदरमा पेसतो जी, देखी जागी जाम ॥ सजलावे जरतारने जी, सुणी हरख्यो ते ताम ॥ १५ ॥ ज० ॥ सयल सयण गणनायको जी, पुत्र ते होशे रतन्न ॥ हरखे सुणी आदर घणे जी, करती गर्ज्ज जतन्न ॥ १६ ॥ ज० ॥ शुन मुहूर्त्ते अनुक्रमे हवे जी, जन्म्यो तेह कुमार ॥ दासीए दीध वधामणी जी, सार्थवाहने सार ॥ १७ ॥ ज० ॥ सतोषी दासी प्रत्ये जी, देवरावे महा दाण ॥ जन्ममहोत्सव ते कुमारनो जी, करतो शेठ सुजाण ॥ १८ ॥ ज० ॥ एक मास एम वही गयो जी, हवे सहु नयर सघात ॥ बहु आडंबरशु गयो जी, बालक लेइ निज हाथ ॥ १ए ॥ ज० ॥ धनदेव जक्षने देहरे जी, उत्सव करीय अपार ॥ पाय नमावी थापीउ जी, नाम ते धनकुमार ॥ २० ॥ ज० ॥ कुमरनाव अनुक्रमे लह्यो जी, चोथे खंडे रे एम ॥ प्रथम ढाल पद्मे कही जी, सांजलजो धरी प्रेम ॥ २१ ॥ ज० ॥ सर्व गाथा ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नारकीमाथी नीकली, जालिणीनो हवे जीव, संसरता संसारमां, अनुनवे छुःख अतीव ॥ १ ॥ अनंतरनवे अज्ञानथी, आदरी कष्ट अत्यंत, वसे ते नयरे नागीउ, पूर्णनद्र पुण्यवंत ॥ २ ॥ गोमती नामे गेहिनी, तस कुले अवतार, पुत्रीपणे ते प्रगटीउं, जनमी तेह जिवार ॥ ३ ॥ धण-

सिरि नाम ते दीधउं, यौवन पामी जाम, दीठी धनकुमरे तदा, रति-रूपे अन्निराम ॥ ४ ॥ पूर्वमैत्रीना गुणपणे, अन्निलापाए एम, दृष्टिवि-कारे देखतो, पूरण आणी प्रेम ॥ ५ ॥ पूरवना मत्सरपणे, धणसिरि जुए ते धन्न, सोमदेव पुरोहितशुं ते, तेह कुमरनुं तन्न ॥ ६ ॥ जाव लस्यो तिणे नली परे, वैशमणे जाणी वत्त, पूर्णचंद्रने प्रार्थीजं, धणसिरि धण निमित्त ॥ ७ ॥ जाणउं परस्पर चिहुं जणे, वरत्यो तिहां विवाह, हरख्यो धन निज हैयमजें, वाध्यो धणसिरि वाह ॥ ८ ॥

॥ ढाल वीजी ॥

॥ मुनिवर आर्यसुहस्ती रे ॥ ए देशी ॥

॥ इण अवसर एक दास रे ॥ घरदासी जएयो ॥ नंद नामे सोहा-मणो ए ॥ १ ॥ अग्निशर्मा जव तेह रे ॥ मित्र तापस हतो ॥ गुरुवैया-वच कारणो ए ॥ २ ॥ धणसिरिशुं लगवासी रे ॥ थइ ते नंदने ॥ स्त्रीसंगे सुख अनुजवे ए ॥ ३ ॥ नोगविटवणा प्राय रे ॥ नोगवता थका ॥ शरद समय एक दिन हवे ए ॥ ४ ॥ रमवाने उद्यान रे ॥ धन्नकुमर गया ॥ साथे वहु परिवारशुं ए ॥ ५ ॥ समृद्धदत्त इण नाम रे ॥ सार्थवाह सुत ॥ दीठो दान देता थका ए ॥ ६ ॥ निज कर अर्जित ऋद्धि रे ॥ जे परदेशथी ॥ लावीने सफली करे ए ॥ ७ ॥ चिंते धण धन्न एह रे ॥ पर उपकारीजं ॥ एणी परे लखमी वावरे ए ॥ ८ ॥ आमण डुमणो एम रे ॥ नंद देखी कहे ॥ शे डूआणा स्वामी जी ए ॥ ए ॥ जाख्यो निज अन्नि-प्राय रे ॥ नंद कहे तदा ॥ शी ऊणीम ठे तुम्ह घरे ए ॥ १० ॥ तुम्ह घरे डव्य अनंत रे ॥ दान आपो तुम्हे ॥ एह थकी सुविशेषथी ए ॥ ११ ॥ धन कहे ए शी वात रे ॥ पूर्व पुरुष रच्या ॥ ते देता किम शो-जीये ए ॥ १२ ॥ करी कमाइ हाथ रे ॥ जे दीजे दानने ॥ तस कीर्त्ति वाधे घणी ए ॥ १३ ॥ तिणे विनवो तुम्हे ताय रे ॥ परदेशे जवा ॥ करु कमाइ हाथशुं ए ॥ १४ ॥ काल उचित करे जेह रे ॥ जीववुं तेहवुं ॥ सफलुं जाख्युं शास्त्रमां ए ॥ १५ ॥ त्रण वर्गनुं मूल रे ॥ अर्थ उपार्जशुं ॥ तातने कहो किरपा करो ए ॥ १६ ॥ नंदे विनव्यो शेठ रे ॥ शेठ कहे तुम्हो ॥ नाखो वत्सने एणी परे ए ॥ १७ ॥ शेठ लहुथी अर्थ रे ॥ बहु ताहरे घरे ॥ मनइछित द्यो वावरो ए ॥ १८ ॥ नंद कहे सुणो तात

रे ॥ एह कर्छु खरु ॥ पण एहनी एम रचि नहीं ए ॥ १९ ॥ शेठ कहे जिम सुख रे ॥ ऊपजे तिम करो ॥ नदे कह्यु सवि धन प्रत्ये ए ॥ २० ॥ आणा पामी ताथ रे ॥ हरख्यो धन हवे ॥ करे सामग्री तेहनी ए ॥२१॥ करियाणा बहु लीध रे ॥ उद्घोषणा हवे ॥ नगर माहि करावतो ए ॥ २२ ॥ सार्थवाहसुत धन्य रे ॥ तामलिप्ती जशे ॥ जावु होये तो साथ ठे ए ॥ २३ ॥ जेहने जोश्ये तास रे ॥ देशे रीऊशु ॥ वस्त्र अन्न ओषध सहु ए ॥ २४ ॥ सांजली सोड्यो लोक रे ॥ तामलिप्ती जवा ॥ धनसिरि चित्त हरखी घणु ए ॥ २५ ॥ जाशे धन परदेश रे ॥ तव रुडु थशे ॥ स्वेछाए अमे विचरशुं ए ॥ २६ ॥ गमनदिवस आसन्न रे ॥ आव्यो तव सुण्यु ॥ नट पण साथे जायशे ए ॥ २७ ॥ सुणो स्वामी परदेश रे ॥ तुम्हे तो जायशो ॥ माया करी धनवती कहे ए ॥ २८ ॥ शी गति थाशे मुज रे ॥ हु हवे शु करु ॥ तव धनकुमर ते बोलीया ए ॥ २९ ॥ सासु ससरा सेव रे ॥ तुम्हे करजो इहा ॥ हु पण वेहलो आवशु ए ॥ ३० ॥ माया जल जरी नयण रे ॥ बोली धनसिरि ॥ गुरुजन मुज हृदये वसे ए ॥ ३१ ॥ पण मुज मूकी जाउ रे ॥ जो तुम्हे स्वामी जी ॥ तो हु प्राण अवश्य तजु ए ॥ ३२ ॥ नहीं मुज जीवन काम रे ॥ तुम्ह विजोगथी ॥ एम कही उच्च स्वरे रूए ए ॥ ३३ ॥ आवी जननी ताम रे ॥ धन कुमारनी ॥ आदरथी उजा थया ए ॥ ३४ ॥ धनसिरि गइ निज धाम रे ॥ शिखामण दीये ॥ जाव वहूनो जाणीउ ए ॥ ३५ ॥ देशांतर होय दीर्घ रे ॥ संगम दोहिला ॥ सुजन विजोग ते निपजे ए ॥ ३६ ॥ क्लेश घणो होये पुत्त रे ॥ अर्थ उपार्जता ॥ मूल विषादनु एह ठे ए ॥ ३७ ॥ सकल गुणे संपूर्ण रे ॥ तु ठे यद्यपि ॥ तोपण तुजने नाखीये ए ॥ ३८ ॥ क्षमा ते करजो नित्य रे ॥ खबर कहावजो ॥ वाट जोउं तु ताहरी ए ॥ ३९ ॥ मात प्रमाण तुज आणी रे ॥ धनकुमर कहे ॥ आशीष देजो रुयडी ए ॥ ४० ॥ धनसिरि पीयर पास रे ॥ मागी आगना ॥ धन साथे मोकलाववा ए ॥ ४१ ॥ धनसिरि हरखी ताम रे ॥ सामग्री करी ॥ साथ रिद्धि नरपूरीउ ए ॥ ४२ ॥ बीजी चोथे खडे रे ॥ ढाल पन्ने कही ॥ उत्तमविजय कृपा थकी ए ॥ ४३ ॥ सर्व गाथा ॥ ७७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ साथ सांड्यो हवे सामटो, पहोतो नित्य प्रयाण, ताम्रलिप्ती नगरे तुरत, मास दोय परिमाण ॥ १ ॥ नरपति मलीउं नेहशु, राये कस्यो सत्कार, वेची सरवे वस्तु ते, पाम्यो न इछित पार ॥ २ ॥ चिंते तब ते चित्तमा, लह्यो न इछित लाह, जाउ घर किम जाणीने, अर्णव चढुं अथाह ॥ ३ ॥ लखमीथी सहु लोकमा, आदर लहे अपार, ते विण जीवन तुछ छे, चित्त एम करे विचार ॥ ४ ॥ नंद ने धनसिरी नारीशु, इण परे करी आलाप, नाहना वेडा जाणीने, उठे जब हवे आप ॥५॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ पुण्य प्रगट थयु ॥ ए देशी ॥

॥ इण अवसर एक आवीउं रे ॥ सुरिजन ॥ जयकायर जस काय ॥ पुण्य प्रगट थयु ॥ दोय हाथनु पहेरीयु रे ॥ सू० ॥ जीरण चीवर पाय ॥ १ ॥ पु० ॥ हाथ पगे थया उजला रे ॥ सू० ॥ मस्तके कुमलाणी माल ॥ पु० ॥ नम्बरी शरीर विजुरीउ रे ॥ सू० ॥ अधर तंबोले लाल ॥ २ ॥ पु० ॥ जुवटीए पणे प्रेरीउं रे ॥ सू० ॥ आव्यो जुवटीउं एक ॥ पु० ॥ शरणे आव्यो ताहरे रे ॥ सू० ॥ राख तु धरीय विवेक ॥ ३ ॥ पु० ॥ एह जुआरी दुःख दीये रे ॥ सू० ॥ धन कहे सांभल नाम ॥ पु० ॥ तुझ उपद्रव शे कारणे रे ॥ सू० ॥ कहे ताहरो अवदान ॥ ४ ॥ पु० ॥ ते कहे नवि बोली शकु रे ॥ सू० ॥ मदारु नीच चरित्त ॥ पु० ॥ धन कहे खेद न कीजीये रे ॥ सू० ॥ नवि होवे सम दशा नित्य ॥५॥ पु० ॥ जड कहो तुम्ह वातनी रे ॥ सू० ॥ तब जलभरीया नयण ॥ पु० ॥ गद्गद वयणे बोलीउं रे ॥ सू० ॥ सांभल रे तु सयण ॥ ६ ॥ पु० ॥ वाणीउं निज कुल कमलनो रे ॥ सू० ॥ नेवु सार विरुद्ध ॥ पु० ॥ पंडितजन बहु निंदीउं रे ॥ सू० ॥ नित्य रहु चित्तथी शुद्ध ॥ ७ ॥ पु० ॥ महेश्वरदत्त माहरु रे ॥ सू० ॥ नाम कुसुमपुर गाम ॥ पु० ॥ रोपनिधान जे जुवटु रे ॥ सू० ॥ रंजित पुत्रविलास ॥ ८ ॥ पु० ॥ तेणे ए अवस्था पामीउं रे ॥ सू० ॥ धन चिंते अहो एह ॥ पु० ॥ आ वेळा पण आपनो रे ॥ सू० ॥ निज अपराध प्रकंट ॥ ९ ॥ पु० ॥ महोटो पुन्य कोइ एह छे रे ॥ सू० ॥ चितवी बोले तान ॥ पु० ॥ कहो शु करीये तुम्हने रे ॥

परगेह रे ॥ सा० ॥ चाल्यु वहाण वेगशु रे, वरणव्यु जाये केण रे ॥ सा० ॥ ११ ॥ क० ॥ नक्र चक्र कछप घणा रे, मगर ने पाठीन पीठ रे ॥ सा० ॥ जळचर निहा बहु जातिना रे, सहुए नयणे दीठ रे ॥ सा० ॥ १२ ॥ क० ॥ कामण कीधु एण समे रे, साविण पापिणी नारी रे ॥ सा० ॥ थोडा दिन मांहि थयो रे, रोग तणे ते विकार रे ॥ सा० ॥ १३ ॥ क० ॥ दाह उताप कर्यो नहीं रे, माम्यो अति घण व्याधि रे ॥ सा० ॥ हाथ सुरा जिम दोरडी रे, जळोदर वधीउ अगाध रे ॥ सा० ॥ १४ ॥ क० ॥ वदन गांठी थइ नवदु रे, जवाउ गली जाय रे ॥ सा० ॥ कर पद फाटा सडना रे, नांकनगंधि नवि थाय रे ॥ सा० ॥ १५ ॥ क० ॥ तरवानी पीडा पडी रे, पेटमा न टके नीर रे ॥ सा० ॥ खेद करी धन चितवे रे, पहु व्यहाणे पीर रे ॥ सा० ॥ १६ ॥ क० ॥ अथवा पाप विलासनो रे, साच तणो नहीं मीन रे ॥ सा० ॥ शु करीये इण अवसरे रे, कोइ मिले न हकीम रे ॥ सा० ॥ १७ ॥ क० ॥ परिजन दूहवाये घणो रे, धनसिरी करे उद्वेग रे ॥ सा० ॥ मुख कुमळायु नदनु रे, कह कपा अतिवेग रे ॥ सा० ॥ १८ ॥ क० ॥ एम करता सहु दुख धरे रे, वळी कायरतु ए काम रे ॥ सा० ॥ खेद न करशो आपदा रे, तिणे वळी चिंते श्याम रे ॥ सा० ॥ १९ ॥ क० ॥ पहु उचित छे माहरे रे, आप्यु ए परहुत रे ॥ सा० ॥ द्रव्य धणी कह नदने रे, ए करणा अनुकूल रे ॥ सा० ॥ २० ॥ क० ॥ विधिविलास विचित्र छे रे, नियवश किशु कालि रे ॥ सा० ॥ नद ने मुज नाद समो रे, सोपु सहुए मनाजी रे ॥ सा० ॥ २१ ॥ क० ॥ धनमित्र सोपु पहने रे, पोचाडशे मुज गेह रे ॥ सा० ॥ चितवी नद बोलावीयो रे, धनसिरी धरा समनेह रे ॥ सा० ॥ २२ ॥ क० ॥ नर सुणो मुज वातडी रे, महारी अवस्था एह रे ॥ सा० ॥ इछित कुळ ए दुहवु रे, जीवित विरली देह रे ॥ सा० ॥ २३ ॥ क० ॥ अम्ह सरिखा उ रोगीडा रे, तेहने नो सुविशेष रे ॥ सा० ॥ द्रव्यनायक तुम्हें आ जर्यो रे, दोष नहीं कोइ लेश रे ॥ सा० ॥ २४ ॥ क० ॥ पह सायर पार उतरी रे, करजो रोग उपाय रे ॥ सा० ॥ नो तारो नो रुअडु रे, नो कदि रोग न जाय रे ॥ सा० ॥ २५ ॥ क० ॥ नो मुज नाडना लेइथी रे, एहा माडजो सहु नाम रे ॥ सा० ॥ धनसिरी ए पतिव्रता रे, ताहने मा

पजो ताम रे ॥ सा० ॥ २६ ॥ क० ॥ सुदरी सुणो ए नदने रे, टाली पापविकार रे ॥ सा० ॥ मुऊ परे जाणजे एहनु रे, वयण न लोपजे सार रे ॥ सा० ॥ २७ ॥ क० ॥ तेह सुणी वहु डुःख धरे रे, रोयो मूकी पोक रे ॥ सा० ॥ धणसिरी पण कपटे रुवे रे, धन कहे न करो शोक रे ॥ सा० ॥ २८ ॥ क० ॥ नहीं अवसर ए विषादनो रे, अवसर उचित विचार रे ॥ सा० ॥ क्लीवपणु केम आदरो रे, आदरो पुरुषाकार रे ॥ सा० ॥ २९ ॥ क० ॥ राजधानी रमणी रीदे रे, करतो जे नित्य शोक रे ॥ सा० ॥ तेह तजो तमे सुदरी रे, हवे विलवो मत फोक रे ॥ सा० ॥ ३० ॥ क० ॥ पुरप नारी तेहज खरी रे, जाणे काल अकाल रे ॥ सा० ॥ उद्यमे आपद् लघीये रे, पामीये ऋद्धि विशाल रे ॥ सा० ॥ ३१ ॥ क० ॥ धनशिक्षा अगीकरी रे, मान्यु नदे एह रे ॥ सा० ॥ महा कटाहद्वीपे गया रे, कुशले खेमे तेह रे ॥ सा० ॥ ३२ ॥ क० ॥ चोथी चोथा खडमा रे, चारी उत्तम ढाल रे ॥ सा० ॥ समरादित्यना रासमा रे, पद्म कहे सुरसाल रे ॥ सा० ॥ ३३ ॥ क० ॥ सर्व गाथा ॥ १४३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नद लेइ हवे जेटणु, आव्यो नरपतिपाय, राने बहु आदर दीउं, आप्यो रहेवा ठाय ॥ १ ॥ चारु उतार्या जली परे, वैद्य बोलाव्या वार, औषध भेषज आदरे, कीधा कोडि प्रकार ॥ २ ॥ व्याधि गयो नहि वेगलो, तव चिंते तिहा नद, निज देशे पोहोच्या विना, किम जाये डुःखकद ॥ ३ ॥ कालक्षेप करवो नहीं, एम चिंतवतो एह, चारु वेची प्रतिचारु ले, यानपात्र सजे जेह ॥ ४ ॥ नृपतिने मलीउं जलो, ते पण करे सत्कार, निज देशे जावा जणी, तुरत ते थया तैयार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पाचमी ॥

॥ नदी जमुनाके तीर उडे दोय पखीआ रे ॥ उडे० ॥ अथवा ॥ देखी कामिनी दोय के कामे व्यापीउं रे ॥ के कामे० ॥ ए देशी ॥

॥ बेठा वाहाण माहि के जलकौतुक जुए रे के ॥ जल० ॥ धनने जीवतो देखी के धनसिरी मन रवे रे के ॥ धन० ॥ मरण बहु नहीं एह के चित्त एम चिंतवे रे के ॥ चित्त० ॥ पहोता जब निज देश के तब पछे किम हुवे रे के ॥ तब० ॥ १ ॥ जीवतो शाल समान के ए मुऊ नित्य दहे रे

के ॥ ए मु० ॥ नाखु सायर माहि के तो मन सुख लहे रे के ॥ तो म० ॥ उठे शोच निमित्त के रयणीए ए जदा रे के ॥ रय० ॥ अंधकारमा एह के नाखु हु तदा रे के ॥ नाखु० ॥ २ ॥ वाहाण चपल स्वभाव के किहाए वही जशे रे के ॥ किहा० ॥ ए पण माहरे नद के स्थिर भावे थशे रे के ॥ स्थिर० ॥ चिंतवी एह उपाय के तिम निपजावीउ रे के ॥ तिम०॥ रात्री प्रहर रही शेप के तव एह भावीउ रे के ॥ ३ ॥ काल थोनो रही ताम के बुंबारव कर्यो रे के ॥ बुंबा० ॥ नद उठी कहे एम के स्वामिनी घरहर्यो रे के ॥ स्वामि० ॥ त्रासती हृदय सडु ख के अतिशय रोवती रे के ॥ अति० ॥ हा आर्यपुत्र भणती के धरणीए लोटती रे के ॥ धर०॥ ॥ ४ ॥ नद शका लई। जाम के धनशय्या जूवे रे के ॥ धन० ॥ तव नव दीठा तेह के पूठतो बहु रुवे रे के ॥ पूठ० ॥ कहे धणसिरी परमादे के पमीया सायरे रे के ॥ पमि० ॥ पमता माह्यु नदे के हृदयथी कायरे रे के ॥ हृद० ॥ ५ ॥ परिजन सर्वे मली धरी रायो बहु परे रे के ॥ रायो० ॥ वाहाण रखाव्यु तिण समे खोल ते बहु करे रे के ॥ खोल० ॥ प्रातसमे उपभावीया नागर डु ख धरी रे के॥ नाग०॥ सज्जन नद समान के कोइनु नहीं चरी रे के ॥ कोइ० ॥ ६ ॥ डुर्जन धनसिरी जोमी के जगमा नवि जमे रे के ॥ जग० ॥ चित्तथी हर्ष उमाह के बाहिर एम रमे रे के ॥ बाहि० ॥ हवे धनकुमर ते जेह के पमीया जेटले रे के ॥ पमी० ॥ फलक लहे एक तेह के पुण्यथी तेटले रे के ॥ पुण्य० ॥ ७ ॥ सात रात्रि रही त्याहि के काठे नीकल्यो रे के ॥ काठे० ॥ लवणनीर सेवनाथी के पेटमा खळभळ्यो रे के ॥ पेट० ॥ कामण नीकल्या ताम के पुण्यउदय थयो रे के ॥ पुण्य० ॥ जन्म थयो फरी मुझ के एणी परे मन भयो रे के ॥ एणी० ॥ ८ ॥ तिमिरपादपने पास के बेठो चितवे रे के ॥ बेठो० ॥ अहो एह माया बहुल के शु करु केतवे रे ॥ शु क० ॥ अहो निर्दयपणु नारी के नयर केवु नहे रे के ॥ नय० ॥ अहो सुख मीठी एह के कुख भपण लहे रे के ॥ कुख० ॥ ए ॥ यत ॥ "अनृत साहस माया, मूर्खत्वमतिलोभता ॥ अशौचत्व, निर्दयत्व स्त्रीणा दोषा स्वभावजा ॥ १ ॥" जइ मज्झ मज्झिपर्य, आगासे पक्खिआण पयपती ॥ महिलाहिययवापमग्गो, तिन्नि निरिरंजा पयासती ॥ २ ॥ यत सवैर्ड ॥ करहु निनता मुड

वाच वदे, कवहु तिनसूं कटु वाच कहे ॥ कवहु मनरग त्रिरग धरे, कवहुज निरागिन हूई रहे ॥ कवहु एक वोल सहे न जलो, कवहु कटु वोल अनेक सहे ॥ मुनि धन्न कहे जगदीस विना, त्रियकी करनी कहो कोन लहे ॥ १ ॥ क्वहुंज खुसी विखुसी मनमे, वहु जाति कपट्ट करे तरुनी ॥ कवहुज दयाल उदार चित्ते, कवहु लहु चित्त होवे लरनी ॥ कवहु सव जान अजान होवे, कवहु हगनीर झरे झरनी ॥ मुनि धन्न कहे जगदीस विना, कहो कोन लहे त्रियकी करनी ॥ २ ॥ ” कीधो ए व्यवसाय के कहो कारण किशे रे ॥ कहो० ॥ अथवा विवेक रहित के कारण शु हशे रे के ॥ कार० ॥ दोष निवास निमित्त के ए साहस तणु रे के ॥ ए सा० ॥ कपटनी उत्पत्ति एह के क्षेत्र मृषा भणु रे के ॥ क्षेत्र० ॥ १० ॥ उन्मारगनु द्वार के आपद् गेह छे रे के ॥ आप० ॥ नरकसोपान ने स्वर्गनी अर्गला एह छे रे के ॥ अर्ग० ॥ अहवा एह विचार के करण समय नहीं रे के ॥ कर० ॥ हमणा उद्यम साह्य के करे माहरु सही रे के ॥ करे० ॥ ११ ॥ वस्तु अतीतनी चित के मुझने नवि घटे रे के ॥ मुझ० ॥ उठ्यो एम अवधारी के चाल्यो सायरतटे रे के ॥ चाल्यो० ॥ इण अवसर सावत्थी के नयरीनो धणी रे के ॥ नय० ॥ सिंहलद्वीपे जाय के दीकरी तेह तणी रे के ॥ दीक० ॥ १२ ॥ वाहाण भाग्यु तास के दासी तेहनी रे के ॥ दासी० ॥ मरण लही ते चेटी के काति घण देहनी रे के ॥ काति० ॥ काठे काढी कल्लोले के दीठी तिण समे रे के ॥ दीठी० ॥ रयणावली तस ठेहके के दीठा मन गमे रे के ॥ दीठा० ॥ १३ ॥ त्रिलोकसारा नाम के हार तणु भनु रे के ॥ हार० ॥ लेवी घटे नहीं मुझ के एम मन अटकनु रे ॥ एम० ॥ पण इण व्यवसाय के करीने आपशु रे के ॥ करी० ॥ वारवार उद्देशे के शुभ पखे थापशु रे के ॥ शुभ० ॥ १४ ॥ लीधी रयणावली तेह के चाल्यो तव मल्यो रे के ॥ चाल्यो० ॥ महेसरदत्त कापालिके कुमरने अटकल्यो रे के ॥ कुम० ॥ सायरकाठे मत्र के साधन ते करे रे के ॥ साध० ॥ गे सठवाहसुत तुझ के आवनु इणी परे रे के ॥ आव० ॥ १५ ॥ एह अवस्था तुझ के देखी दुख दीधे रे के ॥ देखी० ॥ घरठिद्ध नवि कहु एम के कुमर चिंते हैये रे के

धार रे ॥ ८ ॥ कर्म० ॥ दीठो मत्रीए तेटले, लीधो रयणावली हार रे ॥ उलखी मनमा रे चिंतवे, राजधूआ थयो मार रे ॥ पूछे हार अधिकार रे ॥ तव लज्जा मन धार रे ॥ वोले धन्नकुमार रे ॥ ए ॥ कर्म० ॥ महा कनाहाधिपे गयो, झहाजे वेसीने जठ रे ॥ लीधी रयणावली मूलथी, पाठा वलता मुज तठ रे ॥ झहाज नाग्यु गयो अठ रे ॥ एक रयणावली इठ रे ॥ नीकल्यो आव्यो हु इठ रे ॥ १० ॥ कर्म० ॥ तुम्हे क्यारे लीधी मूल्यथी, तव वोल्यो धन नाण रे ॥ एक वरस मुजने थयु, मत्री चिते सुजाण रे ॥ लीधी आपणे गुणखाण रे ॥ मास त्रण थया ताण रे ॥ दीधी कुमरीने पाण रे ॥ ११ ॥ कर्म० ॥ वे मास गया थया तेहने, ए तो वोले ठे एम रे ॥ वात कहो एह किम मले, वोले जूठु एम रे ॥ कुमरी मारी एणे एम रे ॥ कह्यु नृपने थयु जेम रे ॥ नृप कोपे थयो नैम रे ॥ १२ ॥ कर्म० ॥ रयणावली जोइ नूपति, तेड्यो नमारी जाम रे ॥ तिणे कह्यु एह ते आपणी, चिते नूप उद्दाम रे ॥ मारी कुमरीने ठाम रे ॥ नहीं तो ए किम आम रे ॥ क्रोध घणो थयो ताम रे ॥ पण न्याये अनिराम रे ॥ १३ ॥ कर्म० ॥ वारे वारे पूछावीउ, पण नवि कहे फेरफार रे ॥ तेहनो तेह उत्तर दीये, चढीउं क्रोध अपार रे ॥ हुकम कस्यो वध त्यार रे ॥ डिम्मिम वाजे असार रे ॥ चोपनीका मध ठार रे ॥ १४ ॥ कर्म० ॥ लोक जणावण कारणे, साथे राखी ते माल रे ॥ वधस्थानक लेइ जायता, हाटे शेरी सुविशाल रे ॥ माल ते मास नीहाल रे ॥ लावक पखी तिण ताल रे ॥ हार लेइ चाल्यो ततकाल रे ॥ १५ ॥ कर्म० ॥ निज मालामा माला धरी, हवे धनकुमर मशाण रे ॥ ॥ लाव्या तिहा वध कारणे, वोलाव्यो तिहा पाण रे ॥ चमाल पाडे समशाण रे ॥ राजा पुरुषे जमराण रे ॥ सोंपी वलीआ ते ताण रे ॥ १६ ॥ कर्म० ॥ थोडी नूमि ते लेइ गयो, जोयु तास नीहाल रे ॥ एहवु रूप ने आकृति, दीसे पुण्य विशाल रे ॥ करे न अकारज वाल रे ॥ किम मारु हु अकाल रे ॥ इणी परे चिंते चमाल रे ॥ १७ ॥ कर्म० ॥ अथवा आणाकारी अम्हे, एम विचारे शु थाय रे ॥ कहे जाइ वेस तु समीप रे ॥ हवे तुज आवीउ आय रे ॥ सानल वात तु नाय रे ॥ मुज श्रावक मित्र थाय रे ॥ तास सगति सुखदाय रे ॥ १८ ॥ कर्म० ॥ क्रूर दृष्टि

नहीं माहरी, पण चाकर थया राय रे ॥ तिणे अम्हे विनव्यो रायने, नारीए जेहने जाय रे ॥ शुज परिणामी जो थाय रे ॥ तो सज्जति माहि जाय रे ॥ तिणे मारशु पन्नाय रे ॥ १९ ॥ कर्म० ॥ एक मुहूर्त्त पनखी करी, पछे करशु तुम्ह आप रे ॥ राने पसाय अम्हने कर्यो, तिणे तु बोल सुजाण रे ॥ कहे ते करीने विन्नाण रे ॥ धन चिंते अहो पाप रे ॥ किणी परे बोले ठे वाण रे ॥ २० ॥ कर्म० ॥ चोथे खंडे ठही कही, इणी परे उत्तम ढाल रे ॥ पद्मविजये सोहामणी, उत्तमविजयनो बाल रे ॥ उत्तम जननो ए टाल रे ॥ साजलो वात रसाल रे, सुणता मंगलमाल रे ॥ २१ ॥ कर्म० ॥ सर्व गाथा ॥ १९५ ॥

॥ दोहा ॥

चिंते धन एम चित्तमा, परउपगारी पाप, अनुकंपा जुर्ज आकरी, सगति फल असमाप ॥ १ ॥ सज्जन सगति सेवीये, कुमति मोह करे दूर; नीति विवेक नव नव होवे, पुण्य तणो होय पूर ॥२॥ श्रावकनी संगे लहर, किम ए कर्मचमाल, जाति चमाल ए जाणीये, केहवु दरिस यकाल ॥३॥ नि शासो इवे नाखीने, बोले इणी परे बोल, राजशासन कख्य तु सुखे, करवो नहीं काइ तोल ॥ ४ ॥ धीरज देखी धन तणी, परखी पुण्य प्रजाव, निरअपराधी नर अछे, पण मारण प्रस्ताव ॥ ५ ॥ चतुर चमाल गद्गद चवे, आसुडे जरी आख, इष्टदेव सजारीये, खेद ते दूरे नाख ॥ ६ ॥ धरजे ध्यान तु धर्मनु, सन्मुख करजे संग मन चिंते धिग् माहरो, जन्म गयो इण जग ॥ ७ ॥ जमजिहा सरिखी जुर्ज, काढी इणे करवाल, वाही निज कर इली वली, वचन कहे विकराल ॥ ८ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ नणदल बिंदली दे ॥ ए देशी ॥

॥ सुणजो सहु लोका वाणी ॥ रायकुमरी वची इण प्राणी हो ॥ सुणजो सहु लोका ॥ त्रिलोक सारा रयणमाला ॥ अपहरी एणे थइ उजमाला हो ॥१॥ सुणजो सहु लोका ॥ तिणे एह ते मार्यो जाय, एम जे करशे तस थाय हो ॥सु०॥ वाही एम कही करवाल ॥ करुणाशून्य नाव विशाल हो ॥२ ॥ सु० ॥ नवि वागो तेह प्रहार ॥ पड्यो पृथवी उपर सार हो ॥ सु० ॥ करवाल तूटी ततकाल ॥ धनकुमर कहे सुरसाल हो ॥ ३ ॥ सु० ॥ कर आप तु जूपति केरी ॥ तु चाकर शु कहु फेरी हो ॥ सु० ॥

लाग्य सोवन आपो तुम्हे हो राज, तुम्हे अमचा थया नाथ ॥७॥ वा० ॥ सहस चमाल कुटुंब जीके हो राज, निजवासी वली जेह ॥ वा० ॥ पाटण पश्चिम बाहिरे हो राज, अग्रगामी करो तेह ॥ ८ ॥ वा० ॥ सहुए ते नीपजावीउ हो राज, रायने वचने थाय ॥ वा० ॥ काम मने देवता करे हो राज, शेठ ते धन खरचाय ॥ ए ॥ वा० ॥ खगिल हरख्यो चितवी हो राज, उगरया धनकुमार ॥ वा० ॥ तेहनो धने हरख्यो नहीं हो राज, सज्जन एह आचार ॥ १० ॥ वा० ॥ राय कहे धनने हवे हो राज, देखी तुम्ह चरित्त ॥ वा० ॥ जाएयो जन्म वलो कुले हो राज, पण नागो सुपवित्त ॥ ११ ॥ वा० ॥ किहाना वासी नाम शु हो राज, वालो उत्तरगु आज ॥ वा० ॥ तव धन चित्तमा चितवे हो राज, आणी अति घणी लाज ॥ १२ ॥ वा० ॥ म्हे रयणावली पारकी हो राज, लीधी ते सा चरी ताम ॥ वा० ॥ नि शासो नाखी घणो हो राज, चिंते उत्तम कुल थाम ॥ १३ ॥ वा० ॥ धन कहे शु पुछो तुम्हे हो राज, माहरा कुलनी वात ॥ वा० ॥ महा अकारज म्हे कखु हो राज, तेहनो श्यो अवदात ॥ वा० ॥ १४ ॥ अथवा कुलनो दोष श्यो हो राज, कमले ते खलमी निवास ॥ वा० ॥ तिहा पण कीडो उपजे हो राज, पालक हरिकुल खास ॥ १५ ॥ वा० ॥ जाति मात्रे हु वाणीउं हो राज, पण वाणिक न आचार ॥ वा० ॥ सुसम नयरवासी वली हो राज, नाम ते धनकुमार ॥ १६ ॥ वा० ॥ राय चिंते अन्य हु थयो हो राज, एहना रतननो नाश ॥ वा० ॥ न कह्यो म्हे तिणे कारणे हो राज, हवे कहे नृपति तास ॥ १७ ॥ वा० ॥ किंतु अकारज आचखु हो राज, ते परमारथ वाच ॥ वा० ॥ किम रयणावली पामीआ हो राज, इणे अवसरे सहु साच ॥ १८ ॥ वा० ॥ उद्यानपालिका नामथी हो राज, मनोरमा अभिराम ॥ वा० ॥ अरज करे तुमची पुत्रीआ हो राज, आवी विनयवती नाम ॥ १९ ॥ वा० ॥ वात सुणी हरख्यो घणु हो राज, सेना लेइ चतुरंग ॥ वा० ॥ पेसारा महोत्सव करे हो राज, वाध्यो अति उछरंग ॥ २० ॥ वा० ॥ दर आवीने पुत्रीयु हो राज, रयणावली अवदात ॥ वा० ॥ सा कहे कहावला वाउला हो राज, प्रवचन वायरा वात ॥ २१ ॥ वा० ॥ दानी करे म्हे आवीउं हो राज, रयणावली तव हार ॥ वा० ॥ निधी०

वाध्यो तेहने हो राज, सायर मध्य मझार ॥ २२ ॥ वा० ॥ फुट्टु जहाज तिणे समे हो राज, गुरु हृदय जिम नारी ॥ वा० ॥ देवयोगे एक पाटीउ हो राज, पाम्यु जीवदातार ॥ २३ ॥ वा० ॥ अनुक्रमे आवी तु इहां हो राज, तव चिंते नृपाउ ॥ वा० ॥ उत्सव उपरे आवीउं हो राज ॥ उत्सव ए सुरनाउ ॥ २४ ॥ वा० ॥ पुत्र पुत्री जीव्या जुउं हो राज, कुअर गयो अपराध ॥ वा० ॥ पुण्यवशे आवी मिले हो राज, पामे सुख अगाध ॥ २५ ॥ वा० ॥ चोथे खंडे ए कही हो राज, अचरिज आठमी ढाल ॥ वा० ॥ श्रीगुरु उत्तमनो कहे हो राज, पद्म ते गान रसाल ॥ २६ ॥ वा० ॥ सर्व गाथा ॥ २६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ राय कहे धणकुमरने, खरी कहो ए वात, जीवी किहां रयणावती, जाणो ते नवी जाति ॥ १ ॥ सायरतीरे म्हें लही, धन्न कहे म्हें लीध, नृप कहे शव दीवु कने, कुअरे हा तव कीध ॥ २ ॥ तेहज कारण आननां, बहु अकार्य करनार, पारकु द्रव्य में अपहृत्यु, शोच करु संभार ॥ ३ ॥ न पडे एह रहस्यने, मनथी मूको खेद, हवे शुं करीये तुम्हने, जाणो तेहनो भेद ॥ ४ ॥ मनवछित दीधु मने, कलु चमत्कृत्यु काम, नृप कहे योगा एहने, दीधा ठे अमे दाम ॥ ५ ॥ काम विचारी ए करे, एहनो बहु उपकार माग्य तु कायक मुझ कने, तव बोल्यो ते कुमार ॥ ६ ॥ तुम दरिसण पाम्यो तिके, अधिकु काय न अन्य राजा तव निज आभरण, आपत बहु अगन्य ॥ ७ ॥ हवे जे विश्वासी हुये, तेह पुरुष सयात, नयर सुलम जणी नरपति, पेसवीया प्रख्यात ॥ ८ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ तुम्हे पीतांबर पहेरो जी मुखने मरकलडे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे केइक दिवसे पोहोता जी ॥ कर्मविटंबणा ॥ गिरिथल पाटण सम होता जी ॥ क० ॥ तिहां चन्द्रसेन नरराय जी ॥ क० ॥ तेहना नगरमां चोरी थाय जी ॥ क० ॥ १ ॥ खोजे कोटवाल ते चोर जी ॥ क० ॥ त्रिक चोक एकांत वली ठोर जी ॥ क० ॥ कनी कापडी जोगी सन्यासी जी ॥ क० ॥ परीक्षा करी दीये त्यासी जी ॥ क० ॥ २ ॥ रायपुरुषे पकड्या एह जी ॥ क० ॥ कहे कोप न करशो रेह जी ॥ क० ॥ चोरी थइ

रायकुमार जी ॥ क० ॥ तिणे पकड्या छे निरधार जी ॥ क० ॥ ३ ॥ ते कहे इयो कोपनो लाग जी ॥ क० ॥ कह्यो तिहां जइये दाखो माग जी ॥ क० ॥ पचाली थाये तिहां लावे जी ॥ क० ॥ चोरटीआ पूछे नावे जी ॥ क० ॥ ४ ॥ किहांथी आव्या तुम्हे नाइ जी ॥ क० ॥ आव्या सार शीघी आड जी ॥ क० ॥ पचाती कहे किहां जाशो जी ॥ क० ॥ कहे सुसम नयर अम जाशो जी ॥ क० ॥ ५ ॥ पचोली कहे शु काम जी ॥ क० ॥ तव ते नर वोल्या आम जी ॥ क० ॥ ए कुमरने मूकवा काज जी ॥ क० ॥ अम नरपति मोकल्या साज जी ॥क०॥६॥ कारणीआ पूछे तास जी ॥ क० ॥ द्रव्य काय अछे तुम्ह पास जी॥ क० ॥ तव ते कहे छे अम्ह पासे जी ॥ क० ॥ कारणीआ कहे सुविलासे जी ॥ क० ॥ ७ ॥ अम्ह दखाशो होय जेह जी ॥ क० ॥ तव देखाडे सहु तेह जी ॥ क० ॥ अम्ह राजाए तुपीने दीधा जी॥ क० ॥ तव कारणीए कर लीधा जी ॥ क० ॥ ८ ॥ कुमारीए उंवरया तेह जी ॥ क० ॥ अम्ह राय आभूपण एह जी ॥ क० ॥ गया काल वहु थयो एहने जी ॥ क० ॥ दोजना थइ तव सहु केहने जी ॥ क० ॥ ए ॥ कारणीआ फरी फरी पूछे जी ॥ क० ॥ खरी वात कह्यो ए शु छे जी ॥ क० ॥ ते कहे खोटु नवि कहीये जी ॥ क० ॥ एहमा शो जश अम्हे लहीये जी ॥ क० ॥ १० ॥ तव कारणीआ निज राय जी ॥ क० ॥ सनलावे नृप दुःख थाय जी ॥ क० ॥ जुर्च सावठी नरराय जी ॥ क० ॥ ए चोरना घाणु थाय जी ॥ क०॥ ११ ॥ घाल्या सहु वदी खाने जी ॥ क० ॥ सघलु जरुशे ए वाने जी॥ क०॥ तिहां दुःख पामे रहे तेह जी ॥ क० ॥ इण समे एक सुणो थइ जेह जी ॥ क० ॥ १२ ॥ एक परिव्राजक वेपधारी जी ॥ क० ॥ तस पकडे नृप आणाकारी जी ॥ क० ॥ चोखु ते द्रव्य वली पास जी ॥ क० ॥ राति समये लाव्या तास जी ॥ क० ॥ १३ ॥ लिंगधारी मन्त्रीसर देखी जी ॥ क० ॥ मन चिंते सर्व उवेखी जी ॥ क० ॥ चोरी करे जो लिंगधारी जी ॥ क० ॥ शु न करे अकार्य अवधारी जी ॥ क० ॥ १४ ॥ ते कारण मारण आणा जी ॥ क० ॥ करता रायपुरुपने राणा जी ॥ क० ॥ मप गेरु विभूति लगाइ जी ॥ क० ॥ कणयर माला पहेराइ जी ॥ क० ॥ १५ ॥ ॥ त्रूटु सुपडु छत्रने छाम जी ॥ क० ॥ रासभ वेसाड्यो वाम जी ॥ क० ॥ झिंझिम वाजे अति विरसो जी

। क० ॥ लोक साजली आवे सरसो जी ॥ क० ॥ १६ ॥ दक्षिण दिश नयरने वाहिर जी ॥ क० ॥ लाव्या नहीं कोइ एहनी वाहर जी ॥ क० ॥ त्व नाखी दीर्घ नि श्वास जी ॥ क० ॥ जोइ आदु अवलु पास जी ॥ क० ॥ १७ ॥ लोकना मुख साहमु जोइ जी ॥ क० ॥ कहे मुनिवच अ-लिक न होइ जी ॥ क० ॥ इमणा पण जेहनु द्रव्य जी ॥ क० ॥ तेहनु हु आपु सर्व जी ॥ क० ॥ १८ ॥ रह्यु पृथवीमा शो लेखे जी ॥ क० ॥ नृप नर सन्मुख तेह देखे जी ॥ क० ॥ म्हें नयर ते मूस्यु एह जी ॥ क० ॥ बीजे पुन्ये नहीं रेह जी ॥ क० ॥ १९ ॥ आराम गिरि नदी तीर जी । क० ॥ प्रमुखे दाट्यु थइ धीर जी ॥ क० ॥ ते लेइ सहु सहुनु आपो जी ॥ क० ॥ पछे मारवा मुजने थापो जी ॥ क० ॥ २० ॥ कही तेह मंत्रीने वात जी ॥ क० ॥ मंत्री पण तिहा आयात जी ॥ क० ॥ जे जे कह्यु ते ते थान जी ॥ क० ॥ जोड नीकल्यु तेह प्रमाण जी ॥ क० ॥ २१ ॥ सहु हरख्या द्रव्य ते पामी जी ॥ क० ॥ चोथे खंडे अभिरामी जी ॥ क० ॥ ढाल नवमी पद्मे जाखी जी ॥ क० ॥ गुरु उत्तमविजय छे साखी जी ॥ क० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ २९० ॥

॥ दोहा ॥

॥ दीठु सरखे द्रव्य ते, निज आचरण नरदेव, चिंता मंत्री चित्त थइ, हुर्ड विपरीत ए हेव ॥ १ ॥ केम आचरण बीजा कने, सघलो ए संदेह, परिव्राजकने पाय पडी, तुरतज पूछे तेह ॥ २ ॥ वेषस्वभाव निरुद्ध किम, विस्मयकारी वात, परिव्राजक बोल्यो पछे, वेगे निज अवदात ॥ ३ ॥ वि-पर्यीने क्ह्यो शु विरुद्ध, मंत्री बोले ताम, न होवे ज्ञानी जे नरा, करे ते एहवा काम ॥ ४ ॥ पण तुम सरिखा पुरुषने, न घटे एह निदान, अ-वितथ मुजने आखीने, महेर करी महेरबान ॥ ५ ॥ सावधान थइने सुणो, परिव्राजक कहे प्रेम, आप्यो अवधिज्ञानीए, मूल थकी ते नेम ॥ ६ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ वाउ रगावो वरना मोजीया ॥ ए देशी ॥

॥ इणे नगरे पुनर देशना, पुनरवरधन नयरी नाम रे ॥ सोमदेव नामे ब्राह्मण वसे, अग्निवेसायण गोत्र अभिराम रे ॥ १ ॥ कह्या कर्म न छूटे प्राणीया ॥ ए आकणी ॥ तस पुत्र नारायण नाम छु, हिंसाए सरग ते

नाखु रे ॥ एक चोरने मारता लेइ जता, मारो चोर ए हु मुखे दाखु रे ॥ २ ॥ क० ॥ एक साधुए ते वच साजल्यु, ताजु उपनु अवधिज्ञान रे ॥ ते टुकडेथी सुणी बोलीआ, अहो कष्ट जे जीवने अज्ञान रे ॥ ३ ॥ क० ॥ सुणी चिता मुजने उपनी, अहो शात स्वरूपी एह रे ॥ मुज उ देशी एम जाखीउ, जइ पूछु कारण तेह रे ॥ ४ ॥ क० ॥ म्हे पाय प णीने पूछीउ, जगवन् कहो शु अन्नाए रे ॥ तव मुनि कहे आल जे दे यवु, वली विरुद्ध उपदेश दाए रे ॥ ५ ॥ क० ॥ म्हे पूछ्यु आल किशु कहो,वली विरुद्ध श्यो उपदेश रे ॥ मुनि कहे ए कर्मविपाकथी,लह्यो नर आ पद् सुविशेष रे ॥ ६ ॥ क० ॥ ए निरपराधी पुरुषने,तुम्हे चोर कहीने दाख्यु रे ॥ ए अछतु आल पीडा करे, एहवु बोलवु नवि जाख्यु रे ॥ ७ ॥ क० ॥ अछतु आल तो नवि दीजीये, पण चोरने चोर न कहीये रे ॥ वली जीवघाते स्वर्ग बोलता, विरुद्ध उपदेश पण लहीये रे ॥ ८ ॥ क० ॥ सघले दर्शनमा जाखीउ, जीवघात न कीजे प्राणी रे ॥ सुख सौजाग्य वली आरोग्यता, जनमातरे होये सुखखाणी रे ॥ ९ ॥ क० ॥ "यत ॥ सवेवि जीवा इछति, जीविउ न मरीज्जिउ ॥ तम्हा पाणवह घोर, निग्गथा वज्जयतिण ॥ १ ॥ आयु र्दीर्घतर वपुर्वरतर गोत्र गरीयस्तर, वित्त जूरितर वल वहुतर स्वामित्व मुच्चेस्तर ॥ आरोग्य विगतातर त्रिजगति श्लाघ्यत्वमल्पेतर, ससाराबु निधि करोति सुतरा चेत कृपार्द्रांतर ॥ २ ॥' जनमातरे आल जे दीधलु, तेहनु फल छे हजी शेष रे ॥ ते जोगववु थोडा कालमा, आवशे उदरे सुविशेष रे ॥ १० ॥ क० ॥ तव पूछ्यु म्हे प्रजु केहवु, जन्मातरे दीधु आल रे ॥ केहवु तस फल मे जोगव्यु, मुनिवर बोल्या किरपाल रे ॥ ११ ॥ क० ॥ इण जरते उत्तरा पथमा, पाटण नगर जनक नाम रे ॥ आषाढ नामे बाम्हन तिहा, रतुया जारया अनिराम रे ॥ १२ ॥ क० ॥ पाचमे जवे तेहनो सुत हतो, चद्रदेव ताहरु अजिधान रे ॥ शास्त्र सा नल्या वेद पढावीउ, तुजने उपन्यु अति मान रे ॥ १३ ॥ क० ॥ वीरसेन राजा ते नयरनो, तिणे आजीविका घणी आपी रे ॥ नित्य नृपनी पासे बेसी रहे, मनगमती वात आलापी रे ॥ १४ ॥ क० ॥ एम करता एक दिन तिण पुरे, विनीत शेठनी धूया रे ॥ तस नाम ते जीरमती अछे, तेहना शील आचार ते जूया रे ॥ १५ ॥ क० ॥ अविवेक वहुल होय

नारीने, वली दुर्जय मोह वखाण्यो रे॥ यौवन ते विकारनु घर अछे, तिणे निज कुल पण न पिछाण्यो रे ॥ १६ ॥ क० ॥ अभिलाप योग्य विषय कह्या, न विचार्यो अनागत काल रे ॥ सिंहल नामे माळी समागमे, रमता बहु काढती काळ रे ॥ १७ ॥ क० ॥ वीरमतीनो पूज्य एक जाणीये, पाळे नित्य निज आचार रे ॥ परिव्राजक नाम जोगातमा, नि सगपणु वली धारे रे ॥ १८ ॥ क० ॥ प्राणेशर गयो एक दिन हवे, लोकवाद थयो एम चावो रे ॥ जोगातमाशु वीरमती वशी, ते साचल्यो एह आरावो रे ॥ १९ ॥ क० ॥ ते पण निश्चय करी राखीउ, एक दिन राजकुळे थइ वात रे ॥ सहु लोक कहे ए केम हशे, ते करु ए खरु अवदात रे ॥ ॥ २० ॥ क० ॥ एह वात हु जाणु तु खरी, एहमा नहीं काय संदेह रे ॥ निज कुल आचार लोपी कर्यु, तव राय कहे सुणी एह रे ॥ २१ ॥ क० ॥ निज नारीनो त्याग कर्यो इणे, तव उत्तर ते एम दीधो रे ॥ ते कारण परस्त्री खोलता, पारव्रजपणु तिणे लीधो रे ॥ २२ ॥ क० ॥ एहमा काय धर्म न जाणजो, एम सुणी केइ पाम्या अधर्म रे॥ सहु परिव्राजके पण लाजती, काढ्यो टोळेथी लही मर्म रे ॥ २३ ॥ क० ॥ बहु पाम्यो विटबणा लोकमा, तुरु कर्म निविड बधाणु रे॥ एम जाणी आल न दीजीये, जेहथी लहे नरकनु ठाणु रे ॥ २४ ॥ क० ॥ दशमी ए चोथा खडनी, भाखी एम ढाळ रसाल रे॥ कहे पद्मविजय सुणता होवे, श्रोता घर मगलमाल रे ॥ २५ ॥ क० ॥ सर्व गाथा ॥ ३२१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आयुदये हवे उपन्यो, आरभ करी अनेक, माया बहुल करमवशे, धर्म आराध्यो न एक ॥ १ ॥ कोल्लाग सन्निवेशे कह्यो, एलगनो अवतार, काल गयो तस केटलो, आव्या कर्म अपार ॥ २ ॥ जीव सही वेदन जमी, आयुनो थयो अत, मरी शीआल ते कर्मथी, उपन्यो कर्म अनत ॥ ३ ॥ इणहीज गामनी अटवीए, फिरता तु फल खाय, तेहथी जीव सही तथा, खे खे करे न खवाय ॥ ४ ॥ अनुक्रमे मरण ते आवीयु, तेहज कर्म तहत्ति, साकेतपुर स्वामी तणी, विलासिणी नरगत्ति ॥५॥ मदनलतानी कूखमा, पुत्रपणे प्रगटाय, जीवन पाम्यो जेटले, नृपवल्लभ निरमाय ॥६॥

नाखु रे ॥ एक चोरने मारवा लेइ जता, मारो चोर ए हु मुखे दाखु रे ॥ २ ॥ क० ॥ एक साधुए ते वच सानळ्यु, तासु उपनु अवधिज्ञान रे ॥ ते ढुकडेथी सुणी बोलीआ, अहो कष्ट जे जीवने अज्ञान रे ॥ ३ ॥ क० ॥ सुणी चिता मुफने उपनी, अहो शात स्वरूपी एह रे ॥ मुज उदेशी एम नाखीउ, जइ पूछु कारण तेह रे ॥ ४ ॥ क० ॥ म्हे पाय प्रणमीने पूठीउ, नगवन् कहो शु अन्नाण रे ॥ तव मुनि कहे आल जे देयवु, वली विरुद्ध उपदेश दाण रे ॥ ५ ॥ क० ॥ म्हे पूछ्यु आल किशु कहो,वली विरुद्ध श्यो उपदेश रे ॥ मुनि कहे ए कर्मनिपाकथी,लह्यो नर या पद सुविशेष रे ॥ ६ ॥ क० ॥ ए निरपराधी पुरुषने,तुम्हे चोर कहीने दाख्यु रे ॥ ए अठतु आल पीडा करे, एहवु बोलवु नवि नाख्यु रे ॥ ७ ॥ क० ॥ अठतु आल तो नवि दीजीये, पण चोरने चोर न कहीये रे ॥ वली जीवघाते स्वर्ग बोलता, विरुद्ध उपदेश पण लहीये रे ॥ ८ ॥ क० ॥ सघले दर्शनमा नाखीउ, जीवघात न कीजे प्राणी रे ॥ सुख सौनाग्य नली आरोग्यता, जनमातरे होये सुखखाणी रे ॥ ९ ॥ क० ॥ "यत ॥ सवेवि जीवा इछति, जीविउ न मरीज्जिउ ॥ तम्हा पाणवह घोर, निग्गथा वज्जयतिण ॥ १ ॥ आयुर्दीर्घतर वपुर्वरतर गोत्र गरीयस्तर, वित्त नूरितर बल बहुतर स्वामित्वमुच्चैस्तर ॥ आरोग्य विगतातर त्रिजगति श्लाघ्यत्वमल्पेतर, ससाराबुनिधि करोति सुतरा चेत कृपार्द्रांतर॥ २ ॥' जनमातरे आल जे दीधलु, तेहनु फल ठे हजी शेष रे ॥ ते नोगववु थोमा कालमा, आववो उदरे सुविशेष रे ॥ १० ॥ क० ॥ तव पूछ्यु म्हे प्रनु केहवु, जन्मातरे दीधु आल रे ॥ केहवु तस फल मे नोगव्यु, मुनिवर बोल्या किरपाल रे ॥ ११ ॥ क० ॥ इण नरते उत्तरा पथमा, पाटण नगर जनक नाम रे ॥ आषाढ नामे वाम्हन तिहा, रहुआ नारया अनिराम रे ॥ १२ ॥ क० ॥ पाचमे नवे तेहनो सुत हतो, चद्रदेव ताहरु अनिधान रे ॥ शास्त्र सानख्या वेद पढावीउ, तुफने उपन्यु अति मान रे ॥ १३ ॥ क० ॥ वीरसेन राजा ते नयरनो, तिणे आजीविका घणी आपी रे ॥ नित्य नृपनी पासे बेसी रहे, मनगमती वात आलापी रे ॥ १४ ॥ क० ॥ एम करता एक दिन तिण पुरे, विनीत शेठनी धूआ रे ॥ तस नाम ते नीरमती अठे, तेहना शील आचार ते जूआ रे ॥ १५ ॥ बहुल होय

नारीने, वली दुर्जय मोह वखाण्यो रे॥ योवन ते निकारनु घर अछे, तिणे निज कुल पण न पिछाण्यो रे ॥ १६ ॥ क० ॥ अनिलाप योग्य विषय कह्या, न विचाख्यो अनागत काल रे ॥ सिंहल नामे माली समागमे, रमता बहु काढती काल रे ॥ १७ ॥ क० ॥ वीरमतीनो पूज्य एक जाणीये, पाले नित्य निज आचार रे ॥ परिव्राजक नाम जोगातमा, नि सगपणु वली धारे रे ॥ १८ ॥ क० ॥ घाणेशर गयो एक दिन हवे, लोकवाद थयो एम चारो रे ॥ जोगातमाशु वीरमती वशी, ते साजल्यो एह आरावो रे ॥ १९ ॥ क० ॥ ते पण निश्चय करी राखीउ, एक दिन राजकुले थइ वात रे ॥ सहु लोक कहे ए केम हशे, ते कहु ए सरु अवदात रे ॥ ॥ २० ॥ क० ॥ एह वात हु जाणु छु खरी, एहमा नही काय सदेह रे ॥ निज कुल आचार लोपी कहु, तव राय कहे सुणी एह रे ॥ २१ ॥ क० ॥ निज नारीनो त्याग कख्यो इणे, तव उत्तर ते एम दीधो रे ॥ ते कारण परस्त्री सेवता, पापरूपणु तिणे लीधो रे ॥ २२ ॥ क० ॥ एहमा काय धर्म न जाणजो, एम सुणी केइ पाम्या अधर्म रे॥ सह परिव्राजके पण साजली, काढ्यो टोलेथी लही मर्म रे ॥ २३ ॥ क० ॥ बहु पाम्यो विटंबणा लोकमा, तुऊ कर्म निबिड बधाणु रे ॥ एम जाणी आल न दीजीये, जेहथी लहे नरकनु गाणु रे ॥ २४ ॥ क० ॥ दशमी ए चोथा खंडनी, ढाली एम द्राख रसाल रे॥ कहे पद्मविजय सुणता होये, श्रोता घर मगलमाल रे ॥ २५ ॥ क० ॥ सर्व गाथा ॥ ३२१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आयुक्षये हवे उपन्यो, आरंभ करी अनेक, माया बहुल करमवशे, धर्म आराध्यो न एक ॥ १ ॥ कोल्लाग सन्निवेशे कह्यो, एलगनो अव तार, काल गयो तस केटलो, आव्या कर्म अपार ॥ २ ॥ जीव सवी चेदन जवी, आयुनो थयो अत, मरी शीयाल ते कर्मथी, उपन्यो कर्म अनत ॥ ३ ॥ इपदीज गामनी अटवीए, फिरता तु तेहर्थी जीव सवी तथा, न्वे से फरे न न्माय ॥ ४ ॥ ीमु, तेहज कर्म तदृत्ति, साकेतपुर स्वामी तपी, रिवा तानी हुखमा, पुत्रपणे ,जीवन पा- मान

॥ ढाल अगीआरमी ॥

॥ राग मारुणी ॥ श्रीसीमंधर साहिब आगे विनति रे ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन मदिरा पीधी कर्मदोषे करी रे, मदिरामत्त थयो तेह ॥ थाइ रे ॥ थाइ रे नृप माइ आक्रोशतो रे ॥ १ ॥ वात सुणी नृपपुत्रे तस वास्यो घणु रे ॥ तेहने पण आक्रोश ॥ करतो रे ॥ करतो रे धरतो नृपने क्रोधमा रे ॥ २ ॥ कोप करीने जीन छेदावी नृपवरे रे ॥ मद उतस्यो तव तुज ॥ वाते रे ॥ वाते रे निज अवदाते लाजीउं रे ॥ ३ ॥ अणसण कीधु मास एकनु तें तदा रे ॥ उपन्यो माहण अत्र ॥ तिहां थी रे ॥ तिहांथी रे किहांथी कर्म तूटे कस्या रे ॥ ४ ॥ वचन मुनिना सांजली सवेग उपन्यो रे ॥ वली पूछ्यु म्हें तास ॥ शेष रे ॥ शेष रे कहो विशेष शु आवशे रे ॥ ५ ॥ ज्ञानी गुरु तव बोल्या करुणा आणीने रे ॥ महा विटंवणा थाय ॥ लोक रे ॥ लोक रे थोक थोक तुज देखशे रे ॥ ६ ॥ मुनिवयणे हु वीहनो दीक्षा आदरी रे ॥ गुरुमरणांते मुज ॥ आपी रे ॥ आपी रे वे विद्या जली रे ॥ ७ ॥ गगनगामिनी तालुग्घाडणी नामथी रे ॥ गुरु कहे सांजल्य वात ॥ धर्म रे ॥ धर्मरे कर्म होय तो फोरवे रे ॥ ८ ॥ विषय असार निमित्ते ए मत फोरवे रे ॥ वली सुण बीजु एह ॥ मीठु रे ॥ मीठु रे जूठु कदिय न बोलजे रे ॥ ९ ॥ हासीमा पण जूठु जो बोलाय तो रे ॥ करजे तु ए रीति ॥ पाणी रे ॥ पाणी रे नाजी प्रमाण जाणी तिहां रे ॥ १० ॥ उंची बाहु नयण अनिमेष तिहां करी रे ॥ एक सहस्र आठ वार ॥ जपजे रे ॥ जपजे रे खपजे पातिक आपणु रे ॥ ११ ॥ हवे एक दिन हु जूठु बोल्यो पापथी रे, इह परलोकविरुद्ध ॥ कीधु रे ॥ कीधु रे सीधु अवलु माहरे रे ॥ १२ ॥ काल सध्याए वसती पास आराममा रे ॥ वकुल वृक्षने हेठ ॥ बेठो रे ॥ बेठो रे हेठो तिहां जूठु लव्यो रे ॥ १३ ॥ मंत्री कहे शु बोल्या जूठु ते कहो रे ॥ तव बोल्यो तिहां आय ॥ तरुणी रे ॥ तरुणी रे मनहरणी टोले मली रे ॥ १४ ॥ जल अवगाहन करीने तूटे केशथी रे ॥ देवदर्शनने काज ॥ आवी रे ॥ आवी रे मन जावी मुजने कहे रे ॥ १५ ॥ हे जगवन् जोवन वय तुमची देखीये रे ॥ सार विषय ससार ॥ लोके रे ॥ लोके रे थोके सहु सेव्या म्हरा रे ॥ १६ ॥ हरिहर ब्रह्मा सेवित किम छांड्या तुम्हे रे ॥ दुक्कर व्रत करो केम ॥ स्वामी

रे ॥ स्वामी रे कामी वचण कह्या घणा रे ॥ १७ ॥ हासी गर्भित व-यण सुणीने म्हे तदा रे ॥ हास्य तणु नहीं शील ॥ तोहि रे ॥ तोहि रे मोही हु एम बोलीउं रे ॥ १८ ॥ दीर्घ नि शासो नाखी म्हे चालीउ रे ॥ तेह कावने जोग्य ॥ जाणु रे ॥ जाणु रे दाखु अधिक जाणी करी रे ॥ १९ ॥ मन माहरु महिला विरहे सतापीउ रे ॥ माव्यु तप म्हे एम ॥ चाली रे ॥ चाली रे गुरुदाखी विधि नवि करी रे ॥ २० ॥ मध्यराते हु चोरी करवा नीसस्यो रे ॥ सूता पुरना लोक ॥ ज्यारे रे ॥ ज्यारे रे त्यारे हु पकमाउं रे ॥ २१ ॥ सागर शेठना घरची ए डव्य लीधवु रे ॥ जाण्यो नरसचार ॥ जणतो रे ॥ जणतो रे गणतो पण नि फल थइ रे ॥ २२ ॥ तव नासता पकड्यो तुम्हे पुरुष नरे रे ॥ वात कही रह्यो मौन ॥ तेहने रे ॥ तेहने रे नेह आणी मत्री जणे रे ॥ २३ ॥ चोथे खडे ढाल अग्यारमी ए कही रे ॥ सुणता मगलमाल ॥ थाय रे ॥ थाय रे इणी परे गाय पदम मुनि रे ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ ३५१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुणो एक दिननो सहस्यो, अवकार नरराय, दीसे नहीं कहो किण दिशा, अमने अचरिज थाय ॥ १ ॥ परिव्राजक कहे आपीउं, सा-वत्री गिरदार, मत्री कहे स्या निमित्तथी, तव कहे तास विचार ॥ २ ॥ सावत्री नगरी वसे, जीवथी अधिको जाणी, मित्र गधर्वदत्त नामथी, माहरो ते मन आणी ॥ ३ ॥ इन्द्रदत्त शेठनी वूआ, कन्या नाम कहत, वासवदत्ता वेगशु, तात अन्यने दित ॥ ४ ॥ पगरण माव्यु परणवा, तव माहरो तिहा मित्त, कन्या विण करीये किशु, चिंतवतो एम चित्त ॥ ५ ॥ मरवु अते ए विना, अपहरु चिंती एम, अपहरी परणो आपथी, नर-पति जाणी नेम ॥ ६ ॥ कुविकन्याने अपहरी, करे एहवु कहो केम, एम चिंती अवनीपति, नयरथी काढे नेम ॥ ७ ॥ जीनिक नामे मित्र जे, ते-हने साथे ताम, आव्यो मुज पासे अधिक, इछा धरतो आम ॥ ८ ॥

॥ ढाल वारमी ॥

॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ म्हे पूछ्यु ते मित्रने रे, आव्या तुम्हे शे हेत ॥ मनना ॥ वात सवे धुरथी कही रे, साजली ते सकेत ॥ मन० ॥ १

ल० ॥ निर्मम चित्त सदाय ॥ ॥ ए गु० ॥ २ ॥ पच समिते समिता रहे ॥
॥ ला० ॥ ल० ॥ गुप्तइन्द्रिय निर्ग्रंथ ॥ ए गुप्त ब्रह्मचारी अकिंचनो ॥ ला०
॥ ल० ॥ साधता शिवपंथ ॥ ए गु० ॥ ३ ॥ श्रमणसिंह देखी करी ॥ ला०
॥ ल० ॥ हैयडे हर्ष न माय ॥ ए गु० ॥ धर्म मन तस उल्लस्यु ॥ ला० ॥
॥ ल० ॥ चिंतवे इम निरमाय ॥ ए गु० ॥ ४ ॥ अहो अहो रूप अहो
चरी ॥ ला० ॥ ल० ॥ अहो लावण्य विलास ॥ ए गु० ॥ अहो सौम्यता अहो
उपमी ॥ ला० ॥ ल० ॥ अहो जोवन सुप्रकाश ॥ ए गु० ॥ ५ ॥ अनग
विजय अहो एहनो ॥ ला० ॥ ल० ॥ अहो अहो निरहकार ॥ ए गु० ॥
अहो देखवा योग्य एह छे ॥ ला० ॥ ल० ॥ अहो सेववा योग्य सार ॥ ए
गु० ॥ ६ ॥ पासे जइ करी वदना ॥ ला० ॥ ल० ॥ आचारय मुनिराय ॥
॥ ए गु० ॥ धर्मलाभ मुनिवर दीई ॥ ला० ॥ ल० ॥ वेगा गुरुने पाय ॥
॥ ए गु० ॥ ७ ॥ करकज जोडी पूछतो ॥ ला० ॥ ल० ॥ किम उपन्यो नि
र्वेद ॥ ए गु० ॥ रूप मनोभव सारिखु ॥ ला० ॥ ल० ॥ किम लीधा तुम्हे
वेद ॥ ए गु० ॥ ८ ॥ किम दीक्षा प्रभु आदरी ॥ ला० ॥ ल० ॥ तव
बोल्या सूरिराय ॥ ए गु० ॥ ए ससार असारमा ॥ ला० ॥ ल० ॥ निर्वेद
स्यो पूछाय ॥ ए गु० ॥ ९ ॥ धन कहे गुरुजी साचलु ॥ ला० ॥ ल० ॥
एह तो सहुने समान ॥ ए गु० ॥ पूछु विशेष कारण तिणे ॥ ला० ॥ ल० ॥
भाखो ए भगवान् ॥ ए गु० ॥ १० ॥ मुनि कहे माहरु चरित्र जे ॥ ला०
॥ ल० ॥ ते निर्वेदनु हेत ॥ ए गु० ॥ धन कहे प्रभु अनुग्रह करो ॥
॥ ला० ॥ ल० ॥ कहेवे एसकेत ॥ ए गु० ॥ ११ ॥ तव जशोधर मुनि चिं
तवे ॥ ला० ॥ ल० ॥ दीसे सौम्य आकार ॥ ए गु० ॥ पामे वैराग्य क
दापि जो ॥ ला० ॥ ल० ॥ जाणु निज अधिकार ॥ ए गु० ॥ १२ ॥ सूरि
कहे तु सांभले ॥ ला० ॥ ल० ॥ एकमना सावधान ॥ ए गु० ॥ इहांहीन
विशाला पुरी ॥ ला० ॥ ल० ॥ अमरदत्त राजान ॥ ए गु० ॥ १३ ॥ सुर
इदत्त नामे हु हतो ॥ ला० ॥ ल० ॥ मात जशोधरा जाण ॥ ए गु० ॥
नयणावली मुज भारया ॥ ला० ॥ ल० ॥ नवमे नवे सुप्रमाण ॥ ए गु०
॥ १४ ॥ ताते चारित्र आदर्यु ॥ ला० ॥ ल० ॥ राज्यभार मुज आपी ॥ ए
गु० ॥ हु पण समकित पामीई ॥ ला० ॥ ल० ॥ अमर आतमव्यापी ॥ ए गु०
॥ १५ ॥ नयणावलीशु मोहीई ॥ ला० ॥ ल० ॥ पालु राज्य महन ॥ ए

गु० ॥ पवित्तवडे हूत श्रावीउं ॥ ला० ॥ ल० ॥ धर्मरायनो तत ॥ ए गु० ॥ १६ ॥ नयणावलीनी दासीए ॥ ला० ॥ ल० ॥ सारसीश्रा इण नाम ॥ ॥ ए गु० ॥ दाखव्यो देखी चिंतवे ॥ ला० ॥ ल० ॥ पुत्रजनो परिणाम ॥ ए गु० ॥ १७ ॥ अहो अहो चपलता लोकनी ॥ ला० ॥ ल० ॥ मनुष्य-पणु ए असार ॥ ए गु० ॥ अहो अहो मोह पराजवे ॥ ला० ॥ ल० ॥ सार न काय ससार ॥ ए गु० ॥१८॥ आयु नीर उलेरता ॥ ला० ॥ ल० ॥ रात्री दिवस घनी माज ॥ ए गु० ॥ चन्द्रमा सूरज वलदीश्रा ॥ ला० ॥ ॥ ल० ॥ फेरवे अरहट काव ॥ ए गु० ॥ १९ ॥ तिणे हवे परमादे सत्तु ॥ ला० ॥ ल० ॥ लेउ चारित्र उदार ॥ ए गु० ॥ नयणावली निज ना-रीने ॥ ला० ॥ ल० ॥ समजाव्यो ए विचार ॥ ए गु० ॥ २० ॥ नयणा-वली कहे साजलो ॥ ला० ॥ ल० ॥ जे तुम्हने मन जाय ॥ ए गु० ॥ पण तुम साथे आदरु ॥ ला० ॥ ल० ॥ श्रमणपणु सुखदाय ॥ ए गु० ॥२१॥ में चिंत्यु जुउं केटलो ॥ ला० ॥ ल० ॥ मुक उपर अनुराग ॥ ए गु० ॥ अहो विवेक एहनो जुउं ॥ ला० ॥ ल० ॥ चित्त अनुजायी श्रयाग ॥ ए गु० ॥ ॥ २२ ॥ सविजागी सुखडु खमा ॥ ला० ॥ ल० ॥ अहो एक पती एह ॥ ॥ ए गु० ॥ अहो ठदे मुक चालती ॥ ला० ॥ ल० ॥ मुक उपर घण नेह ॥ ए गु० ॥ ॥ २३ ॥ चोथे खडे तेरमी ॥ ला० ॥ ल० ॥ जाखी पद्मे ढाल ॥ ए गु० ॥ गुरु कहे आगले साजलो ॥ ला० ॥ ल० ॥ माहरी वात रसाल ॥ ए गु० ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ ४१४ ॥

॥ दोहा ॥

अर्क अनुक्रमे आथम्यो, म्हे चिंत्यु मन माहि, एवडी आपद एहने, थम सम श्यो उन्नाह ॥ १ ॥ सोममग्न हवे सचर्यो, दीपक जुवन उ-द्योत, वासजुवन वेगे सज्यु, जिहा मणिरयणनी ज्योति ॥ २ ॥ कस्तूरी कर्दम करी, जिति लगाइ जार, प्रवर तलाइ पाथरी, शय्या कर्यो शि-णगार ॥ ३ ॥ कुसुमदाम वर जटकती, धूमघटा थइ धूप, सयण पूजीने माननी, चित्तथी करी अति चूप ॥ ४ ॥ वासजुवनमा वेगथी, आव्यो अवनीपाव, पल्यके वेगो प्रगट, काढ्यो कायक काउ ॥ ५ ॥ राणीनो

शुक्ल ध्यान ॥ ६ ॥ मनमा एणी परे मानतो, सर्वे ठांमवु सेल, पण राणी परिणामथी, ठमाये किम ठेल ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ एहनी गति एहज जाणे, रखे कोइ सदेह आणे रे ॥ ए देशी ॥ अथवा विनयपद दशमु प्रकारयु ॥ ए देशी पण चाले ठे ॥

॥ तुमे जोज्यो नारीचरित्र रे ॥ जेहना ठे चरित्र विचित्र रे ॥ ए आंकणी ॥ सूतो नरपति जाणीने, उठी नयणावली राणी रे ॥ मूकी ढोलीउं उतरी हेठी, नृपति चमक्यो जाणी रे ॥ १ ॥ तुमे० ॥ शंका सहित द्वार उघाडी, नीकली रमझम करती रे ॥ मे चिंत्यु मुज विरहनी कायर, रखे जइने मरती रे ॥ २ ॥ तुमे० ॥ नीकलजानी आ वेला नहीं, लेइ कर करवाल रे ॥ एम चिंती नीकलीउं पूठे, गइ जिहां प्रासादपाउ रे ॥३॥ तुमे० ॥ ते कुब्जक उठाव्यो करथी, तव म्हे चिंत्यु एम रे ॥ एहने सजलावीने मरशे, नहीं तो उठावे केम रे ॥ ४ ॥ तुमे० ॥ घूमत नयने कुबज उठ्यो, पूठे किम इणी वेला रे ॥ आवी आज तदा मैं चिंत्यु, आज कह्यु केम हेला रे ॥ ५ ॥ तुमे० ॥ अथवा आज उचित नहीं वेला, तिणे कारणे एम बोले रे ॥ पण सांजलु एहनो हुवे उत्तर, इशा मनमाथी खोले रे ॥ ६ ॥ तुमे० ॥ राणी कहे नृप घात विषम ठे, मोडा सूता राय रे ॥ तिणे एटली वेला थइ मुजने, जाणजो ए अंतराय रे ॥ ॥ ७ ॥ तुमे० ॥ एटले कुब्जे देवीशु रे, आलिंगनादिक दीधा रे ॥ चुंबन ने विषय सीत्कारादिक, सहु परे परे कीधा रे ॥ ८ ॥ तुमे० ॥ क्रोधा नल सधुकण माहरु, विषय सेवन इणे माड्यु रे ॥ अविवेक पवन थकी मुज लागो, खड्ग ते म्यानथी काढ्यु रे ॥ ए ॥ तुमे० ॥ वली मुज चिंता एम थइ, जिणे जीत्या बहु राजान रे ॥ तो कुशीलिणी देवी कुबज ए, ठे सारमेय समान रे ॥ १० ॥ तुमे० ॥ अहो अहो नारीचरित्रने, जुउं मुज किणी परे नाखे रे ॥ आचरणा केहवी ठे एहनी, एवडु कपट ते दाखे रे ॥ ११ ॥ तुमे० ॥ यत ॥ "अन्य मनुष्य हृदये निधाय, अन्य नर दृष्टिजिराह्ययति ॥ अन्यस्य दत्वा वचनावकाश,–मन्येन सार्द्धं रमयति रामा ॥ १ ॥ जलमज्झे मछिपय, आगासे पखिआण पयपती ॥ महिलाहियाप मग्गो, तिन्निवि विरला पयपती ॥ २ ॥ दोहो ॥ "स्त्री प्रार्थे

कनी, केण पतीजे तास, माथे घनो चमाय करी, पठे दीये गल-
॥ "वाल कालथी चोगवीने, सुत पण एहनो काल रे ॥ राज्य वे-
माहरे, तिणे हलकाइ जूपाल रे ॥ १२ ॥ तुमे० ॥ अविवेक व-
री होवे, एहमा अचरिज काय नाहि रे ॥ आदरवु चारित्रने, अंत-
चे ते नाहि रे ॥ १३ ॥ तुमे० ॥ प्राये जोता सरिता परे, काय
नी होवे नारी रे ॥ एहनु वचन माने जे कोइ, तेहना मुख उपर
रे ॥ १४ ॥ तुमे० ॥ यत ॥ सवैयो ॥ "कामिनीकी वात माने ताके
र ज्यु ॥ कपट निपट बोले हियाकी न वात खोले, मनथे उगाय
; सब कूर ज्यु ॥ जेसोही पतगरग तेसोही त्रियाको सग, विनु-
; नाही जेसो नदीपूर ज्यु ॥ कहे कवि सुनिचद सुणो हो सज्ज-
कामिनीकी वात माने ताके मोरे धूर ज्यु ॥ १ ॥ "अविवेक बहुल
णो ए ठे, वली कुमर तपी हलकाइ रे ॥ विघन वली चारित्रमां
नरपति इम चित्तमा थाइ रे ॥ १५ ॥ तुमे० ॥ मारवु न घटे मुजने
वाल्यो निज परिणाम रे ॥ स्नान करी करवाववने आव्यो, निज
; तव गाम रे ॥ १६ ॥ तुमे० ॥ उतलु चित्त राणी थकी, वली वाध्यो
पार रे ॥ शय्याए वेठो चितवे, अहो नारीशिरे धिक्कार रे ॥१७॥
॥ जूमि विना विषवेलनी, अग्नि विहूणी चूडेल रे ॥ नोजन
विशूचिका अहो, ए तो नवो कोइ खेल रे ॥ १८ ॥ तुमे० ॥ सचे-
र्ण कही वली, विण उपसर्गे मारी रे ॥ राशनी विण ए पासलो,
हेतु मरण डुवारी रे ॥ १९ ॥ तुमे० ॥ वेनी विणा शुति कही ठे,
ी ससार रे ॥ अथवा चिता शी करु, ए ठे ससार असार रे ॥
॥ तुमे० ॥ जाणी असार ए कारणे, ठांडु तु ए परिवार रे ॥ एम
गुज परिणामथी, रहु करतो एम विचार रे ॥ २१ ॥ तुमे० ॥ आवी
रुपे समे, हु सूतो एहवु जाणी रे ॥ राणी पण सूती खरी, मनमा
भ्राति न आणी रे ॥ २२ ॥ तुमे० ॥ आलिंगन मुजने करु, म्हे
नि दाख्यो विकार रे ॥ पूर्व परे नरख्यो तदा, एम करता थइ स-
॥ २३ ॥ तुमे० ॥ रयणी अनर्थनी खाणी गइ, करे करणी निज
त रे ॥ वेठा आस्थानिकामडपे, मत्री राजकने [illegible] विख्यात रे ॥
॥ तुमे० ॥ चोथे खडे चोदमी, कही पद्मविज[illegible]राज रे ॥ श्रो-

ताजन सुणजो सवे वली, आगल वात रसाल रे ॥ २५ ॥ तुमे० ॥ सर्व गाथा ॥ ४४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मत्रीमरुत भेलु मल्यु, वारु करे विचार, विमलमति मुखने वली, पभण्यु निज परकार ॥ १ ॥ पभणे मत्री एणी परे, अवसर नहीं महा राय, गुणधर कुमर प्रमुख नहीं, राज्यभारने लाय ॥ २ ॥ परजाने जे पालती, ते पण धर्म कहत, कहे नरपति अम कुल तणी, एहवी स्थिति आवत ॥ ३ ॥ भूत धर्मनो देखीने, रहेवु नहीं घर माहि, मत्री कहे तुम्ह मन रुचि, आदरीये उत्साहि ॥ ४ ॥ अनुक्रमे दिवस गयो वही, रात्री पडी तव राय, वासभुवन माहि मन वगर, सूतो चित्त सुखदाय ॥ ५ ॥ सेज रमता करण गुण, जास न मन्न छमन्न, प्रीति विहूणो प्रेम रस, जाणे अजूणु अन्न ॥ ६ ॥ नयणे आवी नीन्दडी, जामिनी पाछिले जाम, आव्यु सुपनु एहवे, लाग्यु ते अभिराम ॥ ७ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ देशी नहियाणीनी ॥

॥ देखे स्वपनु एम, उज्ज्वल धरने माथे हो वली बेठो सिंहासन उपरे ॥ आवी यशोधरा माय, प्रतिकूल वाली पाड्यो हो गयो सातमी भूमिने परिसरे ॥ १ ॥ आवी पूठे माय, आलोटतो आलोटतो हो वली हु छठी मेरु चड्यो ॥ इण समे जाग्यो जाम, तव म्हे मनमा चिंत्यु हो ए स्वप्न विषम आवी अड्यु ॥ २ ॥ पण परिणामे सार, शु निपजशे एहनी हो तेहनी खबर पडे नहीं ॥ पण साधन परलोक, करवा माड्यु रूडु हो रुडी जे वानार वाउं सही ॥ ३ ॥ धरमध्यानथी एम, रात गई दूर बेठो हो आस्थाने जइने मुदा ॥ जोडी कचेरी ताम, आवी यशोदा माता हो विनये उठ्यो हु तदा ॥ ४ ॥ मुक पूठे भुवनथान, म्हें कीधो परणाम हो पीठिस्थाण बेसारीया ॥ एह थयु स्वप्नु नाम, कहेशु निज अभिप्राय हो माता जिण इहा आवी- या ॥ ५ ॥ न कट्ट मन्नमरान, स्नेहे मुझने माता हो सजम लेवा नवि दीए ॥ स्वप्न जणावे ताम, अनार्यी अनराय हो आगम्या मादरे हिये ॥ ६ ॥ रतन न मान ठेडार, कुप्रतिराग ते नाम्या हो मात पिता आपण

ना ॥ विरम्यु चित्त वली मुज, तिणे रहेवाय न इहां हो वखती चयनी आगमा ॥ ७ ॥ तिपे कहु एहवी वात, जिणे मुज आणा आपे हो स्वप्न कहु ते रीतशुं ॥ वाल्यो एम विचारी, माता स्वपनु लाधु हो साजलजो परतीतशुं ॥ ८ ॥ कुमरने थापी राज्य, मस्तक मुख मुनाभी हो सयल सग त्यागी थयो ॥ श्रमण थइ शुभ सग, घर उपर जब बेगे हो तिहाथी वली पली गयो ॥ ए ॥ रात्रीने पाछले पहोरे, देखीने हु जाग्यो हो ते साजलीने खलजली ॥ थू थूकार करत, माता पगशु चापे हो पृथवीमरूल वली वली ॥ १० ॥ अपमगल थाउ दूर, चिरजीवो तुम्हे पुत्ता हो निर्विघ्न सही पालजो ॥ स्वपनने घातनिमित्त, जाखे कोशी मुजने हो पुत्रवचन मुज पालजो ॥ ११ ॥ स्वप्नशास्त्रनी जाण, कहे एम आपो सुतने हो राज्य तुम्हे घरमा रहो ॥ ल्यो तुम्हे साधुवेष, इत्तर कालनी दीक्षा हो घरमा वेठा तुम्हे ग्रहो ॥ १२ ॥ म्हे कस्यु वचन प्रमाण, तव वली वोली पत्नीथ्या हो तास उपाय हवे साजलो ॥ जल थल खहचर जीव, हणी कुलदेवी पूजो हो विघ्न सवे दूरे टलो ॥ १३ ॥ शातिकरम करो एम, वेदमा जाख्या विधिथी हो म्हे कस्यु ढाकी कानने ॥ माता श्री कहो वात, शातिकर्म हिंसाए हो करता लेवा प्रापने ॥ १४ ॥ धर्म अहिंसा मूल, जाख्यो छे सहु शास्त्रे हो तेहने वाधा किम करो ॥ मनथी हणीये जीव, तोपण नरमा जमीये हो जवसायर थाये डुत्तरो ॥ १५ ॥ जे करे परने दुःख, पामे पोते तेहवु हो अफल कर्म जावे नहीं ॥ शातिकरम पण तास, परने पाप न चिते हो इह परजव सुखीउ सही ॥ १६ ॥ ' यत ॥ तेणे जहा सधि मुहे गहीए, सकम्मुणा किच्चइ पावकारी ॥ एव पयापेच इह च लोए, कडाण कम्माण न मुक्ख अत्थी ॥ १ ॥ कृतकर्मक्षयो नास्ति, कल्पकोटिशतैरपि ॥ अवश्यमेव जोक्तव्य, कृत कर्म शुजाशुज ॥ २ ॥" निज पर आतम जीव, जे सरिखा करी जाणे हो तेणे मोक्षमार्गने साधीये ॥ माता वोली तान, पुण्य पाप परिणामे हो होये वेद ते एम आराधीने ॥ १७ ॥ यत ॥ जस्स न ढिप्प[illegible] बुद्धी, हतु प इम जग निरवसेस ॥ पावेप सो न लिप्पइ, [illegible] म[illegible]सेण ॥ १ ॥ अथवा जो होवे पाप, तोपण कीजे [illegible]

कारणे ॥ कारणे करीये पाप, तोपण दोष न लागे हो वली होये वित निवारणे ॥ १८ ॥ तव कहे कन्यु हे मात, किहांथी परिणाम रुडो हो यकारज करवु छे जिहां ॥ हालाहल विष खाय, ते नर किहांथी जीव हो जो अमृत बुद्धि करे तिहां ॥ १९ ॥ पाप नहीं जग अन्य, हिंसा उपर जाणवु हो जिणे सहुए जीवबु इछता ॥ तिणे जे वेदवचन, ते पण गोंड जाणो हो वली जेहथी दोष न प्रीछता ॥ २० ॥ यत ॥ "न धम्म कज्जा परमत्थि कज्जं, न पाणहिंसा परम अकज्जं ॥ न पेमरागा परमत्थि बंधो, न बोहिलाभा परमत्थि लाभो ॥ १ ॥ ' वली नीरोगी थाय, ... राज्य पामे हो जे अभयदान दाता सदा ॥ सोभागी शिरदार, परभव ... हो पण दुःख न पामे ते कदा ॥ २१ ॥ यत ॥ "दीहा उअं सुरूवो, नीरोगो होइ अभयदाणेण ॥ जम्मतरेवि जीवो, सयल जणसलाहणिज्जोय ॥ १ ॥ "तिणे व्रत पालवु श्रेय, देह आरोग्यने कारण हो वली पाप करी देह शु करु ॥ तिणे मूको विखवाद, घोर पाप जिहां होय हो ते हिंसामा चित्त नहीं धरु ॥ २२ ॥ चोथे खंडे ढाल, पनरमी ए सारसी हो पण कोहनी एम मति गसी ॥ धन धन ए नरराय, जीव हिंसा नवि कीधी हो इम पद्मविजय मुनिए कही ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ ७७३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मात कहे सुण मादरु, वचन करे किम व्यर्थ, मातवचन जिहां मानवु, नहीं तिहां शास्त्रनो अर्थ ॥ १ ॥ एम कहीने सुत पाये पडी, तव तें कियु एम, तत छे मात ने तत नही, कष्ट थयु करु केम ॥ २ ॥ एक दिशा श्रवासता, अन्य दिशा वयवाग, गुरु विषाक जननग वे, सुवाबु वे गुरुना ॥ ३ ॥ एम जिनवचनो अवने, कहे सुणो एक वात, जो ... नो, तो मूको ए वात ॥ ४ ॥ जेहथी दुर्गति जाये ते किम करीये तात; अथवा हु कुक आरतनो, घणु तो करवु तात ॥ ५ ॥ ... सुत नाणे ... , कुकडीने काज, एम ... मन ते ... होय, ... नहीं मन माज ॥ ६ ॥ ... वर्णो, कोमाहड ... काज; ... , काम न करो विकराल ॥ ७ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ तुंगीआ गिरि शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥

॥ उठी अंबा कहे म करो, साहस एवडु एम रे ॥ कर झाली कहे अहो तुजने, मात उपरे प्रेम रे ॥ १ ॥ अहो जावि जाव वलीउं ॥ ए आकणी ॥ तुज मुवे में जीववु केम, ते कारण सुण पुत्त रे ॥ प्रकारांतरे मात मारी, एह तुजने जुत्त रे ॥ २ ॥ अहो० ॥ बोल्यो कुकुट इण अवसरे, शब्द सुण्यो तस मात रे ॥ मात कहे सुण पुत्र श्रुतिमा, जाखीयु विख्यात रे ॥ ३ ॥ अहो० ॥ एह एहनो कल्प जाख्यो, जो ए अवसर जास रे ॥ शब्द सुणीये तेहनो अथ, करीये वध वली तास रे ॥ ४ ॥ अहो० ॥ तेह कारण एह कुकुट, मारव तु शुज काज रे ॥ तव कह्यु में मात सुणजो, न करु एह अकाज रे ॥ ५ ॥ अहो० ॥ जीवहिंसा करु नाहि, तुम्ह आणा जो होय रे ॥ तो मरु हु एह निश्चय, अवर न हणु कोय रे ॥ ६ ॥ अहो० ॥ मात कहे तु कहे जो एम, तो सुण माहरी वाणी रे ॥ पीठमय कुकुट बनावी, मारव तु निज पाणि रे ॥ ७ ॥ अहो० ॥ एटलु मुज वचन माने, एम कही तरवार रे ॥ छूटी लेइने पडी पाये, मुज बीजी वार रे ॥ ८ ॥ अहो० ॥ एम सुणी मुज मात नेहे, नाण नेत्र विलीन रे ॥ मातनु म्हे वचन मान्यु, मति थइ मुज दीन रे ॥ ए ॥ अहो० ॥ ज्ञान बहु पण आरम अर्थे, काय नावे काज रे ॥ दूर देखे नयन पण निज, रूप देखे न आज रे ॥ १० ॥ ॥ अहो० ॥ लेप्यकारने हुकम कीधो, कुकडानो ताम रे ॥ तेह पीठनो करी कुकुट, लावीउं तिण ठाम रे ॥ ११ ॥ अहो० ॥ मात कुलदेवी समीपे, लेइ मुजने जाय रे ॥ कुकडो आगल ते थापी, कहे मुजने माय रे ॥ १२ ॥ अहो० ॥ स्यानथी ए खड्ग काढ्यु, तव कह्यु म्हे तेम रे ॥ माता कहे कुलदेवीने हवे, धरी मुजशु प्रेम रे ॥ १३ ॥ अहो० ॥ खप्न मातु पुत्रे दीठु, तस निवारण थाय रे ॥ एह कुकडो पुत्र मारे, कुशल करजो माय रे ॥ १४ ॥ अहो० ॥ एम कही मुज शान कीधी, एह कुकुट मारी रे ॥ मारीउं म्हे कुकडो जव, पूजा कीधी तिवार रे ॥ १५ ॥ अहो० ॥ सिद्धकर्मा सूपकारने, कहे देव नि[illegible] ॥ राध्य तु ए मास लेइ, हरखीये जेह देखी रे ॥ १६ ॥ अहो[illegible]

मात ए शु, मास खाधे थाय रे ॥ दान ध्यान तप नियम मत्रह, ओ॰ पध विलये जाय रे ॥ १७ ॥ अहो॰ ॥ केर खाने रुअडु जे, मारे एकज वार रे ॥ मांस जवजव नरक घाले, छु ए दोर्जाग्य अपार रे ॥ १८ ॥ अहो॰ ॥ वैद्य ओषधे मांस आपे, ते पण एहनी हशार रे ॥ निजत्त छु॰ गंध इंद्रिय मलथी, उपन्यु ए असार रे ॥ १९ ॥ अहो॰ ॥ मांस वर्ज साजलो गुण, चोर शकुन पिशाच रे ॥ जूत ग्रह ने अग्नि ए सवी, तृण समा होय साच रे ॥ २० ॥ अहो॰ ॥ सुखे जीवे सद्गति होय, ए जि नशासन नीति रे ॥ सुणो परदर्शने जाख्यु, तेह सघली रीति रे ॥ २१ ॥ अहो॰ ॥ विप परे जे मांस वर्जे, स्वर्गलोके जाय रे ॥ मुनि वशिष्ट कहे इणी परे, महाजारत गाय रे ॥ २२ ॥ अहो॰ ॥ "यत ॥ यावज्जीव च यो मांस, विपवत्परिवर्जयेत् ॥ वशिष्ठो जगवानाह, स्वर्गलोकस्य स स्थिति ॥ १ ॥ यावती पशुरोमाणि, पशुगात्रेषु जारत ॥ तावद्वर्षसह स्राणि, पच्यते नरके नरा ॥ २ ॥ आकाशगामिनो विप्रा, पतंति मां सजक्षणात् ॥ विप्राणा पतन दृष्ट्वा, त्याज्य मांस निवेकिजि ॥ ३ ॥ शु क्रशोणितसजूत, मांस य स्वादते नर ॥ स जन कुरुते शौच, हसति तेन देवता ॥ ४ ॥ किं जापहोमनियमै, तीर्थस्नानैश्च जारत ॥ यदि खादति मासानि, सर्वमेतन्निरर्थक ॥ ५ ॥ तिलसर्पपमात्र तु, यो मांस नक्षते नर ॥ स याति नरक घोर, यावचन्द्रदिवाकरो ॥ ६ ॥ इत्यादि महाजारते " अजा वोली पुत्र न करो, एहमा काय विचार रे ॥ वचन माहरु सर्व मान्यु, करो एहनो आहार रे ॥ २३ ॥ अहो॰ ॥ सत्य मांस न एह कल्पित, तेहमा शो दोप रे ॥ एम कहे मे वचन मान्यु, कीधो पापनो पोप रे ॥ २४ ॥ अहो॰ ॥ जेह जाख्यु तेह कीधु, अशुज कर्म वधाय रे ॥ सानुनधी वध तिणे समे, पड्यो ततक्षण राय रे ॥ २५ ॥ ॥ अहो॰ ॥ वीजे दिन हवे कुयर थाप्यो, राज अनिपेक कीध रे ॥ प्र नज्या हवे ग्रहणहेते, उद्यम सवलो लीध रे ॥ २६ ॥ अहो॰ ॥ खम चोथे सोलमी ए, पद्मविजये ढाल रे ॥ जाखी समरादित्य केरा, रासमा सुरसाल रे ॥ २७ ॥ अहो॰ ॥ सर्व गाथा ॥ ५११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपने कहे नयणावली, आर्यपुत्र सुणो एक, पुत्र राज्य सुख पेखीने,

मान ए गु, मास खावे थाय रे ॥ दान ध्यान तप नियम मरइ, श्री पथ विजये जाय रे ॥ १७ ॥ अहो० ॥ फेर खावे रुधिर जे, मारे एकज वार रे ॥ मांस जक्षक नरक घाले, दु ख दोर्जाग्य अपार रे ॥ १८ ॥ अहो० ॥ वैद्य श्रोषधे मांस आपे, ते पण एहनी हजार रे ॥ निंदत्त दु र्गंध दश्मि मजरी, उपन्यु ए असार रे ॥ १९ ॥ अहो० ॥ मांस वर्ज मानवो गुण, चोर शकुन पिशाच रे ॥ जूत ग्रह ने श्रमि ए सवी, तृण समा होय साच रे ॥ २० ॥ अहो० ॥ सुखे जीवे सकृति होय, ए जि नशासन नीति रे ॥ मुणो परदर्शने नाम्यु, तेह सवली रीति रे ॥ २१ ॥ अहो० ॥ जिय परें जे मांस वर्जे, स्वर्गलोके जाय रे ॥ मुनि वशिष्ठ कहे इणी परें, महाजारत गाय रे ॥ २२ ॥ अहो० ॥ "यत ॥ यावज्जीवं च यो मांस, विषवत्परिवर्जयेत् ॥ वशिष्ठो जगवानाह, स्वर्गलोकस्य स स्थिति ॥ १ ॥ यावंती पशुरोमाणि, पशुगात्रेषु जारत ॥ तावद्वर्षसह स्राणि, पच्यंते नरके नरा ॥ २ ॥ आकाशगामिनो विप्रा, पतंति मा संजक्षणात् ॥ विप्राणां पतनं दृष्ट्वा, त्याज्य मांस विवेकिनि ॥ ३ ॥ शु क्रशोणितसंजूतं, मांसं य स्वादते नर ॥ स जलं कुरुते शौचं, हसंति तेन देवता ॥ ४ ॥ किं जापहोमनियमै, तीर्थस्नानैश्च जारत ॥ यदि खादति मांसानि, सर्वमेतन्निरर्थकं ॥ ५ ॥ तिलसर्षपमात्रं तु, यो मांस जक्षते नर ॥ स याति नरकं घोरं, यावच्चंद्रदिवाकरौ ॥ ६ ॥ इत्यादि महाजारते " अम्ना तोडी पुत्र न करो, एहमा राय विचार रे ॥ उत्तम मारग मनें मान्यु, करो एहनो आहार रे ॥ २३ ॥ अहो० ॥ सत्य मान न एह कल्पित, तेहमा शो दोष रे ॥ एम कहे म वचन मान्यु, कीधो चारनो पोष रे ॥ २४ ॥ अहो० ॥ जेह नाम्यु तेह कीधु, अशुज कम बसाव रे ॥ मानुश्री ज ज निशे समे, पढ्यो तनहरण राय रे ॥ २५ ॥ ॥ अहो० ॥ बीजे दिन हवे कुमर थाप्यो, राज अनिषेक कीध रे ॥ प्र जा हवे महदृहते, उदयन सरखो सीर रे ॥ २६ ॥ अहो० ॥ मन रोधि नोगवी ए, पद्मविजये ढाल रे ॥ नाम्नी समरादित्य केरा, रामन्न सुरसाल रे ॥ २७ ॥ अहो० ॥ सर्व गाथा ॥ ५९१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुरने कहे नयनावली, आयुध सुणो एक, पुत्रराज सुख देखीने,

करशु काल विवेक ॥ १ ॥ मे चिंत्यु मन माहि एम, वात ए केम विरु-
द्ध ॥ रात्रिने हमणा केरनी, अहो अहो चरित्र अशुद्ध ॥ २ ॥ अथवा
एम पण देखीये, जीवतो मूके जाण, मुआ साथे कोइक मरे, नारीचरि-
त्र पिछाण ॥ ३ ॥ नीचगति नारी होय, विषहर गति परे वक, मूढ न
जाणे माहिलो, जेहने जजे नि शक ॥ ४ ॥ एह विचार एण अवसरे,
करवो न घटे कोय, एम चिंतवतो बोलीउं, इमहीज करवु होय ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ राग खंजाती ॥ हवे श्रीपाल कुमार ॥ ए देशी ॥

॥ चिंते राणी एम, एह नृपति दीक्षा लीये जी ॥ हु नवि जाउ साथ,
तो लोके निंदीजीये जी ॥ १ ॥ मरण लहे जो राय, तो पछे मुझ चिंता नहीं
जी ॥ न मरु जो रायने पीठ, तोपण मिष काढु अहीं जी ॥ २ ॥ पालवु बालनु रा-
ज्य, वली मंत्री मुख ना कहे जी ॥ एहवा जेह निमित्त, तेह कलक सवे दहे जी
॥ ३ ॥ मारण करुंअ उपाय, विष जोजनमा आपीये जी ॥ वेगे जोजन
काम, तव सविष आहार ते आपीये जी ॥ ४ ॥ नासा मुखने ढांकी,
आहार करावा आवीआ जी ॥ चतुर पुरुष सुजाण, राणी पण ते-
नावीआ जी ॥ ५ ॥ जोजन अते जाम, उठे राय चजू करी जी ॥ वची
सहुनी दृष्टि, तबोलमा तव विष धरी जी ॥ ६ ॥ नखीउं ते तबोल,
गालजुवन माहि गयो जी ॥ आववा माड्यु घेन, विषविकार सबलो
थयो जी ॥ ७ ॥ जरु थउ जीव अत्यत, लोचन मीचाणा तदा जी ॥
नख थया शामल वान, मुख कुमलाणु मुझ जदा जी ॥ ८ ॥ दुःख अ-
नुजवतो ताम, पडीयो सिंहासन थकी जी ॥ खेद लहे पमिहार, जोवे
मुझ साहमुं चकी जी ॥ ९ ॥ हाहा शु थयु एह, एम कही हूकमो
आवीउं जी ॥ शु थयु रे महाराय, तव मुझ उत्तर नावीउं जी ॥ १० ॥
जाण्यो जेरविकार, युनारव तिणे कर्यो जी ॥ धाउ रे लोको धाउ, राय
सिंहासनथी पड्यो जी ॥ ११ ॥ तेड्यो वेद्य सुजाण, विषविकार उतारवा
जी ॥ चिंते राणी ताम, रायने पूरो मारवा जी ॥ १२ ॥ जो आवे इहा
वेद्य, तो जीवाडे नृप जणी जी ॥ एम चिंतवती तेह, हाहाकार मुखे
जणी जी ॥ १३ ॥ ताणी घूघट पूर, मुझ उपर आवी पनी जी ॥ करती
बहु आक्रद, आसुधारा नवि थमी जी ॥ १४ ॥ गनु दाब्यु तिणी वार,

मर्मपीडाए मरी गयो जी ॥ आव्युं आरतध्यान, नरक सघलो अहिंसे थयो जी ॥ १५ ॥ सिलिंड नामे पाड, दक्षिण दिशि मोरडी तणी जी ॥ दुर्गे उरनो मोर, एक दिन मोरडीने हणी जी ॥ १६ ॥ लेइ व्याध उ रान, दीधो नाम तडारने जी ॥ नवि आवी मुज पास, वेदना सहु त नारते जी ॥ १७ ॥ मममनो नृप अपार, कीडा साज हु नित्य प्रत्ये जी ॥ तिन पापे मुज देह, पामी विस्तार कालज जते जी ॥ १८ ॥ फि गयो थयो नार, नाटिक मुजने शीखव्यु जी ॥ रूडो जाणी तेह, रा जमां नाह रागव्यु जी ॥ १९ ॥ गुणधर जे मुज पुत्र, भेट जाणीने रा [illegible] ॥ पुरिनतनी माय, जेणे प्राणीवध दाखीउ जी ॥ २० ॥ ते मुज मरण [illegible] दिश, आर्त्तध्यानवश ते मरी जी ॥ करहाट देशे गाम, धान्यपुर नामे पुरी जी ॥ २१ ॥ कुतरी गर्भे आय, उपनी ते कुतरा पणे जी ॥ जन्म थयो नव मास, महोटो थयो ते तिहां किणे जी ॥ २२ ॥ नाना मरना रान, मोकल्यो गुणधर नृप तणी जी ॥ साथ श्वानना टोल, आस्थान सभा नृपज तणी जी ॥ २३ ॥ नयरी विशाला एह, राजने प्रीति घणी थए जी ॥ प्रशंसा अम्ह दोय, राज्यथी शाना उद जी ॥ २४ ॥ चोथे खंडे ढाल, सत्तरमी सोहामणी जी ॥ पद्मविजय कहे एह, नरविजन मन सुख कामणी जी ॥ २५ ॥ सर्व गाथा ॥ ५४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ यशोधनृप्यु नामे अछे, न्यानाधिपशिरदार, ध्यान ते तेहने सा थडे, [illegible] इम अपार ॥ १ ॥ नीडकछ नरनायनो, पाडक पन्नी जाति, मुजने आप्यो मोहसु, बाल्यु नडी तणी जाति ॥ २ ॥ प्रनापावण नडी दारना, कनि [illegible] मुज एह, ध्यानने पवने माचरे, जीवनाव ह तेह ॥ ३ ॥ नमन प्रमाण करी गयो, केनोह्निक गयो काल, पाडका अम्ह देनशु, रात सुणो विकराल ॥ ४ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ [illegible] देशीना ॥

॥ एक दिन [illegible] उरे, [illegible] गोर ॥ [illegible] गति [illegible] ॥ [illegible] ॥ १ ॥ [illegible] ॥ [illegible] जनना, [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] जहने, [illegible]

आरतध्यान ॥ २ ॥ जु० ॥ क्रोधवशे तिहां कलकल्यो, चंचु नखे करे चोट ॥ जु० ॥ लोहू लागी लेइ कूकनी, मुझ उपर करे दोट ॥ ३ ॥ जु० ॥ राणी प्रहारे विह्वल थयो, पडीउं मार्ग सोपान ॥ जु० ॥ जुवटुं खेले राजीउं, लूटतो गयो तिणे नाथ ॥ ४ ॥ जु० ॥ राणीना अनुचर आवीया, अहो अहो कहेता वाण ॥ जु० ॥ तेह कोलाहल सांभळी, आव्यो जननी श्वान ॥ ५ ॥ जु० ॥ पकड्यो मुझने कूतरे, देखी तेह भूपाल ॥ ॥ जु० ॥ हाहारव करता हण्यो, तेह श्वान विकराळ ॥ ६ ॥ जु० ॥ तेह प्रहारथी लोही वम्यु, मूक्यो मुजने ताम ॥ जु० ॥ धरणीपीठ पड्या बिहु, शोक वह्यो भूस्वामी ॥ ७ ॥ जु० ॥ मरणसमय अम्ह बिहु तणो, जाणी बोले राय ॥ जु० ॥ अविवेकाने जिम तातनो, शोक होवे तिम थाय ॥ ८ ॥ जु० ॥ कृष्णागरु चंदन वळी, काष्ठ लविंगना आणी ॥ जु० ॥ दहन दीउं दीउं दानने, सर्ग पमाडवा जाणी ॥ ९ ॥ जु० ॥ सांभळी मोर ते चिंतवे, अहो इणे तातने काज ॥ जु० ॥ दानादिक दीधा घणा, पण मुझ वेळाए आज ॥ १० ॥ जु० ॥ कीना खाउ भूखे मरु, वळी श्वाने मुझ खाऊ ॥ जु० ॥ कर्मगुप्ताए करी, तिरजचनी गति लीऊ ॥ ११ ॥ जु० ॥ प्राण गया इणी अवसरे, हवे उत्पत्तिनु ठाम ॥ जु० ॥ सुवेलनग पश्चिम दिशे, दुःप्रवेश वन नाम ॥ १२ ॥ जु० ॥ कंटकवृक्ष बहुल जिहां, तिहां एक कपट जीव ॥ जु० ॥ तेहनी कूखे उपन्यो, दुःख वहेतो सदैव ॥ १३ ॥ जु० ॥ मा काणी बाप कुंटडो, दुःख सहेता मुझ जोय ॥ जु० ॥ काळप्रसव विना जननीउं, कर्मने शरम न होय ॥ १४ ॥ जु० ॥ भूख थकी नासी गयु, जननी स्तनना दूध ॥ जु० ॥ दु भूखे खाउ गोग्गरु, अनुक्रमे थयो रूढ ॥ १५ ॥ जु० ॥ इणी अवसर नाथ तुमरो, मूर्छे आरतध्यान ॥ जु० ॥ तिणहीज रनना उपन्यो, नाग ते विषनु थान ॥ ॥ १६ ॥ जु० ॥ विद्रुममणि परे लोयणा, अंधकारनो राशि ॥ जु० ॥ चपल जीभ दोय लपलपे, दीसतो काळपाश ॥ १७ ॥ जु० ॥ दर्दुरनु नरूप करे, तत्र में विगर विचारी ॥ जु० ॥ पकड्यो पुंछथी नागने, नाग पण कोप अपार ॥ १८ ॥ जु० ॥ कसीउं मुझ वदने नदा, मारो मांहे धरी नार ॥ जु० ॥ नाइने बिहु परस्परे, इण अवसर [illegible] ॥ १९ ॥ ॥ जु० ॥ आवी रीते मुझने नडो, नारा नादो - ॥ नट नट

त्रोडे शिरा तिहां, चट चट फाडे चाम ॥ २० ॥ जु० ॥ घट घट शोणित पीवतो, करू करू मरडे हाम ॥ जु० ॥ तिम साता साता थका, पहोती नाम न्हारी ॥ २१ ॥ जु० ॥ ते शब्दथी मानु बीहतो, नागो कलेवर छाम ॥ जु० ॥ जीवपणी उभी गयो, तेह स्थानकने ठाम ॥ २२ ॥ जु० ॥ तेह विशाला नयरीए, पुष्पोदका नदी नाम ॥ जु० ॥ महोटा उदमा मावडी, पुरो उपन्यो ताम ॥ २३ ॥ जु० ॥ रोहित मत्स्यनी जातिमां, एह जे कारो साप ॥ जु० ॥ एह नदीमां उपन्यो, सुसमार निज पाप ॥ २४ ॥ जु० ॥ चोथे खंडे अढारमी, ढाल कही मनोहार ॥ जु० ॥ प अविनय कहे सांभलो, सुणतां जय जयकार ॥ २५ ॥ जु० ॥ ५७० ॥

॥ दोहा ॥

॥ मत्स्य अने सुसमार ते, अनुक्रमे मदीया दोय, पकड्यो मुकने पु छघी, सुसमारे धरी सोय ॥ १ ॥ इण अवसर आवी तिहां, स्नान करण संकेत, चेदि नाम चिलादका, देखी कृपा देत ॥ २ ॥ मुकने मूकी तिण समे, पकड्यो ढाली पाय, नदी मांहे नाखी गयो, हु तो करतो हाय ॥ ३ ॥ बुगारव करे गावडी, पकडी राखी पाणि, मांडी आव्या मोकला, उपर उलस्या जाण ॥ ४ ॥ मूकावी ते मानिनी, मार्यो ते सुसमार, काल कता इक अतिक्रमे, आगल सुणो अधिकार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ओगणीशमी ॥

॥ म्हारी सही रे समाणी ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन मांडीए नाखी जाल, पकड्यो मुक ततकाल रे ॥ जुओ कर्म कमाणी ॥ महा मत्स्य जाणीने तेहणु कीधु, ते तो गुणधर राजाए लीधु रे ॥ १ ॥ जु० ॥ नयणावलीने पासे आयो, नृपनि मन हरख ते पायो रे ॥ जु० ॥ कहे निज माननें पुछनो देश, रचावो तान उद्देश रे ॥ २ ॥ जु० ॥ वली श्रद्धा पण मनमां गारो, ब्राह्मणने ए अवधारो रे ॥ जु० ॥ आरत नाटें उपन्यो राग, एक नवीने रघावजो लाग रे ॥ ३ ॥ जु० ॥ ए सांभलुं सवी नयणे दीठुं, उपन्युं जातिस्मरण मीठुं रे ॥ जु० ॥ एम मावडी पुछपाड ते मादरा, आप्यां ब्राह्मणने करी प्यारा रे ॥ ४ ॥ जु० ॥ देख शरीर ते जोवी करीने, मांहे त्रिगटु हिंग नरीने रे ॥ जु० ॥ निप्यो दुखदरने सवी नीर, दरजारी अनि मुक पीर रे ॥ ५ ॥ जु० ॥

मालप जरी तावनीमा तत्रीउं, सवि जाणु ज्ञाने खत्रजत्रीउं रे ॥ जु० ॥
पण धर्मध्यान तो आव्यु नाहि, महा तीव्र वेदना माहि रे ॥ ६ ॥ जु० ॥
एम हड कर्म निगम नधाणु, नारक सम वेदन टाणु रे ॥ जु० ॥ तोही
शरीरथी जीव न जाय, इण समे सुसमार जे नाय रे ॥ ७ ॥ जु० ॥ च-
नात्रपाडे ते वकरी जाइ, विशाखा नयरीमा आड रे ॥ जु० ॥ तेहनी कुखे
अज हु हुउं, पाम्यो योवन आगत्रे जुउं रे ॥ ८ ॥ जु० ॥ मेथुन अर्थे मात
जोगवता, दीठो यूथपति जोगवता ॥ जु० ॥ क्रोधे मर्मदेशे मुफ माख्यो,
निज वीरजमा अवतार्यो रे ॥ ए ॥ जु० ॥ यत ॥ "कम्ममत्रविननीएण,
तव भर तेण नरनगेण ॥ अप्पा हु अप्पणविय, जणीउं जणणीए ग-
प्रमी ॥ १ ॥" हरडो प्रसवकाल जब आयो, गयो आडेडे नररायो रे ॥
जु० ॥ आडेडेथी वत्रीउं राय, तिहा हेत्रमा वकरी देखाय रे ॥ १० ॥ जु० ॥
गर्भवी हवके हवके चाउे, राय लाउी आव्यो ते ताडे रे ॥ जु० ॥ वा-
ण नास्तु वकरीने वाउ, हरख्यो नृप वकने खाउ रे ॥ ११ ॥ जु० ॥ गर्भ
जाणीने पेट विदाल्यु, तिहा म्हें तो जीवित धाल्यु रे ॥ जु० ॥ सोंप्यो
अजापालने तिहा राखे, ते पण वीजीनु थण पाये रे ॥ १२ ॥ जु० ॥
पारधी फत्र काजे कुलदेवी, पूजे महिष तणी बलि देवी रे ॥ जु० ॥ पत्तर
पाना जोजन काजे, मराव्या गुणधर राजे रे ॥ १३ ॥ जु० ॥ ब्राह्मण अ-
र्थे नास रधाव्यो, मुफने वारणे नधाव्यो रे ॥ जु० ॥ मेष पवित्रमुखो क-
हेवाय, काक शुनक नोटु न खवाय रे ॥ १४ ॥ जु० ॥ तिणे मुफने सु-
ानी जिमीआ, विप्रे आचमन ते करीआ रे ॥ जु० ॥ अवेडर लेइ राजा
आव्यो, देवी मुफ मनमा नाव्यो रे ॥ १५ ॥ जु० ॥ जातिस्मरण उप-
ज्ञान, थयुं तवे हृतात विज्ञान रे ॥ जु० ॥ ब्राह्मण नेग हारोहार,
म्या म्हे चित्त उदार रे ॥ १६ ॥ जु० ॥ विप्र कहे ए तातनी पाति,
पापिकानी वत्री खाति रे ॥ जु० ॥ ए कुलदेवीनी पंक्ति जाणी, तव
चिंत्यु मन आणी रे ॥ १७ ॥ जु० ॥ ए मुफ पुत्र करे मुफ अर्थे, पण
जाये व्यर्थे रे ॥ जु० ॥ जोजने वेठो सहु परिवार, नवि दीठी नय-
ी नार रे ॥ १८ ॥ जु० ॥ इणी समे दासी परस्पर नाखे, कहो मा-
धना दाखे रे ॥ जु० ॥ महिष तो ताजा हणीआ नृपे, तव एक
करी चूपे रे ॥ १९ ॥ जु० ॥ प्रेममञ्जुषा सुणय तु नात, मातनो न

वि गध आयात रे ॥ जु० ॥ नयणावलीए मत्स्य जे खाधो, अजीण य यो कोढ ते वाधो रे ॥ २० ॥ जु० ॥ तास शरीरनो दुर्गंध लावे, वायरो जे फरसीने आवे रे ॥ जु० ॥ एक कहे सुणय सुंदरी वीजु, ताहरी वात सांजली खीजु रे ॥ २१ ॥ जु० ॥ रायने जेर देइने मार्यो, ते पाप घ्या जे वधार्यो रे ॥ जु० ॥ एक कहे ए म करो नात, पटकर्ण मंत्र जेदात रे ॥ २२ ॥ जु० ॥ उगो अन्य ठेकाणे जइये, उनको कोडनो नवि लहीये रे ॥ जु० ॥ ते उठी चाली अन्य गाम, तव मे जोयु गामगाम रे ॥२३॥ जु० ॥ एकण पासे बेठी दीठी, नयणावली दुःख उक्रीठी रे ॥ जु० ॥ मक्षिका सहसगमे दुःख देती, कर्म उदय थता नार केती रे ॥ २४ ॥ जु०॥ चोथे खंडे ढाल ए नाखी, नली उंगणीशमी चित्त राखी रे ॥जु०॥ प अविजय कहे कर्म कमाइ, कोइ न करजो नाइ रे ॥ २५ ॥ जु० ॥ सर्व गाथा ॥ ६०० ॥

॥ दोहा ॥

॥ मेघपणे चिंत्यु मने, केहवा कर्मविपाक, उदये आव्या एहने, राणी रुए वराक ॥ १ ॥ नयण वयण थण जेहना, जीते जुवती जगत्त, कमउ चंद ने कुंजनी, उंपम अधिकी वत्त ॥ २ ॥ तपसी पण मुनिवर तणा, चित्त तणी ए चोर, हवे कामीजन हैयडलु, कठिण न नीजे कोर ॥ ॥ ३ ॥ एम चिंतवु इण अवसरे, राय कहे सूपकार, महिषपनु न रुचे मास ए, आणो अन्य उदार ॥ ४ ॥ आणा रायनी आकरी, सूपकार स जाल, कालक्षेपना जय थकी, ते मुजने ततकाल ॥ ५ ॥ एक पासु छेदु इणे, नर्ज्यु नृपति काम, निपजावी नररायने, मोकलीयु धरी माम ॥ ६ ॥ तातने पुण्य नणी तिहा, विप्रने दीये विशेष, कायक नयणावली कने, खाय आप जे शेष ॥ ७ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ राग मारु ॥ सागरीया तु मम गर्व करे ॥ ए देशी ॥

॥ इण अवसरे मुज मात जे बकरी, मारी गुणधर राय ॥ तेह कलिंग देशे थयो पाडो, अनुक्रमे महोटो थाय रे ॥ १ ॥ सुणो नविको मत कर्म करो, एम किम नवजलधि तरो रे ॥ ए आकणी ॥ नार वही आव्यो तिणे नयरी, नदी उतरे जेते ॥ नृपतुरग आव्यो जल पीवा,

मार्यो तस तेते रे ॥ २ ॥ सु० ॥ रायने खबर करी ते पुरुषे, राय कहे लावो ॥ तब लाव्या ते पुरुष महिषने, कोप थयो चावो रे ॥ ३ ॥ सु० ॥ राय कहे सूपकारने इणी परे, एह दुष्ट पाको ॥ एहने जीवता जमश्यु करज्यो, दुःख देवण गाको रे ॥ ४ ॥ सु० ॥ तिणे पण सघल दिशा खोहकीधा, ठोकी वाध्यो तास ॥ एक कमाह जले जरी मूकी, कर्म तणो नहीं नास ॥ ५ ॥ सु० ॥ त्रिगडु हिंग लवण माहि मूकी, चोक फेर करी आग ॥ खेर काष्ट होमे हवे अग्नि, बलती नहीं कोय माग ॥ ॥ ६ ॥ सु० ॥ कंठ होठ तालु अति सूके, तरषा पण तेहवी ॥ उसकार जल पीता वेदन, पामु नरक जेहवी रे ॥ ७ ॥ सु० ॥ देह माहि तव आग ते उठी, मास नीकल्यु वीश्र पास ॥ राय कहे हवे महिषनु ज-म्यु, लावो हमारी पास रे ॥ ८ ॥ सु० ॥ जिणे जिणे दिश ते मासज पाम्यु, छेदी ते ते अंश ॥ सूपकार मोकले नरपतिने, तोहि जाय नहीं हंस रे ॥ ९ ॥ सु० ॥ घी रेडी वली लूण वाटीने, घाल्यु दुःख देवा ॥ पीरसनारो रायनो आव्यो, बीजु माम लेवा रे ॥ १० ॥ सु० ॥ सूप-कारे तस साहमु निरख्यु, तव तेणे कर खाधो ॥ रोम कप्या गलीउं तस गाटो, हारूंघ वाधो रे ॥ ११ ॥ सु० ॥ सम काले मेहं जेसडे कीधो, काल मरीने दोर ॥ विशालापुरीए चंडालपाडे, कुकडी उदरे जोय रे ॥ १२ ॥ सु० ॥ मार्जारे अम माता पकडी, उकरडे लेइ जाय ॥ खाता अम्युगल तिहा पडीउ, गयो मार्जार ते ठाय रे ॥ १३ ॥ सु० ॥ अम उपरे तिहा सूपडु ढाम्यु, चडालिणी आवी ॥ तेहनी वाफ थकी अमे जीव्या, ए पण जुउं नावी रे ॥ १४ ॥ सु० ॥ इंना फोडी अम्हे नीकल्या बाहिर, चंडाल सुत पाळे ॥ पिछवार चंद्रिका सदृश, जुउं तरप न्हाले रे ॥ १५ ॥ सु० ॥ अर्धी चणोठी सरिखी चूला, दीठा को-टवाले ॥ रायखेलण योग्य जाणी ग्रहीया, नृपने देखाडे रे ॥ १६ ॥ सु० ॥ राजा हरख वहीने सोप्या, कोटवालने चाखे ॥ जिहा जिहा जाउ तिहा तिहा एहने, लावजे मुज सारे रे ॥ १७ ॥ सु० ॥ तहत करे का-लदंड कोटवालह, हवे एक दिन राजा ॥ अंतेउरश्यु रमवा चाल्यो, क्रीडा वसंत ताजा रे ॥ १८ ॥ सु० ॥ कुसुमाकर उद्याने पोहोतो, तव कोटवाल अम लेय ॥ राजा केलि घरे करे क्रीडा, राणीशु बहु नेय रे ॥

॥ १९ ॥ सु० ॥ श्रमने कोटवाल लेइ श्राव्यो, अशोक वृक्षपती ॥ तिहां शशिप्रज्ञ श्राचारज दीठा, मुनिवर बहु उपाति रे ॥ २० ॥ सु० ॥ वीशमी ढाले ए चोथे खंडे, समरादित्य रासे ॥ पद्मविजय कहे मुनिवर म लीया, सघलुं सुख थाशे रे ॥ २१ ॥ गा०॥ ६२७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रलिक वदना एणे करी, धर्म लाज दीये साध, तपसिरी देगी त हनी, सुणी तस वयण समाधि ॥ १ ॥ उपशम कायक श्राणीने, पूठे धर्म प्रपच, साधु कहे साधारणो, सर्वनो एकज सच ॥ २ ॥ प्रीठे तत्त्व न प्राणी या, मूढ गणे मनजेय, तेह धर्म सुणता थका, उपजे नहीं कोइ खेय ॥ ३ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ वात म काढो हो व्रत तणी ॥ ए देशी ॥

॥ त्रिविधे हिंसा वर्जवी, श्रलिक न जासवी वाणी रे ॥ विगर दीधु कल्पे नहीं, एक तृणसलीय प्रमाण रे ॥ १ ॥ सांजलो श्रीगुरुदेशना, जाव धरी जवि जीव रे ॥ त्रिविधे श्रब्रह्म वर्जवु, श्रब्रह्मे होय कजीव रे ॥ २ ॥ स० ॥ नवविध परिग्रह वर्जवो, रात्रीजोजन टाली रे ॥ दोष बें तालीश वर्जवा, श्राहार लणा सजाली रे ॥ ३ ॥ सा० ॥ उपवासिक गो व्यो तदा, एह तो मुनिवरधर्म्म रे ॥ पण कह्यो सागारी तणो, मुनि कहे तेहनो मर्म रे ॥ ४ ॥ सा० ॥ श्रावकना व्रत बार जे, सजलावे मुनिराय रे ॥ सांजली कहे मुनिवर सुरु, पण एम्हे न कराय रे ॥ ५ ॥ सा० ॥ वेदमा पशुवध जाखीउं, कुलकर्मागत जेह रे ॥ पूरव पुरुषे श्राचर्या ठामी न शकु तेह रे ॥ ६ ॥ सा० ॥ सूरि कहे जो नवि तजे, तो ए कु कुट जोनी रे ॥ दुःख पाम्या तिम पामशो, लहेशो श्रनर्थनी कोमि रे ॥ ७ ॥ कोटवाल कहे किम प्रजु, पाम्या श्रनर्थप्रकार रे ॥ तव मुनिवर धुरथी कहे, यमनु चरित्र उदार रे ॥ ८ ॥ सा० ॥ जिम पीठ कुकुटने हण्यो, जिम दुःख पाम्यो श्रत्यत रे ॥ श्रुतज्ञानी गुरुए तिहां, सजला व्यो विरतत रे ॥ ९ ॥ स० ॥ यत ॥ ' सिहि साण सप्प पसवा, मिणो हरपयडंय मेसीय ॥ मन्नीस य कुक्कड पर्का, जाया ससार जव म्मि" ॥ १ ॥ बूज्यो दडवासिक तिहां, सांजली श्रीगुरुवाणी रे ॥ कहे उजी मादरे सल्लु, हिंसा श्रनर्थनी खाणी रे ॥ १० ॥ सा० ॥ व्रत श्राप

श्रावक तणा, तव गुरु जिन उपदेश्यो रे ॥ पच नमस्कार आपीउं, तेहनो मर्म प्रकाश्यो रे ॥ ११ ॥ सा० ॥ प्राणातिपात प्रमुख वली, उच्चराव्या व्रत चार रे ॥ हवे निज चरित्र ते सांजली, कुकुट हर्ष अपार रे ॥ १२ ॥ ॥ सा० ॥ जातिस्मरण पामीआ, उपन्यो बहु सतोष रे ॥ जुवन गुरुना धर्मनी, पाम्या बोधिनो पोष रे ॥ १३ ॥ सा० ॥ सानुबधी कर्म नीठव्या, हर्ष न मायो अगे रे ॥ तिणे कुकडूकू बोलीआ, राचता नाचता रगे रे ॥ १४ ॥ सा० ॥ इण अवसरे नरपति तिहा, राणी जयावली सगे रे ॥ जोग जोगवता सांजल्यो, कुकुटशब्द सुचग रे ॥ १५ ॥ सा० ॥ धनुषे तीर चढावीयो, राणीने कहे एम रे ॥ देख तु शब्दवेधीपणु, कुकुट मारु ए प्रेम रे ॥ १६ ॥ सा० ॥ खेंची बाणने मूकीउ, मार्या अमने तेप रे ॥ राणी जयावली जोगवी, तत्क्षण जे चूपेण रे ॥ १७ ॥ सा० ॥ तस कूखे अमे उपन्या, बोधि तणे परजावे रे ॥ गर्जप्रजावे दोहलो, उपन्यो ते सुणो जावे रे ॥ १८ ॥ सा० ॥ अजयदान देउ जीवने, एवा हुआ परिणाम रे ॥ अजयदान दीधु घणु, जन्म थयो अम ताम रे ॥१९॥ सा० ॥ दोहदपरिमाणे ठवे, नाम हमारु तात रे ॥ हु सुत अजयरुचि ठव्यो, बीजी अजयमति जात रे ॥२०॥ सा० ॥ हवे नरपति मन चिंतवे, पुत्र ठवु युवराज रे ॥ पुत्रीनो वली विवाह करु, ए दोय उत्तम काज रे ॥ २१ ॥ सा० ॥ इण अवसरे नृप नीकल्यो, आहेडे पुर बहार रे ॥ पोहतो विशाखा उद्यानमा, साथे निज परिवार रे ॥ २२ ॥ सा० ॥ वायु कुसुम सुरजी तिहा, जाणी जोयु उद्यान रे ॥ तिहा वृक्षने ढूकडा, दीठा मुनि गतध्यान रे ॥ २३ ॥ सा० ॥ सुदत्त नामे मुनिवरु, देखी कोप्यो जूप रे ॥ पारधीमा अशुकन थया, एहीउं चिंताकूप रे ॥ २४ ॥ सा० ॥ करी उपद्रव एहने हवे, मानु शकुन निदान रे ॥ बूत्कार करी मूकीआ, मुनि उपरे महा श्वान रे ॥ २५ ॥ सा० ॥ वेगे जाखिन जन समा, आव्या मुनिवर पास रे ॥ जाज्वल्यमान अग्नि परे, मुनिवर देह प्रकाश रे ॥ २६ ॥ सा० ॥ तप तेज ते न शक्या सही, उपधिगध जिम नाग रे ॥ [illegible] तिन निष्प्रजा थया, तेह शुनक धरे राग रे ॥२७॥ सा० [illegible] पा, देइ श्वाननु वृद रे ॥ मस्तक धरतीए [illegible] रे ॥ २८ ॥ सा० ॥ [illegible]

मी पदमे कही, सुणता मंगलमाल रे ॥२९॥ सा० ॥ सर्व गाथा ॥ ६६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ देखी अचरिज दूरथी, उपन्यु चित्तमा एम, श्वान पुरुष ए सन जणा, नहीं नर श्वान हु नेम ॥ १ ॥ तप चरणे मुनि ततपरा, अकुशळ चित्यु श्राज, इण समे पुरीथी आवीउं, केइ जन वदन काज ॥२॥ जिन धर्मे नावित जिके, अरहदत्त इण नाम, शेठपुत्र सोहामणो, आव्यो वदन श्राम ॥ ३ ॥ मेदिनीपतिनो मित्र ते, दीठो नृप अवदात, मुनि उपसर्ग ते मोटिको, परलोकनो करे पात ॥ ४ ॥ प्रणमी नृप नणी कहे, रुत्यु एह शुं काम, कहे नरपति नर कूतस्या, सरिखु कीधु स्वाम ॥ ५ ॥ अरहदत्त कहे इणी परे, पुरुषसिंह परधान, अश्वथी हेगा उन रो, वदो ए नगवान ॥ ६ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ हाररो हीरो म्हारो साहिबो ॥ ए देशी ॥

॥ देश कलिंगनो अधिपति ॥ साहिबा ॥ मारा अमरदत्त राजान हो ॥ पुत्र सुदत्त नामे तेहना ॥ सा० ॥ नरपति निर्मलज्ञान हो ॥ १ ॥ संवेग रस नीनो मारो, समताशु लीनो मारो, मुनिमा नगीनो मारो साहिबो ॥ साहिबा मारा ॥ वदो मुनिवर पाय हो ॥ ए आकणी ॥ प्रथम जोवन माहि वरतता ॥ सा० ॥ एक दिन आव्यो तलार हो ॥ चोर साथे एक लावीउं ॥ सा० ॥ विनवे नृपने तिवार हो ॥ २ ॥ स० ॥ स० ॥ मु० ॥ परघर पेसीने इणे ॥ सा० ॥ लीधु द्रव्य अपार हो ॥ मार्यो महर्द्धिक ने वली ॥ सा० ॥ ग्रहीउं निसरती नार हो ॥ ३ ॥ स० ॥ स० ॥ मु० ॥ हवे जिम कहो तिम कीजीये ॥ सा० ॥ राजजी ते नरराय हो ॥ धर्मशास्त्र जाणनारने ॥ सा० ॥ तेमी सुणावे प्रकार हो ॥४॥ स० ॥ स० ॥ मु० ॥ इरा दंड एहने दीजीये ॥ सा० ॥ तव नर बोल्या तेह हो ॥ घात कर्यो चारी करी ॥ सा० ॥ कीधु कर्म अछेह हो ॥ ५ ॥ स० ॥ स० ॥ मु० ॥ त्रिक चोक चाचरे फेरवो ॥ सा० ॥ सहु जनने सननावी हो ॥ नेत्र उपाडो एहना ॥ सा० ॥ कान ने नाक कपावी हो ॥६॥ स० ॥ स० ॥ मु० ॥ हाथ ने पग वली छेदीये ॥ सा० ॥ इणी परे जीवनो नाश हो ॥ करजो एम इं पिवयप ठे ॥ सा० ॥ सानजी नयणविन्यास हो ॥ ७ ॥ स० ॥ स० ॥ मु० ॥

वे अहो अहो नृपकुले ॥ सा० ॥ करवा एहवा पाप हो ॥ तिणे ए
व सुखे सखु ॥ सा० ॥ जेहथी वहु सताप हो ॥ ८ ॥ स० ॥ स० ॥
॥ आणद नाम जाणेजने ॥ सा० ॥ सोपी राज्यनो जार हो ॥ सुध-
गुरु पासे थया ॥ सा० ॥ गेह तजी अणगार हो ॥ ए ॥ स० ॥ स० ॥
॥ मुनिवदन करी निस्तरो ॥ सा० ॥ साजली श्रावक वाणी हो ॥ मु-
वया जव तिणे समे ॥ सा० ॥ थयु मुनि पूरण जाण हो ॥ १० ॥
० ॥ स० ॥ मु० ॥ धर्मलाज देइ जाखीउ ॥ सा० ॥ वेस तु निरवद्य
ण हो ॥ पश्चात्ताप नृप उपन्यो ॥ सा० ॥ जाणी अकज्ज अप्पाण हो
११ ॥ स० ॥ स० ॥ मु० ॥ राय वेसी मन चितवे ॥ सा० ॥ में कर्यो
मुनिवर घात हो ॥ प्रायछित्त मुफने नहीं ॥ सा० ॥ विण निज मन्दक
ात हो ॥ १२ ॥ स० ॥ स० ॥ मु० ॥ आतम अकार्य कलकथी ॥ सा० ॥
उ खित एक मुहूर्त्त हो ॥ धारी न शकु तिणे हवे ॥ सा० ॥ निरधार
एह जुत्त हो ॥ १३ ॥ स० ॥ स० ॥ मु० ॥ इण समे मुनिने उत्प
सा० ॥ मणपज्जव वरनाण हो ॥ जाणी आशय जूपनो ॥ सा० ॥
वर कहे एम वाणी हो ॥ १४ ॥ स० ॥ स० ॥ मु० ॥ ए तुफ प्रायछित न
॥ सा० ॥ जे तें कल्पना कीध हो ॥ आतमघात पण वारीउं ॥ न
ते पण समय प्रसिद्ध हो ॥ १५ ॥ स० ॥ स० ॥ मु० ॥ यत ॥' ...गल
जिणवयणाण, ममत्तरहियाण नह्यि दु विसेसो ॥ अप्पाणमि ... ... २ ॥
तो वज्जो पीमसुजउंवी ॥ १ ॥" कलक डु खित निज आतमा ... ...श ॥
जे चित्त चितवे तास हो ॥ जैनक्रिया जले धोयता ॥ सा० ॥ ...जारो-
ये खास हो ॥ १६ ॥ स० ॥ स० ॥ मु० ॥ जव अनु... ...तु विफ-
करता आतमघात हो ॥ जव कोमि पाम्यो न ... ...या कुर्न-
विख्यात हो ॥ १७ ॥ स० ॥ स० ॥ मु० ॥ ति... ॥ अवतार
॥ साजली चितवे राय हो ॥ अहो मन ... मुनि ...यु एम, जस
मन अचरिज थाय हो ॥ १८ ॥ स० ... मोक्षे किमे
पनु ॥ सा० ॥ निश्चय वदेशु ए... ...ल वखाण ॥
॥ सा० ॥ चरणे पडे नृप तास ... ॥ १९ ॥ इम
प्रनु जाखीने ॥ सा० ॥ ... में अज्ञानपणे
अज्ञान ज... ...ा० ॥

॥ मु० ॥ चिंतवयु विपरीत जे ॥ सा० ॥ ते मिथ्या परिणाम हो ॥ ते प-ण विपरीत चिंतव्यु ॥ सा ० ॥ मुनि अपशकुनतु नाम हो ॥ २१ ॥ स० ॥ स० ॥ मु० ॥ करीअ कदर्थना मारीये ॥ सा० ॥ ए अपशकुन निदान हो ॥ तुज मन इणी परे उपजे ॥ सा० ॥ नवि करे ए कदि स्नान हो ॥ २२ ॥ स० ॥ स० ॥ मु० ॥ तुंने मुज मुक्ति नही ॥ सा० ॥ निसधी जीवे जेह हो ॥ नही पातक निरुद्ध ए ॥ सा० ॥ पातन न करे तेह हो ॥ २३ ॥ स० ॥ स० ॥ मु० ॥ मध्यस्थ भाव करी सुणो ॥ सा० ॥ उत्तर एह रसाल हो ॥ चोथे खंडे वावीशमी ॥ सा० ॥ पद्मविजय कही ढाल हो ॥ २४ ॥ स० ॥ स० ॥ मु० ॥ सर्व गाथा ॥ ६७० ॥

॥ दोहा ॥

॥ पवर एक होय पवित्रता, मनमां होय अभिमान, करे प्रार्थना कामिनी, शुचि हु एहवी ज्ञान ॥ १ ॥ जीवविराधना जल तणा, नही कोइ धर्म स्थान, सज्जनि जो स्नाने होये, मत्स्य देवक बहुमान ॥ २ ॥ ब्रह्मदीक्षाए जोपयी, विप्र पण बन रीति, अस्नानव्रत नयु आदर्यु, नवि जाणे ए नीति ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ चोपाइनी ॥

मया ॥ ७ ॥ वली दातणनो कयो विचार, श्राद्ध तथा उपवास मजार ॥ दंत काष्ठ संजोग निवारी, संजोगे सात कुल संहार ॥ ८ ॥ महाभारतमां वात ए कही, वली मार्कंडपुराणे लही ॥ संक्रांतिदिन पर्वे प्रतिपदा, नोमि नारशि वली वरजी सदा ॥ ९ ॥ ते कारण दातणनो दोष, न करो करीये मन संतोष ॥ वली अग्रमव्रत नियमना धार, विषय कषाय जीत्या अणगार ॥ १० ॥ नकाय ध्यानमां राता नित्य, एहवा मुनिवर नित्य पवित्र ॥ वली शिर तुन मुंकन जे कत्यु, प्रथम व्रत रालणने धत्यु ॥ ११ ॥ पालंन पण ए मंगल करे, जो चित्तमां मुनि मंगल धरे ॥ सहुने शास्त्रे शिक्षा कही, मंगल जो पाळे मन वही ॥ १२ ॥ अन्यलिंगथी भ्रष्ट जे थया, जैनलिंगे जे मोक्ष गया ॥ जैनलिंगथी भ्रष्ट जो थाय, तो तस वज्रलेप कहेवाय ॥ १३ ॥ श्वेतांबर केहवाशे वेष, किम अवतार करे सुविशेष ॥ कहो महादेव मने ए तुमे, जिम निसंदेह जाणु अमे ॥ १४ ॥ दंक कमंक ग्रहे शुद्ध आहार, अजारोम प्रमार्जन धार ॥ तुंबिफल भाजन होय करे, भिक्षाभोजन कोप न धरे ॥१५॥ श्वेत वस्त्र राखे करे दया, मुक्ति जैनधर्ममां लया ॥ पापनिकंदनने अवतार, जुग जुग कीधा में अणगार ॥ १६ ॥ एह प्रभासपुराणे कथा, साजली वोलो म मुखथी वृथा ॥ सुरने पण ए श्रमणनु रूप, मंगल रूप कह्या सुण नृप ॥ १७ ॥ यत ॥ प्रभासपुराणे ॥ "अन्यलिंगपरिभ्रष्टो, जैनलिंगेन सिध्यति ॥ जैनलिंगपरिभ्रष्टो, वज्रलेपो नविष्यति ॥ १ ॥ श्वेतांबरा कीदृशास्ते, (कीदृशा किमाकारा) कर्म्म कुर्वंति कीदृश ॥ अवतार कथं तेषां, महादेव निगद्यतां ॥ २ ॥ दंककंबलयुक्ता, अजारोमप्रमार्जनं ॥ गृह्णाति शुद्धमाहारं, शास्त्रं दृष्ट्वा चरति च ॥ ३ ॥ तुंबिफलकरा भिक्षा, भोजनं श्वेतवाससः ॥ न कुर्वंति कदा कोपं, दया कुर्वंति जंतुषु ॥ ४ ॥ मुक्तिस्तु जैनधर्मेण, पापनिकंदनाय च ॥ अवतारं कृतो तेषां, मया देवि युगे युगे ॥ ५ ॥ 'महाभारतमां भाख्यु एम, जस कुल जति न थाये प्रेम ॥ अवगतीआ तस पूर्वज थाय, ते नर मोक्षे किमे न जाय ॥ १८ ॥ शिवशासनमां जैन प्रमाण, केता भाखु तास [illegible] ॥ साजली नृपनु गयु मिथ्यात, कहे तुम ज्ञान अहो [illegible] [illegible] करतो मुनि चरणे नमे, गुरुजी कोप न करशो तु[illegible]

कलु कर्म, ते समजो प्रभु तुमचो धर्म ॥ २० ॥ मुनि कहे मुनि समत परधान, उठ म कर सभ्रम कोइ ठाण ॥ सर्व जीवनु खमीये श्रमे, तिं श्रम कोप न चित्तमा गमे ॥ २१ ॥ आक्रोश तर्जना घातना करे, धर्म भ्रश यली हृदयें धरे ॥ अग्रिम अग्रिम विरह ते जाव, लाभ ते होये शुभ भनाव ॥ २२ ॥ वली मुनि जाने कर्मविपाक, नृपति हरख्यो धर्म ते राग ॥ पहुना ज्ञानथी जानु नहीं, पूनु तातने आर्यिका कही ॥ २३ ॥ इम चिंतीने पूछ्यु जदा, मुनिवरे भाख्यु सघलु तदा ॥ पीठकुकुटवध मांडी करी, जयावली सुत नें दीकरी ॥ २४ ॥ तिहा लगे सांभली राय विचार चिंतये अहो ससार अपार ॥ अहो नवनाटिक किणी परें लहे ज्ञानी गुरु विण कहो कुण कहे ॥ २५ ॥ एम चोथे खडे ए कही, ढाल त्रेवीशमी पदमें सही ॥ समरादित्य नरपतिनो रास, सांभलो आगल वातविलास ॥ ॥२६ ॥ सर्व गाथा ॥ ७१९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अहो ससार असारता, अथवा अथिर सनेह, अहो गुरुता मोह रापनी, अकज्जविपाक अछेह ॥ १ ॥ कुकुटपीठनो वध कस्यो, देवता दीधु दान, तेह विपाक एम तातने, परिणम्यो काढे प्राण ॥ २ ॥ म तो जीव मास्या घणा, आवे धरी अन्नाण, नरक विना मुझने नहीं, होशे हीणु ठाण ॥ ३ ॥ पूनु अथवा मुनि प्रत्ये, मुनि लही मननी वात, कहे नृपने चिंता किसी, वली सांभल अवदात ॥ ४ ॥ जैन धर्म जो पडि वजे, पापनो पच्चाचार, निर्विघ्ने आरतने तजी, आदरे चारित्र आप ॥५॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ पतनमजनी देशी ॥

॥ नरपति ॥ चारित्र लेइ आप, जीव सवे मैत्री करे ॥ न० ॥ सम्यक्त्व भाव, वैराग्यभावना आदरे ॥ १ ॥ पाळी निरतिचार, पूर्वे दु ष्ट न सेवे ॥ न० ॥ कारण विण नव कर्म, अशुभ न बांधे तेहवे ॥ २ ॥ न० ॥ क्षय करी कर्मनी जाळ, दुःखपरपरा साधनो ॥ न० ॥ आराधक पद तेह, शुभ शुभभावे साधनो ॥ ३ ॥ न० ॥ श्रेणि क्षपक चढी वीर, घातीकरमनो क्षय करी ॥ न० ॥ पामी केवलज्ञान, शाश्वत शिवश्री वरी ॥ ४ ॥ न० ॥ जिहां नहीं रोग ने शोग, जन्म जरा मरण नहीं ॥

न० ॥ अव्याबाध अरूप, अशरीरी पदवी लही ॥ ५ ॥ न० ॥ बोल्यो ते
नूपाल, तात आर्यिका एणी परे ॥ न० ॥ पाम्या कर्मविपाक, एहवे अ-
ल्प डु कृत करे ॥६॥ गणपति ॥ में कस्या कर्म अघोर, शी गति होशे मा-
हरी ॥ ग० ॥ नोगव्या विण किम जाय, एहमां कुण तुज वाहरी ॥ ७ ॥
ग० ॥ सद्गति पामु केम, तव गुरु कहे सुणय नूपति ॥ न० ॥ एक चरण
परिणाम, काढे कर्मनी संतति ॥ ८ ॥ न० ॥ पातिक विप परिणाम, अ-
मृत सम चारित्र कह्यु ॥ न० ॥ कर्म गिरिपविरूप, चितामणि डुर्विध ल-
ह्यु ॥ ९ ॥ न० ॥ शिवसुख फल सुररूख, चरण परिणाम कह्यो सही ॥
॥ न० ॥ विपलव खाये कोय, तास उपाय करे नहीं ॥ १० ॥ न० ॥
पामे आपद् तेह, कृत्याकृत्य मुकी रहे ॥ न० ॥ नर सुख सघलां ठानी,
जीवित दय तत्दाण लहे ॥ ११ ॥ न० ॥ तिम ए जीव प्रमाद, वशथी
पापकरम करी ॥ न० ॥ नवि करे तस प्रतिकार, जन्म मरण करे जव
फरी ॥ १२ ॥ न० ॥ जो करे तास उपाय, अमृत सम शक्ति करी ॥
न० ॥ कालकूट विप होय, तोपण तस वीचे सहरी ॥ १३ ॥ न० ॥ वि-
पलवनो स्यो जार, तिम जवजाव अनादिमा ॥ न० ॥ सेवी पाप अघोर,
प्रतिपक्ष सेवे आल्हादमा ॥ १४ ॥ न० ॥ बहुजव संचित पाप, दय करय
चारित्र आदरी ॥ न० ॥ एक जवनो शो जार, गुरुवच सुणी हरखे करी
॥ १५ ॥ न० ॥ पूछे चरण परिणाम, शुं कहीये तव गुरु कहे ॥ न० ॥
सम्यक् ज्ञानथी तीव्र, रुचिथी पापनिवृत्ति लहे ॥ १६ ॥ ग० ॥ तुम द-
रिसणे थयो धन्य, आज महानिधि में लह्यो ॥ ग० ॥ आण करु तुम्ह
पइ, जो तुम्हे श्रवण योग्य कह्यो ॥ १७ ॥ न० ॥ भूपने कहे नरनाथ,
जइ कहो मंत्री प्रमुख जणी ॥ न० ॥ अजयरुचि ठवो राज्य, आण
करो ए अम तणी ॥ १८ ॥ न० ॥ मत करजो मुफ खेद, जैननी दीक्षा
हु वरु ॥ न० ॥ अंगीकरी ते नृत्य, जइ सजलाव्यु तिपे सरु ॥ १९ ॥
न० ॥ सांजली हु पण तेह, अजयमति साथे ग्रही ॥ न० ॥ अतेउर
सनिपाद, पहोता नृप पासे वही ॥ २० ॥ न० ॥ दीठो मुनिने पास, स-
वेगरस जावितमति ॥ न० ॥ बेठो धरती हेठ, ठत्र चामर ठड्या जनि
॥ २१ ॥ न० ॥ होय न होय ए राज, जय जय शब्दनी ॥
सिंहपंजर गत रीति, किम बेठा करे विनति ॥ २२ ॥



परिजन सहु वैरागीआ ॥ देखी जाणु रे, साजलो चित्त लय लागीआ॥ नवथी मुऊ रे, चित्त विरक्त थयु घणु ॥ आपो आणा रे, सफल करु नरजनपणु ॥१३॥ त्रु० ॥ मोहनश तव तात बोले, पुत्र तुज कुण ना कहे ॥ ताहरो जन सफल छे तिणे, एह कन्या किमज रहे ॥ परणीने ए प्र जा पालो, पुण्य वाधो इणी परे॥ म कहु धुरथी तात तुमने, पाणिग्रह ण ते कोण करे ॥ १४ ॥ ढाल ॥ तात जाणे रे, परणवामा शो दोप छे॥ म जाण्यु रे, पाणिग्रहण सुखशोप छे ॥ औषध विनु रे, व्याधिमोहनु गेह छे ॥ शुद्ध ध्याननो रे, वयरी नवि धृति रेह छे ॥ १५ ॥ त्रु० ॥ विवे पनो ए मित्र जाण्यो, शातिनो प्रतिपक्ष ए॥ मदजनन दु ख उदय का रण, पाप आवास लक्ष ए ॥ नरजन्म साधनने होय समरथ, तोहि पण सीदाय ए ॥ सिंह पजरमा पड्यो तिम, मोक्ष किमे न सवाय ए ॥ १६ ॥ ॥ ढाल ॥ रयण कचन रे, थाल माहि विष्टा नरी ॥ कुण नाखे रे, तिम ए नरजन्म लही करी ॥ कुण सेवे रे, विषय वचन जिनना लही ॥ ति णे दीजे रे, आणा तातजी मुज नही ॥ १७ ॥ त्रु० ॥ नयनमा तव नीर आवी, कहे तात अम नेह ए ॥ पीडे अतिशय तेह कारण, रहो अम- चे गेह ए ॥ मे कह्यु स्नेह न कीजीये एह, निमित्त मुख्य ससार ए ॥ दीप परे क्षण उपजे विणसे, तास क्षये नवपार ए ॥ १८ ॥ ढाल ॥ वोले नृपति रे, ईशानसेन नृपनी धूआ ॥ खेद करशे रे, तव मे कह्यु आपी मया ॥ कहेनराजा रे, तेहने पह विचार ए ॥ जो बूके रे, सान ली मुऊ अविकार ए ॥ १९॥ त्रु० ॥ अधिकार सातमी कहे राजा, एह वा- त कही खरी ॥ पचवीशमी ए ढाल नाखी, रग चोथे सुखकरी ॥ वि बुध उत्तमविजय केरो, शिष्य पद्मविजय कहे ॥ रास समरादित्य केरो, सुणता जयलक्ष्मी लहे ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ ७७७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पुरोहितने नरपति कहे, सम्यग्दर्शन सुण जान, तिम विपनी तिम जइ तुने, समजावो सुविधान ॥ १ ॥ कुमरी पासे जइ करी, आव्यो नृपतिपाय, कहे सिद्धा ए कुमरना, मनोरथ सुणो महाराय ॥ २ ॥ जइ जाण्यु मे जतनथी, कायक कहे नृप काम, आमनथी ते उतरी, अजलि करी कहे थान ॥ ३ ॥ अवनीपति आज्ञा करु, म जाण्यु तव एम, इहा

कुमरने आवता, राजमारगमां प्रेम ॥ ४ ॥ साधुदर्शनथी सगर, जातिसमरण जाम, उपनायी नव जव अवउ, ततखीण जाण्या ताम ॥ ५ ॥ सजलाव्या सरवे अमे, जशोधरा मुख जाम, नयणावली सुतनी वधू, ऽण अवसर थयु आम ॥ ६ ॥

॥ ढाल उवीशमी ॥

॥ साजरीआ गुण गावा मुजने हीरना रे ॥ ए देशी ॥

॥ एम साजलता मूर्छा पामी नृपजूआ रे, काय हुउं हुउं आकुल सवि परिवार रे ॥ चदन सिंचे चेतन पामी तव पठे रे, काय पूठ्यो पूछ्यो में तस ए अधिकार रे ॥ १ ॥ साजलजो अहो कर्मविपाक विचित्रता रे ॥ काय जाण्युं इणी परे राजकुमरीए ताम रे॥ में जाण्यु किम तेह विचित्रता तव कहे रे, तेह जशोधरा माहरु जाणजे नाम रे ॥ २ ॥ सा० ॥ जवमा जमता कर्मनाटिक शु नवि होये रे, तव म जाण्यु साजलो कुमरी वात रे ॥ एह चरित्रे राजकुमर मन उजम्यु रे, काय दीक्षा इछे जिनवर जाखी रयात रे ॥ ३ ॥ सा० ॥ राय कहे वरावे कहो हवे अमे करीये किशु रे, तव सा बोली कहो जइने महाराय रे ॥ एह ससारस्वरूप देखी कहो कोणने रे, नवि वैराग्य करे जिणे शिवसुख थाय रे ॥ ४ ॥ सा० ॥ तिणे ससार तणा प्रतिबध थकी सखु रे, कीजे जे मन उपजे कुमरने जाव रे ॥ मुजने आणा द्यो जिम हु दीक्षा ग्रहु रे, सुणी राजा सवेग लह्यो जवनाव रे ॥ ५ ॥ सा० ॥ कहे कुमरने पुत्र मात्र नही माहरो रे, धर्म पमाड्यो तिणे गुरु माहरो होय रे ॥ तिणे ससारमा रहेवु सरीखु माहरे रे, दीक्षा लेशु अमे पण दपती दोय रे ॥ ६ ॥ ॥ सा० ॥ में जाण्यु तव तातजी तुम एमज घटे रे, नवि कीजे काय एह वाते प्रतिबध रे ॥ तव तिहा देवराव्यु महा दान वली करे रे, सघले देहरे जिनपूजा सनध रे ॥ ७ ॥ सा० ॥ क्षुल्लक ज्ञाता सुक जसवर्धन नामथी रे, तेहने थाप्यो राज्यनो जार विशेष रे ॥ माय पिता परधान लोक वली केइशु रे, विनयवतीशु लीधो साधुवेष रे ॥ ८ ॥ सा० ॥ इन्द्रजूति आचारय पासे पुण्यथी रे, लीधो सजम सहुए शुज परिणाम रे ॥ ए निर्वेदकारण मुज चरित्र कह्यु सवे रे, साजल रे तु धनकुमर अजिराम रे ॥ ९ ॥ सा० ॥ धन कहे रुडु निर्वेदका[illegible]लीउ रे,

जाचना समय अतिक्रम्यो, जाणीने वलीआ तेह ॥ मे० ॥ रूप वली धनसिरी घणु, उलखी मुझ चिते एह ॥ मे० ॥ ४ ॥ ना० ॥ शीघ्र गयो केम ए कहो, बोलावी दासी ताम ॥ मे० ॥ जइ जुउं किहा जइ ए रहे, होय तिम मुझने कहे गाम ॥ मे० ॥ ५ ॥ ना० ॥ दासी आण अगीकरी, चाली मुनिवरने माग ॥ मे० ॥ मुनिवर आहार मल्यो नहीं, पण अव सरनो नहीं लाग ॥ मे० ॥ ६ ॥ ना० ॥ पुरदेवी उद्यानमा, पोहोता तव चोथो जाम ॥ मे० ॥ लागो तिणे विचरया नहीं, काउस्सग्ग रह्या तिणे गाम ॥ मे० ॥ ७ ॥ ना० ॥ जइ धणसिरीने ते कयु, धणसिरी कहे नदने एम ॥ मे० ॥ मे पुरदेवीने मानीयु, तुम रोग हतो तव प्रेम ॥ मे० ॥ ८ ॥ ना० ॥ करी उपवास वदि आठमे, तुम्ह आयतने करु वास ॥ मे० ॥ आगम गइ परमादथी, स्वप्ने तव प्रेरी खास ॥ मे० ॥ ए ॥ ना० ॥ पिहाणे तुमे जाता रह्या, तेणे जाखी न शकी वात ॥ मे० ॥ कीधो छे उपवास में, तिणे जाउ तिहा साक्षात् ॥ मे० ॥ १० ॥ ना० ॥ पूजापो आणी दीउं, नदे पण आणी दीध ॥ मे० ॥ तव चाकर डुग साथी ले, दासी पण साथे लीध ॥ मे० ॥ ११ ॥ ना० ॥ तिहा जइ दीठा मुनिवरु, इण अवसर आव्यो एक ॥ मे० ॥ काष्ठ तणी जरी गाफली, कठीयारो धरत विवेक ॥ मे० ॥ ॥ १२ ॥ ना० ॥ जागो अक्क तिहा किणे, आथमवा लाग्यो सूर ॥ मे० ॥ कठीआरो मन चितवे, मुझने थयु अतिहि असूर ॥ मे० ॥ १३ ॥ ना० ॥ काष्ठ ग्रहे नहीं को इहा, तिहा मूकी वृषज ले लीध ॥ मे० ॥ निज घर पहोतो वेगशु, धनसिरी चिते जलु कीध ॥ मे० ॥ १४ ॥ ना० ॥ एहज काष्ठे बालशु, चितवी गइ चक्रिकापाय ॥ मे० ॥ पूजा करी चाकर जणी, जोजन आपे मन जाय ॥ मे० ॥ १५ ॥ ना० ॥ सूता सहुए अनुक्रमे, एकाकिणी नीकली नारी ॥ मे० ॥ मुनि पासे ते काष्ठनो, खडके तिहा अति सजार ॥ मे० ॥ १६ ॥ ना० ॥ ध्यानमा मुनिवर नवि लहे, अज्ञाने प्रजाली आग ॥ मे० ॥ ज्वाला फरसे मुनितनु, चिते मुनिवर महाजाग ॥ मे० ॥ १७ ॥ ना० ॥ अनुकपाए मुनिवरु, वसला काउस्सग अरुग ॥ मे० ॥ अहो ए जीवने डु थयो, कारण डुर्गतिने मग्ग ॥ मे० ॥ १८ ॥ ना० ॥ धन जे नर मुक्ते गया, न होय कर्मबधनु हेत ॥ मे० ॥ मुझ उद्देशी नरगमा, ए पोहोचशे डु खसकेत ॥ मे० ॥ १९ ॥ ना० ॥ कारणे कारय नीपजे, एम

चाखे श्री जगनाथ ॥ मे० ॥ नवि शोचुं मुज जीवने, शोचुं ए जीव अनाथ ॥ मे० ॥ २० ॥ ना० ॥ बाहिर मति जिनवचथकी, पमीउं डुःखसायर ए-ह ॥ मे० ॥ मोही ईष्ट प्रापी जपी, अथवा नहीं डुःख ए रेह ॥ मे० ॥ २१ ॥ ना० ॥ धिक् संसार असारने, एम जावतो शुन परिणाम ॥ मे० ॥ पापिणीए मास्यो ऋषि, एहने किहां सन्मति ठाम ॥ मे० ॥ २२ ॥ ना० ॥ पन्नर सागर आउखे, उपन्या ऋषि शुक्रविमान ॥ मे० ॥ सातमे देवलोके सही, सुख जोगवे ते असमान ॥ मे० ॥ २३ ॥ ना० ॥ चोथे खंडे ए कही, वर सत्यावीशमी ढाल ॥ मे० ॥ पद्मविजय सोहामणी, सुणतां होय मंगलमाल ॥ मे० ॥ २४ ॥ ना० ॥ सर्व गाथा ॥ ७४० ॥

॥ दोहा ॥

॥ चन्द्रिकादेहरे चपलथी, दासीए पेसता दीठ, वनसिरीने पुछे वली, स्वामीनी कहो विसिठ ॥ १ ॥ किहां जइ आव्या ते कहो, मानिनी क-हे मध्यरात, परदक्षिणा पुठे करी, जगवतीने जली जाति ॥ २ ॥ इण अवसर अवलोकीउं, अगनिनो उद्योत, शुं ए एम शोची करी, सूती शांक सहोत ॥ ३ ॥ विहाणे देवी पूजी हवे, चाली करी अति चूप, पचत्व लह्यो पंथे ऋषि, आलोच्यो ते अनूप ॥ ४ ॥ चाकरने चेटी कहे, अहो ए कुण अपराध, एह शुं जाणीचे आपणे, सीज्यो केणी परे साध ॥ ५ ॥ चेटी मनमा चिंतवे, मोसली वाले मुज, जोवा वली मध्यजामिनी, गइ तेहनुं ए गुज ॥ ६ ॥ अनुरागुं आलोकीयुं, तिण वेला तनकाल, अहो मुज एह अनर्थमा, कारण करी विकराल ॥ ७ ॥

॥ ढाल अठावीशमी ॥

॥ जगतगुरु हीरजी रे ॥ ए देशी ॥

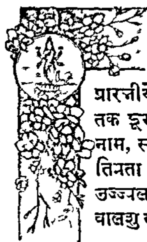
॥ गाडवानो धणी आवीउं रे, व्यतिकर दीठो तेह ॥ फरियादी ग-यो रायने रे, अहो मुज पाप अठेह ॥ १ ॥ ऋषि किणे मारीउं रे ॥ मु-ऊ काष्टथी बलीउं जेह ॥ माहरा धिग् जन्मने रे ॥ ए आंकणी ॥ मुज नावी गति होयशे रे, सुणी कोप्यो राजान ॥ हुकम कस्यो कोटवालने रे, ऋषिघातक करो जाण ॥ २ ॥ ऋषि० ॥ चन्द्रिकादेहरे चालीउं रे, कोप भरी कोटवाल ॥ पुछे पुजारी प्रत्ये रे, रात्रि रह्युं कोण काल ॥ ३ ॥ ॥ ऋषि० ॥ चोर वात कोइ नवि रह्यो रे, पूजारी कहे एम ॥ समुद्रदत्त-

नी गेहिनी रे, एक रही धरी नेम ॥ ४ ॥ ऋषि० ॥ कहे तलार शे
रे, रात्रि रही ए नारी ॥ पूजारी कहे नवि लहु रे, तव चिंते ते
॥ ५ ॥ ऋषि० ॥ आठम नोमी चोदशी अठे रे, वसवा केरो दिन
हमा आज एके नही रे, वातथी थइ खण खण ॥ ६ ॥ ऋषि० ॥ मग
हतो वली रे, पाछले पोहोरे दृष्टि ॥ योगनिपात मल्यो खरो रे, स्त्री
नही कोइ दुष्ट ॥ ७ ॥ ऋषि० ॥ जाउ एहने घर हवे रे, पामशु स
वात ॥ एम चिंती पोहोतो घरे रे, द्वारे चेटी आयात ॥ ८ ॥ ऋषि
पूछे सार्थपनी गेहिनी रे, घरमा छे के नाहि ॥ कोजना लही कहे
शु रे, कहे कोटवाल उछाह ॥ ९ ॥ ऋषि० ॥ ईर्ष्या धरी क्रोधे क
परअभिप्रायनो जाण ॥ कहे रे पापिणी विसखुं रे, मुनिवृत्तात अ
॥ १० ॥ ऋषि० ॥ निज कर्मे शकी घणी रे, चेटी बोली ताम ॥ मुज
छाणीए मोकली रे, जोवा मुनिवर ठाम ॥ ११ ॥ ऋषि० ॥ हु बीजु
णु नहीं रे, सुणी उपन्यो सदेह ॥ अहो गवेषणा केरडु रे, कारण
ए करेह ॥ १२ ॥ ऋषि० ॥ फरी ते पूछे सुदरी रे, म करो नय मन
॥ मोकल्या तुम्ह शे कारणे रे, ते भाखो तुमे आदि ॥ १३ ॥ ऋषि
सा कहे भिक्षा लेअवा रे, काले त्रीजे जाम ॥ आव्या विण लीधे
रे, तव मुज मोकली याम ॥ १४ ॥ ऋषि० ॥ जोइ आवीने मे कहु
ऋषि रहेवानु ठाम ॥ कार्य तो जाणु नहीं रे, कहे कोटवाल ते
॥ १५ ॥ ऋषि० ॥ तिहा जइने शु कीधलु रे, तव बोली सा नारी ॥
कानी पूजा करी रे, मुनि नमीआ न लगार ॥ १६ ॥ ऋषि० ॥ कोट
तव चिंतवे रे, पूजाने मिष एह ॥ परिजन वची मारीउ रे, मुनिवर
हीं सदेह ॥ १७ ॥ ऋषि एणे मारीउ रे ॥ ए आकणी ॥ बोलावी घ
जइ रे, तव खोभाणी तेह ॥ भार लखीने भाखीयो रे, वात सुणो
एह ॥ १८ ॥ ऋषि० ॥ ऋषिघातकने खोलवा रे, मुजने मोकल्यो रा
पगलु तुम घर आवीउ रे, तिणे चालो नृपपाय ॥ १९ ॥ ऋषि० ॥ स
लीने धरणी ढली रे, तव चिंते कोटवाल ॥ निश्चय कर्म एणे कलु
नहीं तो भय किम भाल ॥ २० ॥ ऋषि० ॥ नाठो नद बाहिर थकी
वात सुणीने ते कान ॥ धनसिरी लाव्या नृप कन्हे रे, जोइ
राजान ॥ २१ ॥ ऋषि० ॥ इण आकारे एहवु रे, कर्म करे किम भा

शे कारण तु तिहां गइ रे, पूछे एणी परे राय ॥२२॥ इपि० ॥ कोन्न वहीं
बोली नहीं रे, तव शंका नृप थाय ॥ फरी पूछे केहनी धूआ रे, किहांथी
आवी रहाय ॥२३॥ इपि० ॥ पूर्णजडनी हु धूआ रे, सुसन्म नयरथी आय ॥
समुद्रदत्तनी गेहिनी रे, तव तस शोध कराय ॥२४॥ इपि० ॥ न जड्यो जत्तां
तेहनो रे, तव कीधो विश्राम ॥ नृप पासे न बोली शके रे, एहवां धरी मन
नाम ॥२५॥ इपि० ॥ पूर्णजड पासे मोकल्यो रे, उग्रवाहक ततकाल ॥ एहने
पुछावे तदा रे, एहज वात नृपाल ॥२६॥ इपि० ॥ उग्रवाहक वेग वाळीने
रे, वाच नरपति एम ॥ धणसिरी नामे अम धूआ रे, अम कुलखपण नेम ॥२७॥
इपि० ॥ राय विचारे एणीए रे, निश्चय कीधु काम ॥ पापिणीनी अहो मूर्खता रे,
अहो क्रूरहृदया नाम ॥२८॥ इपि० ॥ नारी अवध्य कही तिणे रे, दीधो देश-
निकाल ॥ जाता साकसमय तदा रे, नृप नगर असराल ॥२९॥ इपि० ॥
देवभ्रमा सूती जइ रे, एहवे करड्यो नाग ॥ महा रौद्रे मरी उपनी रे, [illegible]
भजा दु ख लाग ॥३०॥ इपि० ॥ उग्र पाप तुरतज फळे रे, एहमा नहीं [illegible]।
सात सागर नारकपणे रे, दु ख भोगवे निज देह ॥३१॥ इपि० ॥ [illegible]
चोथो सर्ग कह्यो रे, दंपतीनो अधिकार ॥ हवे जय विजय द्वारा [illegible]
नातु सम्वर विचार ॥३२॥ श्रोताजन सांभळो रे ॥ ए आंकणी ॥ [illegible]
एकादशी रे, च्यालीशे नन्नाप ॥ पूरो शीतल नगरमां रे, [illegible]
॥३३॥ श्रोता० ॥ अढारीस डाले करी रे, नमरादित्यने वार [illegible]
तेरस दिने रे, नपुरण सुविशाल ॥३४॥ श्रो० ॥ विजय [illegible]
श्रीविजयसिंह सूरीश ॥ सत्यविजय सोहामणा रे, मोटा [illegible]
श्रो० ॥ तास कपूरविजय कवि रे, खिमाविजय वर [illegible]
तेहना रे, जेहने शास्त्र सन्मान ॥३६॥ श्रो० ॥ [illegible]
डक सननायन ॥ उत्तमविजय सोहामणा रे, तेहनो [illegible]
॥ तस पदपद्म भ्रमर समो रे पद्मविजय इण नाम [illegible]
ली सनना उपमान ॥३७॥ श्रो० ॥ पुरण [illegible]
न डोक ॥ सकल कुशलनो घर करी रे, [illegible]
सर्वे गाथा [illegible] ॥ इति श्री [illegible]
शिष्य पंडित श्री [illegible]
ये वनकुमारवनश्रीदत्तो [illegible]
गाथा ॥ [illegible] ॥ [illegible]

॥ अथ ॥

॥ पचम खरुः प्रारभ्यते ॥



॥ दोहा ॥

॥प्रगट प्रतापी पास जी, प्रणमु प्रेमे पाय, सम साची शारदा, करे जेह कविराय ॥ १ ॥ पचम ख प्रारजीये, सुणो सघ समुदाय, सुणता समता रस वधे, प तक दूर पलाय ॥ २ ॥ जबुद्दीपनु जरत जे, नयर काकद नाम, समुद्रदेश परे शोनती, ततुशु खातिका ताम॥३॥ प तिनता जनमन परे, परपुरुषे प्राकार, उंलगाये नहीं अधिक उज्जल घन आगार ॥४॥ द्वार तोरण अति दीपता, सिह वालशु साच, गिरिवर केरी ज्यु गुफा, तरतो दीसे ताच ॥५

॥ ढाल पहेली ॥

॥ लाछल दे मात मल्हार ए देशी ॥

॥सूरतेज नृप नाम, सूरतेजरिपु ठाम ॥ आज हो ॥ राणी रे लीला वती जाणी तेहनी रे ॥ १ ॥ पूरण करी सुर आय, धनसुर उपन्य आय ॥ आ० ॥ तेहनी रे कुखे तब चद्र सपन लह्यु रे ॥ २ ॥ सजला जरतार, तब ते करे उचार ॥ आ० ॥ सामतमरूलमा शशि सम सु होयशे रे ॥ ३ ॥ प्रसवसमय थयो जाम, शुन जोगे सा ताम ॥ आ० ॥ प्रसव्यो रे तिणे पुत्र रत्न सम परगमो रे ॥ ४ ॥ निवृत्ति ना नारी, खाये वधामणी सार ॥ आ० ॥ सतोषे तस दान देइने जूपति ॥ ५ ॥ एम करता थयो मास, जयकुमार ते तास ॥ आ० ॥ थापे रे अ निधान अनुक्रमे वाधतो रे ॥ ६ ॥ करतो कला अभ्यास, पूर्वधरम नि वास ॥ आ० ॥ चारित्रे घणो राग थयो तस जन्मथी रे ॥ ७ ॥ एक दि रमवा उद्यान, चद्रोदय अनिधान ॥ आ० ॥ दीठा रे तिहा सनतकुमा सूरीसरु रे ॥ ८ ॥ तेजे सूर्य समान, उतस्या प्रासुक थान ॥ आ० ॥ उ दधि परे गजीर शीतल जिम चद्रमा रे ॥ ९ ॥ रतन परे बहु मूल, स जनने अनुकूल ॥ आ० ॥ सरग परे रमणिक नाच्य नहीं शिव परे

॥ १० ॥ नयरी श्वेतविका राय, जशवर्म सुत मुनिराय ॥ आ० ॥ स्वपर सम्य ग्रह्यो सार बहु मुनि परिवस्यो रे ॥ ११ ॥ देखी लह्यो सवेग, मन चिंते अतिवेग ॥ आ० ॥ एह ससार असार एहवा पण गाजता रे ॥ १२ ॥ कुण ए केम कस्यो त्याग, पूछु जइ महाभाग ॥ आ० ॥ जइ वन्दा सहु मुनिने वली सूरीशने रे ॥ १३ ॥ वेगे गुरुने पाय, करकज जोडी राय ॥ आ० ॥ गुरुजी ए ससार वैराग्यहेतु खरो रे ॥ १४ ॥ तोपण बाह्य निमित्त, विण नवि उजगे चित्त ॥ आ० ॥ ते कारण विशेष हेतु तुमचु कहो रे ॥ १५ ॥ चिंते सूरिवर एम, वयणविन्यास अहो केम ॥ आ० ॥ एहनो रे ए विवेक देखी मन रजीयु रे ॥ १६ ॥ हेतु विशेष अवधार, ते पण छे ससार ॥ आ० ॥ सूरि कहे जो सुणवा इछा तो सुणो रे ॥ १७ ॥ अल्प निदान विराग, महोटा सुणी महाभाग ॥ आ० ॥ चित्रागद विद्याधर पासे व्रत लीयु रे ॥ १८ ॥ इणहीज भारतवास, श्वेताविका पुरी खास ॥ आ० ॥ जशवर्मा नृप तेहनो पुत्र हु जाणजे रे ॥ १९ ॥ ज्योतिषी कहे तव एम, जन्ममात्रथी नेम ॥ आ० ॥ विद्याधर नरपति थाशे ए बालको रे ॥ २० ॥ हु बहु वल्लभ तात, एक दिन तस्कर घात ॥ आ० ॥ करवा रे लेइ जाता दीठा में तदा रे ॥ २१ ॥ चोर घणा कहे एम, अम तुम शरणु नेम ॥ आ० ॥ राखो रे तुमे तब में तस मूकावीथा रे ॥ २२ ॥ रमवा गयो हु बार, सघलो ए अधिकार ॥ आ० ॥ निपन्यो रे तिहा बाहिरि पचम खडमा रे ॥ २३ ॥ पहेली ढाल रसाल, सुणता मगलमाल ॥ आ० ॥ समरादित्यना रासमा पद्मविजये कही रे ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रूठा लोक नयर तणा, कहे नृपने कोटवाल, नृप कहे कुमर जाणे नहीं, तेम करजो ततकाल ॥ १ ॥ तस्कर ग्रही तुमे पुर तणा, नरने करी विलाप, मारजो सुणी तिणे मारीआ, जव मुजने थयु जाण ॥ २ ॥ रीसाणो महारायथी, चाल्यो चतुर सुजाण, तामलिप्ति आव्यो तुरत, मनमा आणी माण ॥ ३ ॥ यत ॥ "त्रय स्थान न मुचति, काका कापुरुषा मृगा ॥ अपमाने त्रयो याति, सिंहा सत्पु[illegible] गजा ॥ १ ॥ ईशानचद अवनीपति, साहमो जइ सनमान, [illegible] सुदर [illegible]

आपण गाए ॥ ४ ॥ जाणो ए निज राज्य छे, नयरमा करवा निवेश, आपे मुऊ आवास तिम, रहेवा तेह नरेश ॥ ५ ॥ जीवन ल्यो तुम्ह जे गमे, एम कहेवरावे राय, म तो ते नवि मानीयु, तस हित जिणे परे ताय ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ राग धमाल ॥ पासजी हो ॥ अहो मेरे ललना ॥ ए देशी ॥

॥ वसतसमय एक दिन हवे आव्यो, रहेता तिहा सुख माहि ॥ ललना ॥ अविवेकी जन आनदकारी, दिन दिन अधिक उछाह ॥ १ ॥ मनमोहन मेरे दिल वस्यो हो, अहो मेरे ललना ॥ दिल वस्यो मन वस्यो मुऊ ॥ मन० ॥ ए आकणी ॥ मलयवायु तिहा वाया मनोहर, फुल्या वन उद्यान ॥ ललना ॥ लोकथोक तिहा जोवा चाल्या, कोकिलरव सुणे कान ॥ २ ॥ मन० ॥ मित्रे परिवृत हु पण चाल्यो, करी तनु शोजा विशेष ॥ ल० ॥ अनगनदन उद्यानमा जाता, आव्यो राजपथने देश ॥ ३ ॥ मन० ॥ नाम विलासवती नृपपुत्री, गोखथी दीठो मुऊ ॥ ल० ॥ कोइ नवातरने अज्यासे, रागथी अतिशे अजूऊ ॥ ४ ॥ मन० ॥ बकुल माला गुथी निज हाथे, नाखी मुऊ शिर तेह ॥ ल० ॥ दीठी मुऊ वसुनूति मित्रे, थापी कठदेशे मे एह ॥ ५ ॥ मन० ॥ ऊर्ध्व जोयु तव तिह दीठु, वदनकमल अद्भुत ॥ ल० ॥ हर्ष लह्यो हु ते पण हुइ, तोष वि पाद सयुत ॥ ६ ॥ मन० ॥ हु तनुथी तिहा आगल चाल्यो, चित्त मूर्क तस पास ॥ ल० ॥ तेहनु ध्यान करत घर आयो, पण नहीं क्रीका वि लास ॥ ७ ॥ मन० ॥ शिर छु रयाना मिषथी निसरज्यो, मित्रादिक प रिवार ॥ ल० ॥ अननुजूत छु सने अनुजवतो, क्षण निद्रा करी ति वार ॥ ८ ॥ मन० ॥ रात्री गइ कछु कृत्य घोष, आव्या मित्र ते पा ॥ ल० ॥ जवन उद्यानमा क्रीका करता, लीये तबोल सुवास ॥ ९ ॥ मन ॥ शून्य चित्त लही वसुजूति पूछे, किम वासर शशिवान ॥ ल० ॥ क्षण ध्यानी मुनि परे दीसो, करी तनु चेष्टा ठान ॥ १० ॥ मन० ॥ कीला जुहारी परे क्षण हरखो, तव में कछु नहीं काय ॥ ल० ॥ मित्र कहे में जाण्यु सघलु, चिता तुऊ नारीनी थाय ॥ ११ ॥ मन० ॥ नेत्रनाणे करी विध्यो सनजो, तिणे करी दीर्घ नि श्वास ॥ ल० ॥ मत चिता कर तुऊने इछे, माल ते दूती तुऊ पास ॥ १२ ॥ मन० ॥ एक पखी प्रीते बहु चिंता,

तुक चिता न लगार ॥ ल० ॥ तुम्ह सयोग उपायमा वरतु, राखो चित्त हर्ष अपार ॥ १३ ॥ मन० ॥ धात्री विलासवतीनी पुत्री, अनगसुदरी इण नाम ॥ ल० ॥ तास सघाते प्रसग कह्यो तिणे, गमनागमन थयु ताम ॥ १४ ॥ मन० ॥ दिवस वही गया जब बहुतेरा, तब मन चिते एम ॥ ल० ॥ काम कशु नहीं मित्रे माहरु, कहो हवे करीये केम ॥ १५ ॥ मन० ॥ मारवशे सज्या जइ सूतो, मूर्छित मृत मूढ जेम ॥ ॥ ल० ॥ ग्रह आवेश थयो अथ बीहीनो, आपवशे नहीं तेम ॥ १६ ॥ मन० ॥ एक दिन आव्यो मित्र हरखगु, कहे सीधु तुम काम ॥ ल० ॥ कहो केम सीधु तव ते जाखे, हु गयो धावी बुआ धाम ॥ १७ ॥ मन० ॥ म्लान वदन देखी मे पूछ्यु, अनगसुंदरी कहो वात॥ ल० ॥ शी चिता तव प्रेमे बोली, सुणी माहरो अवदात ॥ १८ ॥ मन० ॥ सा कहे आदर्श परे दु ख जेहने, सकमे नहीं तस वात ॥ ल० ॥ कही तोपण शुं लेखे लागे, विरला परदु खे दु खात ॥ १९ ॥ मन० ॥ "यत ॥ विरला जाणति गुणा, विरला जाणति ललियकवाइ ॥ सामप धणा विरला, परदु खे दुक्खिया विरला ॥ १ ॥ ' में कह्यु तुक आशा करु पूरी, तब बोली सा नारी ॥ ल० ॥ रायधूआ मुक सही अति दु खिणी, तेहनो कह्यो सर्व विचार ॥ २० ॥ मन० ॥ मदन महोत्सवमा नर दीठो, रूपे जिम पचबाण ॥ ल० ॥ तेहथी अत अवस्था जोगवे, माला प्रमुख अहीनाण ॥ २१ ॥ मन० ॥ पण नवि ओलख्यो कोण हतो ए, मे पण करी बहु शोध ॥ ल० ॥ सर्व व्यापार तज्यो तेणे सखीए, मुक पण ते नवि बद्ध ॥ २२ ॥ मन० ॥ सखीजन कर ग्रही उपरितल चढी, मारगे निरखे तेह ॥ ल० ॥ वात सत्रारी अश्रुपात करे, जिम आषाढनो मेह ॥ २३ ॥ ॥ मन० ॥ एम करता ते मूर्छा पामी,तब मुक सभ्रम थाय ॥ ल०॥ उठी कह्यु में किहा छे देखावो, रखे तस जीवित जाय ॥ २४ ॥ मन० ॥ कहे वसुभूति वन्यु ए काले, पण सुणो आगल वात ॥ ल० ॥ सावलता उपजशे शाता, सुणीये आगल अवदात ॥ २५ ॥ मन० ॥ बीजी ढाल ए पचम खडे, समरादित्यने रास ॥ ल० ॥ पद्मविजय कहे
होवे नित्य लीलविलास ॥ २६ ॥ मन० ॥ सर्व गाया ॥

॥ दोहा ॥

॥ कृपा धरी अवनत करी, वदन सुणे हवे वात, वसुभूति कहे वेग शु, वींज्या शीतल वात ॥ १ ॥ चदन शीतल चरचीया, जीव वल्यो तस जाम, नयन उघाडी निरखती, तस पूछ्यु मे ताम ॥ २ ॥ शी पीडा एम सामटी, ते कहे दर्शन तास, न थयु तिण कारण मदन, पीडे देतो पास ॥ ३ ॥ धारण तेहने धारवा, मे कह्यु राजकुमार, चिता न करो चितमा, कहु तेहनो परकार ॥ ४ ॥ लाध्यो ते लक्षण थकी, ओगावो ते व यल्ल, कटिसूत्रक सतोष करी, आप्यो मुझ अवल्ल ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ धोमी ते थाइ थारा देशमा मारु जी ॥ ए देशी ॥

॥ इण समे आवी तिहा कणे ॥ साहिवजी ॥ विलासवतीनी मात हो, सुणो साहिब काम ए नीपन्यु ॥ साहिवजी ॥ कहे राये फरमावीयु ॥ सा० ॥ वीणा सनारो ख्यात हो ॥ १ ॥ सु० ॥ वीणा वजावनी नृप कने ॥ सा० ॥ साजनी कह्यु परमाण हो ॥ सु० ॥ वीणाचार्यणी तेहीने ॥ सा० ॥ नवि लोपे गुरु आण हो ॥ २ ॥ सु० ॥ हु तो तिहाथी आवती ॥ सा० ॥ विगर कहे निज गेह हो ॥ सु० ॥ घणुअ विशेषे खोलीउं ॥ सा० ॥ पण नव वारो तेह हो ॥ ३ ॥ सु० ॥ चिता पिशाचणीए ग्रही ॥ सा० ॥ तिणे मुझ उद्वेग थाय हो ॥ सु० ॥ तव कह्यु चिता तजो ॥ सा० ॥ हु उखवु ते जाय हो ॥ ४ ॥ सु० ॥ मेलवशु सजोग ए ॥ सा० ॥ अनगसुदरी कहे ताम हो ॥ सु० ॥ कोण जुवान ते जाणीये ॥ सा० ॥ तव कह्यु सघनु काम हो ॥ ५ ॥ सु० ॥ उखवावयो म जली परे ॥ सा० ॥ जाणी नाम निशान हो ॥ सु० ॥ अनगसुदरी तव कहे ॥ सा० ॥ एहवी वात निदान हो ॥ ६ ॥ सु० ॥ तो निरुयम केम यइ रह्या ॥ सा० ॥ तव मे जाण्यु तास हो ॥ सु० ॥ नहीं निरुयम पण चिंतवु ॥ सा० ॥ पइ उपाय ते ख्यास हो ॥ ७ ॥ सु० ॥ सा कहे समरूप कुलकनी ॥ सा० ॥ हरता काय न दोष हो ॥ सु० ॥ आठ प्रकार विवाहना ॥ सा० ॥ शास्त्रमा जाण्या जोष हो ॥ ८ ॥ सु० ॥ ब्राह्म १ प्राजापत्य २ आर्ष ३ ॥ सा० ॥ दैविज ४ धर्म ए चार हो ॥ सु० ॥ गाधर्व ५ आसुर ६ राक्षस ७ वली ॥ सा० ॥ पैशाच ८ अधर्म चार हो ॥ ९ ॥ सु० ॥ कन्या नृपित करी

दीजे ॥ सा० ॥ ते विवाह कह्यो ब्राह्म हो ॥ सु० ॥ निज विज्ञोचित धन दीजे ॥ सा० ॥ ते प्राजापत्य नाम हो ॥ १० ॥ सु० ॥ गाय दानपूर्वक दीये ॥ सा० ॥ ते तो आर्ष कहाय हो ॥ सु० ॥ सर्व जाति धन दक्षिणा ॥ सा० ॥ ते तो दैव सुहाय हो ॥ ११ ॥ सु० ॥ वरकन्या राजीपणे ॥ सा० ॥ नहीं कोइ अवरनु काम हो ॥ सु० ॥ ते गांधर्व कह्यो वली ॥ सा० ॥ परठन्न परणे जाम हो ॥ १२ ॥ सु० ॥ जे पण धने परणीजे ॥ सा० ॥ ते तो आसुर जाण हो ॥ सु० ॥ बलात्कारथी परणवु ॥ सा० ॥ ते राक्षस पहिचाण हो ॥ १३ ॥ सु० ॥ सूती रमती होय जे ॥ सा० ॥ अणजाणे लेइ जाय हो ॥ सु० ॥ ते पैशाचिक जाणीये ॥ सा० ॥ इरणमा दोष न कोय हो ॥ १४ ॥ सु० ॥ मे कह्यु वात खरी कही ॥ सा० ॥ पण रागी नरराय हो ॥ सु० ॥ अप्रतिहत गति कुमरने ॥ सा० ॥ वली जीवन सुपसाय हो ॥ १५ ॥ सु० ॥ परणावे राजा कदी ॥ सा० ॥ तब नही बीजो उपाय हो ॥ सु० ॥ दर्शन वेहुने जिम होवे ॥ सा० ॥ चितवो तेह सुहाय हो ॥ १६ ॥ सु० ॥ अनगसुदरी तव चवे ॥ सा० ॥ वावो तुमे कुमार हो ॥ सु० ॥ हु पण कुसुम उद्यानमा ॥ सा० ॥ लावु राजकुमारी हो ॥ १७ ॥ ॥ सु० ॥ मे ए वात अगीकरी ॥ सा० ॥ चाल्यो कारण तेह हो ॥ सु० ॥ वचन सुणी वसुभूतिना ॥ सा० ॥ परम आणद लह्यो देह हो ॥ १८ ॥ ॥ सु० ॥ मोह अज्ञाने मानतो ॥ सा० ॥ सवि दुःखनो लह्यो पार हो ॥ ॥ सु० ॥ वसुभूतिने कह्यु तुम तणु ॥ सा० ॥ वचन न करु नाकार हो ॥ १९ ॥ सु० ॥ भवन उद्याने अमे गया ॥ सा० ॥ जिहा षड्ऋतुनी सोइ हो ॥ सु० ॥ जाति अनेकना फुलीया ॥ सा० ॥ वृक्ष देखी होय मोह हो ॥ २० ॥ सु० ॥ अनगसुदरी आवी कहे ॥ सा० ॥ पह चदनलता-गेह हो ॥ सु० ॥ तिहा आवीने वेसीए ॥ सा० ॥ तब अमे गया तिहा नेह हो ॥ २१ ॥ सु० ॥ दीठी विलासवती तिहा ॥ सा० ॥ सखीए परिवृत जेह हो ॥ सु० ॥ कूर्मोन्नत पद जेहना ॥ सा० ॥ निर्मल नख ससनेह हो ॥ २२ ॥ सु० ॥ ऊरुयुग रभा उपमा ॥ सा० ॥ सिहलकी शुभवान हो ॥ सु० ॥ कटिमेखला खलकी रही ॥ सा० ॥ जघननितब पचबाण हो ॥ २३ ॥ लावण्य जलनी कूपिका ॥ सा० ॥ नाभिमडल गभीर हो ॥ ~ ॥ कमलनालशी बाहुनी ॥ सा० ॥ नासिका चच ज्यु कीर हो ॥

चदलोचयणी विराजती ॥ सा० ॥ चंपकवरणी धार हो ॥ सु० ॥ कोट
उरे घणु सोहतो ॥ सा० ॥ मुक्ताफलनो हार हो ॥ २५ ॥ सु० ॥ आं-
खमी पंकजपांखमी ॥ सा० ॥ अर्द्ध शशि सम नाल हो ॥ सु० ॥ कामध-
नुष ज्रमुहा बनी ॥ सा० ॥ अधर प्रवाला लाल हो ॥ २६ ॥ सु० ॥ जिन
ध्यानानले दाझतो ॥ सा० ॥ मदनधूम मानु केश हो ॥ सु० ॥ अथवा
शेष वेणे वस्यो ॥ सा० ॥ दंत दाडिमकली वेश हो ॥ २७ ॥ सु० ॥ रूप
देखी रीझ्यो घणु ॥ सा० ॥ चित्तमा सनत्कुमार हो ॥ सु० ॥ नेत्रकटाक्ष
निरखीउं ॥ सा० ॥ विस्मय पामी नार हो ॥ २८ ॥ सु० ॥ त्रीजी पावमा
खंममा ॥ सा० ॥ पद्मविजय कही ढाल हो ॥ सु० ॥ समरादित्यना रा-
समा ॥ सा० ॥ आगल वात रसाल हो ॥ २९ ॥ सु० ॥ सर्व गाथा ॥ ९९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आदर देइ ऊनी थइ, विलासवती तिणी वार, सन्मानी वेसारता,
कामनीने ते कुमार ॥ १ ॥ अनंगसुंदरी कहे अम प्रत्ये, आसन बेसा
एथि, वेगा तव अमे बिहु जणा, तंबोल आएयो तेथि ॥ २ ॥ मित्रभूति
इण नामथी, कन्या रक्षाकार, आवी प्रणम्यो आदरे, कीधो में सत्कार
॥ ३ ॥ विलासवती तुमने वदे, नरपति एहवी वात, वीणा तुमने विसरी,
काउं कोप करात ॥ ४ ॥ आज वजावनी अवसरथी, सज्जारो करी शान;
आणा तव अंगीकरी, नीकली अवसर जान ॥ ५ ॥ तिर्छी आंखे ताकती,
ततन गइ नयनीत, मारयाण विधी मने, कंपे जेम चकित ॥ ६ ॥ वसु
भूति कहे गाउहा, जव्ये आपणी जाग, शे कारण वेसी रह्या, विलास
वती विण नाग ॥ ७ ॥ उठया वेहु इहा थकी, आव्या द्वार उद्यान, अ-
नंगवती नृपराणीए, दीठो मुऊ दिन आण ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ माहारुं मन मोह्यु रे माधव देखवा रे ॥ ए देशी ॥

॥ मुऊने देखी रे राग ते उपन्यो रे, काम न राखे रे माम ॥ कार्य
अकार्य हिताहित नवि गणे रे, विह्वल थइ तेह वाम ॥ १ ॥ विषयवि-
पामा रे विषमी जगतमा रे ॥ ए आंकणी ॥ निज थानक अमे पोहोता
प्रेमशु रे, चिंतवता तेह ध्यान ॥ राग होवे जे उपर जेहनो रे, तेहने तस
बहु मान ॥ २ ॥ वि० ॥ कुसुममाळ तंबोळ विलेपणु रे, मूके विलासवइ

मानवी रे, तो केम एम कहाय ॥ १७ ॥ जि० ॥ क्षण सुख अरथे [illegible] [illegible] नरगमा रे, नोगवता बहु काल ॥ अविवेकी जन अभिलाषा करे रे [illegible] [illegible] ॥ १८ ॥ जि० ॥ यत ॥ "खिणमित्त सुक्खा बहु [illegible] दुक्खा, पगाम दुक्खा अनिकाम सुक्खा ॥ संसार मुक्खस्स विपक्ख [illegible] [illegible] [illegible] कामनोगा ॥ १ ॥ ' लाज करी तव अनंगवती [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] रे कुमार ॥ म तेमाव्यो परीक्षाकारणे रे, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ १९ ॥ जि० ॥ जाउं सुते निज स्थानक इम सुणी [illegible] [illegible] [illegible] ॥ घर आव्यो काय वेला अतिक्रमी रे, निश्चे [illegible] [illegible] ॥ २० ॥ जि० ॥ विनयधर कोटवाल ते आवीउ रे, [illegible] [illegible] ॥ ते कहे कुमर पकाव आणा करो रे, कहेवी [illegible] ॥ २१ ॥ जि० ॥ तव सहु मित्र गया निज स्थानके रे, [illegible] [illegible] ॥ [illegible] कही पंचम खमा रे, चोथी ढाल रसाल ॥ ॥ २२ ॥ जि० ॥ सर्व गाथा ॥ १२५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] सार, [illegible] कुलपुत्र [illegible], [illegible] [illegible] ॥ १ ॥ [illegible] [illegible], अनिमानी [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] ॥ २ ॥ जाणी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], चाल्यो चतुर विचार ॥ ३ ॥ [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] ॥ ४ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ए देशी ॥

॥ [illegible] [illegible] [illegible] ते [illegible], [illegible] [illegible] न [illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हे ॥ १ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हे ॥ [illegible] ॥ ए [illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] न [illegible] [illegible] हे ॥ २ ॥ [illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न [illegible] [illegible] ॥ कुलपुत्र [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] हे ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]

ठहा जाइ ॥ ते कहे जयकायर जिस हरणो, अग भूजे थथिराइ के ॥
॥ ४ ॥ जा० ॥ नारीहृदय जयथी थरहरतु, तिम साधव थरहरती ॥ स-
ज्ञनने परनिंदा वाणी, तिम नवि गति विस्तरती के ॥ ५ ॥ जा० ॥ या-
चक वचन परे पग खवता, जम परे ए नरनाह ॥ तेहना चाकर पूठे
थावे, तेहनी जोति थयाह के ॥ ६ ॥ जा० ॥ खेद म कर कुलपुत्र ना-
ग्नु, वेसास्यो एकाते ॥ रायपुरुष थावी इम जाखे, थापो चोर एकाते
के ॥ ७ ॥ जा० ॥ जाने पाताले के जलधि उंलघे, शक्रने शरणे जाय ॥
तोपण नवि ठोमीजे एहने, चोरी करी करी थाय के॥ ८ ॥ जा० ॥ कुलपुत्र
कहे चोर राखवो न घटे, शरणागत न थपाय ॥ जेम कहो तेम करीये
तव बोल्या, थापो थम ए जाय के ॥ ९ ॥ जा० ॥ रायकोपानल माहि
पतग सम, मत थाउ तुम कहीये ॥ कहे कुलपुत्र ए केम अपाये, शरणा-
गत जे लहीये के ॥ १० ॥ जा० ॥ नृपनर कहे केम राखशो एहने, वलथी
वहेशु एह ॥ कुलपुत्र कहे मुफ प्राण धरते, नवि लनाये रेह के ॥ ११ ॥
जा० ॥ एम कही खड्ग लीधु निज करमा, सन्नद्ध होय परिवार ॥ राज-
पुरुष पोहोता नृप पासे, जाल्यो सर्व विचार के ॥ १२ ॥ जा० ॥ मुफ
थाणालोपनु शरणु, जेह करे तस मारो ॥ एम कही नृपे बहु सैन्य मो-
कलीउ, करता बहु होकारो के॥ १३ ॥ जा० ॥ लाग्यु युद्ध परस्पर बेहुने,
इण अवसर तिहां थायो ॥ राजकुमर जशोवर्म रमीने, बहु असा-
वारे ठायो के ॥ १४ ॥ जा० ॥ पूठे तव सरवे सजलाव्यु, बोल्यो सुत
नरराय ॥ मुफ मात्या विण ए शरणागत, वत्सल नविथ मराय के
॥ १५ ॥ जा० ॥ युद्ध शम्यु नृपतिए जाण्यु, राये मानी वात ॥ चोर
वोलावी सहु निज थानक, क्षेमे कुशले थायात के ॥ १६ ॥ जा० ॥ थ-
नुक्रमे जयथल नगरे पोहोता, प्रसव्यो पुत्र हु ताम ॥ एम तुफ ताय
मुफ माय तायने, मुफ उपगारी थाम के ॥ १७ ॥ जा० ॥ मात पिता पा-
से में सूणीउं, सघलो ए थधिकार ॥ गुणकीर्त्तन करता दिन काढे, माने
बहु उपगार के ॥ १८ ॥ जा० ॥ कारण एह कह्यानु सुणीये, ईशानचद
जे राय ॥ रहवानी रमी थनगवती घरे, हरख धरी जब थाय के ॥ १९ ॥
जा० ॥ पचम खंडे पद्मविजये कही, पचमी रुडी ढाल ॥ समरादित्यना
रासमा सुणीये, सुणता मगलमाल के ॥ २० ॥ जा० ॥ सर्व गाथा ॥ १४९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अनगवती दीठी इसी, विकसित कर रुह नयण, नयणे आसु ना ख्यती, नरपति पूछे सयण ॥ १ ॥ ए शु तव कहे अगना, शील रत्ननो स्वाद, राय कहे किम उधरो, अगे धरी आह्लाद ॥ २ ॥ पूर्वे करता प्रा र्थना, गामर घणा व्यतीत, सनत्कुमार ए सुरतीये, आज ए कीध अनीति ॥ ३ ॥ राजा तव रीशे चड्यो, कहे मुकने कर काम ॥ मारो सनत्कुमा रने, नहि जाणे कोइ नाम ॥ ४ ॥ म पण ते तिहाथी मानीउ, मनमा चिन्तु श्याम, जोज्यो मुक अकार्यमा, मुक नरगे नहीं ठाम ॥ ५ ॥ नी पमेरा नरपति तणी, एम चिंता चित्त माय, किमहीक दीर्घायु थकी, न मरे तो हुंये न्याय ॥ ६ ॥

॥ ढाल ठठी ॥

॥ शारद बुद्धिदायक ॥ हवे अवसर जाणी ॥ ए देशी ॥

॥ नरपतिनी आणा, लोपण केम सघाय ॥ पगलु नरे जेहवे, तेहवे वांके ते पाय ॥ करे चिंतन ते ए हवे, तव एक निमित्तिउ बोले ॥ बीज न करो हमणा, नहीं ए सीस्ने तोले ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ सोमा नाम ए ठी क वे वान्नी, आरोग्य फलने आपे ॥ पूर्वेऽपि एणी परे नाम्यु वे, तिण डु ग दोहग कापे ॥ वली निमित्तरथी जाणु, निर्दोष वस्तुमा आण ॥ राजाए दासी वे तोषण, तुक मनमा अप्रमाण ॥ २ ॥ ' यत ॥ पदीय इनजत्त वा, हाणी वुड्ढा मय असिद्धि च ॥ आरोग्ग मउष्ठान, सीरनि ष्याहिय दिशासु ॥ ' ॥ ' पण जिम तुक चित्तमा, वे तेम थाशे एह ॥ एह जा तु कहीउ, नहीं तो विपरीत तेह ॥ तव म मन चिंत्यु, बि ख्याहेत ए नाव ॥ एहना बहु प्रत्यय, दीठा वे केह काम ॥ ३ ॥ त्रुट ॥ एम चिंता गयो जननी पासे, पूछे जननी मुक ॥ देखु तु उद्वेग सहित, म्लान वदन वे तुक ॥ मातायी नहि गानु करीये, एम विचारी भाख्यु नाना कहे ए कुमरने ताले, तारूक कुड मति राख्यु ॥ ४ ॥ ए वात न करजे, मन सुधी हु वहा आव्यो ॥ मारूक वृत्तान्त ए, तुमने सर्व सुणा ॥ अन्तरबल नाखे, मातजी ने दिशान्यु ॥ स्त्रीचरित्र अहो जुऊं, जिन वडीय वनाव्यु ॥ ५ ॥ त्रुट ॥ अहो पापिणी ए मायिणी मायिनी, इह दर पूछे एम ॥ नोहने मोनी दिवमा जूठी, प्रेमदीन ज्यु वाणे ॥ ६

ता परे उत्तय कुल हरणी,गर्हित हिसा जेहवी ॥ सगीनिदीक्षा परे न
हे, धर्मवात ते केहवी ॥ ६ ॥ ए चितानु शु, काम कह्यो ठे माहारे ॥
प राजा किणी परे, वात एह अवधारे ॥ अथवा यौवन वय, माहरु
ली माने ॥ खरी वात सजलावु, जइ राजाने काने ॥ ७ ॥ त्रु० ॥ अ-
वा राणी मारी जाये, तिणे ए पण किम करीये ॥ एक तो मनवंछित
ल न कह्यु, वली सकटमा धरीये ॥ राजाने जो खरु न जाणु, तो कु-
कलक ते आवे ॥ तोपण एहवु काम ते न करु, जिणे परपीडा थावे
८ ॥ कहे विनयधर सुणो, मुजने शु फरमावो ॥ कुमर कहे तुमे तो,
य हुकम बजावो ॥ मुज जीवे शु ठे, एहवु जाखे जाम ॥ श्रीहर नामे
ाह्मण, मांग ठींक्यो ताम ॥ ९ ॥ त्रु० ॥ वली ब्राह्मण बहु मोहोटे
ब्दे, वातो करता चाले ॥ शु कहीये घणु दोष न एहने, सम करीये
ा आले ॥ सुणी विनयधर बोल्यो एणी परे, तुममा नहीं कोइ दोष ॥
तिकादेश ठींक ए शब्दे, काढ्यो सघलो शोष ॥१०॥ कहे शु बहु जाणुं,
ह्यो जेहवु होय तेह ॥ विनती नृपतिने, देवरावु दक्ष देह ॥ कह्यु में शुं
ाणु, अत्रा कहे ते प्रमाण ॥ तव कहे विनयधर, मुजने थयु विज्ञाण
। ११ ॥ त्रु० ॥ मुजने थयु विज्ञाण वचने, एहज दुष्ट ठे राणी ॥ जइ
ाजाने करु विनति, करे सहु सम जाणी ॥ एम कही छगयो ते जेहवे,
तेहवे में वेसाड्यो ॥ में कह्यु अत्रा उपर एवडो, न करो कोप नकाड्यो
। १२ ॥ एह चचल जीवित, काजे केम दुःख दीजे ॥ कहे विनयधर सु-
णी, एवमी वात केम कीजे ॥ मूको मुज जाउ, तव में एम जाणीजे ॥
एह वाते आग्रह, अशमात्र नवि कीजे ॥ १३ ॥ त्रु० ॥ एम करता जो
पसची करशो, तो हु तजशु प्राण ॥ एम नाजखीने रोवा लागो, विनयधर
असमान ॥ अहो अविचार्यु कारज नृपनु, एहवा पुरुषना शका ॥ में
कह्यु तातने एम न कहीये, कर्मपरणति मुज वका ॥ १४ ॥ तव विनयधर
कहे, हु पापी धिक्कार ॥ हु शु करु जाण्यो, में कह्यु तु आपाकार ॥ कर
नृपनी आपा, तव बोल्यो ते तखार ॥ जिन निन शु बोल्यो, किम तुम
कर्म विकार ॥ १५ ॥ त्रु० ॥ धन्य तुमे कृतपुण्य गुणाकर, सुरनर नरि-
ख्यो दाता ॥ जो नवि विनवु राजाने, अनुकपाए राता ॥ उगारजी राणी-
ने जाणो, तो चितवो उपाय ॥ तुम्हने उगारी आपडु,

वली राय ॥ १६ ॥ में कयु विचारी, जो न करे नृपआण ॥ तो वसुभू- तिशु, जाउ देशान्तर ठाण ॥ ते मान्यु तदारे, बोले तव कोटवाल ॥ आज सुवर्णभूमि, जाय जाज ततकाल ॥ १७ ॥ मु० ॥ सन्ध्यासमये तिहु नीक- लीया, साथे वली कोटवाल ॥ प्रवहण स्वामी समुद्रदत्तने, सोंप्या थइ ऊजमाल ॥ वली नसामण दइ मुज प्रणमी, कहे मुज कोप न करजो ॥ नेत्रे नीर झरता वलता, कहे तनुजतन ते करजो ॥ १८ ॥ चाल्यु हवे प्रवहण, उदयोगी कर्णधार ॥ वसुभूति पूछे, मित्र ए कशो विचार ॥ तव सहु संभलावे, धनगवती अधिकार ॥ नृपने नवि जाण्यु, धनगवती दरबार ॥ १९ ॥ मु० ॥ सुवर्णभूमि पोहोता अनुक्रमे, दोय मासने काल ॥ उतरी श्रीपुर नगरे पहोता, पचमे ग्रउ ढाल ॥ पद्मविजये ठही नाभी, समरादित्यनो रास ॥ गुणवता गुण गाता होवे, घर घर लीलविलास ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ १३५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रेतांबिकावासी मल्यो, समुद्रदत्त सुत सार, वाणिज्य अथ आ- वीउ, मनोरथदत्त मनोहार ॥ १ ॥ माहरो बालथी मित्र ते, सन्नम पा- म्यो मोर, निश्चय उठवी प्रणमीयो, हर्ष विषाद मन होय ॥ २ ॥ पूछ- तां भाउ मुज मने, निज घर आव्यो तेह ॥ भोजन उत्तर एम भणे, कारण आगल केह ॥ ३ ॥ राय निवदे नवि रह्यो, आव्यो आणे गाम, माउल थाशे न हवे, सिंहउदहीरनो स्वामी ॥ ४ ॥ तिहां जातु मुज नवविधि, तोता जातु विहार, मनोरथदत्ते मानीयु, जिम भाग्यो महाराज ॥ ५ ॥ मित्र विजोगना भावथी, काढ्यो बहु तिणे काल, उनागर लही एक दिन, मुजने कहे मराउ ॥ ६ ॥ जातु तुमारे चोपडु, जो प्रवहण जाये निर- मुन्द सिंगाने कानरे, कटवा दिवस अतीत ॥ ७ ॥ आजज माहरे वा- हणु, में जाण्यु एम आम, पट एक आवी आपीयो, उत्पत्ति जाणे आम ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ मानसी ॥

॥ बोलिये हमा रे विषय न राचीये ॥ ए देशी ॥

॥ सेतुक महित ए वट स्वामी सुणो, उडावि जव एह ॥ कोइ दे- हेरे रे आरवने वली, नर में दीठु सनेह ॥ १ ॥ पुन्य प्रमाणे रे मली सुख करवे ॥ ए आंकणी ॥ न वर ठइयो रे वेलदांत निपन्यु, उत्पति

निरजामके सहु ताम ॥ १७ ॥ पुण्य० ॥ तेरशमे दिन सायरमा जता, चढीउं मेघ अकाल ॥ वीज कबूके रे गरजारव करे, अधकार असराल, ॥ १८ ॥ पुण्य० ॥ सायर कपे रे कल्लोल उछले, वायु विषमा रे वाय ॥ मदमत्त गज परे वश नहीं जिहाज ते, निर्यामक ते खेदाय ॥ १९ ॥ पुण्य० ॥ तिणे समे ठेया रे म धीरज धरी, सढना दोर सवाली ॥ सह सकजो रे नागर मूकीया, पण सागर विकराल ॥ २० ॥ पुण्य० ॥ वार गुरु तिणे कर्मविपाकथी, नाव्यु जिहाज तिवार ॥ सघला अलगा रे थया विजोगीया, पाम्या दु ख अपार ॥ २१ ॥ पुण्य० ॥ फलक लयु मैं रे आयुसवधथी, दिवस थया तिहां त्रण ॥ तट देखीने रे नीकलीउं हवे, जाणु पुण्य अगण्य ॥ २२ ॥ पुण्य० ॥ ॥ पचम खडे रे सातमी ढाल ए, पूरण हुइ सुप्रमाण ॥ पद्मविजय कहे भवसायर तरो, जिम होय कोडि कल्याण ॥ २३ ॥ पु० ॥ सर्व गाथा ॥ २०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वसुभूति तवे जइ, चितवे इणी परे चित्त, वसुभूति रह्यो वेगलो, माहरो वल्लभ मित्त ॥ १ ॥ पडीउं एहवे पयोनिधि, कहो जीव्यो हु केम, मित्र विना हवे माहरे, नवि जीववु ए नेम ॥ २ ॥ अथवा मुक पर एह पण, जीवनो होय जोय, तो मलवु थाय तेहशु, हवे जो नावी होय ॥ ॥ ३ ॥ जव जोयु तव जाणीउ, पलट्यो नहीं ते पट्ट, विस्मय पाम्यो व गशु, प्रेम थकी परगट्ट ॥ ४ ॥ उत्तर सनमुख आवीउं, भूवनी वेदनी वाली, गिरि नदीने काठे गयो, फनसफलादि सवाली ॥ ५ ॥ आहार करी अवनी तवे, रह्यो रायकुमार, नेगो तव जोके निद्रु, सारम दीठा सार ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ धन दिन वेला धन घडी तेह ॥ ए देशी ॥

॥ दीठा रे सारस मारवी दोय, क्रीडा रे करता खटपटी अति घणी रे ॥ चिंतु रे मनमाव रे व्यार्धीन, जावा रे नवि रहे वेगली निज धणी रे ॥ १ ॥ सुन्दर रे काठे काल निचिन, एम विचारता महसकिरण गया रे ॥ सध्यानी करणी करी ते कुमार, देवगुरु प्रणमी नाम पामे नवी र ॥ २ ॥ बहु दिन खेदथी आवी रे निद, रात गइ ने जाग्यो हु तदा रे ॥

णमी रे देवगुरुना पाय, चाल्यो वनवननी शोभा जोउ यदा रे ॥ ३ ॥ गिरि नदीकाठे जाउ रे जाम, दीठी रे पद्मपति सोहामणी रे ॥ चक्राकु-शरेखा शोभित तेह, लघु ने सुकमालथी जाणी स्त्री तणी रे ॥ ४ ॥ चाल्यो पगले पगले तेह, दीठी रे दूरथी तापसनी कनी रे ॥ वाकला पहिस्या वल्कने ठामि, सोवनवरणी देह ते अति बनी रे ॥ ५ ॥ अलते रे रजित चरणसरोज, रशना रे योग्य नितब सोहामणा रे ॥ सुजन चित्त परे ना-भी गम्भीर, सुकृतपरिणाम परे उन्नत कुच घणा रे ॥ ६ ॥ तपथी विनि-र्जित मोह अंधार, हृदयमा पेशण वेण मिषे थयो रे ॥ रक्त अशोक परे कर जास, नयन ते हरणीनेत्र लाग जयो रे ॥ ७ ॥ गलस्थल चद्रमडल परे जास, अधर ते पाडल कुसुम शोणित परे रे ॥ ठावमी वाम करे रही जास, फूल रे विणती तेह दक्षिण करे रे ॥ ८ ॥ देखीने चिंतव्यु मे इण जाति, वनदु ख सहे पण लावण्य केहवु रे ॥ आघो जइ जालातरे जोयु जाम, देखु रे रूप विलासवती जेहवु रे ॥ ९ ॥ वनवासे रहेती एटलो फेर, स्मरणपवने काम सधुकीउं रे ॥ फूलनी छावडी लेइ जव जाय तब हु वि-कार गोपवी टूकीउं रे ॥ १० ॥ प्रणमी में जाण्यु तपनी थाउं वृद्धि, तामलिप्ति नगरीथी आवीउं रे ॥ श्वेतावी नगरी वासी हु जाण, सिहलद्वीप जणी हु धावीयो रे ॥ ११ ॥ किहाज नाग्यु थयो एकाकी एम, कह्यो कोण था-नक ए किहा रह्यो तुमे रे ॥ सव्रात घड करी तिणें रे दृष्टि, वचननो उत्तर नवि दीधो किमे रे ॥ १२ ॥ चाली रे निज आश्रम जणी तेह, मनमा में चिंत्यु नारीने एकली रे ॥ व्रलीय तापसिणी एहवु शु काम, वली रे पूछीश कोइ नरने अटकली रे ॥ १३ ॥ वलीउं रे पाछो आव्यो ते ठाम, वली रे विचार्यु जोउ ए जाने किहा रे ॥ जोता रे दीठी मन-रचाली, चालती पाउल जोनी ते तिहा रे ॥ १४ ॥ नवि रे दीठो कोइ प्राणी ताम, मूकी रे ठामनी वेणि [illegible] । पहेल्यु पण वारन्यु पहे-लु रे फेर, बाहु करी उची अगने [illegible] ।वे नगासा का-मविकार, में मन चिंत्यु ए शु [illegible] रुद्ध विचार शो मुक, एम करी चाल्यो [illegible] प्राणवृत्ति करी दिवस गमाय, सूतो रे [illegible] द्वीप एक कुसु-मनी माल, आपीने [illegible] निपजावी

ए ठे रे माउ, थापी रे मे तुफने तिणे लीजीये रे ॥ मे पण लेइ थापी
स्वदेश, पाठजे पहोंरे देवी जागीजीये रे ॥ १८ ॥ मनमा हरखी चिंतवु
एम, कन्यानो लाज सुपन ए सूचवे रे ॥ अटवीमा केम होशे मुज ला
न, चिंतव्यु रे दक्षिण नेत्रने फरकवे रे ॥ १९ ॥ स्वप्न शकुन अनुमार
रे एम, चिंतवु अन्य परिचय मुज नहीं रे ॥ महारे रे विलासवतीनु रे
काम, पूर्वे निपनी माला देवे कही रे ॥ २० ॥ तापसिणी दीठी तम अ
नुहार, विधि रे विचित्र प्रकारे घटे सदा रे ॥ कोण जाणे तेहज हाथ
नो होय, नहीं तो किम मदनविकार ए करे तदा रे ॥ २१ ॥ "यत ॥
सुघटित घटितानि घटयति, सुघटित घटितानि जर्जरीकुरुते ॥ विधिरेव
तानि घटयति, यानि पुमानेव चिंतयति ॥ १ ॥" तोपण अनिणी साथे
रे जोग, न घटे पण एहनु दर्शन पामीउं रे ॥ एणे कलु माहरे करतु ग
तेह, जयो रवि पूर्वे दिशावधू कामीउं रे ॥ २२ ॥ चक्रवाकना टत्रा रे
वियोग, पचम मंद सातम्रनो गुणी रे ॥ समरादित्यना रासमा एह, बा
रमी ढाल ते पद्मविजय नणी रे ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ २३५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राग धर्यो रमणी तणो, रमणिक देखी रान, कामज्वरथी कानने,
जोवा लाग्यो जान ॥ १ ॥ रमणी जाना कुमरने, क्रीडे गयो बहु काल,
रुपा नउं थावी करी, वेगो हु नृपबाल ॥ २ ॥ सूका पत्र तणो सुपरा,
ठारी अवसर थाराव, रत्नी कोट विस्तारीने, हर्षे जोयु दान ॥ ३ ॥
नन्दवने थावी नहा, तापसिणी एक ताम, नूतितिलक नामे वस्तु, क
नन्दन कर राम ॥ ४ ॥ पुत्रजीव माला प्रगट, जमणा करमा जोय, वर
कडार मालो उत्तमी, वल्कलवस्त्र वर होय ॥ ५ ॥ नयनामित छग नवु
वतु, अतिधवने अरहोय, देखी गोपव्यो मदनने, प्रणम्या पाद विशेष ॥ ६ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ राग गोडी ॥ वे हर जोमी नाल रे, नडा वितवे ॥ ए देशी ॥
॥ कुउने देखी नाल रे, थालु थाशीया ॥ वेखी चिरजीव कही ए
ज १ ॥ ए शुं कुमरने कुउ रे, एम मे चिंतव्यु ॥ अथवा जाती होय कही
ए ॥ २ ॥ शु नवि जाणे एह रे, एवा अवसर कहे ॥ वेगो कुमार ए ब
नवे ए ॥ ३ ॥ पूरा रमी लेइ रे, वेखी तापसी ॥ कहे ६ बहु ते नाव

ए ॥ ३१ ॥ कमण्डल जल छांटे रे, नेत्र उघामीआ ॥ लावण्यथी कुमरती लही ए ॥ ३२ ॥ धीरी था तु वत्स रे, अमे तापस अछु ॥ एम कही फल आपी दीआ ए ॥ ३३ ॥ स्वरूप्यु मे प्राणे रे, लइ आश्रम गइ ॥ देखा डी कुलपति तणी ए ॥ ३४ ॥ कुलपतिने परणाम रे, करीने ते रही ॥ तव आशीष दीये कुलपति ए ॥ ३५ ॥ पचमे खडे ढाल रे, नवमी ए कही ॥ पद्मविजय एन रासमा ए ॥ ३६ ॥ सर्व गाथा ॥ २७७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ किहांथी आव्या ते कहो, मे पुछ्यु एम जाम, तामलितिथी ते कहे, में पुछ्यु फिरी ताम ॥ १ ॥ किहां जाउ ने कुल किश्यु, तव नवि बोली तेह, नासी दीर्घ नि श्वासने, तव म चित्यु एह ॥ २ ॥ उत्तम कुलमा ऊपनी, आवे नहीं निर्ण वाच, पूछीश कुलपतिने पछे, पामीश तिहां जवाप ॥ ३ ॥ कुलपति आवश्यक करी, सध्या समय समाधि, पासे कुलपति पूछीयु, वंदीने निरावाध ॥ ४ ॥ कन्या ए कुण किम लही, एह अवस्था आज, आगले केहवु एहने, कहो निपजशे काज ॥ ५ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ साजन्य तु सजनी मारी, रजनी क्या रमी आवी जी ॥ ए देशी ॥

॥ मुजने कहे कुलपति साजन्य तु, तपपरभावे जाणु जी ॥ तामलिति नरपतिनी पुत्री, रूप तणु जे ठाणु ॥ १ ॥ नृपसुत सुणीये जी ॥ ए आंकणी ॥ ननीहेडे एम अवस्था, पामी ते निरधार जी ॥ म पुछ्यु किम कन्या नही ए, कुलपति कहे तिवार ॥ २ ॥ नृप० ॥ द्रव्यथी कन्या जाते परणी, में पुछ्यु किम एम जी ॥ तव सघनु धुरथी संभलाव्यु, प ति नावालो सेम ॥ ३ ॥ नृप० ॥ एक दिन सुणीने लोकवयणथी, कुम रने मार्यो रात जी ॥ इणे चित्यु मोह्ल करीने, शी गति हवे मुज थात ॥ ४ ॥ नृप० ॥ तेह्व समशाने जइ नाइ, करवो प्राणवियोग जी ॥ प्राण अधिक मुज वहुभ केरी, मान करे एम सोग ॥ ५ ॥ नृप० ॥ अरधी राते ते एकाकिनी, वरनाथी ते चाली जी ॥ तस्कर लूटी अचल साहसने, वेगावी लेइ चाली ॥ ६ ॥ नृप० ॥ जिहांन वेमारी वनरकुले, जाता वा ल्यु जिहान जी ॥ एह पाटावु पहुना करना, आव्यु जीवित स्थान ॥ ७ ॥ नृप० ॥ सवे दिवसे ए इह पामी, हवे आगल सुणो मान जी ॥

नर्ता लहेशे जोग जोगवशे, थाशे जगत विख्यात ॥ ८ ॥ नृप० ॥ परत्न-व साधी मानवनो नव, सफलो करशे एह जी ॥ एम साजलीने हु घ-णु हरखी, राति गइ जब तेह ॥ ९ ॥ नृप० ॥ सूरज उदये में कह्यु कु-मरी, ए ससार अनित्य जी ॥ यौवन चचल अथिर ए लखमी, धैर्य धरे सुविदित ॥ १० ॥ नृप० ॥ सा कहे स्वामिनी साचु जाणो, व्रत आपो उपगारी जी ॥ में कह्यु यौवन वय छे पहेलो, मदन न शकीये वारी ॥ ॥ ११ ॥ नृप० ॥ ज्ञान सूर्य कुलपतिने पूछ्यु, तुज वृत्तात मन आणी जी ॥ अतीत अनागत सघलु जाण्यु, तुज पति मिलन प्रमाणी ॥ १२ ॥ नृप० ॥ नर्त्ता तुज जीवे छे कुशले, साभली विस्मय धारी जी ॥ थण हु-ता पण कटक युगल दीठे, कलपनाये उतारी ॥ १३ ॥ नृप० ॥ हार ल-ता देवा जब कोटे, हाथ नाख्यो तब नाहि जी ॥ चित्त ठामे आव्यु तव विलखी, थइ अति सभ्रम माहि ॥ १४ ॥ नृप० ॥ में जाण्युं सभ्रम मत कर तु, ताहरु चित्त उदार जी ॥ ग्तनो अवसर हमणा तुज नहीं, साभल्यो एह विचार ॥ १५ ॥ नृप० ॥ तापसकन्या वेषे विचरे, एम क-रता गयो काल जी ॥ एक दिन कुलपति सिद्धपर्वते, गया दर्शन किर-पाल ॥ १६ ॥ नृप० ॥ ए तो फूल वीणवा चाली, मोन्न तिहाथी आवी जी ॥ पाठल जोती प्रस्वेदे करी, देहनी चीनी लावी ॥ १७ ॥ नृप० ॥ मे पूछ्यु तु किम खेदाणी, तब ते बोली एम जी ॥ मारा बाधव सानग्या मुजने, तेहनो मुज घणो प्रेम ॥ १८ ॥ नृप० ॥ में जाण्यु कुलपति आ-वण दे, तुज बाधव मेलवशे जी ॥ एम सुणी मोन करी ते दिनथी, निज आतम नहीं वशे ॥ १९ ॥ नृप० ॥ अतिथि नवि बहु माने देखतु, पूजन पण नवि करती जी ॥ फूल वीणवा पण नवि जावे, नविय हुताशन न-मती ॥ २० ॥ नृप० ॥ विद्याधरना जुगल आलेखे, सारसजुगल वे जोवे जी ॥ स्त्री नरनार पुराणी वातो, सुणवा तत्पर होवे ॥ २१ ॥ नृप० ॥ में मन चिन्त्यु यौवन आव्यु, यौवने मद बहु थावे जी ॥ मदथी मदनवि-लास मदनथी, केम विकार न थावे ॥ २२ ॥ नृप० ॥ 'यत ॥ नवि य-उिपविषहोही, पाएप तिहुअण निनो जीवो ॥ जो जोव्वणमणुपत्तो, वि-यार रहीउं सया होइ ॥ १ ॥ "दशमी ढाल ए पचम खडे, मदन परा-

जय करशे जी ॥ पद्मविजय कहे ते भविप्राणी, भवसायर लघु करशे ॥ २३ ॥ नृप० ॥ सर्व गाथा ॥ ३०५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चउगी नागरवेलनी, वृक्ष अशोक अवधारी, हसली कीडा हसगु, जोडे दीठ जिवार ॥ १ ॥ नासी निशामो नीकली, तपोवन बाहिर तेह, देखी जाती हस्तिथी, सखस्यो मुज सनेह ॥ २ ॥ आज न देखुं एहनो, अवखतनु आकार, जोउ किहां ए जाय छे, चाली हुं एम विचार ॥ ३ ॥ छटकी सखीने वायडी, गइ जिहां कुसुमनी जाली, चपलता रायो चाप शु, वधती चिहुं दिश लागी ॥ ४ ॥ अशोक वृक्ष तले अवनीए, जइ उभी रही नाम, कदलीवन अंतर करी, रही हुं पूछे राम ॥ ५ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ उठ्य कलावण नर घणो छे, दारुकारो मूल्य भताव्य ॥ ए देशी ॥

॥ मोहडे सरखी रोवती छे, बोले एणी परे वाणी ॥ सांभळजो वन देवता छे, एह ते तेहज वाण ॥ १ ॥ मारा कर्मविपाकनी छे ॥ ए आंकणी ॥ गति नवि जाणी जाय ॥ प्राणवल्लभ विण माहरी छे, गति ते शी परे थाय ॥ २ ॥ मा० ॥ आर्यपुत्र मिथ्या इहां छे, तापसिणी मुज जाण ॥ प्रणम्यो ने उंबरावीउं छे, नाम अने निज वाण ॥ ३ ॥ मा० ॥ में उत्तर नवि आपीउं छे, नारी मतिथी रे जाण ॥ मदन भेदाणी बोली नहीं छे, हवे कहो गति मुज कुण ॥ ४ ॥ मा० ॥ पूठे में जोयु घणुं छे, पण नवि दीठो कोय ॥ आर्यपुत्र ते के नहीं छे, देव वेषधर होय ॥ ५ ॥ मा० ॥ हवे तो जे होय ते होजो छे, पण न वियोग खमाय ॥ मदन अनल बळती थकी छे, कोइ रीते न जीवाय ॥ ६ ॥ मा० ॥ अयमता सता वेधनी छे, नाखीने गळपास ॥ मरवुं माहरे इणी परे छे, जीववानी नहीं आश ॥ ७ ॥ मा० ॥ सार करे जो मुज पति छे, तापसिणी मुज मान ॥ मरणीने मववागजो छे, ए माहरो अवदात ॥ ८ ॥ मा० ॥ आजधी हुं नवि कही शकुं छे, एम कही दीधो पास ॥ देवगुरु प्रणाम करी छे, कुवाम्यो ते निराश ॥ ९ ॥ मा० ॥ एण अवसर हुं दोडती छे, जइ बेठो तस पास ॥ पत्रोछे पण जायना छे, नवि पूठे शाबास ॥ १० ॥ मा० ॥ तव सा चिंते चिगु मने छे, मानव्यु मरवुं एण ॥ मुज नींद

रीने कहे हे, नवि कह्युं वज्ञावशेण ॥ ११ ॥ मा० ॥ करगो
परि हे, तव मे जाएयु तास ॥ तपसी कोप करे नही हे, धीरज
॥ १२ ॥ मा० ॥ कुलपति वचन अमोघ ठे हे, तुरतज
आश्रम प्रत्ये जाइये हे, गया अमे इम करी नेह ॥ १३ ॥
स कुमर जोवा जणी हे, मोकलीआ तिणी वार ॥
का हे, बेठी पासे नारी ॥ १४ ॥ मा० ॥ तापस
नवि दीगे कोय ॥ कुमरी सहुने जलावीने हे,
॥ १५ ॥ मा० ॥ जवितव्यताए देखामीयु हे, मुजने
पद चालो तुमे हे, जीवाडो एह गुरु ॥ १६ ॥
चालीउ हे, आगल गइ तिणी वार ॥ आसन
तिण लने नारी ॥ १७॥ मा० ॥ विलासवती
याय ॥ सखीउ साथे मोकले हे, अर्थ ते
थयो मध्याह्नसमय जदा हे, फनसादिक
वीने हे, आवी तापसिणी ते गाण ॥ १८ ॥
रता हे, अम घर पोहोता आय ॥ श्री
वल्कल फल खाय ॥ २० ॥ मा० ॥ पण
की जीवित पाहिं ॥ विधिए पूर्वं दीव
॥ २१ ॥ मा० ॥ एम कहीने रोवे
एम न कीजीये हे, जाणो स्वल्प
पावीआ हे, फेरा फरीआ रे तान ॥
सुदरवन नाम ॥ २३ ॥ मा० ॥
स ॥ सूता पल्लव साथरे हे,
परे रजनी निगमी हे, एम
तपी हे, देखे श्री असराउ ॥
नाची अचारमी डाल ॥
॥ २६ ॥ मा० ॥ सवे गाना ॥

॥ विनता शोभा
महीके, उत्तर न दीचे

नारी, अचरिजथी एम उंढीउं, तरुणी न देखे तिवार ॥ २ ॥ आयंपुत्र इहां एम लवे, पत्नी ते मूर्छा पामी, मन चिंत्यु मे माहरे, कीधु अवगु काम ॥ ३ ॥ पट उंटयो पाठो करी, सिच्यु जले शरीर, सज्ज थइ कहे श न्दथी, नयणे झरती नीर ॥ ४ ॥ नवि दीठा तुम नयणथी, तव म जाण्यु ताम, हु शु जाणु एहमा, नासे नारी विलास ॥ ५ ॥ केम न वि जाणो कहो तुमे, सर्व कह्यु तव साच, कामिनी पण परीक्षा करे, अवरनी वात अवाच्य ॥ ६ ॥ काल गमावी केटलो, एक दिन म कह्यु एम, सुण सुंदरी निज देशमा, पोहोचीए तिम करो प्रेम ॥ ७ ॥

॥ ढाल नारमी ॥

॥ अढीआनी ॥ देशी ॥

॥ पूछे जगवती ताम, जश्ये निज पुर गाम ॥ जो आणा करो ए, मंदिर नवर धरो ए ॥ १ ॥ तेणीए आणा दीध, निजपोत ध्वज कीध ॥ केटक दिन गया ए, केलि करे सया ए ॥ २ ॥ इण अवसर तिहां आय, निरजामक चित्त लाय ॥ नावडे नेर्माने ए, ग्यानीमा पेसीने ए ॥ ३ ॥ सुख्ने कहे एम वात, दीप कटाह विख्यात ॥ रहे ते वाणीउंए, सायर जाणीउं ए ॥ ४ ॥ मलयदेश नणी जाय, तुम ए ध्वज देखाय ॥ मोकलीआ अमे ए, चालो तिहां तुमे ए ॥ ५ ॥ म कह्यु मारे नारी, कहो तो आवीयें इहार ॥ ते कहे चालीयें ए, विलंब न नाखीये ए ॥ ६ ॥ पोहोता मोटाई जिहाज, सारथवाह समाज ॥ तिणे आदर कर्यो ए, शुन स्थानक धर्यो ए ॥ ७ ॥ एक दिन पाछलो जाम, रात्रि शेष रही ताम ॥ लघुशंका थइ ए, उठ्यो हु तइ ए ॥ ८ ॥ तिण समे सारथवाह, जाग्यो देखी आह ॥ [illegible] ते ए न्यखी ए, नारी न दृखवी ए ॥ ९ ॥ राति समय ते एह, कोइ न जाणे तेह ॥ दरियामा रुळ ए, नारी अंगीकरु ए ॥ १० ॥ लघुशंकाने काम, बेठो जब तिणे ठाम ॥ नाख्यो हु पडवो ए, पुण्ये फलक जड्यो ए ॥ ११ ॥ पंच रात्रि रह्यो मांहि, मलयकूल उगांहि ॥ जलनिधि उतर्यो ए, तव मने अवतर्यो ए ॥ १२ ॥ में मन चिंत्यु एम, सारथवाहे कह्यु केम ॥ नारी सोने करी ए, नहीं प्रयोजन वरी ए ॥ १३ ॥ एह विलासवती नारी, मुझ विजोग चित्त धारी ॥ नहीं जीवित धरे ए, आपघात करे ए ॥ १४ ॥ नवि जाणे ए तेह, कोई केवल नेह ॥ नारी विना सही ए,

जीववु मुज नहीं ए ॥ १५ ॥ निजपादप तिहां देखी, गयो हु सर्व उवेखी ॥ मरवा मन करी ए, जोयु दिश फरी ए ॥ १६ ॥ दीठु दूरथी ताम, सरोवर एक अभिराम ॥ चकवे बोलतु ए, मानु ए रोवतु ए ॥ १७ ॥ भ्रमर गुजारवे गाय, मानु वली नाटक थाय ॥ कल्लोल मिष धरी ए, उची बाह करी ए ॥ १८ ॥ दीठो हस तिहां एक, नारीवियोगी छेक ॥ करुण स्वरे रुवे ए, आंखे आसु चुवे ए ॥ १९ ॥ क्षण रोवे क्षण गाय, अन्य हसी जोइ धाय ॥ विभ्रम आणतो ए, निज स्त्री मानतो ए ॥ ॥ २० ॥ जाणी हसी अन्य, खेद करे ते विखिन्न ॥ मरवा मन करे ए, शोक घणो धरे ए ॥ २१ ॥ मूर्छा पामे तेह, वली चेतन लहे जेह ॥ इ-त्यादिक सहु ए, दीठा लक्षण बहु ए ॥ २२ ॥ कस्यो विचार में ताम, डु खीउं ए पण आम ॥ एम जाणी करी ए, पखिते परिहरी ए ॥ २३ ॥ इणी परे चिंतवु जाम, फिरतो हस ते ताम ॥ हसलीने मल्यो ए, देवे विरह टल्यो ए ॥ २४ ॥ सा पण डुर्नउ अग, कूजित न करे चग ॥ शोके शक्ति नहीं ए, निहु हरख्या सही ए ॥ २५ ॥ मुझ मन चिंता थाय, जीवता सपद्र पाय ॥ विरह दूरे टले ए, कांता आवी मले ए ॥ ॥ २६ ॥ कुउपतिए कहु नारी, सुख जोगवी ससार ॥ परजव साधशे ए, जव सफलो थशे ए ॥ २७ ॥ तिणे मरशे नहीं नारी, कर्म विचित्र व्यव-धार ॥ एहने खोलवी ए, नवि जाये जोलवी ए ॥ २८ ॥ नारिगफलनो आहार, करीने फिरे अपार ॥ सायरने तटे ए, डुःख जिणथी मिटे ए ॥ २९ ॥ पचम खडे ढाल, बारमी एह रसाल ॥ पद्मविजये कही ए, जवि-जने सदहीं ए ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥ ३७२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अर्ध जोजन गयो आगले, आवतु फलक ते एक, दीवु ते मे दृष्टि-थी, तीरे गयो अतिरेक ॥ १ ॥ तीरे आव्यु ते तुरत, विलासवती निल-ग्ग, नयणे दीठी नेहशु, उपन्यो अति उमग ॥ २ ॥ अवलाए मुझ उं-लख्यो, आश्वासना मे आपी, पूछ्यु ए शु निपन्यु, पत्रणे ते मुझ पाप ॥ ३ ॥ स्वामी पखीथा सायरे, जाण्यु सघले जाम, सार्थवाह धरी शोक ने, कहे मुझ पत्नवा काम ॥ ४ ॥ परिजनशु हु परिवरी, वाल्यो सारथ-वाह, रात गइ उग्यो रवि, थयु तोफान अथाह ॥ ५ ॥ जिहाज जाग्यु

जन सहु गया, म तुम पुण्य प्रमाण, पाम्यु तिहां एक पाटीयु, जलनि धि लघी जाण ॥ ६ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ ढोला रह्यो तो हु राधु खीचमी ॥ ए देशी ॥

॥ तिहां मे मने एणी परे चिंतव्यु, यहो मायानी शिरदार ॥ सा जन सुणो हे ॥ अध्यवसाय हीणा घणा, ए सारथवाह असार ॥ १ ॥ सा० ॥ जुर्ज जुर्ज कर्मविटंबणा, काय कर्म करे ते होय ॥ सा० ॥ जु० ॥ ए आंकणी ॥ अथवा ए अचरिज को नहीं, काय कारणथी होय काज ॥ सा० ॥ पण विण कारण नवि होय, काय पापथी केम होय राज ॥ ॥ सा० ॥ २ ॥ जु० ॥ पूछे विलासवती तुमे केम पड्या, तव मे कीध मन विचार ॥ सा० ॥ दोष न कहीये पारका, एम चिंतवी बोल्यो तिवार ॥ ॥ सा० ॥ ३ ॥ जु० ॥ परमादे ॠ पमी गयो, जड्यु फलक ते तुऊ परे मुऊ ॥ सा० ॥ उतर्यो जलनिधि अनुक्रमे, फरता तुऊ मलीर्ज ए गुऊ ॥ सा० ॥ ४ ॥ जु० ॥ कहे नारी हु तरशी तु घणी, तव म कह्यु सांभल वात ॥ सा० ॥ सरोवर ढूकडु इहां थकी, चालो तिहां जइये सुप्रभात ॥ सा० ॥ ५ ॥ जु० ॥ काय नारी नितवना भारथी, वली समुद्रमा उपनो थाक ॥ सा० ॥ थोडु चाली तव थाकती, नवि चाली शकु सुणो नाथ ॥ ॥ सा० ॥ ६ ॥ जु० ॥ तव म्हे कह्यु ए वड तले, तु बेश लेइ आवु नीर ॥ सा० ॥ नलिनीपत्र डमीर्ज करी, तव गोली यइ ते धीर ॥ सा० ॥ ७ ॥ ॥ जु० ॥ तुम दर्शनना सुख आगले, मुऊ तरष न पीडे काय ॥ सा० ॥ में कह्यु धीरज नारीने, जाणजे जल लेइने आय ॥ सा० ॥ ८ ॥ जु० ॥ नयनमोहन पट उंचर लु, जिम अटवीमा चिंत न थाय ॥ सा० ॥ पह रावय्या पानवीं, न्यग्रोध हेठल ते गाय ॥ सा० ॥ ९ ॥ जु० ॥ नात म नाबी वड थकी, गयो जल लेवा तेणी वार ॥ सा० ॥ जल फनसादिक फल प्रते, लेइ आव्यो वर आहार ॥ सा० ॥ १० ॥ जु० ॥ नयनमोहन पट मूकी नु, पीसे पाणी लाव्यो तेह ॥ सा० ॥ तोही उत्तर नवि दीये, में कह्यु हाली करो केह ॥ सा० ॥ ११ ॥ जु० ॥ तोपण जब बोली नहीं, तव मे एम चिंतन कीन ॥ सा० ॥ इहां तो ए रमणी नथी, अन्यथा कम बोल न दीध ॥ सा० ॥ १२ ॥ जु० ॥ सांभले फरयो कर जटा, तोरव

नवि आवी हाथ ॥ सा० ॥ वली नावु लोचन फरकीयु, पमीयु करमाथी पाथ ॥ सा० ॥ १३ ॥ जु० ॥ खेद लह्यो शका थइ, खोलवा मामी ते नारी ॥ सा० ॥ देवी देवी मुख जपतो, किहा गइ मुज प्राण आधार ॥ सा० ॥ १४ ॥ जु० ॥ वेजुथले देखे तिहा, अजगरघसणी डु सठाय ॥ ॥ सा० ॥ ते अनुसारे हु चालीर्ज, दीठो वनगहन सठाय ॥ सा० ॥ १५ ॥ जु० ॥ फुल ठनि नेत्र रातमा, गलतो वली तेहज पट्ट ॥ सा० ॥ महाकाय अजगर तिहा, देखी थइ मुज चटपट्ट ॥ सा० ॥ १६ ॥ जु० ॥ मारी विलासवती पणे, तेणे अवसर मुज गइ शान ॥ सा० ॥ रात दिवस शीत उप्पने, न लहु वत्ति के रान ॥ सा० ॥ १७ ॥ जु० ॥ सुख डु ख उत्सव आपदा, नवी चालतो के रह्यो ठाय ॥ सा० ॥ काय मरण जीवित पण नवि लहु, ए अवस्था काय न कहाय ॥ सा० ॥ १८ ॥ जु० ॥ मूर्छाए धरणी ढल्यो, जापीये गया तिहा मुज प्राण ॥ सा० ॥ वली सायरनी लहेरे करी, चेतना लही रोठ अजाण ॥ सा० ॥ १९ ॥ जु० ॥ ए देह सोपु अजगर प्रत्ये, थाये उदरमा देवीसग ॥ सा० ॥ जब अजगर पासे हु गयो, तिणे सकोच्यु निज अग ॥ सा० ॥ २० ॥ जु० ॥ मे जाण्यु मुआ पण ठोडिवु, ए नारीनु मलवु थाय ॥ सा० ॥ अजगरने क्रोध पमाडवा, कर्यो मस्तक उपर घाय ॥ सा० ॥ २१ ॥ जु० ॥ जयथी तेणे पट पाठो वम्यो, लेइ नारी तेणे बहुमान ॥ सा० ॥ हृदये देइ मन चितवे, ए पटफासे तजु प्राण ॥ सा० ॥ २२ ॥ जु० ॥ प्रेम विलुद्धो ए प्राणीर्ज, मन चितवे आल पपाल ॥ सा० ॥ सुखीया निसनेही मुनि, जिणे ठोमी सयल जजाल ॥ सा० ॥ २३ ॥ जु० ॥ पचम खडे ए तेरमी, कही ढाल यति सुरसाल ॥ सा० ॥ कवि पद्म कहे श्रोता सुणो, सुणता होय मगलमाल ॥ सा० ॥ २४ ॥ जु० ॥ सर्व गाथा ॥ ४०३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सूती जिहा श्यामा हती, तिहा वन तजे ततकाल, शाखाशु फासो दीर्ज, करवाने में काल ॥ १ ॥ फुलायो हु जेटले, रुधायो तिणे रान, कठ तिणे कानन जम्यु, सघर्ला गइ तव शान ॥ २ ॥ पेसे गगन पातालमा, नयन ते नीकलीयाह, यननुकूल ते अनुजव्यु, मुजाणो मन माहि ॥ ३ ॥ पाणिवलने पातरे, खपन परे सुखवास, दीठो रुपि एक ढष्टिनी, सिचे

जउ आमान ॥ ४ ॥ चेतन पामी चिंतवु, अहो न मूऊं आज; तापसने कह्युं ए तुमे, कीधुं शाने काज ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ सोनाने केरु मारु बेड्लु रे लो, रूपला इंढोणी हाथ ॥

[illegible] मारा [illegible]जी रे ॥ हवे न छोडुं तोरी चाकरी रे लो ॥ ए देशी॥
[illegible] कहे सुरत [illegible] रे लो, दूरथी दीठो तुज ॥ मारा.[illegible]जी रे॥
[illegible] आवीयो रे लो, करुणा उपनी मुज ॥ मा० ॥ १ ॥ एम
[illegible] रे लो ॥ ए आंकणी ॥ कोइ उत्तम जन आचरे रे लो,
[illegible] ॥ मा० ॥ कारण पूछी निवारीये रे लो, चिंतव्युं एम
[illegible] ॥ मा० ॥ २ ॥ एम० ॥ उतावला आवता थका रे लो, [illegible]
[illegible] ॥ मा० ॥ [illegible] एम बोलतो रे लो, दोडी आव्या
[illegible] ॥ मा० ॥ ३ ॥ एम० ॥ [illegible] पास त्रूटी गयो रे लो, तुं पडीउं
[illegible] ॥ मा० ॥ [illegible] तुने रे लो, आयु प्रमाणे होय तेह
[illegible] ॥ ४ ॥ एम० ॥ [illegible] तुं कम आचरे लो, तापस पूछे एम ॥ मा०॥
[illegible] दीठो रे लो तापस कहे धरी प्रेम ॥ मा० ॥ ५ ॥ एम०॥
[illegible] रे लो, [illegible] मूकी [illegible] ॥ मा० ॥ [illegible]
[illegible] रे लो, [illegible] परपंच ॥ मा० ॥ ६ ॥ एम० ॥ [illegible]
[illegible] रे लो, [illegible] ॥ मा० ॥ [illegible] संसार असारता रे लो,
[illegible] ॥ मा० ॥ ७ ॥ एम० ॥ [illegible] सम आउखुं रे लो,
[illegible] ॥ मा० ॥ [illegible] सम [illegible] रे लो, [illegible]
[illegible] ॥ मा० ॥ ८ ॥ एम० ॥ [illegible] रे लो,
[illegible] ॥ मा० ॥ [illegible] रे लो, [illegible]
[illegible] ॥ मा० ॥ ९ ॥ एम० ॥ [illegible] रे लो,
[illegible] ॥ मा० ॥ [illegible] मुज मुआ [illegible] रे लो,
[illegible] ॥ मा० ॥ १० ॥ एम० ॥ [illegible] कहे तुमे [illegible]
रे लो, [illegible] ॥ मा० ॥ [illegible] रे लो, [illegible]
[illegible] ॥ मा० ॥ ११ ॥ एम० ॥ [illegible] रे लो,
[illegible] ॥ मा० ॥ [illegible] रे लो, [illegible]
[illegible] ॥ मा० ॥ १२ ॥ एम० ॥ [illegible] रे लो, [illegible]

बीजे दिन ॥ मा० ॥ तिहा चली में चिंतव्यु रे लो,प्रिया उपरे मुझ मन्न ॥ मा० ॥ १३ ॥ एम० ॥ ऊपा कस्यो में जेटवे रे लो, अहो अहो प्रमाद ॥ मा० ॥ विद्याधरे एम बोलता रे लो, जलप्यो धरी विषवाद ॥ मा० ॥ १४ ॥ एम० ॥ चदनलताना गेहमा रे लो, लावी आश्वास्यो तेण ॥ मा० ॥ रे महापुरुष शु तु करे रे लो, उत्तम आकारेण ॥ मा० ॥ १५ ॥ एम० ॥ कहे तुझ कारण शु अछे रे लो, तव में कह्यो सबध ॥ मा० ॥ बहुविध एह बतावीउं रे लो, कामित पमण निबंध ॥ मा० ॥ १६ ॥ एम० ॥ तव कायक हसीने कहे रे लो, विद्याधर एम वाणी ॥ मा० ॥ स्नेहकायर अहो मानवी रे लो, स्नेह ते दुःखनी खाणी ॥ मा० ॥ १७ ॥ एम० ॥ स्नेहे विवेक रहे वेगलो रे लो, ॥ दुर्गति वाधव स्नेह ॥ मा० ॥ कुशल मरु शत्रु कह्यो रे लो, निवृत्ति अर्गला एह ॥ मा० ॥ १८ ॥ एम० ॥ स्नेहे रागवव्या प्राणीआ रे लो, न गणे आयती काल ॥ मा० ॥ कालोचित नवि ते जुए रे लो, धर्म न सेवे रसाल ॥ मा० ॥ १९ ॥ एम० ॥ सिंह पजरगतनी परे रे लो, समरथ थको लीढाय ॥ मा० ॥ तेणे तजीये ए स्नेहने रे लो, विवेकदीपके जुउं जाय ॥ मा० ॥ २० ॥ एम० ॥ कर्म विचित्र सवि जीवना रे लो, केम गति होवे एक ॥ मा० ॥ मनवछित फल साधवा रे लो, चउविह धर्म्मविवेक ॥ मा० ॥ २१ ॥ एम० ॥ पंचम खडे चौदमी रे लो, पद्मविजय कही ढाल ॥ मा० ॥ समरादित्यना रासमा रे लो, धर्मथी मगलमाल ॥ मा० ॥ २२ ॥ एम० ॥ सर्व गाथा ॥ ४३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुणो दृष्टात सोहामणो, एह तणे अधिकार, मलय देशमा गाम [illegible] कर्णिकार श्रीकार ॥ १ ॥ सकिल शेठनी सुदरी, तिहा नाम सुजाण, [illegible] उपर प्रेमज घणो, पतिने न अश प्रमाण ॥ २ ॥ तिहुने वात [illegible] एक दिन सुणीयु एम, कामित पमण करी मरे, पामे चत्रित [illegible] पति चाल्यो प्रेमें करी, चिंतवे एणी परे चित्त, जाणी एह [illegible] पामु ए प्रीति ॥ ४ ॥ एम करी ऊपा तिणे दीउं, लागते [illegible] चालु मन एणी परे, मुझ पति एह प्रमाण ॥ ५ ॥ [illegible] रे, पतिरागे पनी तेह, कोण एहमां वहेहो कहो, [illegible]

जुक्ति रहित जाणी करी, कोण करे एह अकाज, सुणी जाएयु म सयण, एहवु नासे आज ॥ ७ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ योगमाया गरने रमे जो ॥ ए देशी ॥

॥ अजगरनी जे वातनी जो, म सजलाजी तस कान जो ॥ त्रीनो तिम अाज तेहने जो, कहे खेचर सुणो सुप्रमाण जो ॥ १ ॥ धीरजथी सवि संपजे जो ॥ ए आकणी ॥ केटले वेगलु ते गन्यु जो, म कह्यु दश जोजन पाव जो ॥ तव विद्याधर बोलीयो जो, तु खेद म कर मन नाय जो ॥ ॥ २ ॥ धी० ॥ जीवे छे तुझ प्रेयसी जो, तेहनो सांजल अधिकार जो ॥ विद्याधरनो अधिपति जो, चक्रसेन नामे अवधार जो ॥ ३ ॥ धी० ॥ तेणे अप्रतिहत चक्राभिधा जो, महाविद्या साधवा हेत जो ॥ पूर्वे सेवा वार मासनी जो, हवे उत्तरने संकेत जो ॥ ४ ॥ धी० ॥ अरुताळीश जोजन तणी जो, काय क्षेत्रशुद्धि करी सार जो ॥ अनय देइ सहु जीवने जो, मह्रा उग्रमथी तिण वार जो ॥ ५ ॥ धी० ॥ निज समजे विद्याधरा जो, तेहने एम हुकम ते कीध जो ॥ सात दिवस लगी साचवो जो, सहु जीवनी हिंसा निषिद्ध जो ॥ ६ ॥ धी० ॥ मलय गिरि गुफा नामथी जो, सिद्धिनिलया अनिधान जो ॥ स्फाटिक मणि जपमालिका जो, एकाकी रह्यो निणे थान जो ॥ ७ ॥ धी० ॥ सात लाख माझ्यो जापन जो, पुग थया दिवस ते सात जो ॥ सिद्धि सवारे थायशे जो, तेणे जागु कुशळनी वात जो ॥ ८ ॥ धी० ॥ एटला क्षेत्रमा मरे नहीं जो, ए कल्पना मह्रु सावधान जो ॥ सावजी म पण चितव्यु जो, ए वात युक्त परधान जो ॥ ९ ॥ धी० ॥ पट छेड्यो हतो एणीए जो, केम एकला पट नखे तेह जो ॥ मनुष्य गस्यु होय जो पणे जो, तो सकोशावे अन देह जो ॥ १० ॥ धी० ॥ में कह्यु खेचरने निहा जो, मुझ आशामना तुम होर जो ॥ थाजे मनोरथ तुम तणा जो, मुझ अकुशल पक्ष निषिद्ध जो ॥ ११ ॥ धी० ॥ जोषी आपु माहरी प्रिया जो, मुझ मोपे खेचर ताम जो ॥ हाने कडेर करो तुमे जो, अात तो अमने एह काम जो ॥ १२ ॥ धी० ॥ कांडे मह् नेवा मळी जो, पामीशु मवर ते ताम जो ॥ तेडाव्यु मने तुमने जो, तुमे रह्यो एहा सुनगाम जो ॥ १३ ॥ धी० ॥ मन्त्र

वचन मे तेहनु जो, अर्ध पहोर राति रही शेष जो ॥ गगने उद्योत
तदा जो, गाय मगल गीत विशेष जो ॥ १४ ॥ धी० ॥ देवविम
परे दीपतु जो, आव्यु विद्याधरनु विमान जो ॥ कहे खेचर मुक देख
जो, विद्यासिद्धस्वामि निसान जो ॥ १५ ॥ धी० ॥ गयु विमान ति
कणे जो, बहु विद्याधर परिवार जो ॥ विहाणे मुजने तेनी गयो जो,
केतन समीप उदार जो ॥ १६ ॥ धी० ॥ करीय प्रणाम उभा रह्या जो
वर आसन दीधु ताम जो ॥ वात सुणावी वेलीने जो, तव बोल्यो खेच
स्वामी जो ॥ १७ ॥ धी० ॥ मत सताप करो तुमे जो, तुम मेलवशु आज
नारी जो ॥ इणे समे दोय विद्याधरा जो, प्रणमी कहे एक विचार जो ॥
१८ ॥ धी० ॥ तुम आपाथी वनातरे जो, भमता एक दीठी नार जो ॥
अजगर जचयी नासती जो, आर्यपुत्र हा करती होकार जो ॥ १९ ॥
धी० ॥ वस्त्र लीधु तेणे अजगरे जो, खाव्या मलयशिखर अमे नारी,जो ॥
शून्य हृदय क्षण रही करी जो, उठी क्षण नयनमा वारि जो ॥ २० ॥
धी० ॥ अमे कह्यु भय न करो तुमे जो, तुक किहा गयो भरतार जो ॥
॥ कहे पाणी लेवा गयो जो, तव अमे करी शोध अपार जो ॥
धी० ॥ पण नवि अमने ते मल्यो जो, ते नवि लीये अन्न ने पान जो
॥ हा हा आर्यपुत्र राखीये जो, एम कहेती रहे तिणे थान जो
॥ धी० ॥ खेचरपति मुजने कहे जो, तुमे जुओ तुमची के नाहि जो ॥ २२ ॥
ये खेचर हु तिहा गयो जो, जोइ पाम्यो अति उत्साह जो ॥ सा-
धी० ॥ देइ आश्वासना तिहा कणे जो, लावी दीये खेचर आहार जो ॥
खेचरपतिने आवी कह्यु जो, महाराज ए माहरी नारी जो ॥
वात घणी नअसी थइ जो, तुम जाग्या दुःख वियोग जो ॥ २४ ॥ धी० ॥
वली तुम शु करु जो, तुमे दीसो उत्तम कोइ लोग जो ॥ कहो ते
समरादित्यना रासमा जो, कही पचम खडे रसाल जो ॥ २५ ॥ धी० ॥
सोहामणी जो, रुमी पन्नरमी एह ढाल जो ॥ २६ ॥ धी० सर्व गाथा ॥ ४६३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देखी लक्षण तेहना, एणी परे वि
समीश प्रबल प्रताप ॥ १ ॥
त्तम पुरुष म ठंजली, मोद

मशो, परगट जास प्रनाव, वालपणे वतलावीयो, जोशीए एह जमा
॥ ३ ॥ उदय तेहनो श्रावीयो, एम विचारी श्राप, विद्या लीधी वेग
उत्तम सुणी श्रालाप ॥ ४ ॥ विद्याधर गया वेगशुं, श्रावी साधन श्रा
साधन खेत्र शिरोमणि, केम करु निकट ए काम ॥ ५ ॥ उत्तर सा
नदीं इहां, सनाल्यो वसुनूति, इण श्रवसर श्रावी मिले, श्राखु ते श्रद्भुत

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ वाला व्हिसनपुरी तुम विना मढीश्रा उजर पमी ॥ ए देशी ॥

॥ विद्यासिद्धि सूचवे तेह, श्राव्यो वसुनूति ससनेह ॥ मन हरख
माय, श्राव्याजी नले रे तुमे श्रहोजी वहो ॥ तापसनो पहेस्यो वे वे
श्रालिंगन कस्यो हर्ष विशेष ॥ १ ॥ मन० ॥ मे मन चिंतव्युं तापस श्र
म, श्रालिंगन दीये शाने काम ॥ मन० ॥ देवी सहित हुं प्रणम्यो ता
चिरजीव कहे मुऊने नास ॥ २ ॥ मन० ॥ श्रविधवा थाउ नारी श्र
शीष, शब्दे उंजखी धूण्युं में शीश ॥ मन० ॥ श्राणंद श्रांसु नय
न माय, श्रासन श्राप्युं वेग गाव ॥ ३ ॥ मन० ॥ चरण पखा
नारी तिवार, वृत्तांत पूछे करावी श्राहार ॥ मन० ॥ किहांथी श्राव्या
सायर तख्या केम, ते कहे फलक लह्युं थयुं क्षेम ॥ ४ ॥ मन० ॥ पा
दिवसे पाम्यो पार, मलयतटे उतस्यो तिणी वार ॥ मन० ॥ श्राव्यो त
पस जोवा तीर, श्राश्वास्यो मुऊ देखी पीर ॥ ५ ॥ मन० ॥ कुलपति पा
मुऊ लेइ जाय, में नम्या तव श्राशीष्दाय ॥ मन०॥ श्राहार करावी पू
वात, में पण कह्यो सघलो श्रवदात ॥ ६ ॥ मन० ॥ मे कह्युं तापस
स्वामि, विव विनोगीने ए श्रनिराम ॥ मन० ॥ कुलपति कहे कर्म
वे एह, पण नवि त्रूटे तनुसनेह ॥ ७ ॥ मन० ॥ छुक्कर कर्म तणा
विनाग, छुक्कर जाण्यो विषयनो त्याग ॥ मन०॥ मुनिनो मारग दोहि
जाणी, पाळवुं दोहिलुं वली श्रपिछाणी ॥ ८ ॥ मन० ॥ समकीत नवी
संसार, पण एक सावद्य बीजो प्रकार ॥ मन० ॥ ज्ञाने करी जाणु
एम, विव नाहरो मलशे सुख क्षेम ॥ ए ॥ मन० ॥ सेवा करतां रह
वन पान, मुनि वचने थइ मलवानी श्राश ॥ मन० ॥ तिहां रहेतां
सो पखवाडां काल, कुलपति सेवा करतां विशाल ॥ १० ॥ मन० ॥ श्राव
दी प्रीते दिवस श्रतीव, एक तापस कहे वात प्रतीत ॥ मन० ॥ कुल

ति आगल हरख धरेह, मुऊ साजखता सर्वे कहेह ॥ ११ ॥ मन० ॥
ताहरु वृत्तात में सुणीयु कान, में कह्यु मित्र ए माहरु ठान ॥ मन० ॥
कुखपतिनी आणा खही ताम, काजे हु आव्यो ते तीरथ ठाम ॥ १२ ॥
॥ मन० ॥ खेचरे कह्यो मुऊ तुऊ अधिकार, खोखतो आव्यो एणठिज
ठार ॥ मन० ॥ तव में विद्याप्रापति वात, सघळावी तस हाथ ते धात
॥ १३ ॥ ज्योतिषी वचन मिथ्या नवि थाय, अहो जाणी सहु थनतु जा-
य ॥ मन० ॥ करो मन इछित ए तुमे काम, थाशो अवश्य विद्याधर स्वामी
॥ १४ ॥ मन० ॥ पूर्वे सेवा करवी षट मास, मान्ही मखयशिखर अभ्यास
॥ मन० ॥ मौनपणे ब्रह्मचारी थाय, परिमित आहार फखादि कराय ॥
॥ १५ ॥ मन० ॥ कह्यु में विखासवती यथु काम, षट मास कु कर गया
मुऊ आम ॥ मन० ॥ हवे अहोरातिनु काम वे जोय, कहे विखासवती सुणो
सोय ॥ १६ ॥ मन० ॥ तुम मनोरथ पूरा थाउं, वहेखा वहेखा थाउं खेचर-
राउं ॥ मन० ॥ कायर हृदय जाणी में तेह, मखयगिरि दरीमा ठवी एह
॥ १७ ॥ मन० ॥ मान्ही प्रधान सेवा हवे तठ, देवता ठवी करी कुसुमनो
जठ ॥ मन० ॥ दिशापाख कह्यो वसुभूति, पदमासन वाध्यु अद्भुत ॥
॥ १८ ॥ मन० ॥ मुद्रामरुख कीधा आप, मत्र खक्नो माड्यो जाप ॥
॥ मन० ॥ काइक वेखा वीती जाम, आकाश हसवा खाग्यु ताम ॥ १९ ॥
॥ मन० ॥ गाज अकाखे के सायर क्षोभ, पृथवीकप के देखी अथोभ
॥ मन० ॥ मदमातो मयगख सकपाय, जखकणीया शीतख ठटाय ॥ २० ॥
॥ मन० ॥ विखासवतीने आक्रमे तेह, क्रोधे कुरूखित सुढी करेह ॥ मन० ॥
गुखगुख करतो अकुश कान, सन्मुख आवतो देखे ते थान ॥ २१ ॥ मन० ॥
हा आर्यपुत्र एम करती नारी, नवि अखोभाणो धीरज धारी ॥ मन० ॥
एह विभीतिका गइ असराख, आवी पिशाचिणी अति विकराख ॥ २२ ॥
॥ मन० ॥ वरणे काळी राता नयण, अट्टाट्ट हास्य करे निज वयण ॥
॥ मन० ॥ करपदनी गखे माळा धारी, गगन उद्योत करे तिणी वार ॥
॥ २३ ॥ मन० ॥ शोणित खरड्यु चर्म ते जाण, वस्त्र ते पहेर्यु कु खनी
खाणी ॥ मन० ॥ रुधिर पीती ताजन कपाख, विखासवती वाम कर स-
ताख ॥ २४ ॥ मन० ॥ रे रे दुष्ट विद्याधर सग, दुरविदग्ध थयो मनर-
ग ॥ मन० ॥ किहा जाइश मुख कहेती एम, क्षोभ करती आवी तेम

॥ २५ ॥ मन० ॥ तेहथी नवि क्षोभाणो वीर, हवे नाकिए आवी करे पीर ॥ मन० ॥ विण वादल गरजारव थाय, नाचे धरू वेताल बहु धाय ॥ २६ ॥ मन० ॥ वरसे रुधिर धारा असराल, नगन ऊर्ध्व केश अति विकराल ॥ मन० ॥ वोले शिवा करती फेतकार, तोपण नवि क्षोभ्यो हु लगार ॥ २७ ॥ मन० ॥ हवे चोथो उपसर्ग ते थाय, राक्षसिणी आवी लेइ जाय ॥ मन० ॥ कूपमा नास्यो जेम पाताल, चड सूर्य नागा सम काल ॥ २८ ॥ मन० ॥ दाढा जेहनी अति निकराल, मनुष्यमस्तकनी पहेरी माल ॥ मन० ॥ नाभि लगे घण लटके जास, मनुज कलेवर कापे विलास ॥ २९ ॥ मन० ॥ मार मार कहे मुखे आलाप, महा विकराउ तणु नहीं माप ॥ मन० ॥ तोपण नवि बीहीनो हु लगार, चार घमी रहे राति तिवार ॥ ३० ॥ मन० ॥ मत्र थयो समापत प्राय, सुगध तर वायरा हवे वाय ॥ मन० ॥ फूलवृष्टि जय जयरव थाय, किन्नरीउ तिहा मगल गाय ॥ ३१ ॥ मन० ॥ थयो उद्योत आकाशे जाम, अजितबला आव्या हवे ताम ॥ मन० ॥ देवदेवी बहु परिवस्था तेह, स्तवना करे गुरु माहरी एह ॥ ३२ ॥ मन० ॥ पचम खडे सोलमी ढाल, साभलता होय मगलमाल ॥ मन० ॥ समरादित्यना रासमा सार, पद्मविजय कहे जय जयकार ॥ ३३ ॥ मन० ॥ सर्व गाथा ॥ ५०२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अहो ताहरो उपयोग ए, अहो व्यवसाय अनत, अहो पुरुषोत्तम पणु अति, सिद्ध थइ हु सत ॥ १ ॥ विरम तु ए व्यवसायथी, तव मैं चिन्त्यु एम, मत्र अधूरो माहरे, कहो ठलमा पडुं केम ॥ २ ॥ मत्र पूरो करी प्रणमीउ, इण अवसर तिहा याय, विद्याधरना वृद जे, रूप मनोहर राय ॥ ३ ॥ सुणी देवी कहे ए सहु, प्रेमे तुझ प्रणमत, चडसिंह प्रमुखा चतुर, भृत्य भाव भावत ॥ ४ ॥ तुम पसाय एम कही तुरत, अगीकरे अतिरेक, कहे देवी तुझ कीजीये, खेचरपति अभिषेक ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ सीरोहीरो शाहू हो, के उपरे जोधपुरी ॥ ए देशी ॥

॥ मैं कह्यु मुझ मित्रने हो, के वली नारी देखे ॥ तव बोलाव्यो तस हो, के नवि बोले रेखे ॥ तस जोयो जइने हो, के नवि दीठो जाम ॥ व

वैद्याधरशु हो, के गगन गयो ताम ॥ १ ॥ तिहां एक निकुञ्जलो
के अरहो परहो भमतो ॥ अम देखी कोधे हो, के अतिशय [illegible]
तो ॥ दोय करमा रूखनी हो, के शाखा लेइ कहे ॥ मुफ [illegible]
री हो, के डुष्टो केम रहे ॥ २ ॥ ते सांजली वितव्यु हो, के [illegible]
पहरी ॥ मुफ फोक परिश्रम हो, के पूतु वात खरी ॥ रे वसुनूति [illegible]
हो, के देवी किहां गइ ॥ वसुनूति न सांजले हो, के वचन [illegible]
इ ॥ ३ ॥ खेचरनी माया हो, के ए मनमा धरी ॥ कह्यो [illegible]
हो, के तेणे आकर्ष करी ॥ वचावी गातने हो, के शाखा [illegible]
कर पकनी जाखु हो, के देवी किणे हरी ॥ ४ ॥ फिरी [illegible]
हो, के तव उपयोग करी ॥ मुफ उंव्रखी वोल्यो हो, के [illegible]
खरी ॥ तुफ विद्या साधता हो, के राति ते दोय जाम ॥ [illegible]
हो, के आव्यु एक तान ॥ ५ ॥ उपसर्गनी शका हो, के [illegible]
पी ॥ घोनी यइ वेज्ञा हो, के तव जोडे रापी ॥ हाहा [illegible]
मुफने लेइ जाय ॥ राख राख वसुनूति हो, के मुफ [illegible]
सुणी मुफ आशका हो, के सत्रमरी थइ ॥ तव [illegible]
जोयु जइ ॥ नवि दीठी ज्यारे हो, के धायो [illegible]
किहां गइ हो, के तव चिंतु रुहे ॥ ७ ॥ हरी [illegible]
ए किहां जाशे ॥ मुफ कोधअगनिमा हो, के [illegible]
फकर न करशो हो, के अजिनवशा लीधी ॥ [illegible]
नी चिंता लीधी ॥ ८ ॥ कही वात सवे [illegible]
दिश दिश तिणे मूकी हो, के खेचर श्रेणी [illegible]
के पवनगति चाले ॥ ए स्त्री मैं दीठी हो [illegible]
सुणो नग वेताढ्य हो, के तुम आपाए [illegible]
के नयर तिहां वयो ॥ [illegible]
गाम गाम पूजा वळि हो, के होम हवन [illegible]
हो, के पूज्यो अवदात ॥ कहे ते [illegible]
कर्दपना वशरी हो, के एक दिन [illegible]
नारी ते चूचरी ॥ ११ ॥ नवि [illegible]
परवला हो, के सुणी [illegible]

खड्ग मुदा ॥ एम करीने उव्यो हो, के क्रोध धरी तदा ॥ १२ ॥ कहे पवनगति तव हो, के प्रसन्न थइ सुणो ॥ ए वात कहु हु हो, के नहीं प्र त्यक्ष मुणो ॥ सिंहिणीने श्रानज हो, के केम पराजवे ॥ तव में कहु श्रागल हो, के वात कहो हवे ॥ १३ ॥ हु वेगे तिहा रे हो, के वात क हे श्रागे ॥ असमजस देखी हो, के शील तणे रागे ॥ महाकाली देवी हो, के इहा उपसर्ग करे ॥ जूमिकप ने विजली हो, के बहु निर्घात धरे ॥ १४ ॥ श्रावी कहे नृपने हो, के उत्तम पुरुष थइ ॥ केम नीचनु काय हो, के करे तुऊ मति गइ ॥ तव अलगो उज्ञो हो, के कायाए करी ॥ पण नहीं काय मनथी हो, के एहनी वात धरी ॥ १५ ॥ पुरदेव जो कोपे हो, के नगर निनाश करे ॥ ते कारण माड्या हो, के शाति करम नगरे ॥ तव मे तस पूछ्यु हो, के कहो सा किहा रहे ॥ नृपजुवन उद्याने हो, के श्राम्र तले ते कहे ॥ १६ ॥ हवे हु तिहा पहोतो हो, के गगन तले रह्यो ॥ तेहने हु देखी हो, के मनमा गहगह्यो ॥ विद्याधर वृंदे हो, के प रवरी ते रही ॥ कर देइ गलोयो हो, के जूख तरप सही ॥ १७ ॥ तुमची विण श्राणा हो, के हु न गयो पासे ॥ तिहाथी तुम पासे हो, के श्राव्यो उल्लासे ॥ हवे तुम मनगमतु हो, के काम ते कीजीये ॥ पूछे वसुजूतिने हो, के तव ते वदीजीये ॥ १८ ॥ देवता उपदेशे हो, के लाज्यो तेह घणु ॥ तिणे दूतने मूकी हो, के किजे जाणपणु ॥ ढाल पचम खडे हो, क सत्तरमी गणी ॥ समरादित्य रासमा हो, के पद्मविजय जणी ॥ १९ ॥ सर्व गाथा ॥ ५२६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ब्रह्मदत्त खेचर जणे, ए शु बोल्या श्राम, रमणी निज कोइ राख ता, इयो तिहा वचननो साम ॥ १ ॥ समरसेन कहे साचलु, एह न खमाये श्राज, वायुवेग मन वाठियो, कहे न सीज्यु काज ॥ २ ॥ वा युमित्र कहे वेगशु, जाणो तुमे सुजाण, चमसिंह हसीउ चतुर, एह वा त श्रप्रमाण ॥ ३ ॥ सुजट वीररस सामटा, समजाव्या सुविशेष, राज्य स्थिति ए राखनी, दूत मूको तस देश ॥ ४ ॥ पवनगति तेह पेखीउ, दूरस करीने दूत, समजावी सघली स्थिति, श्रासी निज श्राकूत ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥
॥ राग वगालनी देशी ॥

॥ अनगरति ठे तिहां महाराय, दूत कहे जइ एम निरमाय ॥ साजन साजलो ॥ अपजश केरु कारण जेह, उत्तम पुरुष न आचरे तेह ॥ ॥ १ ॥ सा० ॥ लोकने हासीनु कारण थाय, अरियण मनमा आनद पाय ॥ सा० ॥ धीरज जेहथी नासी जाय, एम अवगुणनो होय समुदाय ॥ २ ॥ सा० ॥ इह भव पर भव दोय विरुद्ध, कोण आचरे कहो मतिमति मुद्ध ॥ सा० ॥ परदारा हरवी महा पाप, चित्त विचारो राजन् आप ॥३॥ सा० ॥ मूको ए माठो व्यवहार, एम कहेवरावे सनत्कुमार ॥ सा० ॥ आपो मुफ जाया तुमे आप, शाने उपजावो सताप ॥ ४ ॥ सा० ॥ बोल्यो तेह अनगरति राय, कहेजे तु तुफ रायने जाय ॥ नारी नापीये ॥ ए तो पटराणी करी घर थापीये ॥ नारी० ॥ ए आकणी ॥ भूचर मुफ मनावे आण, सदसद् व्यवहारनो ए जाण ॥ ५ ॥ नारी० ॥ जिणे अगीकरी तेहनी नारी, परनारी अम नहींय लगार ॥ नारी० ॥ पाप पुण्य तो तिहां गणाय, घर मूकीने रणमा जाय ॥ ६ ॥ नारी० ॥ कहेवु होय तस कहेजे जाय, आवीश हु रण सन्मुख धाय ॥ नारी० ॥ साजली दूत ते वलीउ खिप्प, पोहोतो विलासवतीने समीप ॥ नारी साजलो ॥ ए आकणी ॥ खेद म करजो मनमा रेह, शोध लाधी ठे तुमची एह ॥ नारी० ॥ थोमा दिनमा टलशे विजोग, मत करजो मनमा काय शोग ॥ ७ ॥ नारी० ॥ बोली विलासवती हवे ताम, आर्यपुत्र घरणी मुफ नाम ॥ सा० ॥ तेणे मुफने नवि खेद ते काय, पूठजो आर्यपुत्रने सुखसाय ॥ ए ॥ सा० ॥ वली आव्यो दूत बीजे दिन्न, सजलावे सनत्कुमारने कन्न ॥ सा० ॥ कटुक वयण सुणी जाग्यो क्रोध, थया उजमाल ते सघला जोध ॥ १० ॥ सा० ॥ अमरष धरतो मूके हुकार, ब्रह्मदत्तने रणरस बहु सार ॥ सा० ॥ समरसेन करे भुजआस्फाल, रोपे नयण कस्या विकराल ॥ ११ ॥ सा० ॥ त्रकुटी चढावी नाखे दृष्टि, वायुवेग खड्गे करि मुष्टि ॥ सा० ॥ रिपुहृदये करे तिहांथी प्रहार, वायुमित्र तेहमा शिरदार ॥ १२ ॥ सा० ॥ मुफ अधार करे चर्मसिह, क्रोधानल जलतो अविह ॥ सा० ॥ पिगलगधार उठाले वाहि, मतग धरती कपावे त्याहि ॥ १३ ॥ सा० ॥ अमितमेघ

हरख्यो मन माहि, सगरश्रासन्न जाणी उन्नाह ॥ सा० ॥ गिरीदरीमा पऊढदा थाय, देवीसह हसीउं तिम जाय ॥ १४ ॥ सा० ॥ मरण श्रावु हवे ढूकरु तास, तुमे कोप्या सयाम निवास ॥ सा० ॥ तुमे रहो हु जाउ खड्गसहाय, श्रावु ज्रूचरनु वीर्य देखाय ॥ १५ ॥ सा० ॥ सहु कहे तु मचा करजो जाय, तेहनु तेज तेहथी न खमाय ॥ सा० ॥ तो तुमची शी वात कहाय, इण समे श्रजितवला तिहा श्राय ॥ १६ ॥ सा० ॥ माहारे काजे रचीउ विमान, मित्र सहित वेगे तिणे थान ॥ सा० ॥ वाग्या समरना मगल तूर, चाल्या निमान चढ्या वल नूरि ॥ १७ ॥ सा० ॥ जय जय होवे तेणी वार, गाम नगर पुर जोता उदार ॥ सा० ॥ पोहोता वैताट्य पर्वत पास, देवी श्रादेशे कस्या हेठ श्रावास ॥ १८ ॥ सा० ॥ सर्व निद्या वश करवा काज, श्रठम करी करे पूजा समाज ॥ सा० ॥ शेप विद्याधर श्राव्या पास, वात पोहोती श्रम शत्रु सकाश ॥ १९ ॥ सा० ॥ दुर्मुख नाम सेनापति जेह, मोकलीयो श्रम सनमुख तेह ॥ सा० ॥ पाचमे खडे श्रढारमी ढाल, जाखी ए वर राग बगाल ॥ २० ॥ ॥ सा० ॥ समरादित्यना रासमा सार, पद्मविजय कही जय जयकार ॥ सा० ॥ कायर ते थरहर कपाय, ग्ररवीर सन्नद्ध ते थाय ॥ २१ ॥ सा० ॥ सर्व गाथा ॥ ५५२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सनमुख श्राव्यो वल सवल, साजली थयो वहु शोर, खड्ग म लीधु खातशु, जाविम करवा जोर ॥ १ ॥ दूत श्राव्यो दुर्मुख तणो, वोल्यो श्रावी वाणी, श्रनगरतिनो श्रावीउं, सेनानी सपराण ॥ २ ॥ साजलजो एक मन सवे, ज्रूमिचरना भृत्य, कहेवराव्युं तिणे कोपशु, सज्ज थाउ शुज रीति ॥ ३ ॥ श्रनगरतिशु श्रावीया, युद्ध करण जय काज, पण मुज कर तुमे पामजो, खरी उतारु लाज ॥ ४ ॥ श्रनगरति नवि श्रावीउ, साजली सनतकुमार, मृत्यु खड्ग ते मानथी, खेचर वोल्या सार ॥ ५ ॥ चरूसिंह उठ्यो चटक, सेनानी थइ सार, श्राणा श्रापो श्रम नणी, ववती म करो वार ॥ ६ ॥ श्राणा श्रापी श्रादरे, कुसुममाल तस कठ ॥ नाखी सेनानी कीउं, श्राव्यो लही उत्कठ ॥ ७ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥
॥ कडखानी देशी ॥

॥ सूररस पूर मुख नूर आणी घणो, चालीआ समरवर करण देश ॥ सिद्ध गधर्व सुर असुर जोवा मिल्या, सुरवरे गगन नरीयु विशेष ॥ १ ॥ सू० ॥ खेचरे समरसो हु विमाने रह्यो, सार तरवार परहार पडता ॥ माहो माहि जट लडे वेहु नायक अडे, करत वेहु हतप्रहत रोपे चढता ॥ २ ॥ सू० ॥ चक्रसीहो अवीहो कहे एहने, डुम्मुहो सम्मुहो आहीं आयो ॥ रे डुराचार परहार करय आगले, तुझ पराक्रमे मने नय न लायो ॥ ३ ॥ सू० ॥ करे गदा युद्ध माडी तदा ते करे, चक्रसिह उपरे घात निरखो ॥ तेह वचावीउं क्रोधथी चावीउं, घात खमी हवे जमराय सरिसो ॥ ४ ॥ सू० ॥ उत्तमागे दीउं रगे परहार तिम, रुधिर वमतो महा डु ख खमतो ॥ जय जयरव थयो तेह जमघर गयो, दल सयल जाय दिशिदिशि नमतो ॥ ५ ॥ सू० ॥ कुसुमवुष्टि नइ तुठी चक्रसिहने, चढीउं वेयट्ट हवे कुमर निरतो ॥ रयनेउर चक्रवाल थाव पोहोता वही, दोय खेचर तस पास धरतो ॥ ६ ॥ सू० ॥ तेह जइने कहे तु हजी किम रहे, जा तपोवन जपो देव जाण ॥ अहव मुझ कोइ अनलोह पतग सम, या हवे आहवे करत नाण ॥ ७ ॥ सू० ॥ साजली तिहा वली देहली तेहनी, धरणी आस्फालतो वयण जपे ॥ एह नूगोयरो पोयरो शु लहे, आणी मुझ माणी एम किम पयपे ॥ ८ ॥ सू० ॥ मुझ कषायानले ए वले किम नहीं, देख अतर हवे रेख नाहि ॥ नूमि अति आवीउं कर मुझ नावीउं, तुमे पण केम अन्नाण माहि ॥ ९ ॥ सू० ॥ एम कही क्रोध लही सैन्य निजमा तदा, तूरि वजनावता समर नेरी ॥ पढम रण देखवा शक्ति निज लेखवा, सज्ज होय सुनट सहु कवच पहेरी ॥ १० ॥ सू० ॥ केइ करवाल महाकाल जमजीहसी, सुहडवर रुहिर पीवा अतित्ती ॥ कर ग्रही महा गया जाणु असणीलया, घणु कुटिल खल परे धरे अमित्ती ॥ ११ ॥ सू० ॥ केइ निज नारीस्तन फरसन व्यग्रची, विगर सन्नाह उछाह कीनो ॥ केइ रमणी मृगनयणी आसु करे, पण सुनट विकट तिहा मन न दीनो ॥ ॥ १२ ॥ सू० ॥ केइ रमणी रमण विघन जावा करे, किम डरे मन धरे तुरत आयो ॥ अपर रमणी जल पान करता नरे, नायण नयण आसु

जरायो ॥ १३ ॥ सू० ॥ काइ मुद्धा थतुद्धा लही रागलो, दाखवे नारी भ रतार आगे ॥ एम तिहां देखी उवेखी फरी आवीआ, सनतकुमार पु कहत रागे ॥ १४ ॥ सू० ॥ कटुक कर्णे सुणी रक्त वर्ण थयो, जेरी वज जावतो समर केरी ॥ प्रलयनो जलय जिम शब्द तिम सहु करे, सज करे सहु एक एक प्रेरी ॥ १५ ॥ सू० ॥ पीवता आसवा अमल आण ता, शत्रुशला करी फरी जगावे ॥ छत्र चामर ध्वजा प्रगुण करी सहु स ज्या, केइ चदनादि अगे लगावे ॥ १६ ॥ सू० ॥ शब्द जय जय करे अमर स वहु धरे, चलत विमान मन मान धारी ॥ पद्मव्यूहे रच्यु सैन्य शुभ पे मच्यु, वाम पासे समरसैन्य नारी ॥ १७ ॥ सू० ॥ चंडसीहो अवीहो । ह्यो आगले, गायो देवोसहो जिमणे जायो ॥ पिंगलगधार निचमा रह्य खेचरो, गगनमा मगनपणे ए रहायो ॥ १८ ॥ सू० ॥ शत्रुबल सयल ति हां निकट देखी विकट, वेगे वायुवेगने पूछु एम ॥ नाम ने ठाम शत्रु तणा जाणीये, तेह कहे गहगहे सूणो प्रेम ॥ १९ ॥ सू० ॥ कचनदाढ प शगरू मुह आगले, वाम पासे अशोको सशोको ॥ कालजिह दख्खिणे खरूणे हीणडो, मध्ये विरूप नयणे विलोको ॥ २० ॥ सू० ॥ पुठे अन गरइ गयमइ देखजो, समरवर करण माहोमाहि लागा ॥ जूरि रणतूर पूरे खडे सूर तिम, जेह कायर तिके जाय जागा ॥ २१ ॥ सू० ॥ शीश सकुल मही वहुल रुधिरे जरी, नायका सायका दो चलावे ॥ कुंत यष्टि शक्ति वहु हेत नाखती ते, सिह शियाल परे वीहलावे ॥ २२ ॥ सू० ॥ खेइ करवाल तस नाल माहि दीउं, कचनदाढ जम दाढसरिसे ॥ सा महाघोर थयो अनगरति सैन्यमा, सैन्य महादैन्य थइ तास विरसे ॥ २३ ॥ सू० ॥ उठीउं रूठीउं अनगरइ कुठमइ, समरसेन प्रमुख वर साथ उ ॥ तास सनमुख धस्यो समरे हु नवि खस्यो, सुजट अति विकट खे साथ केइ ॥ २४ ॥ सू० ॥ म कच्यु खेचरा सैन्य वह क्षय लह्यु, नाद तुझ साथ अनिवाद लागो ॥ सुनटने किम हणे पापपुण्य नवि गणे, केम मुझशु जा दूर जागो ॥ २५ ॥ सू० ॥ केहवो तुझशु झूझ मुझ एहवो, खेचरा भूचर वाद केहो ॥ समरमा नोखवु म कर तु एहवु, जयविजय साखीआ कह्यु शे एहो ॥ २६ ॥ सू० ॥ एह शियाल सिहवाल ए देखीये, यशनिन मेह मुझ देह माये ॥ वरसीउं करशीउं चर्मरयणे करी, जगनती गुणवर्

मुऊ हाथे ॥ २७ ॥ सू० ॥ केम मायानखे एम तु फूऊतो, आवी निज भुजनख सबल कीजे ॥ एम में जाखीयु सिद्ध सुर साखीयुं, एम कही माहोमा घा करीजे ॥ २८ ॥ सू० ॥ मारीउं शक्तिए धरणी मुऊ पाडीयो, जयविधुर सैन्य मुऊ दैन्य कीधु ॥ हर्षभर उठउे शोर बहु ते करे, जाणे अमे एहनु राज्य लीधु ॥ २९ ॥ सू० ॥ उठी में लेइ गदा मारी शिरमा जदा, ते पड्यो रुमऊयो धरणी पीठे ॥ कालरव कारिउे तेहने वारीउं, हु गयो तेहने पास दीठे ॥ ३० ॥ सू० ॥ उठ्यो तेहने देइ आशासना, जूऊ बहु जूऊ करता न थाकु ॥ पवनहत जलहरा मत्त जिम गयवरा, तेम एक एकनो ठबह ताकु ॥ ३१ ॥ सू० ॥ जीतीउं तेह विद्यानले खेचरो, जय जय शब्द आकाश बोले ॥ सुर असुर सिद्ध विद्याहरा सहु मली, कुसुमवृष्टि करे बहु अमोले ॥ ३२ ॥ सू० ॥ खम ए पचमे ढाल उगणीशमी, सरस रस समरनी एह जाखी ॥ समरआदित्यना रासमा ए जली, पद्मविजये धरी चित्त राखी ॥ ३३ ॥ सू० ॥ सर्व गाथा ॥ ५०२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जयवाजा तिहा वाजीया, अनगरति तव आप, आपता पण इच्छु नहीं, जाणी राज्यसताप ॥ १ ॥ गयो तपोवन गेलीशुं, विद्याधरने वृद, परवरीयो परिवारशु, आणी हर्ष अमद ॥ २ ॥ पुरप्रवेश कीधा पछे, दीठी दुर्बल अग, नारी नयणे नीरजर, हृदय उपन्यो रग ॥ ३ ॥ विद्याधर विलय खह्या, देखी रूपनिधान, प्रणम्या तेहना पदकजे, पटराणी पहेचान ॥ ४ ॥ मुऊने दोय कटक मली, थाप्यो राज्यने थान, न्याय नीतिए दिन गमु, वारु वधते वान ॥ ५ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ वेण म वाज्यो रे विठ्ठल वारु तुमने ॥ ए देशी ॥

॥ एम करता कोइ काल गयो तव, एक दिन पाछली राते ॥ निद्रा सवतीए स्वपने सूना, गज दीठो वरगाते ॥ १ ॥ जवि तुमे जो ओ पुण्य तणा फल मीठा ॥ ए आकणी ॥ ऐरावण सरिखो चउदतो अजन सम श्याम ॥ मेरुगिरि सम नयणे पेखो, जागी तेहने [illegible]
॥ जवि० ॥ हरखवशे मुऊने सजलावे, म पण ज[illegible]
याधर पूजित थाशे, सुत तुऊ गुणनो राशि ॥

हर्ष लही ते दिनथी, त्रण वर्ग साधती ॥ अनुक्रमे शुज दिने जाणो सुतने, हर्ष ते हियमे धरती ॥ ४ ॥ जवि० ॥ मजरिका दासीए सुतने, जनमे राय वधाव्यो ॥ दान देइ तेहने संतोषी, दारिद्र दूरे गमाव्यो ॥ ५ ॥ जवि० ॥ अजितबला परजावे, पाम्यो, राज्य लक्ष्मी सुत एह ॥ मास थयो तव चिंती अजितबल, नाम ठव्यु गुणगेह ॥ ६ ॥ जवि० ॥ अनुक्रमे कुमरजाव ते पाम्यो, इण अवसर मे विचार्यु ॥ बहु दिन मात पिता मलीया थया, तिणे मिलवु एम धार्यु ॥ ७ ॥ जवि० ॥ मानित्र हु प्रति कारज जाएयो, रिद्धि लही शे लेखे ॥ सज्जनशु जोगवी नहीं जे वली, दुर्जन नयणे न देखे ॥ ८ ॥ जवि० ॥ अजितबला देवीने आशय, जा एयो तिणे ते जाणी ॥ विकुरव्युं विमान ते तेहमा, बहेगे लही सुत रा णी ॥ ९ ॥ जवि० ॥ पोहोतो श्वेताविका उद्याने, पवनगति मोकलीउं ॥ वात सुणी जव तेहना मुखथी, नृप साहामो नीकलीउं ॥ १० ॥ जवि० ॥ नृप देखी साहामो जइ प्रणम्यो, हु निज बहु परिवारे ॥ माहरी कुद्धि देखीने मावित्र, अति आनंद दिल धारे ॥ ११ ॥ जवि० ॥ नयरप्रवेश आडंबरे कीधो, रही तिहा केइक दिन्न ॥ तामलिप्ति नयरीए पोहोतो, श्वशुरने मिलवा मन्न ॥ १२ ॥ जवि० ॥ विलासवती जे दिनथी गइ ते, ते दिनथी खेदाणो ॥ सिद्धादेशवचनथी सघलो, परमारथ जिणे जाण्या ॥ १३ ॥ जवि० ॥ अनगनती उपरे बहु रीशे,धमधम्यो ईशानचंद ॥ तेह ने बहु प्रणिपत्य करीने, उपजाव्यो आणंद ॥ १४ ॥ जवि० ॥ तात पास आव्या वली फरीने, केइक दिन तिहा रहीया ॥ कालक्रमे मुफ मात तातने, धर्मनृपतिए ग्रहीया ॥ १५ ॥ जवि० ॥ मुफ लघु जाइ जश की र्तिनिलयने, थापी राज्यनो जार ॥ वैताढगिरि पोहोतो रथनेउर, चक्रवा लपुर सार ॥ १६ ॥ जवि० ॥ सुखमा तिहा हु राज्य पालतो, इण अवसर तिहा आव्या ॥ श्रमणगुणे शोजित चउ नाणी, बहु शिष्ये सोहाव्या ॥ ॥ १७ ॥ जवि० ॥ चित्रांगद नामे आचारय, सुजने कह्यु परिवारे ॥ जइ आडंबरशुं मे वंद्या, धर्मलाज दीउं त्यारे ॥ १८ ॥ जवि० ॥ मुनि कहे मुफने सांजल नृपति, पुण्य कथा ते पाम्या ॥ एम जाणीने पुण्य करो तुमे, सुणी मे पदकज नाम्या ॥ १९ ॥ जवि० ॥ पुण्य कहो केम करीये गुरुजी, एम मे पूब्यु जाम ॥ सम संवेग मूल जिनदर्शित, धर्म कहे गुरु

ताम ॥ २० ॥ जवि० ॥ धर्म परिणम्यो पाम्यो समकित, अणुव्रत लीध वार ॥ चरण नमी करीने में पूछ्युं, कहो प्रभु करो उपकार ॥ २१ ॥ जवि० ॥ प्रियाविरह दुःख जनित सतापह, केम उपन्यो ए स्वामी ॥ पूर्वे जवे शी करणी कीधी, केम फरी ऋद्धि प्रिया पामी ॥ २२ ॥ जवि० ॥ वीशमी ढाल ए पंचम खंडे, समरादित्यने रास ॥ सांजलो गुरुमुखपद्मथी जाखे, पूरव जव सुविलास ॥ २३ ॥ जवि० ॥ सर्व गाथा ॥ ६२० ॥

॥ दोहा ॥

॥ जरतखेत्र इणमें जडु, नयर कपिजपुर नाम, चंडगुप्त राजा चतुर, वारु तेहने वाम ॥ १ ॥ जयासुंदरी जग जाणीये, रामगुप्त अभिराम, नामे सुत तुं गुणनिलो, रूपवंत जिम राम ॥ २ ॥ उत्तरापथ अवनीपति, धूया तास गुणधाम, हारप्रभा जिम हरप्रिया, वारु ते करी वाम ॥ ३ ॥ आव्यो वसत ते अन्यदा, भवनदीर्घिका जाजी, नरनारी निरता निडु, क्रीडा करे तिणे काज ॥ ४ ॥ वाव्यकाठे रजावने, कुंकुम रागकृत अंग, जोग जन वेढुं जपा, स्त्री जरतार सुसंग ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ सावरमतीए आवीआ जरपूर जो ॥ ए देशी ॥

॥ इण अवसर एक हंसजुगल तिहां आवीयुं जो, ते कर लीधी हंस-कौतुक काम जो ॥ हंस ते लीधो नारीए करमा रंगयुं जो, कुंकुम थी फलव्या हाथथी ताम जो ॥ १ ॥ सांजलजो तमे अल्प निदान घणुं रे ॥ ए आंकणी ॥ एक एकने ओळखे नहीं कुंकुम रागथी जो, ई पीडित मरजाना परिणाम जो ॥ करे ते रुधी श्वासने पाणीमां जो, पण कोइ विचित्र जाणो कर्मपरिणाम जो ॥ २ ॥ सां० ॥ क- प्राण थया नव दुःख उपन्युं घणुं जो, वळी ते नीरे कुंकुम रंग जो ॥ जावीजावनी उजुं जोये तव निडु जो, तव अन्योन्ने राग ळखाव जो ॥ ३ ॥ सां० ॥ एह करम तुम बांध्युं विरहदुःख आकरुं ते जाणो तुमचो कर्मपरिणाम जो ॥ में विस्तु अहो अल्प नि- इ फळे जो, तिणे हवे नादरे परिनचाशुं काम जो ॥ ४ ॥ सां० ॥ भगवन मुज उपरे किरपा करी जो, सांजजना निज चरित्र न- र जो ॥ जवअटवी उतारो दीक्षा आपीने जो, ... कहे जिन

सुख उपजे तिम महाभाग जो ॥ ५ ॥ सा० ॥ देइ राज्य अजितराउ कुं
वरने मे तदा जो, करी उद्घोषणापूर्वक दीधु दान जो॥ वसुभूति रा
णी परिजन परिवारशु रे, लीधी दीक्षा सुणी जयकुमर निदान जो॥
॥ ६ ॥ सा० ॥ एह विशेष कारण मे म्हारु जाणीयु जो, जय कहे भा
जन कारण एह विशेष जो ॥ भवअटवीथी उतरीये प्रभु किणी परे जो,
उतरीने कहो जावु किणे देश जो ॥ ७ ॥ सा० ॥ गुरु कहे अटवी द्र
व्य भाव दुभेदथी जो, द्रव्यअटवीनो सांभल तु दृष्टांत जो ॥ कोइ न
गरथी नगरांतर जावा भणी जो, कोइ सार्थप उद्घोषणा एणी वृत्तांत
जो ॥ ८ ॥ सा० ॥ मुज साथे जे आवे तेहने पोहोचवु जो, एम सांभ
ली बहु साथ थयो तस साथे जो ॥ मारगना गुण दोष ते सार्थने दा
खवे जो, सांभलजो इण मारग ठे दोय पाथ जो ॥ ९ ॥ सा० ॥ एक
सरल ने बीजो वक्र ते जाणीये जो, पण ते वक्रे बहु काले पहोंचाय जो
॥ सुखथी जातां अंते ऋजुमां अवतरे जो, लहीये इछित पुर सुखनो स
मुदाय जो ॥ १० ॥ सा० ॥ ऋजु मार्गे बहु पासे पण अति सांकडो जो,
बहु कष्टे पहोंचाये इछित शहेर जो ॥ अति विषम तिहां उतरतां बीहा
मणो जो, वाटे विघ्नकारी हरि वाघ न महेर जो ॥ ११ ॥ सा० ॥ मार
गमां पण उतरवा ते नवि दीये जो, तेहने आप पराक्रमथी करी घात
जो ॥ जइशु पण पूठे पूठे आवशे जो, पुरमां पहोंचीये तिहां लगे एह
नो यश जो ॥ १२ ॥ सा० ॥ उन्मारगे पग मूके तो ले मूलथी जो, मार्गे
हींडे ते उपर नहीं जोर जो ॥ आगल जातां रूख मनोहर आवशे जो,
स्निग्ध सुगंधी पत्र कुसुम बहु मोहोर जो ॥ १३ ॥ सा० ॥ शीतल छाया
शोभे जेहनी रूअडी जो, पण तिहां बेठां पामे जीव विनाश जो ॥ तो खा
वानी वात तो जाणो वेगली जो, तिहां नवि बेसजो धरो जीवनआश जो
॥ १४ ॥ सा० ॥ वली बीजा फारू सड्यां पड्यां आवशे जो, पाडुपत्र कुसुम
फल वर्जित तेह जो ॥ नहीं मनोहर विशामो करवो पडे जो, मुहूर्त्त मात्र
तो करजो शुभ मनरेह जो ॥ १५ ॥ सा० ॥ मारगकांठे बेठा पुरुष घणा हशे
जो, रूप मनोहर ने वली मीठा वयण जो ॥ तुमने तेडशे आवो इहां
पण मार्गे ठे जो, तेहनु वचन न सुणवु न जोवु नयण जो ॥ १६ ॥ सा०
॥ रूप पण साथथी मत रहेजो कोइ वेगला जो, एकाकीने भय निश्च

होय प्राय जो ॥ दावानल थोडो पण अप्रमादी थइ जो, उंजववो अन्यथा बहु अनर्थ थाय जो ॥ १७ ॥ सा० ॥ उचो पर्वत उपयोगे उल्लघवो जो, ते उपयोग विना जाये प्राण ते ठाम जो ॥ वशजाल अतिगह्वर गुपित उल्लघवी जो, उपद्रव होय तिणे नवि करवो विश्राम जो ॥ १८ ॥ सा० ॥ एक खाली लघु मारग जाता आवशे जो, नाम मनोरथ भट बेठो नित्य पास जो ॥ ते कहेशे ए खाड लगारेक पूरजो जो, पण नवि पूरजो मनमा आणी तास जो ॥ १९ ॥ सा० ॥ जो पूरशो तो मोहोटी थधती ते जशे जो, तिणे अवगणना करीने जावु थाय जो ॥ फल किपाकना पच जातिना मनोहरु जो, नवि जोवा नवि खावा स्वाद थणाय जो ॥ २० ॥ सा० ॥ महा विकराल पिशाच ते वावीश वाटमा जो, क्षण क्षण उपद्रव करता गणवा नाहि जो ॥ नीरस विरस जातपाणी ते पण दोहिलु जो, खेद न करवो वावरता ते माहि जो ॥ २१ ॥ सा० ॥ नित्य प्रयाण ते करवु मुझ आणा वही जो, त्रहेवु नियमा राते पण दोय जाम जो ॥ एम जाता अटवी क्रमे उल्लघीये जो, निवृत्तिपुर पामीजे सुखनु धाम जो ॥ २२ ॥ सा० ॥ क्लेश उपद्रव तिण नगरीथी वेगला जो, ए दृष्टात हवे उपनय कहु सार जो ॥ सारथवाह ते त्रण लोक सुरमणि समो जो, अरिहा देवनो देव करे उपगार जो ॥ २३ ॥ सा० ॥ आक्षेपणी १ विक्षेपणी २ सवेगणी ३ तथा जो, निर्वेदनी ४ ए धर्म कथा चउ ज्ञेय जो ॥ ते उद्घोषणा मोक्षना अर्थी जीवना जो, साथना लोक ते साथे यथा अमेय जो ॥ २४ ॥ सा० ॥ अटवी चिहु गति भ्रमण करणनी जाणीये जो, साधुधर्म ते सूधो मारग होय जो ॥ श्रावकधर्म ते वाको मोडु पोहोंचवु जो, पण अते मुनिमारग आवे सोय जो ॥ २५ ॥ सा० ॥ इच्छित पुर ते शिवनगरी सोहामणी जो, जिहा नहीं जनम मरण ने रोगना शोग जो ॥ वाघ सिंह दोय [illegible] ए वह उपद्रवे जो, जेहथी नवि लेवाये सजम जोग जो ॥ २६ ॥ सा० ॥ श्रमणपणु लीधे पण केरु मूके नहीं जो, जिनवरमारग चूकावे [illegible] य जो ॥ नारी पशु पडग सजुत वसतीयका जो, तेहज [illegible] स मनोहर ठाय जो ॥ २७ ॥ सा० ॥ निरवद्य वसती [illegible] ल्वमा जो, पासथादिक जे उपदेश विरुद्ध जो ॥ दायक [illegible]

वहु जना जो, ते वैरी सम वोलावे यइ शुद्ध जो ॥ २७ ॥ सा० ॥ सा खी जन ते श्रमण शीलगरथ धारकु जो, क्रोधदावानल पर्वत ते महा मान जो ॥ वशजाल माया लघु खामी ते लोजनी जो, मनोरथ जट ते इछारूप अमान जो ॥ २९ ॥ सा० ॥ थोमी पण पूरीये तो पार न पामीर जो, शव्दादिकना विपय ते फल किंपाक जो ॥ जेह वावीश पिशाच त जाणो परीसहा जो, सयम जीवित हरे एहनो ए विपाक जो ॥ ३० ॥ सा० ॥ मधुकरवृत्तिए श्ररस विरस मुनि श्राहार जे जो, नित्य प्रमाणु त जाणो अप्रमाद जो ॥ वे पहोर राते पण सज्ञाय ते नित्य करे जो, ए णी परे अटवी उल्लघे आह्लाद जो ॥ ३१ ॥ सा० ॥ पोहोचे श्रनुक्रमे शि वनगरी सुख शाश्वते जो, सांजली समकित देशविरति परिणाम जो ॥ जयकुमरे गुरु पासे ते अगीकस्या जो, पेगो नयरीमा पोहोतो निज गा म जो ॥ ३२ ॥ सा० ॥ युवराज्ये थाप्यो निज ताते तेहने जो, नित्य नित सेवे मुनिवर सनतकुमार जो ॥ चाखी पद्मविजय ए पचम खडमा जो, ढाल एकवीशमी सुणता जयजयकार जो ॥ ३३ ॥ सा० ॥ ६५७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मास कलप करी मुनिवरु, विचस्या श्रीजगवत, आवे धणसिरी इहा कने, ते सुणजो विरतत ॥ १ ॥ नारकमाथी नीकली, ससरी वहु ससार, श्रनतर भवे अनुजव्यु, अज्ञान कष्ट श्रपार ॥ २ ॥ मरण लही जयकुमरनो, श्रनुज थयो घणु इठ, विजय नाम तस गावीयु, कुमर थयो उत्किठ ॥ ३ ॥ विजयने जय वल्लज नहीं, काल गयो एम काय, कर्म विचित्र थकी लह्यु, मरण तेह महाराय ॥ ४ ॥ जयकुमार राज्ये ठव्या, सहुए मली सामत, विजय रूप लही विलखीउं, सज्ञा थइ नासत ॥ ५ ॥ सामतमरुले समजीने, वाध्यो मरडी वाहि, वारजटीउं जे वाहिरे, डुख देवे दिल माहि ॥ ६ ॥

॥ ढाल वावीशमी ॥

॥ याहरा मोहला उपर मेह, फवूके विजली हो लाल ॥ फवू० ॥ ए देशी ॥

॥ एणी श्रवसर प्रतिहारी, आवी एम विनवे हो लाल ॥ आवी० ॥ द्वारदेश तुम जननी, आगी ठे हवे हो लाल के ॥ श्रावी० ॥ कायक कार्य उद्देशी, दरिसण श्रजिलपे हो लाल के ॥ दरि० ॥ तव नृप सभ्रम

रामी, गयो तस सन्मुखे हो लाल ॥ गयो० ॥ १ ॥ कहे माता तुमे केम,
रथाख्या इहा लगे हो लाल ॥ प० ॥ तव गेती कहे सुत, शोकानल
बहु जगे हो लाल ॥ शो० ॥ सुतने जीवितदान, आपो तव नृप वदे
हो लाल ॥ आ० ॥ कोणथी भय ए कुमारने, तव राणी वदे हो लाल
के ॥ त० ॥ २ ॥ प्रतिपक्षीने जतनथी, राखवो नृपथिति हो लाल के ॥
॥ रा० ॥ अन्य सामत प्रेरयाथी, उपद्रवनी तती हो लाल के ॥ उ० ॥
मत करो एम विचारी, राज्य चितक नरे हो लाल के ॥ रा० ॥ कीधु
काम ते मुज पण, गमतु आदरे हो लाल के ॥ग० ॥ ३ ॥ पण एहने त-
नु बाधा, न थाये तिम करो हो लाल ॥ न० ॥ तव नृप कहे जो मा-
त, प्रतिपक्षी ए खरो हो लाल ॥ प्र० ॥ तो कोण निज पक्षी कहो,
मातजी माहरे हो लाल के ॥ मा० ॥ केम करो वात उभा इहा, आवी
पादरे हो लाल के ॥ आ० ॥ ४ ॥ माहि लावी देइ आसन, वेगो एणी
परे हो लाल के ॥ वे० ॥ रे रे लावो कुमारने, रोक्यो जिण घरे हो ला-
ल के ॥ रो० ॥ तेहने तेडवा पुरुष, गया तव नृप मने हो लाल ॥
ग० ॥ चिंतवे राज्य ए केहवु, जेहथी ए बने हो लाल के ॥ जे० ॥
॥ ५ ॥ राज्य महत नरे जुर्ड, वात एम शी करी हो लाल के ॥ वा० ॥
वधुजनने राज्य, लह्यो ए दु खकरी हो लाल ॥ ल० ॥ परम प्रमादहे-
तुफल, कडुया जेहना हो लाल के ॥ क० ॥ विदित ससार स्वरूपने,
केम माने मना हो लाल के ॥ के० ॥ ६ ॥ राज्य देइ कुमारने, मानने
सुख करु हो लाल के ॥ मा० ॥ एह राज्य बहु दोप, निधानने परि-
हरु हो लाल ॥ नि० ॥ इण अवसर पूर्वे कृत, कर्मना दोपथी हो लाल
के ॥ क० ॥ वध परिणाम वध्यो नृप, उपर रोपथी हो लाल के ॥ उ० ॥
॥ ७ ॥ आव्यो नृपति पास, सिहासणे थापीउं हो लाल ॥ सि० ॥ क-
क्कलश भरी नीर, सुगधे व्यापीउं हो लाल ॥ सु० ॥ एक लीये नि
हाथ, बीजा सामतने दो लाल ॥ बी० ॥ करी अभिपेक नमी
मातने हो लाल के॥ पू०॥ ८॥ मात गयो शोकानल, तव जननी
लाल के ॥ त० ॥ इमणथी कहो अनल ते, केम हानि लहे
॥ के० ॥ नृपति कहे कारण किशु, नवि जाणु
न० ॥ मात कहे नरकात ए, राज्य आपो

वहु जना जो, ते वैरी सम वोलावे थइ शुद्ध जो ॥ २८ ॥ सां० ॥ सा खी जन ते श्रमण शीलरथ धारक जो, क्रोधदावानल पर्वत ते महा मान जो ॥ वशजाल माया लघु खामी ते लोजनी जो, मनोरथ जट ते इछारूप अमान जो ॥ २९ ॥ सा० ॥ योनी पण पूरीये तो पार न पामीय जो, शब्दादिकना विषय ते फल किंपाक जो ॥ जेह वावीश पिशाच ते जाणो परीसहा जो, सयम जीवित हरे एहनो ए विपाक जो ॥ ३० ॥ सां० ॥ मधुकरवृत्तिए अरस विरस मुनि आहार जे जो, नित्य प्रयाण त जाणो अप्रमाद जो ॥ वे पहोर राते पण सज्झाय ते नित्य करे जो, ए णी परे अटवी उल्लघे आह्लाद जो ॥ ३१ ॥ सा० ॥ पोहोंचे अनुक्रमे शि वनगरी सुख शाश्वते जो, साजली समकित देशविरति परिणाम जो ॥ जयकुमरे गुरु पासे ते अगीकस्या जो, पेठो नयरीमा पोहोतो निज ग म जो ॥ ३२ ॥ सा० ॥ युवराज्ये थाप्यो निज ताते तेहने जो, नित्य नित सेवे मुनिवर सनतकुमार जो ॥ नाखी पद्मविजय ए पचम रुकमा जो, ढाल एकवीशमी सुणता जयजयकार जो ॥ ३३ ॥ सा० ॥ ६५८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मास कलप करी मुनिवरु, विचस्या श्रीजगवंत, आवे धणसिरी इहा कने, ते सुणजो विरतत ॥ १ ॥ नारकमाथी नीकली, ससरी वहु ससार, अनतर जवे अनुजव्यु, अज्ञान कष्ट अपार ॥ २ ॥ मरण लही जयकुमरनो, अनुज थयो घणु इठ, विजय नाम तस गवीयु, कुमर थयो उक्किठ ॥ ३ ॥ विजयने जय वल्लज नहीं, काल गयो एम काय, कर्म विचित्र थकी लह्यु, मरण तेह महाराय ॥ ४ ॥ जयकुमार राज्ये ठव्या, सहुए मली सामत, विजय द्वेप लही विलखीउं, सज्ज थइ नासत ॥ ५ ॥ सामतमरुडे समजीने, वाध्यो मरडी वाहि, वारवटीउं जे वाहिरे, उ ख देवे दिल माहि ॥ ६ ॥

॥ ढाल वावीशमी ॥

॥ थाहरा मोहला उपर मेह, झवूके विजली हो लाल ॥ झवू० ॥ ए देशी ॥

॥ एणी अवसर प्रतिहारी, आवी एम विनवे हो लाल ॥ आवी० ॥ द्वारदेश तुम जननी, थारी ठे हवे हो लाल के ॥ आवी० ॥ कायक कार्य उद्देशी, दरिसण अजिवपे हो लाल के ॥ दरि० ॥ तव नृप सत्रम

पामी, गयो तस सन्मुखे हो लाल ॥ गयो० ॥ १ ॥ कहे माता तुमे केम, पधास्या इहां लगे हो लाल ॥ प० ॥ तव गेनी कहे सुत, शोकानल बहु जगे हो लाल ॥ शो० ॥ सुतने जीवितदान, आपो तव नृप वदे हो लाल ॥ आ० ॥ कोणथी जय ए कुमारने, तव राणी वदे हो लाल के ॥ त० ॥ २ ॥ प्रतिपक्षीने जतनथी, राखवो नृपथिति हो लाल के ॥ ॥ रा० ॥ अन्य सामत प्रेखाथी, उपड्रवनी तती हो लाल के ॥ उ० ॥ मत करो एम विचारी, राज्य चितक नरे हो लाल के ॥ रा० ॥ कीधु काम ते तुज पए, गमतु आदरे हो लाल के ॥ग० ॥ ३ ॥पण एहने तनु बाधा, न थाये तिम करो हो लाल ॥ न० ॥ तव नृप कहे जो मात, प्रतिपक्षी ए खरो हो लाल ॥ प्र० ॥ तो कोण निज पक्षी कहो, मानजी माहरे हो लाल के ॥ मा० ॥ केम करो वात उचा इहां, आवी पादरे हो लाल के ॥ आ० ॥ ४ ॥ माहि लावी देइ आसन, बेठो पणी परे हो लाल के ॥ बे० ॥ रे रे लावो कुमारने, रोक्यो जिए घरे हो लाल के ॥ रो० ॥ तेहने तेरुवा पुरुष, गया तव नृप मने हो लाल ॥ ग० ॥ चितवे राज्य ए केहवु, जेहथी ए बने हो लाल के ॥ जे० ॥ ॥ ५ ॥ राज्य महत नरे जुर्छ, वात एम शी करी हो लाल के ॥ वा० ॥ बधुजनने राज्य, खडो ए डु खकरी हो लाल ॥ ख० ॥ परम प्रमादहेतुफल, कडुआ जेहना हो लाल के ॥ क० ॥ विदित ससार स्वरूपने, केम माने मना हो लाल के ॥ के० ॥ ६ ॥ राज्य देइ कुमारने, मातने सुख करु हो लाल के ॥ मा० ॥ एह राज्य बहु दोष, निधानने परिहरु हो लाल ॥ नि० ॥ इण अवसर पूर्वे कृत, कर्मना दोषथी हो लाल के ॥ क० ॥ वध परिणाम वध्यो नृप, उपर रोषथी हो लाल के ॥ उ० ॥ ॥ ७ ॥ आव्यो नृपति पास, सिंहासणे थापीर्ड हो लाल ॥ सिं० ॥ कनककलश भरी नीर, सुगंधे व्यापीर्ड हो लाल ॥ सु० ॥ एक लीधे निज हाथ, बीजा सामतने हो लाल ॥ बी० ॥ करी अभिषेक नमी पद, पूछे मातने हो लाल के॥ पू०॥ ८॥ मात गयो शोकानल, तव जननी कहे हो लाल के ॥ त० ॥ इधणथी कहो अनल ते, केम हानि वहे हो लाल के ॥ के० ॥ नृपति कहे कारण किशु, नवि जाणुं अमो हो लाल के ॥ न० ॥ मात कहे नरकात ए, राज्य जाणो तुमो हो लाल के ॥ रा० ॥

तन सूये सूवे जी ॥ १० ॥ धरणे हो तव धरणे माग्युं नीर, आप्यु हो
जल आप्यु नलिनीपानमा जी ॥ उंपधि हो तिहा उंपधि नाखी माहि,
शिरनो हो सरू शिरसरू जोड्यो शानमा जी ॥ ११ ॥ पाणी हो गल्यु
पाणी गल्यु तत्र, व्रण नवि हो तन व्रण नवि तिहा दीसे जरा जी ॥
महिमा हो तस महिमा अगम अपार, उठी हो तेह उठीने वेगे धरा
जी ॥ १२ ॥ अधिकु हो थयु अधिकु पूर्वेथी रूप, घरणी हो नवी घर
णी हरखी अति घणी जी ॥ लागो हो हवे लागो पल्लीपति पाय, जारे हो
तुमे जारे जीवित दीधुं मुज जणी जी ॥१३॥ नारी हो प्रत्तु नारी सगजा एह,
उगरी हो प्रत्तु उगरी अम आशा फली जी ॥ करीये हो हवे करीये जे
कहो तेह, बोले हो तन बोले धरण करी मति नली जी ॥ १४ ॥ कीजे
हो दया कीजे दया सवि जीव, बोल्यो कालसेन आणी मया जी ॥ पा
रधी हो कर्म पारधी न करु काम, जीवु हो जिहा जीवु त्या पालु दया
जी ॥ १५ ॥ धरण हो कहे धरण करु सवि काम, एम कही हो तेह
एम कही निज थानक गया जी ॥ नवनवा हो तेह नवनवा करता प्रयाण,
जाता हो हवे जाता केइक दिन थया जी ॥ १६ ॥ पोहोता हो तेह पो
होता आया मुही गाम, सुखमा हो हवे सुखमा साथ ते उतस्यो जी ॥
पाखीनो हो कस्यो पाखीनो उपवास, धरणे हो निज धरणे आतम उद्धस्यो
जी ॥ १७ ॥ तिणे समे हो तिहा तिणे समे एक चमाल, तीखी हो तस तीखी
साथे शूली धरी जी ॥ गेरु हो तस गेरुए लींप्यु गात्र, चोर हो पण चार न
चोर मह्यो करी जी ॥ १८ ॥ विरसु हो वली विरसु डिंडिम वाय, जाय
हो लेइ जाये जुवानने मारवा जी ॥ देखी हो तेह देखी मोहोटो साथ,
थोभे हो नहीं नोभे मुज डुःख वारवा जी ॥ १९ ॥ सुणजो हो सहु सु
णजो महासर गाम, वासी हो नामे वासी नामे मोरीउ जी ॥ काम हो
जता काले कुशस्थल गाम, तस्करे हो मुज तस्करे इणी परे धोरीउ जी
॥ २० ॥ दोष हो मुज दोष नथी इहा काय, ठेकरो हो मुज ठेकरो श्र
णागत प्रत्ये जी ॥ सुणजो हो वली सुणजो एक मुज वात, मरणथी हो
बहु मरणथी डुःख बहु सांप्रते जी ॥ २१ ॥ पूर्वेज हो मुज पूर्वेज थया निक
लंक, मेलु हो कलु मेलुं कुल में माहरु जी ॥ ठेकरो हो तिणे ठेकरो
दीनदयाल, नीरुद हो काय धीरुद दयालु ताहरु जी ॥ २२ ॥ सांभली

हो तब सांजली धरण कुमार, चिंतवे हो चित्त चिंतवे चोर न एह छे जी ॥ वचने हो करी वचने जाणु एम, तलवर हो कहे तळवरने कहे जेह छे जी ॥ २३ ॥ खमजो हो तुमे खमजो मुहूर्त्त मात्र, भूपने हो द्रव्य भूपने द्रव्य देइ करी जी ॥ छोडवु हो कदि छोडवु भाग्य जो होय, ते कहे हो जाउं ते कहे जाउं शीघ्रज चरी जी ॥ २४ ॥ माला हो लेइ माला मुक्ताफल साथ, सहस हो दश सहस दिनारनी ते भली जी ॥ भेटी हो नृप भेटीने कह्यु वृत्तांत, कीधो हो नृपे कीधो पसाय नर अटकली जी ॥ २५ ॥ आवी हो तिहा आवी मूकाव्यो चोर, जीवित हो तुमे जीवित दीधु शुभ परे जी ॥ भाखी हो एम भाखी तलवरने वाणी, पाणने हो तेह पाणने आश्वासन करे जी ॥२६॥ छट्ठे हो खंड छट्ठे चोथी ढाल, भाखी हो ए भाखी अति सोहामणीजी ॥ जाणो हो भवि जाणो दयालु एम, वाणी हो यह वाणी पद्मविजय तणी जी ॥२७॥ सर्व गाथा ॥१२३॥

॥ दोहा ॥

॥सचव तस देइ सखर, बोलाव्यो ते ताम, एह अवस्था आर्य तुम, मत हो जिणे मुझ काम ॥ १ ॥ गयो चमाल गुण गावतो, करे प्रयाण कुमार, उत्तरापथ अचलपुरे, सुखमा पहोता सार ॥ २ ॥ आदर राये आपीयो, वेची सघली वस्त, अठ गुण लाभ आसादीउं, सघलु करतो शस्त ॥ ॥ ३ ॥ पुण्यउदय तस पाधरो, चातुर चारे मास, करता कोडि कमाइउं, वाणिज्य तणो विलास ॥ ४ ॥ माकंदी पुर मोकलु, भरीयु तेणे भंड, साथ करी ते सामटो, चाल्यो तेज प्रचंड ॥ ५ ॥ प्रतिदिन करत प्रयाण ते, अनुचर साथे अपार, कादंबरी अटवी कने, तंबू कर्या तैयार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ जाउं जाउं रे रुडा नाथ, तुमशु नहीं बोलु ॥

॥ वृषभ तडुके तिणे वने, काय सोर करे शीयाल रे ॥ काय वनभैंसा माहो माहि लडे, काय वानर देता फाल ॥ १ ॥ सांजलो वातमीया, जोजो जोजो रे कर्मनिदान ॥ सा० ॥ ऋद्धि चंचल कुंजरकान ॥ सा० ॥ जेहवु कपटीनु ध्यान ॥ सा० ॥ नरपतिनु जेहवु मान ॥ सा० ॥ ए आकणी ॥ सिंहनाद केसरी करे वली, क्षिहायक गजवरवृंद रे ॥ ताल तमाल चंदन घणा, क्याहि वृंद वली माकंद ॥ २ ॥ सा० ॥ अजगर फ-

तव जूये सूवे जी ॥ १० ॥ धरणे हो तव धरणे माग्युं नीर, श्राप्यु हो जल श्राण्यु नलिनीपानमा जी ॥ उंपधि हो तिहा उंपधि नाखी माहि, शिरनो हो खरू शिरखरू जोड्यो शानमा जी ॥ ११ ॥ पाणी हो गयु पाणी गव्यु तन्न, व्रण नवि हो तव व्रण नवि तिहा दीसे जरा जी ॥ महिमा हो तस महिमा श्रगम अपार, उठी हो तेह उठीने वेगे रा जी ॥ १२ ॥ श्रधिकु हो थयु श्रधिकु पूर्वथी रूप, घरणी हो वली घर णी हरखी श्रति घणी जी ॥ लागो हो हवे लागो पल्लीपति पाय, जाखे हो तुमे जाखे जीवित दीउं मुऊ जणी जी ॥१३॥ नारी हो प्रजु नारी सगर्जा एह, जगरी हो प्रजु जगरी श्रम श्राशा फली जी ॥ करीये हो हवे करीये जे कहो तेह, बोले हो तव वोले धरण करी मति नली जी ॥ १४ ॥ कीजे हो दया कीजे दया सवि जीव, वोल्यो कालसेन श्राणी मया जी ॥ पा रधी हो कर्मे पारधी न करु काम, जीवु हो जिहा जीवु त्या पालु दया जी ॥ १५ ॥ धरण हो कहे धरण कलु सनि काम, एम कही हो तेह एम कही निज थानक गया जी ॥ नवनवा हो तेह नवनवा करता प्रयाण, जाता हो हवे जाता केइक दिन थया जी ॥ १६ ॥ पोहोता हो तेह पो होता श्राया मुही गाम, सुखमा हो हवे सुखमा साथ ते उतर्यो जी ॥ पाखीनो हो कर्यो पाखीनो उपवास, धरणे हो निज धरणे श्रातम उद्धर्यो जी ॥ १७ ॥ तिणे समे हो तिहा तिणे समे एक चमाल, तीखी हो तस तीखी खांधे शूली धरी जी ॥ गेरु हो तस गेरुए लींप्यु गात्र, चोर हो पण चोर न चोर ग्रह्यो करी जी ॥ १८ ॥ विरसु हो वली विरसु डिंडिम वाय, जाये हो लेइ जाये जुवानने मारवा जी ॥ देखी हो तेह देखी मोहोटो साथ, वोले हो नहीं वोले मुऊ छु ख वारवा जी ॥ १९ ॥ सुणजो हो सहु सु णजो महासर गाम, वासी हो नामे वासी नामे मोरीउं जी ॥ कामे हो जता कामे कुशस्थल गाम, तलवरे हो मुऊ तलवरे इणी परे धोरीउं जी ॥ २० ॥ दोष हो मुऊ दोष नथी इहा काय, ठोमवो हो मुऊ ठोमवो शर णागत प्रत्ये जी ॥ सुणजो हो वली सुणजो एक मुऊ वात, मरणथी हो वहु मरणथी छु ख वहु साप्रते जी ॥ २१ ॥ पूर्वज हो मुऊ पूर्वज थया निक लक, मेलु हो कलु मेलु कुल मे माहरु जी ॥ ठोमवो हो तिणे ठोमवो दीनदयाल, वीरुद हो काय वीरुद दयानु ताहरु जी ॥ २२ ॥ साजली

हो तत्र साजली धरण कुमार, चिंतवे हो चित्त चितवे चोर न एह ले जी ॥ वचने हो करी वचने जाणु एम, तलवर हो कहे तलवरने कहे जेह ले जी ॥ २३ ॥ खमजो हो तुमे खमजो मुहूर्त्त मात्र, नृपने हो द्रव्य नृपने द्रव्य देइ करी जी ॥ ठेम्बु हो कदि ठेम्बु जाग्य जो होय, ते कहे हो जाउं ते कहे जाउं शीघ्रज चरी जी ॥ २४ ॥ माला हो लेइ माला मुक्ताफल साथ, सहस हो दश सहस दिनारनी ते जली जी ॥ जेटी हो नृप जेटीने कह्यु वृत्तांत, कीधो हो नृपे कीधो पसाय नर अ-टकली जी ॥ २५ ॥ आवी हो तिहां आवी मूकाव्यो चोर, जीवित हो तुमे जीवित दीधु शुज परे जी ॥ जाखी हो एम जाखी तलवरने वाणी, पाणने हो तेह पाणने आश्वासन करे जी ॥२६॥ ठठे हो खम ठठे चोथी ढाल, जाखी हो ए जाखी अति सोहामणीजी ॥ जाणो हो जवि जाणो दयालु एम, वाणी हो एह वाणी पद्मविजय जणी जी ॥२७॥ सर्व गाथा ॥१२३॥

॥ दोहा ॥

॥ सबल तस देइ सखर, बोलाव्यो ते ताम, एह अवस्था आर्ये तुम, मत हो जिणे मुज काम ॥ १ ॥ गयो चंगाल गुण गावतो, करे प्रयाण कुमार, उत्तरापथ अचलपुरे, सुखमा पहोता सार ॥ २ ॥ आदर राये आ-पीयो, वेची सघली वस्त, अब गुण लाज आलादीउं, सघलु करतो शस्त ॥ ॥ ३ ॥ पुण्यउदय तस पाधरो, चातुर चारे मास, करता कोडि कमाइउं, वाणिज्य तणो विलास ॥ ४ ॥ माकंदी पुर मोकलु, जरीयु तेणे जरु, साथ करी ते सामटो, चाल्यो तेज प्रचन्न ॥ ५ ॥ प्रतिदिन करत प्रयाण ते, अनुचर साथे अपार, कादंबरी अटवी कने, तत्र् कस्या तैयार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पाचमी ॥

॥ जाउं जाउं रे रुठडा नाथ, तुमशु नहीं बोलु ॥

॥ वृषज तडुके तिणे वने, काय सोर करे शीआल रे ॥ काय जनजें-सा माहो माहि लडे, काय वानर देता फाल ॥ १ ॥ साजलो वातमीया, जोजो जोजो रे कर्मनिदान ॥ सा० ॥ रुद्धि चचल कुंजरकान ॥ सा० ॥ जेहवु कपटीनु ध्यान ॥ सा० ॥ नरपतिनु जेहवु मान ॥ सा० ॥ ए आ-कणी ॥ सिंहनाद केसरी करे वली, चिंहायक गजवरवृंद रे ॥ ताज त-माल चंदन घणा, क्याहि वृक्ष वली माकंद ॥ २ ॥ सा० ॥ अजगर फ-

हरे प्राण रे ॥ कु० ॥ थाकी लखमी वाटमा, वयण प्रस्वेद पिठाण रे ॥
॥ ६ ॥ कु० ॥ अहो अहो माहारा कर्मनी, परिणति विचित्र प्रकार रे॥
॥ कु० ॥ प्राणप्रिया दुःख एम लहे, चिंतवे धरण कुमार रे ॥ ७ ॥ कु०॥
लखमी पण चित्त चिंतवे, दुःख पण ए मुज सुख रे ॥ कु० ॥ निहा ए
आपद् पामीयो, धरण लह्यु महा दुःख रे ॥ ८ ॥ कु० ॥ उदक फलादि
क नवि मल्या, जिणे होय लखमीने त्राण रे ॥ कु० ॥ सूता पालव सा
थरे, अस्त थयो जब भाण रे ॥ ए ॥ कु० ॥ रात्रि गइ बीजे दिने, दिवस
रह्यो एक जाम रे ॥ कु० ॥ वरुठाया हेठल पमी, मूर्छानो परिणाम रे॥
॥ १० ॥ कु० ॥ मुजाणी तस चेतना, तालु जीभ सुकाय रे ॥ कु० ॥ धर
ण विचारे एहवु, जीवलोक दुःखदाय रे ॥ ११ ॥ कु० ॥ प्राण आपु
तेहने, सज्ज करे कोय ए नारी रे ॥ कु० ॥ अगे तस कर फेरवे, मूर्
तो आसुधार रे ॥ १२ ॥ कु० ॥ चेतना वली तब एम कहे, लागी तरस
अपार रे ॥ कु० ॥ जल लावु वीरी यजे, रहेजे इणहीज ठार रे ॥ १३।
॥ कु० ॥ वृक्ष उपरे चढी जोइयु, पण नवि जल कहीं लद्ध रे ॥ कु०।
ताम उतरी निज कर तणी, लेइ नसा तिणे विद्ध रे॥ १४ ॥ कु० ॥ तुव
री वनस्पति रसे, कीधु उदक समान रे ॥ कु० ॥ निज सायलनु मास जे
वनदवे पचव्यु जान रे ॥ १५ ॥ कु० ॥ नारी माटे ए सवि कर्यु, नार
विना न जीवाय रे ॥ कु० ॥ ओपधिए व्रण रूझव्यो, आव्यो नारीने ठा
य रे ॥ १६ ॥ कु० ॥ पाणी पीउं ए लावीउं, वनदवमा ए सिद्ध रे ॥ कु०।
शशकमास ए लावीउं, इणी परे कुथरे कीध रे ॥ १७ ॥ कु० ॥ आहा
कर्यो तिणीए हवे, कायक काल गमाय रे ॥ कु० ॥ दिनकरना अनुमा
नथी, उत्तर सन्मुख याय रे ॥ १८ ॥ कु० ॥ पोहोता एक सरोवरे, अ
अस्तगत याय रे ॥ कु० ॥ नवि पेठा तिणे नयरमा, यक्षदेवलमा ठाय
॥ १९ ॥ कु० ॥ पहोर रात्रि गइ तब कहे, लठी अवठी अवतार रे।
॥ कु० ॥ आर्यपुत्र तरशी घणु, तब बोल्यो ते कुमार रे ॥ २० ॥ कु०।
आणु उदक नदी थकी, तु रहेजे सुख साय रे ॥ कु० ॥ घट लेइ पाण
लावीउं, लखमीने ते पाय रे ॥ २१ ॥ कु० ॥ सूता धरण लठी हवे, रात्रि
चरम एक जाम रे ॥ कु० ॥ लखी जागी तिणे समे, चितवे मनमा थान
रे ॥ २२ ॥ कु० ॥ एह अवस्था पामीयो, मुज निधि ठे अनुकूल रे ॥ कु०॥

एहथी अधिक लहे आपदा, तो होय अति मजुल रे ॥ २३ ॥ कु
ठी ढाल खरमा, पद्मविजय कही ढाल रे ॥ कु० ॥ डुर्ज्जन सुजन
रो, सुणजो जनि सुविशाल रे ॥ २४ ॥ कु० ॥ सर्व गाथा ॥ १०३

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर तिहां आवीउं, चंडरुद्र एक चोर, रयण नाम ले
यणीए, कीधु कर्म कठोर ॥ १ ॥ कोटवाल केडे थयो, नासी न श
नेम, देहरा माहि दरुवडी, पेठो जीवन प्रेम ॥२॥ पेठो देइ वारणा, श
रुक नर आय, वेठा वोले वारणे, अप्रमादी हो जाय ॥ ३ ॥ साज
लक्षीए ते सवे, तस्कर पगरव तेम, चितवे नारी चित्तमा, कारण ए
केम ॥ ४ ॥ पूछु जो पूछे कदा, मनह मनोरथ मुफ, तास निकट गइ
हवे, पूछे इणी परे गुफ ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥
॥ कीणा मारुजीनी करहलमीनी देशी छे ॥
॥ नृप कहे निज पुत्री जणी, फट पापिणी हतीयारी
मुखडु काय देखाडे हो राज ॥ ए देशी ॥

॥ लखमी कहे तु कोण अछे, वारणे हाल कल्लोल एवमो केहनो
थाये हो राज ॥ तेह कहे कहेशु पछे, पण मुफ आपे पाणी माहरु काज
सधाय हो राज ॥ १ ॥ सा कहे जल देशु अमे, कारण मुफने नासो तव
ते चित्तमा चिते हो राज ॥ कुन वरानर ढींकरी, माहरे जोग्य ए दीसे
जासे ते इणी जाते हो राज ॥ २ ॥ चन्नरुद्र हु चोर छु, कहु सक्षेपे वात
विस्तारे न कहाय हो राज ॥ नृपनो रतनकरमीउं, चोरीने हु लाव्यो
तलवर जाणज थाये हो राज ॥ ३ ॥ ते मुफ पूठे आवीआ, तेह वहु छु
एक क्षीण शक्ति वली जावा हो राज ॥ जीवितनी आशा वडी, रयणीए
अधारी आव्यो ए मुफ रावा हो राज ॥ ४ ॥ वोले वाहिर ते नरा, तव
लछी मन चिते मुफ विधि जो अनुकूल हो राज॥ तो इछित मुफ नीपनु,
एम चिंती कहे सुपजे तुफ नहीं होये मयुल हो राज ॥ ५ ॥ पाणीनु
मु काम छे, तुफ जीवाडु माहरु वचन करे जो प्यारे हो राज ॥ ते कहे
लख उतावली, सा कहे पुरी माकदी कार्त्तिक शेठ धन धारे हो राज
६ ॥ नामे लखमी हु तस धूआ, पूरवने जिम वेरी धरणे मुफने परणी

हो राज ॥ मुज अनिष्ट सूतो रह्या, मूक तु ए धन चोरनु हु थाउ तुम
घरनी हो राज ॥ ७ ॥ ए एहनु कह्यु पामशो, पूछशो जो कहि राजा तै
हने उत्तर देशु हो राज ॥ आ माहारो भर्त्तार छे, ए तो नवि छेतरशो
मन करी जमसुत देशु हो राज ॥ ८ ॥ चोर कहे साचु कह्यु, पा [illegible]
[illegible] मुज उगरशे मनु प्राणी हो राज ॥ सा कहे तास [illegible]
[illegible] तस्कर कहे चोर गुटिका माहारी पास नगाणी हो राज ॥ ९ ॥
[illegible] गेहनो, चिंतामणिने सरिखी थाउ उदक सजोगे हो राज
॥ नवि देखे कोइ मुजने, सहस्र नयन जो रहो जोवा आवे रगे हो रा
ज ॥ १० ॥ [illegible] नगरी [illegible], आवी ते छे नरनी वात तो कहीये [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] आवीयु, अजन कीधु निद्रुप ज्ञानी [illegible]
[illegible] ॥ ११ ॥ [illegible] मूकीयो, धरणनी पास तेणे [illegible]
[illegible] हो राज ॥ [illegible] धरण ते छलीयो, कोटवाल [illegible]
[illegible] हो राज ॥ १२ ॥ देव हुआ माहिथी काढीया, [illegible]
[illegible] आगे चिंते ए शु थाय हो राज ॥ अथवा विधि प्रतिकूलथी,
[illegible] थाय गोपद सायर थाय हो राज ॥ १३ ॥ [illegible]
[illegible], [illegible] मेरु मून पण [illegible] थाय हो राज ॥ मूषक [illegible]
[illegible] अहि मालण सरिखी थाय हो राज ॥ १४ ॥
[illegible], आवे [illegible] माता थाय [illegible] ते [illegible] हो रा
ज ॥ [illegible], [illegible] सरिखी नारी काछु शु [illegible]
र हो राज ॥ १५ ॥ अथवा [illegible] न [illegible], पण ए [illegible] करता [illegible]
[illegible] हो राज ॥ नवि [illegible] हो गति [illegible]
[illegible] हो राज ॥ १६ ॥ अथवा [illegible]
[illegible] हो राज ॥ अनुक्रमे [illegible]
[illegible] हो राज ॥ १७ ॥
[illegible], [illegible] आग ने [illegible] हो रा
ज ॥ [illegible], [illegible] आग एहने [illegible] हो रा
ज ॥ १८ ॥ [illegible] कहे [illegible]
[illegible] हो राज ॥ १९ ॥ [illegible]
[illegible] हो राज ॥ २० ॥ [illegible],

एहने नवि मारो नाखी जाये किवारे हो राज ॥ नृपनी आण डुक्कर घणी, लेइ जाउं मशाणे मोरीए मान्युं त्यारे हो राज ॥ २० ॥ मोरीउं लेइ चाल्यो तिहां, मुज जीवितनो दाता सत्थवाहसुत एह हो राज ॥ उं-लख्यो तेहने जली परे, अहो अहो कर्म्म विचित्र एह अवस्था केह हो राज ॥ २१ ॥ त्या जइ बधन छोडीया, चरणे लागी बोल्यो मुजने उलखो स्वामी हो राज ॥ धरण कहे नवि सांजरे, तव धुरथी सवि जाख्यु तुम परे हु बह्यो खामी हो राज ॥ २२ ॥ द्रव्य देइ नृपने बहु, विण अप-राधी मुजने उगार्यो जली जाते हो राज ॥ धरण कहे ए केटलु, मो-रीउं बोले तास गाम लही एकाते हो राज ॥ २३ ॥ छठे खण्डे सातमी, पद्मविजय ए जाखी ढाल अधिक उल्लासे हो राज ॥ श्री समरादित्य रासमा, सांजलजो हवे आगे मगलमाला थाशे हो राज ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ २१२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आवी केम ए आपदा, मोरीउं कहे महाराज, पूछो देवने सांप्रते, कहेवानु नहीं काज ॥ १ ॥ मनमा चिंते मोरीउं, नहीं बोले ए नाथ, कचपचनु कामज नहीं, हमणा बाजी हाथ ॥ २ ॥ पाण कहे प्रणमी क-री, निश्चय इहांथी नास, काउक्षेप करता थका, पमीये कोइक पाश ॥ ॥ ३ ॥ धरण कहे धीरज धरी, मुजने सुखथी मार, आण करो अवनी-पति, दिलमा दुःख न धार ॥ ४ ॥ पण तुज कष्टे प्राण मुज, नहीं राखु निरधार, मोरीउं कहे मुज प्राणनी, वात न काय विचार ॥ ५ ॥ सात पेढीनो शु सरो, अमचो अवनीपाल, शत अवगुण अमचा सहे, कोपे नहीं कोइ काल ॥ ६ ॥ नवि जाये जो नासीने, म-रखु तो मुज नेम, सज्जन स्नेह इस्या होये, जलपय मलीआ जेम ॥ ७ ॥ यत ॥ क्षीरेणात्मगतोदकाय सुगुणाद्दत्ता पुरा तेऽखिला, क्षीरे तापम-वेक्ष्य तेन पयसा स्वात्मा कृशानौ हुतः ॥ गंतु पावकमुन्मनस्तदभव-द्दृष्ट्वा च मित्रापदं, युक्तं तेन जलेन शाम्यति सतां मैत्री पुनस्त्वीदृशी ॥ १ ॥ ' एम विचारी आत्मशु, धरण कहे सुण धीर, तुम वयणे जाउं तुरत, पाण कहे गइ पीर ॥ ८ ॥ पय देवाड्यो पधारो, प्रणमी धरणना पाय, पाछो वळीउं प्रेमशु, जलदी धरणो जाय ॥ ९ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ प्रणमी सद्गुरु पाय, गायशुं राजिमती सती जी ॥ ए देशी ॥

॥ सूरज आथम्यो जाम, पल्लवसाथरो पाथरी जी ॥ टाढ उतारण काज, अरणीथी अग्नि पेदा करी जी ॥ १ ॥ प्रणमी श्रीगुरु ने देव, सूतो ने प्रात समय थयो जी ॥ जाग्यो जाम प्रजात, सूर्यराय जब जगमगा जी ॥ २ ॥ अग्नि फरसित जूमि, दीठी कनकमयी थइ जी ॥ देखी चिंते एम, धातु क्षेत्र ए शुज मइ जी ॥ ३ ॥ कीधी इंटो ताम, धरण नाम अंकित करी जी ॥ कीधा सपुट आठ, कनक कल्लु अग्निमा धरी जी ॥ ४ ॥ कस्या दश सहस् सपुट, जिन्न पोतध्वज बाधीउं जी ॥ चीन थकी एक जिहाज, पुण्ये लावी साधीउं ॥ ५ ॥ सुवचन सारथवाह, जार असार तिहा जस्या जी ॥ कोइक द्वीपथी पामी, लछीशु देवपुर संचर्या जी ॥ ६ ॥ आव्या जब तिणे ठाम, जिन्न पोतध्वज निरखीउं जी ॥ मूक्या नागर ताम, मूक्या निर्जामक हरखीउं जी ॥ ७ ॥ दीठा धरण कुमार, वात सुणावे तेहने जी ॥ सुवचन सारथवाह, नामे दया नइ एहने जी ॥ ८ ॥ चीन द्वीप जस वास, देवपुर जावा मन करे जी ॥ तुम कहेवरावे एम, आवो तो जहाज माहि धरे जी ॥ ए ॥ बोल्या ताम कुमार, जार नल्लु शु एहमा जी ॥ निर्यामक कहे ताम, द्रव्यशक्ति नहीं तेहमा जी ॥ १० ॥ विधिवशे थयो निर्द्रव्य, पण व्यवसाय न ठमीया जी ॥ तादृश तो नहीं जार, धरण कहे तव मजीयो जी ॥ ११ ॥ एहुनी इछा जो होय, एटली जूमि आवो अहीं जी ॥ तेमी लाव्यो तेह, धरण कहे कोपशो नहीं जी ॥ १२ ॥ कायक कारण पामी, पूछु तुमने एणी परे जी ॥ जहाजमा केटलु द्रव्य, नाखो मुजने शुज परे जी ॥ १३ ॥ तव ते बोल्यो नाथ, कर्मनी वात माहारी सुणो जी ॥ द्रव्य गयु मुज सर्व, पण उद्यम करु दुगणो जी ॥ १४ ॥ सोवन टंक हजार, लेइने नाइ हु आवीयो जी ॥ धरण कहे सुणो वात, हु तुमने जले पावीयो जी ॥ १५ ॥ काढी नाखो जार, सोवनथी वाहण जरो जी ॥ पोहाचीशु जव तीर, लाख द्रव्य देशु परो जी ॥ १६ ॥ कहे सुवचन तव शेठ, जार किशो सोवन तणो जी ॥ तु बहुमान छे मुज, सफल करु जे मुज जणो जी ॥ १७ ॥ काढी नाख्यु नार, वाहण कनक गणी जलु

जी ॥ वेगो वाहण जाम, तव लठीदरसण कन्नु जी ॥ १० ॥ इरख्यो चित्त मकार, इजाणी लखमी धणी जी ॥ ए ठे माहारी नारी, धरण कहे सुवचन नणी जी ॥ १९॥ आवयो तव शेठ, वाहण चाले अनुक्रमे जी ॥ पच जोजन गया जाम, एक अचरिज होय तिण समे जी ॥२०॥ सुवर्णद्वीपनी स्वामी,सुवर्ण नामा वाणमतरी जी ॥ कपावे ते समुद्र, मानु अकालनी वीजली जी ॥ २१ ॥ रेरे सारथवाह, काय उपचार कख्यो नहीं जी ॥ मुक आणा विण एह, कनक लेइ जाइश कहीं जी ॥ २२ ॥ वरीयु तेणीए जिहाज, निर्यामकने एम कहे जी ॥ वलि यो पुरुषनी मुक, ते विण इव्य ए कुण वहे जी ॥२३॥ अथवा मारु हाथ, धरण विचारे एम सुणी जी ॥ नाखी देवाद्धु इव्य, लखमी मुक आपी गुणी जी ॥ २४ ॥ उपगारी मुक एह, देवी तो एणी परे नणे जी ॥ वलि थाउ हु आज, प्राण आ अवसर कुण गणे जी ॥ २५ ॥ देवीने कहे वाणी, एह अजाणपणे थयु जी ॥ प्रसन्न थइ ल्यो मुक, वलि तुमे काय नवि गयु जी ॥ २६ ॥ देवी बोले ताम, सायरमा कपा दीयो जी ॥ लखमी चिंते एम, देवीए मुक अनुग्रह कीयो जी ॥ २७ ॥ सारथवाहने एम, लठी नलावी एम कहे जी सोंपजो अम माय ताय, एम करी सायरमा वहे जी ॥ २० ॥ विध्यो ताम त्रिशूल, देवी सोवनद्वीपे लावती जी ॥ देवी थइ उपशांत, वाहणने नवि रोलावती जी ॥ २९ ॥ वाहण चाल्या जाय, हेमकुन्डल इण अवसरे जी ॥ रयणद्वीपे ते जाय, दीठो ने उंउरयो नली परे जी ॥ ३० ॥ देवी परिचित तास, मागी उपधिए सज कख्यो जी ॥ पुण्य प्रमाणे ताम, जीवितशेषे आयु धख्यो जी ॥ ३१ ॥ यत " वने रणे शत्रुजलाग्निमध्ये, महार्णवे पर्वतमस्तके वा ॥ सुप्त प्रमत्त विषमस्थित वा, रक्षति पुण्यानि पुराकृतानि ॥ १ ॥" अग्यारमी ए ढाल, ठठे खंडे सोहामणी जी ॥ समरादित्यने रास, पद्मविजय नावे नणी जी ॥३२॥ सर्व गाथा ॥३२०॥

॥ दोहा ॥

॥ हेमकुन्डल उंउरयो हवे, पूठे धरण पवित्त, सीरीविजय सबंध कहो, तव कहे तेह त्वरित ॥ १ ॥ जीवाड्यो मे तिहा जइ, सुणी धरण सतुष्ट, धरण लेइ विद्याधरो, गुण सनारी गरिष्ठ ॥ २ ॥ रयणसार रळिआमणो, द्वीप अति उद्दाम, रतनगिरि अति रूयडो, नानाविध[illegible] ना-

म ॥ ३ ॥ विद्याधर क्रीमा विषे, तत्पर तरुणी गीत, सुरजिवासता ॥ दिशे, आवे पण नहीं ऽत ॥ ४ ॥ सरोवरतीरे सुहकरू, हसादिकनी हार, वृक्षश्रेणी वारु परे, शोजे अति श्रीकार ॥ ५ ॥ वाव्यकाठे रुख विशम्या, सम्रहे फल सहकार, वाव्यमा नाही वावरे, पूछे वात प्रकार॥६॥

॥ ढाल वारमी ॥

॥ ए ठिमी किहा राखी ॥ ए देशी ॥

॥ हेमकुरुल पूछे धरणाने, किम तुमने मली एह ॥ तव धुरथी मांनी ने सघली, वात कही हती जेह रे ॥ १ ॥ प्राणी पुण्य तणा फल जोजो ॥ ऽुर्जन सज्जन दोय पटतर, अणु मेरु सम होजो रे ॥ प्राणी० ॥ ए आकणी ॥ अहो अहो ऽुष्टता व्यतरी केरी, कीधु मोहोटु अकाज ॥ ह वे तुमे कहो ते करीये तव कहे, कीधु सघलु काज रे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ पण मुज जाया ऽु खिणी होशे, कीजे तास सजोग ॥ हेमकुरुल मन माहि विचारे, रयण तणो करु जोग रे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ हेमकुरुल कह मेलवु रमणी, पण एक साजलो वात ॥ रतनगिरि नामे इहा परवत, सु लोचन सुर रयात रे ॥ ४ ॥ प्रा० ॥ किन्नर ते मुज मित्र वखाणयो, तेह हने मलवु माहारे ॥ तुमने देवपुरे पछे मूकीश, मलशे नारी तिहारे रे ॥ ॥ ५ ॥ प्रा० ॥ धरण कहे जिम तुम मन जाणो, तव ते धरणने लेइ ॥ पहोतो रयणगिरि तस शोजा, वर्णवीये कहो केइ रे ॥ ६ ॥ प्रा० ॥ ति लक समान रतनगिरि उपरे, रुचिर जवन अति दीपे ॥ गोख त्रिवि प्राकारनी शोजा, सुरविमानने जीपे रे ॥ ७ ॥ प्रा० ॥ जजो थइने आर र दीधो, कीधो उचित उपचार ॥ किहाथी आव्या ने ए कोण छे, कहा वली हेतु विचार रे ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ याशय निज विद्याधर जाखे, रयण अपावता लाव्यो ॥ हरषित थइ ते साजली राख्यो, केइक दिन मन जाव्यो रे ॥ ए ॥ प्रा० ॥ रयण लेइने धरणने लाव्यो, देवपुर नयरन वारी ॥ रतन आपीने इणी परे जाखे, शोधजे इहा निज नारी रे ॥ ॥ १० ॥ प्रा० ॥ हेमकुरुल निज थानके पोहोतो, धरण गयो पुर माहि ॥ टोप शेठ हवे देखे तेहने, मनमा लहे उत्साह रे ॥ ११ ॥ प्रा० ॥ अहो आकार अपूरव दीसे, एकाकी किम एह ॥ सुखशाता पूछी घर लाव्यो, शेठ कहे हवे तेह रे ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ किहाथी आव्या तुमे इ

ा नयरे, तव ते धरणे जाय्यु ॥ माकदी नीकल्याची मानी, देवपुर प-
ंत दाख्यु रे ॥ १३ ॥ प्रा० ॥ रतन शेठने राखवा आप्या, राखजो गो-
ावी एह ॥ वाह्णनी हवे वात सुणेजो, धरण पड्या पछी जेह रे ॥ १४ ॥
। प्रा० ॥ आश्वासना लक्ष्मीने करतो, सुवचन तारयवाह ॥ ए संसार
े सुंदरी, सहुने एहज राह रे ॥ १५ ॥ प्रा० ॥ जिहा संजोग वियोग
ा दीसे, खेद म करशो नारी ॥ ताहारी आय गइ नहीं एहमा, आ-
ाजे गइ छे माहारी रे ॥ १६ ॥ प्रा० ॥ ए लक्ष्मी तु लखमी विहुने, प-
होंचाडुं तुम गेह ॥ तव नयने आसु जरी बोली, लखमी मायागेह रे
। १७ ॥ प्रा० ॥ तुम जीवता मुझने शी चिंता, एक दिन शेठ विचारे ॥
यह द्रव्य ने सुंदरी सुंदर, हाथे आवी कोप हारे रे ॥ १८ ॥ प्रा० ॥
तेह तो मरण तपस्वी पाम्यो, एहनु मन मुझ साथे ॥ कुण मूरख कर
आव्युं छांडे, चित्त करु मुझ हाथे रे ॥ १९ ॥ प्रा० ॥ हास्य करता निज
वश कीधी, कपटने शी वार ॥ घरणी करीने राखी घरमा, धन पण रा-
ख्यु सार रे ॥ २० ॥ प्रा० ॥ केइक दिन पोहोतु अनुक्रमे, देवपुरे ते झि-
हाज ॥ भेटणु लेइ राजाने मळीउं, तुठो ते नरराज रे ॥ २१ ॥ प्रा० ॥
छेहनु दाण मूक्यु नरराये, पोहोतो झिहाज मझार ॥ छठे खंडे बारमी
ढाळे, पद्म कहे अधिकार रे ॥ २२ ॥ प्रा० ॥ सर्व गाथा ॥ ३५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चीनथी आव्यु चालतु, झिहाज ए सालस्यु जाण, नीरख्यो धरण
ते निरखवा, दोष जण दीठा ताम ॥ १ ॥ हरख्यो हैयडे हेजशु, इना-
पा ले दोष, पण आसन देइ पूछीयु, पूर्व वृतांत पडोप ॥ २ ॥ सतवाद्यो
तिणे साभळो, सुवचन चिंते शेठ, यहो थहो कर्मनी गति अकळ, हेंटे
देवथी हेठ ॥ ३ ॥ केवळ कोप अकाज में, समीहित पण नवि सिद्ध,
चिंती आवे वचनथी, कारज सुंदर कीध ॥ ४ ॥ जीवता तुम जोइया,
स्यो तुम लपकी वाठी, कहे धरण तुमे सवि कह्यु, पाछी न राखी पाछी
॥ ५ ॥ मुझने जाता मेलवी, कीधु लपकु दान, जाणाने कहे जाइये,
जाशो पुरना आन ॥ ६ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ वापडली रे जिभलडी तु का नवि बोले मीठु ॥ ए देशी ॥

॥ साजलजो जाइ नारीचरित्रह, काम करे ते केहवा ॥ लखमी रहे काल नयरीमा, आपण जाशु रहेवा रे ॥१॥ सा० ॥ आज तुमे पण इहा रहेवु, धरणे मानी वात ॥ स्नान करावीने दोय चिते, करवो एहनो घात रे ॥ २ ॥ सा० ॥ मदिरा पाइने आहार कराव्यो, आवी जेहवे रयणी। सघा सुदर पाथरी सूता, धरण तथा निज घरणी रे॥ ३ ॥ सा० ॥ मुआ णो मदिराने जोरे, तेहवे अवसर जाणी ॥ फासो दीधो पण ते फसल्यो, लखमी हर्ष भराणी रे ॥ ४ ॥ सा० ॥ मुउं जाणी वेहु मलीने, सागर काठे ठाल्यो ॥ ते थानक गया तेहवे शीतल, वायरो आववा माड्यो रे। ॥ ५ ॥ सा० ॥ चेतन लाधु तव ते चिते, शु ए स्वप्न देखु ॥ इद्रजाल अथवा मतिविभ्रम, अथवा सत्य ए पेखु रे ॥ ६ ॥ सा० ॥ सायरतट देखीने विचारे, निश्चय साचु एह ॥ उठीने चिते लठीनु, चरित्र यद्यपि दु खरेह रे ॥ ७ ॥ सा० ॥ उन्मारगे ए केम प्रवर्त्यां, दु खदायक ए जोग ॥ ॥ मुख मीठी वली दिलथी जूठी, महिला चालतो रोग रे॥ ॥ ८ ॥ सा०॥ अग्नि पवन ने भुजग ग्रहेवाये, नारीचित्त न कलाये ॥ दीपनी खाण कलेशनु कारण, मोहे जगत ठगाय रे ॥ ९॥ सा० ॥ यत ॥ अनृत साहस माया, मूर्खत्वमतिलोभता ॥ अशौच निर्दयत्व च, स्त्रीणा दोषा स्वभावजा ॥ १ ॥ भवस्य बीज नरक,–द्वारमार्गस्य दीपिका ॥ शुचा कद , कलेमूलं, दु खाना खानिरगना ॥ २ ॥ जलणो विघेप्पइ सुह, पवणो भूयगोय केण इनएण॥ महिला मणो न घेप्पइ, बहुएहि विणय सहस्सेहिं ॥ ३ ॥" अथवा सुवचन शेठने न घटे, पण एहनो शो दोष ॥ विपराग वाह्यो नारीशु, ते कारण ए रोष रे ॥ १० ॥ सा० ॥ इण अवसर तिहा टोप शेठना, पुरुष खोलता आव्या ॥ देखी नयणे आसु रेली, इणी परे तिणे बोलाव्या रे ॥ ११ ॥ सा० ॥ राते पण तुमे किम नवि आव्या, शेठने उपनी चिंता ॥ अमने जोवा मोकल्या शेठे, आव्या इहा खोलता रे ॥ १२ ॥ सा० ॥ चालो शेठने दरिसण आपो, शेठनी चिंता भागो ॥ अहो पुरुषनो अतर देखो, कुमर विचारवा लागा रे ॥ १३ ॥ सा० ॥ यत ॥ "वाजिवारणलोहाना, काष्टपाषाणवाससा

नराणा रमणीना च, अतर महत्तर ॥ १ ॥' ते नर साथे धरण
चाल्या, मलीआ शेठने जाम ॥ एकाते वेसारी शेठे, वात ते पूछी
ाम रे ॥ १४ ॥ सा० ॥ आमण दूमण एम केम दीसो, होय ते जाखो
ाचु ॥ तव ते धरण विचारे मनमा, किम करी फाटे काचु रे ॥ १५ ॥
ा० ॥ वात लज्जामणी नवि कहेवानी, नयणे नीर जराय ॥ कहे कां-
ए नहीं शेठ कहे सुणो, चीनथी जयाज जे आय रे ॥ १६ ॥ सा० ॥
तुमने मलीयु के नाहि, तव ते गद्गद वाणी ॥ मलीयु कुमर कहीने
डे, आसुधार वहाणी रे ॥ १७ ॥ सा० ॥ मानुं नारी मरण लही एहनी,
अन्यथा एहवो न शोक ॥ शेठ कहे ठे कुशल प्रियाने, फिहाज तेहज के
ोक रे ॥ १८ ॥ सा० ॥ वाहण तेहज ने नारी जीवे, शेठ कहे तव एम ॥
तुमने शोक कहो हवे श्यो ठे, जव सहुने ठे खेम रे ॥ १९ ॥ सा० ॥
जिम तिम उत्तर ने पडउत्तर, बोले कुमर जिवारे ॥ शेठ कहे शूने मने
जाखे, मनमा तु शु धारे रे ॥ २० ॥ सा० ॥ तें मुझ गुरुजावे पवित्र-
जीउं, किम गुरु आणा खडे ॥ नवि कहेवानु पण ते धरणो, आणाए
कहेवा मडे रे ॥ २१ ॥ सा० ॥ जीवितथी नारी जीवे ठे, पण शीले न-
वि जीवे ॥ शेठ कहे किम जाण्यु तव कहे, कारयथी जिम दीवे रे ॥
॥ २२ ॥ सा० ॥ किणी परे नीपनु तव ते धरणे, जोजन जिमणथी मामी
॥ सयल कह्यु जिम ठेहली वारे, सायरतट गया रामी रे ॥ २३ ॥ सा०
॥ अनुक्रमे जीवतो तुमने मलीउं, वात ते सर्व प्रकाशी ॥ उठे खमे ते
रमी ढाले, पञ्चे वात ते जाखी रे ॥ २४ ॥ सा० ॥ सर्व गाथा ॥ ३०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुवचन उपरे शेठजी, कोप्या जेम कृतांत, धरण धरी निज धाम-
मा, आव्यो राय उपात ॥ १ ॥ वात सयल तिहां विनवी, नरपति करवा
न्याय, तेडाव्यो सुवयण तदा, प्रणमे आवी पाय ॥ २ ॥ पूछे नृप परगट
कहो, सुणीये ऋद्धि सफार, केम कमाणा तव कहे, हरखी हैया मजार
॥ ३ ॥ त्यावी ऋद्धि कुल अनुक्रमे, नृप कहे किहांथी नारी, मात पिताए
मुजने, परणावी बहु प्यारी ॥ ४ ॥ सन्मुख नरपति शेठने, जोवे साजवी
ताम, शेठ कहे सुण साहिबा, अधिक कहे ए आम ॥ ५ ॥ सुवचन कहे
साचु किशु, शेठ कहे तव सार, कचन ने ए कामिनी[illegible] तणी अव-

धार ॥ ६ ॥ साचु एहज साजबे, सानली जपनी शक, पण वोले परगट पणे, मानु मन नि शक ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोदमी ॥

॥ श्रीनमिजिननी सेवा करता ॥ ए देशी ॥

॥ अहो अपूरव तुही निमित्तिउं, कहो इहा प्रत्यय तास साचो जी॥ राजद्वार ए ठे तव वोले, शेठ साधारण खास वाचो जी ॥ १ ॥ अहो०॥ एह प्रत्यय जे तेहज जीवे, सुवचन वोले ताम राया जी॥ धरण नाम का ने नवि सुणीयु, ए तो कहे ठे आम जाया जी ॥ २ ॥ अहो० ॥ पछी तुमे तव ते नरराये, धरण तेडाव्यो पास तेह जी॥ निज नर मूकी नारी तेडावी, आवी तिहा उल्लास एह जी ॥ अहो० ॥ इहा विण शेठने उपरोधे, आव्यो राय हजुर जाम जी ॥ पूछे रे नारी ए नरनो, दीठो के नही तुर ताम जी ॥ ४ ॥ अहो० ॥ नारी कहे कहीये नवि दीठो, पूछे धरणने राय हेजे जी ॥ तुमची घरणी के नाहि, तव कहे धरण ते ठाय तेजे जी॥ ॥ ५ ॥ अहो० ॥ जेह एणे कह्यु ते सवि सुणीयु, हवे पूछ्यानु काम शु ठे जी॥ नृप कहे तेहज माटे पूछु, वचन केनारो साम तु ठे जी ॥ ६ ॥ अहो०॥ धरण कहे तुम आग्रहे जाखु, नारी हती मुझ एह आगे जी ॥ नृप कहे धरण जणी ए सुवचन, उलखे के नही केह मागे जी ॥ ७ ॥ अहो०॥ धरण कहे नृप एहने पूछो, एह कहे ते प्रमाण माहारे जी ॥ तव सुवयणने पूछे नृपति, ठे काइए उलखाण ताहारे जी ॥ ८ ॥ अहो० ॥ सुवचन कहे ए कुण ने हु कुण, राय कहे ए वात रही जी॥ वाहणमा द्रव्य किश्यु ठे दाखो, सुवचन कहे नरतात अही जी ॥ ९॥ अहो०॥ कनक इंट्यो दश सहस सपुट ठे, पूछ्या पठी कहे एम धरणो जी ॥ राय कहे तस तोल कहो तुमे, कहे नवि जाणु नेमकरणो जी ॥ १० ॥ अहो० ॥ निज वस्तुनो तोल न जाणो, तव कहे एमज एह कीधा जी ॥ सुवचनने जाखे तव वोले, धरणे वचन कह्या जेह सीधा जी ॥ ११ ॥ अहो० ॥ नरपति याको न्याय करता, तव कहे धरण विचारी रगे जी ॥ अलिकवादी छु एहने आपो, ए धन ने ए नारी सगे जी ॥ १२ ॥ अहो० ॥ सुवचन कहे मुझ आल देइने, वोले ठे जुउं केम जाइ जी ॥ टोप शेठ तव त्रटकी वोल्यो, रे पापी कहे एम काइ जी ॥ १३ ॥ अहो० ॥ एहवु करीने एम तु, वोले, शेठ कहे

वली रोष श्राणी जी ॥ शु वहु जोजे जो ए नारी, धरणनो सघलो कोश जाणी जी ॥ १४ ॥ श्रहो० ॥ कहु एहमा जो जूठु होवे, तो घरबारशु जीव श्रापु जी ॥ धीज करावो ते श्रमे करीए, पण एहने श्रमे खिव नापु जी ॥ १५ ॥ श्रहो० ॥ धरण विचारे ए मुज नेहे, बोले इणी परे तेण माहारे जी ॥ न घटे उदासपणु करी जपे, सुणो नृप सलु दिव्येण वारे जी ॥ १६ ॥ श्रहो० ॥ वाहणमा सोवन सपुट जे बे, तेहमा धरण मुज नाम होशे जी ॥ जो सुवचन नीकजे तो एहनु, राय कहे थयु काम तोशे जी ॥ १७ ॥ श्रहो० ॥ पचोली लेवा मोकलीश्रा, लाव्या सपुट ताम निरख्या जी ॥ धरण नाम दीतु नही ज्यारे, लोक थया सहु तान विजखा जी ॥ १८ ॥ श्रहो० ॥ राय कहे नवि श्रजिधा दीसे, सुवचन कहे नरराय जाणो जी ॥ पण तुम श्रागल श्रलिक कहीने, किम धारे ए राय प्राणो जी ॥ १९ ॥ श्रहो० ॥ घरबार ने जीव कबुल कस्यो बे, धरणने कहे ए केम राय जी ॥ धरण कहे जूठु नवि जोतु, फोमो सपुटने एम ताय जी ॥ २० ॥ फोड्या सपुट नाम ते दीतु, कोप्यो राय श्रपार ताम जी ॥ महा चोर ए वाणिगवेशे, करे श्रन्याय प्रकार काम जी ॥ २१ ॥ श्रहो० ॥ जमघर सुवचन शेठ पहोचावो, श्रथवा तीने देशनिकाल दीजे जी ॥ धरणने डव्य सर्व ए सोंपो, वली कह्यो काय ततकाल कीजे जी ॥ २२ ॥ श्रहो० ॥ धरण कहे प्रजु डव्ये सरीयु, सुवचन श्रजय प्रधान करीने जी ॥ चिंते राय श्रहो नर श्रतर, शु एहने श्रपमान धरीये जी ॥ २३ ॥ श्रहो० ॥ नृप कहे धरण ए वात श्रघटती, पण तुज वचन लपाय तिणे जी ॥ तुज मन माने तिम कर नव ते, बोल्यो कीध पसाय श्रपे जी ॥ २४ ॥ श्रहो० ॥ छठे खंडे ढाल चौदमी, ननरादिलने रास लागी जी ॥ पामर उत्तमविजय मुनेसक, पद्मविजय मुनिवास रासी जी ॥ २५ ॥ श्रहो० ॥ सर्व गाथा ॥ ४२८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सहु पचाली शेठीया, सुवचन लेइ साथ, धरण लेइ पृथवीपती, सहु गया सरितानाथ ॥ १ ॥ सपुट धरणने सोंपीश्रा, शेठ जपीने नवे, धरण सुवचनने पीरता, श्रापे इन निर्दे ॥ २ ॥ नृपने देसमने कह्यो, मान खडित नवि होय, खेद मूकीने म्हालशु, सादर धरीने सोय ॥ ३ ॥

॥

लाख सोनन तुमे नवि लश्या, आदर मुजने आप, एम मुजने तुम आशीषु, लाखनो श्यो आलाप ॥ ४ ॥ एह सन्नम नयणे अमे, लाखु तुम इणी जात, तुम मन माने तेटलु, सोवन ल्यो थइ शात ॥५॥ लाज्यो सुवचन नवि लव्यो, धरण थइ तव धीर, अड लख सोवन आपीया, परनी जाजे पीर ॥ ६ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ गरु गरु ऊाऊा जस नोवत वाजे ॥ ए देशी ॥

॥ नृपने देइ सनमान, टोप शेठशु आव्या थान रे ॥ जस नोवत जगमा वाजी ॥ ए आकणी ॥ करी स्नान ने नोजन कीधा, वहु दान जाचकने दीधा रे ॥ १ ॥ जस० ॥ टोप शेठने चरणे लागो, टोप शेठ कहे शु मागो रे ॥ जस० ॥ कहे धरण जो न कहो नाकारो, तो मागु एक वारो रे ॥ २ ॥ जस० ॥ हरपे करी चिंते शेठ, हु धन्य सहु मुज हेठ रे ॥ जस० ॥ सुरतरु चिंतामणिन्नूत, मुज पास मागे अद्भुत रे ॥ ३ ॥ जस० ॥ कहे शेठ सुणो सुविनीत, पुत्र कलत्र ने ए सवि वित्त रे ॥ जस० ॥ दासरज निमित्ते जाचो, तोही मुज मन नवि काचो रे ॥४॥ जस० ॥ कहे धरण जो एम विचारो, त्रण वचन आपो सुखकारो रे ॥ जस० ॥ त्रण वचन दीया तव मागे, मुज सहस रतन ल्यो रागे रे ॥ ५ ॥ जस० ॥ दीधा तिहा रयण हजार, तेहमाथी धरण कुमार रे ॥ जस० ॥ लेइ आठ रतन करी पूजा, शेठ जी तुम सम नहीं दूजा रे ॥ ६ ॥ जस० ॥ इणी परे गुणस्तवना करतो, पग वचमा निज शिर धरतो रे ॥ जस० ॥ मुज एह प्रार्थना जाणो, शेठ चिंते तव समजाणो रे ॥ ७ ॥ जस० ॥ ग्रहीउं मुज वचने एणे, किम ना कहेवाये इणे तेणे रे ॥ जस० ॥ शेठे वहु आदर करीयो, निज नयर नणी सचरीउं रे ॥ ८ ॥ जस० ॥ निज नयरने वाहिर आवी, नेरा दीधा शुन्न नावी रे ॥ जस० ॥ नरपति तव सामो आवे, महा महोत्सवशु पधरावे रे ॥ ९ ॥ जस० ॥ निज नुवने लावे राया, स्नान नोजन करत पसाया रे ॥ जस० ॥ वहु नूपण ने वली मान, पोहोचाड्या निज घरथान रे ॥ १० ॥ जस० ॥ माय तायने हरख न माय, सहु चैत्ये पूजा विरचाय ॥ जस० ॥ तेडावी रायने घेर, सत्कार कर्यो वहु पेर रे ॥ ११ ॥ जस० ॥ परधान

पामीआ जेह, मह सत्काम्या शुभ रेह रे ॥ जस० ॥ पूछे हवे माय ने ताय, तुम धरणी कहो किहा जाय रे ॥ १२ ॥ जस० ॥ कहे धरण सुणो तुमे वात, ए मत पूछो अन्नदात रे ॥ जस० ॥ जे नारीने उचित ते कीधु, जनकादि विचारे ए सीधु रे ॥ १३ ॥ जस० ॥ मुद्रा देउ एहने आज, एम चिंतवी ते पुरराज रे ॥ जस० ॥ आव्यो घर उठी राय, तव धरण उचित करे जाय रे ॥ १४ ॥ जस० ॥ आगमन प्रयोजन कहीये, नृप कहे मुद्रा तुम लहीने रे ॥ जस० ॥ कहे धरण न मुद्रा काम, एक वात सुणो गुण धाम रे ॥ १५ ॥ जस० ॥ कहे राय कहो ते करीये, कहे धरण जो मुज आदरीये रे ॥ जस० ॥ तो मूजो बदीवान, तुम राज्यमा अभयनु दान रे ॥ १६ ॥ जस० ॥ राये दीधी तव आण, मुज राज्यमा कीजे जाण रे ॥ जस० ॥ हिंसा नवि करजो कोय, नहींतर नृपदंड ते होय रे ॥ १७ ॥ जस० ॥ नरपति निज स्थानक आव्या, गुण धरणा तणा चित्त लाव्या रे ॥ जस० ॥ बहु कांडे मित्र जे मलीआ, तेहशु क्रीडामा हलीआ रे ॥ १८ ॥ जस० ॥ गया मलयसुंदर उद्यान, तिहा नागलताने थान रे ॥ जस० ॥ नामे रे विलग कहायो, ते कुपित नारीने वायो रे ॥ १९ ॥ जस० ॥ बहु खाली पाडी करे तास, देखीने धरण उदास रे ॥ जस० ॥ साजरी लक्ष्मी ते गाम, चिंते अहो दुर्जय काम रे ॥ २० ॥ जस० ॥ कामी परमार्थ न देखे, वैराग्य थकी एम लेखे रे ॥ जस० ॥ जाय आगल धरण कुमार, अशोकश्रेणी तिण वार रे ॥ २१ ॥ जस० ॥ प्रासुक थानक तिहा दीठ, हेनामा लागा मीठ रे ॥ जस० ॥ बहु शिष्य तणो परिवार, गयो चित्तथी कामविकार रे ॥ २२ ॥ जस० ॥ अर्हद्दत्त आचारय नाम, नाणी शुभ चित्त परिणाम रे ॥ जस० ॥ जींत्यो जिणे सूर अनंग, पद ईहे अनंग सुरसंग रे ॥ २३ ॥ जस० ॥ तपशोषित जास शरीर, जोइ धरण विचारे धीर रे ॥ जस० ॥ पन्नरमी छठे खंडे, पद्म कही ढाल अखंडे रे ॥ २४ ॥ जस० ॥ सर्व गाथा ॥ ४४८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आचारज अवलोकीने, धरण विचारे धन्य, जीवित सफलु जगतमा, गुणगण जास अगन्य ॥ १ ॥ कंचन ने वली कामिनी, सयण कुटुंब सहु लोक, इंद्रजाल परे उंजले, फिरी करे पापज फोक ॥ २ ॥ उपगारी

मुक एह छे, पालु जे परिवार, केवल मोहनी कल्पना, धर्म विना नथा
धार ॥ ३ ॥ नियमा करी शकीये नहीं, धर्म ते रहेता धाम, आलर ि
सा अति, नहीं तिहा धर्मनु नाम ॥ ४ ॥ अते तजनो आपणे, न ॥६
तिणे कोय चित्तमा धरी चारित्रने, समकु आव्यु सोय ॥५
चरण कमलनी चोपङ्यु, वारु साथ वयस, धर्मलाभ दीधो गुरे, आ
चारज अवतस ॥ ६ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ जीरे जीरे स्वामी समोसख्या ॥ अथवा, तुज विण गति
नहीं जतुनी ॥ ए देशी ॥

॥ गुरुचरणे जव उपविशे, गुरु कहे किहा थकी आव्या रे ॥ भा
कहे आव्या इहा थकी, चारित्रशु अमे भाव्या रे ॥ १ ॥ श्रीगुरुराज कृ
पा करो ॥ ए आकणी ॥ अहो अहो आकृति एहनी, एहनो उत्तम वि
वेक रे ॥ चित्तपरीक्षा कारणे, वोल्या मुनिवर छेक रे॥२॥ श्री० ॥ इंद्रि
यलालच दोरुवी, नवि करवो ते कषाय रे ॥ चित्त निरीहपणे करी, स
जम पालवु थाय रे ॥ ३ ॥ श्री० ॥ विषय अनादिकनी वासना, तजवी
दोहेली जाण रे ॥ न तजे तो ए गृही समो, छाड्यु न छाड्यु समाण रे
॥ ४ ॥ श्री० ॥ कर्मदोषे न पाली शके, असदालवन करता रे ॥ सज
म छाडे ते नवि गृही, मुनि पण नहीं रहे फिरता रे ॥ ५ ॥ श्री० ॥ व
चन निष्फल तस गया, तिणे तुलना कस्या पाखे रे ॥ न घटे घर तुज
छोरुवु, धरणो तव एम भाखे रे ॥ ६ ॥ श्री० ॥ भगवन् तुमे साचु कह्यु
तजवा जोग्य ए धाम रे ॥ उपादेय चारित्र छे, तुलना विवेकनु काम रे
॥ ७ ॥ श्री० ॥ आचारज मन चितवे, जाण्यो यथार्थ ससार रे ॥ वलि
लहे जिनधर्मनी, करु प्रशसा विस्तार रे ॥ ८ ॥ श्री० ॥ वूके जिम नि
एहना, वोले एम विचारी रे ॥ जाणवा जोग्य ते जाणीयो, वत्स धन्य
माता ताहारी रे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ दुर्लभवोधि ते ते लही, करी सफल
अवतार रे ॥ ताहारु कारज सीकशे, ले तु सजमभार रे ॥ १० ॥ श्री० ॥
विषयना लालची जीवमा, परमारथ नवि देखे रे ॥ इहा दृष्टात ते मा
हरो, साजलो चित्त विशेषे रे ॥ ११ ॥ श्री० ॥ इणहीज क्षेत्र माहि वन,
अचलपुरी नामे नयरी रे ॥ जितशत्रु तिहा नरपति, जिणे जीत्या सहु

वैरी रे ॥ १२ ॥ श्री० ॥ अपराजित सुत तेहने, समरकेतु बीजो जाण रे॥ अपराजित जुवराजीयो, बीजो कुमरने ठाण रे ॥ १३ ॥ श्री० ॥ कुमरने आप्यु उजेणीनु, जोगववा जनु राज रे ॥ समरकेसरी नामे राजीयो, उद्यत ते काज रे ॥ १४ ॥ श्री० ॥ अपराजित ते उपरे, चढीउं एक दिन तेह रे ॥ जय करी जाम पाछो वल्यो, आवणने निज गेह रे ॥ १५ ॥ श्री० ॥ धर्माराम सन्निवेशे, आव्यो देखतो ताम रे ॥ पुण्यउदय भानु परगनो, सूरीसर रोह नाम रे ॥ १६ ॥ श्री० ॥ देखी संवेग ते उपन्यो, पूछे धर्मविचार रे॥ देशना दीये गुरु तेहने, पडिबूज्यो ते कुमार रे ॥ ॥ १७ ॥ श्री० ॥ चारित्र क्षय उपशम थयु, इंद्रजाल सम जाणी रे॥ सवि संसार दीक्षा लीये, तप संजम करे नाणी रे ॥ १८ ॥ श्री० ॥ गुरुचरणे हवे विचरता, पोहोता नगरा गामे रे ॥ तिहां उजेणीथी आवीया, साधुवदन कामे रे ॥ १९ ॥ श्री० ॥ रोहसूरिना शिष्य जे, आर्यराहु गुणगेह रे ॥ तेहना मुनिवर एह छे, वंदे गुरु ससनेह रे ॥ २० ॥ श्री० ॥ पूछे गुरु उज्जेणीमा, निरुपसर्ग विहार रे ॥ मुनि कहे सुंदर विहार छे, पण एक वात विचार रे ॥ २१ ॥ छठे खंडे सोलमी, पद्मविजय कही ढाल रे ॥ श्रोताजन सुणजो हवे, आगल वात रसाल रे ॥ २२ ॥ श्री० ॥ सर्व गाथा ॥ ४७३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पण नृप पुरोहितपुत्र दोय, जडरूप नहीं तस भाव, मुनि उपसर्ग महा करे, देखीने निज दाव ॥ १ ॥ अपराजित मुनि एम सुणी, चिंतवा करे विचार, समरकेतु समजण विना, अहो प्रमाद अपार ॥ २ ॥ पुत्रने पण नवि पालवे, आणा लही गुरु आज, जाउ हु उज्जेणीए, समजावु शुभ साज ॥ ३ ॥ साधुरूपथी शुभ नहीं, बोधबीज नवी जाय, शक्ति अछे समजाववा, एह विचारी उपाय ॥ ४ ॥ आप लही आचार्यनी, आव्या ते उज्जेण, आर्यराहु गच्छ अनुसरी, वसीया कार्यरुशेण ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ मुजरो ल्योने जालिम जाटणी ॥ ए देशी ॥

॥ गोचरी वेलाए मुनिवर बोलीया, तुम प्राहुणा अणगार ॥ आहार आणी तुमने अमे आपीये, अपराजित कहे ते गार ॥ १ ॥ मुनिवर

दाहमा, कहो घरे जाये केम ॥ ४ ॥ क्रोध अनल जिहां किण वणी,थाव पवन अन्नाण, वहु प्राणी वलता तिहा, नवि आवे तुझ नाण ॥ ५ ॥ वोली न शक्यो वापडो, पण नवि वूझ्यो पहाण, आगल चाली आवी आ, महोकम करी मडाण ॥ ६ ॥

॥ ढाल वावीशमी ॥

॥ वलिहारी रे तुझ वेपनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ हारे हारे देवता रे, उन्मारग तिहा चालीउं रे ॥ कटकाकुउ ऊगाम रे लाल ॥ किम पथथी कुपथे व्रजो रे, अरहदत्त कहे ताम रे लाल ॥ १ ॥ गुरु आशातना मत करो रे ॥ ए आकणी ॥ हारे हारे द वता रे, देव कहे तु जाणे एम खरु रे, नवि जाइये उनमग्ग रे लाउ ॥ तो किम मोक्षमारग तजी रे, किम ससारमा लग्ग रे लाल ॥ २ ॥ गु० ॥ हारे हारे देवता रे, एम सुणी मौन कखु तिणे रे, पण नवि वूझ्यो ते ह रे लाल ॥ आगल जाय तव देखतो रे, सूअर रूप करेह रे लाउ ॥ ॥ ३ ॥ गु० ॥ हारे हारे देवता रे, विविध जाति कण कुकने रे, छाडी अशुचि डुर्गंध रे लाल ॥ विष्टाशु राचि रह्यो रे, करी गाढो प्रतिवध रे लाल ॥ ४ ॥ गु० ॥ हारे हारे देवता रे, अरहदत्त देखी वदे रे, अहा एहनो अविवेक रे लाल ॥ कण मूकी विष्टा चखे रे, सुर कहे सुण तु ठेक रे लाल ॥ ५ ॥ गु० ॥ हारे हारे देवता रे, कहे तु जाणे ठे खरा रे, ते कहे शु हु अजाण रे लाल ॥ सुर कहे मुनिसुव्रत खामीने रे, तु केम थयो अन्नाण रे लाल ॥ ६ ॥ गु० ॥ हारे हारे देवता रे, अशुचि विषय डु र्गंधीया रे, तेहमा तुझ वहु मान रे लाल ॥ साभली मौन क री रह्यो रे, पण नवि वूझ्यो अज्ञान रे लाल ॥ ७ ॥ गु० ॥ हारे हारे चालता रे, एक गामे जइने रह्या रे, देवकुलमा धरी प्रीति रे लाल ॥ त व्यतर हेठो पडे रे, लोक देखे विपरीत रे लाल ॥ ८ ॥ गु० ॥ हारे हारे देवता रे, लोक वेसारे थानिके रे, वली ते पडतो हेठ रे लाल ॥ वली वली पडे मूके वली रे, एहनी तिहा गइ ठेठ रे लाल ॥ ९ ॥ गु० ॥ हारे हारे वोलतो रे, अरहदत्त ए मूरखो रे, किम पडे हेठो एह रे लाल ॥ अर्चा पूजा नवि आदरे रे, तव सुर वोले तेह रे लाल ॥ १० ॥ गु० ॥ हारे हारे तु किम रे, जाणे ठे एहवु खरु रे, ते कहे एहमा काय रे लाल ॥ सुर कहेतो

तु विचारजे रे, सजम ठोमी पलाय रे लाल ॥ ११ ॥
सुर शिव रे, गति पूजनिक ते ठोमीने रे, नरकादिकनो
करतो केम जाणे नहीं रे, साजली मौन ते थाय रे
हारे हारे देवता रे, माया एक विकुर्वतो रे, फींजुई
॥ क्षेत्र मलु ठे तेहनु रे, कूपक एक तम थत रे
हारे हारे देवता रे, झूको विषम जग्या घणी रे,
रे लाल ॥ एक बलद तिहां खायवा रे, चार नहीं
॥ १४ ॥ गु० ॥ हारे हारे देवता रे, जाता
अग उपाग रे लाल ॥ देखी अरहृदत्त बोलीयो रे
रे लाल ॥ १५ ॥ गु० ॥ हारे हारे देवता रे,
रे, किहां खावा ए जाय रे लाल ॥ सुर कहे
एटलु न गाय रे लाल ॥ १६ ॥ गु० ॥ हारे
सुख ठामीने रे, जेह फींजुमइ चारी रे लाल।
रे, माणस सुख अनधार रे लाल ॥ १३ ॥
तस अनिलाखाए आतमा रे, किम
कर्मसचय गल्यो रे, चितवे एम
जाणीये रे, एह माणस नहीं देवता रे
॥ वात रुनी सजलावतो रे, चाड
॥ गु० ॥ हारे हारे पूछु ए रे,
रे लाल ॥ तुं कोण ठे मुज चाड
॥ गु० ॥ हारे हारे देवता रे
रे लाज ॥ अरहृदत्त तव बोइने
॥ २१ ॥ गु० ॥ हारे हारे देवता
पर्वत गाम रे लाव ॥ कुन्ड
लाल ॥ २२ ॥ गु० ॥ हारे
अरहृदत्ते वाणी रे खाउ ॥
निणे गाण रे लाव ॥ २३
देखीने रे, जातिसमरण
त्माग्य प्रधान रे लाउ ॥

श्रादरे रे, देव खमावी ताम रे लाल ॥ निज थानक गयो देवता रे, क निज सघलु काम रे लाल ॥ २५ ॥ गु० ॥ हारे हारे तेहमा रे, पुरावि सुत हु जाणजे रे, धरण सुणो मुज वात रे लाल ॥ विराधक प्राणी त रे, नहीं तुज सम अवदात रे लाल ॥ २६ ॥ गु० ॥ हारे हारे जे ह रे, अविराधक प्राणी जला रे, ते सुखे करे निरवाह रे लाल ॥ ति॰ संजम तुमे श्रादरी रे, तरो संसार अगाह रे लाल ॥ २७ ॥ गु० ॥ हारे हारे छठी रे, छठे खमे ए कही रे, धारीशमी वर ढाल रे लाल ॥ पद्म कहे श्रोता घरे रे, होजो मंगलमाल रे लाल ॥ २८ ॥ गु० ॥ सर्व गाथा ॥ ६९८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर जोमी धरणो कहे, श्राण करु अणगार, संजमलाउ माहिरा रे, उत्तम तुम अधिकार ॥ १ ॥ बूजे जो पुण्यज वले, मुनि कहे सु महाजाग, बूज्या मित्र सेद बहु, नहेलो ते वरु जाग ॥ २ ॥ श्रावी मा वित्र श्रावले, श्रावाप्यो अधिकार, बूज्या बहु माने नहीं, सारो ए संसार ॥ ३ ॥ जननी मित्र जनक वली, विधिपूर्वक वरु वीर, व्रत सहु साथ समहे, धरणो साहस धीर ॥ ४ ॥ अरहदत्त गुरु श्रादरे, शीखाव्यो बहु सुत्त, किरिया पण बहु विध करे, गीतारथ गुरु युत्त ॥ ५ ॥

॥ ढाल श्रेवीशमी ॥

॥ गो वाल्न्या चारनी, श्राहिरनो अवतार रुडु गोकुलीउ ॥ ए देशी ॥

॥ एकल मलु पमिमा वणी, जोग्य थया ऋषिराय ॥ दुक्कर तप कारी ॥ दवा करवा तेहनी, श्राणा गुरुनी थाय ॥ १ ॥ दु० ॥ जारी तेहनी जावना, तप सूत्रादिक तेह ॥ दु० ॥ एकल विहार अंगीकर्यो, विहार करे ऋषि तेह ॥ २ ॥ दु० ॥ एक राति गामे रमे, नयरे रमे पण राति ॥ दु० ॥ तामलीति पुरी श्रावीश्रा, काउसग्गे मुनि ध्यान ॥ ३ ॥ वा सुणो उत्तमनी वाणी, कावी देवपुर मझार ॥ दु० ॥ मुरचने सोमी नही, करी प्रवल प्रकार ॥ ४ ॥ दु० ॥ नंदिवर्द्धन गामडे, थयो तिहुनो तोग ॥ दु० ॥ निज कुरि खेड गयो, जोगवनो सुखजोग ॥ ५ ॥ दु० ॥ कोइक काल व्यतिक्रमे, माहे तेह ते नारी ॥ दु० ॥ तामलीति पु माहि, दलसेलो परिवार ॥ ६ ॥ दु० ॥ फिरती फिरती तिहा वट वली तिहा मुनिराज ॥ दु० ॥ देखवीया ऋषिराजने, मनमा बहु क्रोध

॥ ७ ॥ ड्डु० ॥ पापकरमना जोरथी, क्रोध लही मन माहिं ॥ ड्डु० ॥ वज्रघात परे ते थइ, चिंते किम ए आहिं ॥ ८ ॥ ड्डु० ॥ दीठो में मुफ पापथी, कायक देव कलक ॥ ड्डु० ॥ कराचरण त्रोमी वधु, एहनी पास नि शक ॥ ए ॥ ड्डु० ॥ कोलाहल करशु पठी, ठरशे तव ए चोर ॥ ड्डु० ॥ चक्रशासन ठे नूपति, हणशे ए छण गोर ॥ १० ॥ ड्डु० ॥ जिक्षुरूपे मही चोरने, लोप्रसहित हण्या काल ॥ ड्डु० ॥ लिंगी पण चोरी करे, एह प्रसिद्धि जावी ॥ ११ ॥ ड्डु० ॥ जेम मन चिंत्यु तेम कत्यु, आव्यो धाइ कोटवाल ॥ ड्डु० ॥ आवी मुनि वोलावीआ, कायक उत्तर आल ॥ १२ ॥ ड्डु० ॥ नवि वोले जव ते ऋषि, नूषण खोले ताम ॥ ड्डु० ॥ ठिन्न केकण पासे पड्यु, दीठु दूर न गाम ॥ १३ ॥ ड्डु० ॥ नयरी जन वोलावीया, वात देखामी तेह ॥ ड्डु० ॥ नरपतिने जइ विनव्यो, चोर अपूरव एह ॥ १४ ॥ ड्डु० ॥ विस्मित वोले नूपति, खोटी करी खरी रीति ॥ ड्डु० ॥ मारो एहने तव तिहां, पूठे पूरव नीति ॥ १५ ॥ ड्डु० ॥ नवि वोल्या जव ते मुनि, तव उपनो तस कोप ॥ ड्डु० ॥ अहो कपटवेशे रह्यो, नवि वोले करी लोप ॥ १६ ॥ ड्डु० ॥ मारण थानक लावीया, शूलीए दीधो साध ॥ ड्डु० ॥ करे चडाल उद्घोषणा, सुणो पाप अगाध ॥ १७ ॥ ड्डु० ॥ साधुवेशे चोरी करी, तिणे ए मार्यो जाय ॥ ड्डु० ॥ वली कोइ करशे इणी परे, तस पण वध एम थाय ॥ १८ ॥ ड्डु० ॥ तपपरजावे मुनि तणे, शूली धरती माहिं ॥ ड्डु० ॥ पेठी मुनि विंध्या नहीं, कुसुमवृष्टि थइ त्यांहिं ॥ १ए ॥ ड्डु० ॥ धर्म ते जयवतो अठे, एम थइ लोकमा वाणी ॥ ड्डु० ॥ रायने गइ वधामणी, आव्यो नृप ते ठाण ॥ २० ॥ ड्डु० ॥ हर्षे करतो वदना, पूठे विस्मय वात ॥ ड्डु० ॥ केम ए स्वामी नीपन्यु, जाखो मुफ अवदात ॥ २१ ॥ ड्डु० ॥ नवि वोल्या जव ते मुनि, तव नर कहे परधान ॥ ड्डु० ॥ व्रतविशेषवता ऋषि, न करे उत्तर दान ॥ २२ ॥ ड्डु० ॥ ठठे खंडे ए कही, त्रेवीशमी वर ढाल ॥ ड्डु० ॥ समरादित्यना रासमां, पद्मने मंगलमाल ॥ २३ ॥ ड्डु० ॥ सर्व गाथा ॥ ६७ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूठो ते नारी प्रत्ये, तव नृप मूके तलार; नाठी लोकवचन सुणी, नवि लाधी ते नारी ॥ १ ॥ नृपने कहे ते नूपति कहे नव

नास, शोधी करो सम्यग परे, तव खोलण गया तास ॥ २ ॥ आरा शून्य उद्यानमा, देवकुले नवि दीठ, पण तस नर्चा पेखीयो, नासत थो नीठ ॥ ३ ॥ कोटवाले पकमी करी, नृपने आण्यो नयण, पकड नारी तणो पति, शेठ ए लहो सुवयण ॥ ४ ॥ नारी तो इण नगरी नहिं नासता पकड्यो नाथ, तुम मन माने तिम करो, हे सहु तुमचे हाथ ॥ ५

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ साहिबा मोती ल्योने हमारो ॥ ए देशी ॥

॥ नृप कहे तुझ किहा ठे नार, ते कहे हु न जाणु निरधार ॥ सा हिबा तुमे सुणजो साचुं, मोहना तुमे सुणजो ॥ ए आकणी ॥ राय कहे तो नाठो केम, ते कहे नय लही नाठो एम ॥ १ ॥ सा० ॥ विण अपराधे नय केम लागो, नृप पूछ्या पठी कहे एक आगो ॥ सा० ॥ डुष्ट नारी मही डु खनु मूल, तेहज मुझ अपराध अतूल ॥ २ ॥ सा० ॥ अनय दीयो तुझने नृप नाखे, जो मुझ व्यतिकर सघलो दाखे ॥ ॥ सा० ॥ कोण ऋषि ए कोण वली नार, सुवयण देखे तव अणगार ॥ ३ ॥ सा० ॥ उंबखी आसु नयणे नरीया, मुनिवर चरित्त देखी चित्त ठरीआ ॥ सा० ॥ विस्मय लही कहे रायने एम, नवि कहेवा जेहवु प्रभु नेम ॥ ४ ॥ सा० ॥ राय कहे ससार ए एहवो, एहमा अचरिज लहेवो केहवो ॥ सा० ॥ सुवयण कहे एकात करीजे, तव नृप परिजन दूर क रीजे ॥ ५ ॥ सा० ॥ मुनि देखीने घणु पठतायो, नृपने कहे हु पापे न रायो ॥ सा० ॥ पुरुष श्वान हु पुरुष म जाणो, सत्यसधा मुनि पुरुष वखाणो ॥ ६ ॥ सा० ॥ कृतगुण जाण अपर उपगारी, उत्तम धम्मु सर्वे अकारज वारी ॥ सा० ॥ एहमा सर्वे वात मुझ नाखी, राय आगल पूरी नवि दाखी ॥ ७ ॥ सा० ॥ तुझ सम पुरुष ते श्वान न कहीये, प्रस्तुत वात कहो जिम लहीये ॥ सा० ॥ वात कही तव सघली जाम, नरपति तुष्ट मान थयो ताम ॥ ८ ॥ सा० ॥ मूक्यो सुवयण मुनि नमी चाल्यो, आर मणु पासे मिथ्यात टाल्यो ॥ सा० ॥ धर्म सानवी कस्यो पश्चात्ताप, धर णने रागे श्रमण थयो आप ॥ ९ ॥ सा० ॥ नरपति प्रणमी मुनिवर पाय, हरखे निज नुवने ते आय ॥ सा० ॥ जय पामी तिहा नाठी लखमी, जाता वाट पमी तिहा विषमी ॥ १० ॥ सा० ॥ लूट्या वनानरण ते चोर,

राति पाछिली एकज पोहोरे ॥ सा० ॥ पहोती नाम कुशस्थल गाम, तस नरपति मान्धु एक काम ॥ ११ ॥ सा० ॥ राणीने विघननिवारण माटे, पुरोहित गाम बाहिर इण वाटे ॥ सा० ॥ अग्नि करी चोवटे चरु राधे, चोकी मूकी चिहु दिश बाधे ॥ १२ ॥ सा० ॥ नव नैवेद्य तंदुल [illegible] मूक्या, मंत्र जाप करता नवि चूक्या ॥ सा० ॥ इण अवसर देखी [illegible] ज्वाला, इण मारग आवी सा बाला ॥ १३ ॥ सा० ॥ उतर्यो सार [illegible] णीने आवी, दीठी दिशापाळे तव गावी ॥ सा० ॥ शोणितने [illegible] देखी, जय पाम्या राक्षसिणी लेखी ॥ १४ ॥ सा० ॥ धस्या [illegible] करवाल, कर कंप्या मानु जीवित साल ॥ सा० ॥ पभणे [illegible] नारी, बोले मत बीहो मन हारी ॥ १५ ॥ सा० ॥ हुं तु [illegible] कही आवे, पुरोहित पास नगनने आवे ॥ सा० ॥ देखी [illegible] केश, पकडी कहे बीहो मत लेश ॥ १६ ॥ सा० ॥ [illegible] आया, बांधी नयरमा लेइ सधाया ॥ सा० ॥ नृपतिने [illegible] करजो विटंबणा विविध प्रकारे ॥ १७ ॥ सा० ॥ एहनु [illegible] राख्यु, लेइ अशुचि मुखमा धराव्युं ॥ सा० ॥ करीन [illegible] निभ्रछी, गाममांथी काढी ते अछी ॥ १८ ॥ सा० ॥ [illegible] कोइ गामे, अटवीमां फिरती ठामठामे ॥ सा० ॥ [illegible] गजवरे पाप करी अति भारी ॥ १९ ॥ सा० ॥ [illegible] घोर पापना फल छे एह ॥ सा० ॥ सत्तर सागर [illegible] धरण मुनिराय ॥ २० ॥ सा० ॥ करी संलेषणा [illegible] करे अणसण ताम ॥ सा० ॥ काल करी [illegible] कमा अवधार ॥ सा० ॥ २१ ॥ चढ्यकाति विमाने [illegible] धरेह ॥ २२ ॥ सा० ॥ धरण लही दंपतीनो [illegible] राख्यो ॥ सा० ॥ चोवीशमी ढाळे ए पूरी [illegible] ॥ सा० ॥ भाद्रवा वदि दशमे गुरुवारे, [illegible] ॥ सा० ॥ अढारसें एकताला वरषे, [illegible] सा० ॥ विजयसिंह सूरि शिष्य सवाया, [illegible] ॥ सा० ॥ श्रीगुरु कपूरविजय तस [illegible] ॥ २५ ॥ सा० ॥ [illegible] जिनविजय [illegible]

॥ सा० ॥ उत्तमविजय सुशिष्य सोभागी, तत्त्वज्ञानमा जस मति लागी ॥ २६ ॥ सा० ॥ उत्तम समरादित्यनो रास, पद्मविजय कहे लीलविलास ॥ सा० ॥ साजलता होय मंगलमाला, पुण्यमहोदय सुख सुविशाला ॥ ॥ २७ ॥ सा० ॥ सर्व गाथा ॥ ३११ ॥

॥ इति श्री संविज्ञपक्षीय पण्डितप्रवर श्रीमदुत्तमविजयगणिशिष्य पंडित श्रीपद्मविजयगणिविरचिते श्रीसमरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे धरणलक्ष्मी वधूवरयो संगतयो षष्ठो नरत्न समाप्त.॥ षष्ठखंडे सर्व गाथा ॥ ॥ ३११ ॥ उक्त गाथा तथा काव्य ॥ १० ॥ अने सर्वेऊ ॥ १ ॥



॥ अथ ॥

॥ सप्तम खंड प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांतिकरण श्रीशांतिजी, समरु सुखदातार, प्रणमुं शंखेश्वर प्रभु, अलवडीआ आधार ॥१॥ सातमो खंन सोहामणो, समरादित्य संबंध, सेन विषेन दोय भ्रातृसुत, पितराइ परबंध ॥ २ ॥ जंबुद्वीप ख्ख जोअणो, वारु भारहवास, तिहां चंपा नयरी तणो, उत्तम छे आवास ॥ ३ ॥ शेषफणा ओगज समो, पोढो छे प्राकार, हिमगिरि शिखर हरावतां, भुवन तणो संभार ॥४॥ नंदनवन वने कीतीयुं, सरोवरे मान कासार, महाजन जिहां अमत्सरी, दक्ष घणो दातार ॥ ५ ॥ रूपवंत रलियामणी, सुंदर घणु सुकुमाल, लज्जावंत महिला तिहां, विनयवंत सुविशाल ॥ ६ ॥ अमरसेन अवनीपति, साधित दिशिवधू सार, ईर्ष्याए आवी वरी, लक्ष्मी पण तस ल्हार ॥ ७ ॥ जाया तस जयसुंदरी, सयल अंतेउर सिठ, अनुभवतो तेहशुं अवल, विषयभोग सुविसिठ ॥ ८ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ क्रीमा करी घरे आवीउं ॥ ए देशी ॥

॥ इणी अवसर देवलोकथी, चवीउं पाली आय रे ॥ धरणजीव तिहां उपनो, स्वप्न लहे सुखदाय रे ॥ १ ॥ इणी० ॥ दंम कनकमय दीपतो, रयण विभूषित तुंग रे॥ देवकुष्य ध्वज लहकतो, गयण भूषण मानु चंग रे ॥ २ ॥ इणी० ॥ वदने उदरमां पेसतो, विस्मयकारी विचित्त रे ॥ सूर्यउदये देखी करी, जागी निंद अतीत रे ॥ ३ ॥ इणी० ॥ हर्षे पति सजवावती, कहे तव नरपति एम रे ॥ सकल नरिंदकेतु समो, पुत्र थशे तुझ नेम रे ॥ ४ ॥ इणी० ॥ सांभली तेह अंगीकरे, अनुक्रमे साधे त्रिवर्ग रे ॥ उचित समय सुत प्रसवीयो, सुखमां तेह निसर्ग रे ॥ ५ ॥ इणी० ॥ हरषमती दासी तदा, दीध वधाइ राय रे ॥ दान सतोषु नृप दीये, मास एक वही जाय रे ॥ ६ ॥ इणी० ॥ सेन[illegible]नाम थापीयुं,

वर्ष एक थयु जाम रे ॥ नरक थकी हवे नीकल्यो, जीव लहीनो ताम रे ॥ ७ ॥ इणी० ॥ जमीउं तेह ससारमा, अनतर जवे नर थाय रे ॥ क्ष यक कष्ट करी तिहा, नरपति कुलमा आय रे ॥ ८ ॥ इणी० ॥ अमर सेन नरपति तणो, जाइ लघु हरिसेण रे ॥ हारप्रजा तस जारया, तस कुखे गर्जेण रे ॥ ए ॥ इणी० ॥ जव जनम्यो तव थापीयु, नाम विसेन कुमार रे ॥ सेन कुमार ग्रहे कला, करतो विसेनशु प्यार रे ॥ १० ॥ इणी० ॥ एष नहीं सेनशु तेहने, एम करता केइ काल रे ॥ एक दिन जय जयरव थया, कुसुमवृष्टि सुविशाल रे ॥ ११ ॥ इणी० ॥ सुर सिद्ध विद्याधर थकी, व्यापी रखु आकाश रे ॥ राय पूछे निज पुरुपने, कहो ए किशो प्रकाश रे ॥ १२ ॥ इणी० ॥ खवर करी प्रतिहार ते, जाखे तास निदान रे ॥ इण नयरीमा पामीया, साध्वी केवलज्ञान रे ॥ १३ ॥ इणी० ॥ जाणे लोकालोकना, त्रण कालना जाव रे ॥ सुर विद्याधर वहु थूणे, साजली नरपति ताव रे ॥ १४ ॥ इणी० ॥ हरखी चाल्यो वादवा, आव्यो उपाश्रय द्वार रे ॥ तोरण थज ने पूतली, ज्युं विद्युत् जातकार रे ॥ १५ ॥ इणी० ॥ किहायक स्फाटिक विद्रुम किहा, किहायक चामर श्वेत रे ॥ ध्वज शिर उपर फरकतो, कनक किंकीणी सम वेत रे ॥ १६ ॥ इणी० ॥ वहु साहुणीए परिवस्था, तिम श्राविका समुदाय रे ॥ श्रीसम रूपे शोजता, गुरुणी तिहा देखाय रे ॥ १७ ॥ इणी० ॥ जवसायर तरीया जिके, गुणमणि रयणजंमार रे ॥ शशि सम वयण शोजा मली, नाशित तम अधकार रे ॥ १८ ॥ इणी० ॥ श्वेतावरधी साहूणी, स्तवता जूपति ताम रे ॥ कुसुम वरसी करे धूपने, करे पचाग प्रणाम रे ॥ १ए ॥ इणी० ॥ वेठो धर्मश्रवण जणी, धर्मकथा कहे जाम रे ॥ आव्या दोय तिणे समे, सारथवाह सुत ताम रे ॥ २० ॥ इणी० ॥ वधु देव सागर नामे, लेइ निज निज नार रे ॥ परम गुरु प्रणमी करी, साहुणी प्रणमे सार रे ॥ २१ ॥ इणी० ॥ सातमे खडे ढाल ए, पहेली पापनिवार रे ॥ पद्मविजय कहे साजलो, सुणता जय जयकार रे ॥ २२ ॥ इणी० ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ सागर कहे नृप साजलो, मत करजो मन खेद, अद्भुत एक दीठु अमे, सानलजो तस जेद ॥ १ ॥ साजलता विस्मय थशे, रही न शङ्क

हु राज्य, विस्मय प्रेस्यो वीसमी, अर्थ न जाणु आज ॥ २ ॥ पूछु ए जग-
वती प्रत्ये, गावो नृप कहे ठीक, असजाव्य अद्भुत किशु, ते जाखो
तहकीक ॥ ३ ॥ सागर कहे मुज सहचरी, हाथे खोयो हार, अतीत
काल कोइ उपरे, वीसरीउं इण वार ॥ ४ ॥ आज जोजन करी आ-
वीयो, चित्रशाली चित्रकार, एक यसु अचरिज इहां, जाखु ते अधिकार ॥५॥

॥ ढाल वीजी ॥

॥ अरज अरज सुणोने रुमा राजीया होजी ॥ ए देशी ॥

॥ एहवे एहवे मोर एक चित्रमा होजी, लेवे उंचो रे श्वास ॥ क्षणमां
क्षणमा कोट हलावतो होजी, कीधो पिछ विलास ॥ १ ॥ एह० ॥ पाख
पाख खखेरी उतस्यो होजी, राता वस्त्रमा हार ॥ मूकी मूकी गयो निज
स्थानके होजी, हूउं चित्र प्रकार ॥ २ ॥ एह० ॥ देखी देखी विस्मय उपनो
होजी, कहो ए शु कहेवाय ॥ एहवे एहवे जय जयरव थयो होजी,
कुसुमवृष्टि ते थाय ॥ ३ ॥ एह० ॥ सुरवर सुरवर विद्याधर मल्या होजी,
साजली लोकनी वाणी ॥ पाम्या पाम्या केवल साहुणी होजी, आव्यो
हु इण ठाण ॥ ४ ॥ एह० ॥ बोले बोले नरपति साजलो होजी, साचु
अचरिज एह ॥ एहवु एहवु सजवीए नहीं होजी, पूछे जगवती नेह
॥ ५ ॥ एह० ॥ जाखे जाखे तव तेह साधवी होजी, एहमा अचरिज
काय ॥ करमे करमे शु नवि सजवे होजी, नियमा सफल ते थाय ॥ ६ ॥
एह० ॥ जेहवा जेहवा शुजाशुज वाधीया होजी, तेहवा उदये रे थाय
॥ अशुजे अशुजे जव अगनि होवे होजी, न्याय ते थाय अन्याय ॥ ७ ॥
एह० ॥ चद चद तिमिर हेतु होय होजी, घरमाथी मरी जाय ॥ अर्थ
अर्थ अनर्थ मित्र वेरीउं होजी, जलथी अगनि वरसाय ॥ ८ ॥ एह० ॥
शुजथी शुजथी विष अमृत होय होजी, दुर्जन सज्जन होय ॥ अप-
जश अपजश ते जश नीपजे होजी, न हणे दुःखमा कोय ॥ ९ ॥ एह०
॥ पामे पामे अचिंती संपदा होजी, सुणी बोले नरनाह ॥ कोहना को-
हना कर्मनी परिणति होजी, बोले साहुणी राह ॥ १० ॥ एह० ॥ मा-
हरा माहरा कर्मनी परिणति होजी, बोले ताम जूपाल ॥ किम ते किम
ते शु निमित्त कहो होजी, साहुणी जाखे रसाल ॥ ११ ॥ एह० ॥ जंबु
जंबुद्वीपना जरतमा होजी, शंखवर्द्धन नाम ॥ नयर नयर राज्यपाल

वर्षे एक थयु जाम रे ॥ नरक थकी हवे नीकल्यो, जीव लक्षीनो ताम रे ॥ ७ ॥ इणी० ॥ जमीउं तेह ससारमा, अनतर जवे नर थाय रे ॥ का यक कष्ट करी तिहा, नरपति कुलमा आय रे ॥ ८ ॥ इणी० ॥ अमर सेन नरपति तणो, जाइ लघु हरिसेण रे ॥ हारप्रजा तस जारया, तस कुखे गर्नेण रे ॥ ९ ॥ इणी० ॥ जव जनम्यो तव थापीयुं, नाम विसेन कुमार रे ॥ सेन कुमार ग्रहे कला, करतो विसेनशु प्यार रे ॥ १० ॥ इणी० ॥ पण नहीं सेनशु तेहने, एम करता केइ काल रे ॥ एक दिन जय जयरव थया, कुसुमवृष्टि सुविशाल रे ॥ ११ ॥ इणी० ॥ सुर सिद्ध विद्याधर थकी, व्यापी रह्यु आकाश रे ॥ राय पूछे निज पुरुषने, कहो ए किशो प्रकाश रे ॥ १२ ॥ इणी० ॥ खबर करी प्रतिहार ते, जाखे तास निदान रे ॥ इण नयरीमा पामीया, साध्वी केवलज्ञान रे ॥ १३ ॥ इणी० ॥ जाणे लोकालोकना, त्रण कालना जाव रे ॥ सुर विद्याधर बहु थुणे, साजली नरपति ताव रे ॥ १४ ॥ इणी० ॥ हरखी चाल्यो वादवा, आव्यो उपाश्रय द्वार रे ॥ तोरण थत्र ने पूतली, ज्युं विद्युत् जातकार रे ॥ १५ ॥ इणी० ॥ किहायक स्फाटिक विद्रुम किहा, किहायक चामर श्वेत रे ॥ ध्वज शिर उपर फरकतो, कनक किंकीणी सम वेत रे ॥ १६ ॥ इणी० ॥ बहु साहुणीए परिवर्या, तिम श्राविका समुदाय रे ॥ श्रीसम रूपे शोजता, गुरुणी तिहा देखाय रे ॥ १७ ॥ इणी० ॥ जवसायर तरीया जिके, गुणमणि रयणजंकार रे ॥ शशि सम वयण शोजा मली, नाशित तम अधकार रे ॥ १८ ॥ इणी० ॥ श्वेतावरथी साहूणी, स्तवता जूपति ताम रे ॥ कुसुम वरसी करे धूपने, करे पचाग प्रणाम रे ॥ १९ ॥ इणी० ॥ बेठो धर्मश्रवण जणी, धर्मकथा कहे जाम रे ॥ आव्या दोय तिणे समे, सारथवाह सुत ताम रे ॥ २० ॥ इणी० ॥ वसु देव सागर नामे, लेइ निज निज नार रे ॥ परम गुरु प्रणमी करी, साहुणी प्रणमे सार रे ॥ २१ ॥ इणी० ॥ सातमे खडे ढाल ए, पहेली पापनिवार रे ॥ पद्मविजय कहे साजलो, सुणता जय जयकार रे ॥ २२ ॥ इणी० ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ सागर कहे नृप साजलो, मत करजो मन खेद, अद्भुत एक दीठु अमे, साजलजो तस जेद ॥ १ ॥ सानलता विस्मय थशे, रही न शक

अकज्ञ ॥ न पेमरागा परमत्थि वधो, न वोहिलाजा परमत्थि लाजो ॥ १ ॥' ए पण अटवीमा एकाकी, सूती तिणे ए दीन ॥ विद्याधरी छे के ए कोण छे, देखी पास विखिन्न ॥ ६ ॥ अ० ॥ एणे रूपे ने पाश गले श्यो, वात विरोधी एह ॥ अथवा कर्मे शु नवि थाये, कर्म विचित्र करेह ॥ ॥ ७ ॥ अ० ॥ कमन्डल जले दीध आछूपो, आउखे चेतन आव्यु ॥ आख उघाडे तव मुनि तापस, देखी चित्त न्हराव्यु ॥ ८ ॥ अ० ॥ जय न धरे मनमा कहे मुनिवर, हु तापसकुमार ॥ सुणी प्रणमी तव आशीष जाखे, अविधवा हो नारी ॥ ९ ॥ अ० ॥ तुमे इहा किहाथी तव मुनि जाखे, तपोवन प्रमुख विचार ॥ किम एकाकी किम इहा आवी, केम एहवो व्यापार ॥ १० ॥ अ० ॥ एम साजली शातिमती चिंते, केम कहीये निज वात ॥ तोपण तपसीजन मानेवा, नहीं निज कणिम थात ॥ ११ ॥ अ० ॥ एम चिंती कहे रायपुर राजा, शत्रुपालनी बेटी ॥ साथ लूटाणो तिणे एकाकिनी, जर्त्ता गयो मुऊ मेटी ॥ १२ ॥ अ० ॥ तास विजोगे ए व्यवसायह, कहीने रोवा लागी ॥ तपसी कहे मत रो सोजागिण, नहीं ससार सोजागी ॥ १३ ॥ अ० ॥ जेम नाटकीआ केरी बाजी, क्षणमा होय विजोगा ॥ क्षण सयोग क्षणेकमा मोदज, क्षणमा होवत शोगा ॥ १४ ॥ अ० ॥ क्षणमा आपद क्षणमा सपद, बुद्धिवते एम जाणी ॥ न करे विषाद विषम वेलामा, अनुचित न करे प्राणी ॥ ॥ १५ ॥ अ० ॥ धीरज धरता आपद जाये, तिणे तु छोम विषाद ॥ वली तुऊ लक्षणथी हु जाणु, सुणी कहु करी प्रसाद ॥ १६ ॥ अ० ॥ तुऊ जर्त्ता नवि मरण लह्यो छे, कहे तुऊ सोवन काति ॥ कोकिलस्वर सुप्रतिष्ठित चरणा, नाजी दक्षिण वर्त्तवती ॥ १७ ॥ अ० ॥ नितम्बफलक सुविशाल विराजे, शारद शशि सम वयण ॥ नवि कमलाणी ठरी मधुगुलिका, सरिखा ताहारा नयण ॥ १८ ॥ अ० ॥ तिलकज़ूषित जालमन्डल शोहे, कुटिल केश वली काला ॥ स्नेहाला घणु तेणे तुऊ जाणु, तु छे जाय विशाला ॥ १९ ॥ अ० ॥ अविधवा तु छे वली बीजु, पुत्रवती निरधार ॥ कुलपतिने तुमे आवी वदो, सुणी चाली तस व्हार ॥ २० ॥ अ० ॥ कुलपति वदे आशीष दीधी, मुनिए व्यतिकर जाख्यो ॥ कुलपति कहे मत तपजे वत्से, हवे दुःख दूरे नाख्यो ॥ २१ ॥ अ० ॥

॥ पद्मविजय कहे वारमी जाणी, सुणता मंगलमाल ॥ २८ ॥ सर्व गाथा ॥ ३७३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राय कहे निज नर प्रते, एहने करो अवल्ल, साजवीते हुआ, निरता करण नवल्ल ॥ १ ॥ बीजा घरमा वेहुने, सज्या कीधी तेय तेलाव्या वेगशु, न्हाणकर्म करे तिणी वार ॥ २ ॥ शातिमतीने धरा, निज नरने नरराय, मूकीने मह्रीपति हवे, सार्थपने समजाय ॥ ३ ॥ सार तुमारो विषम थल, दूरे जावु देश, अवसर मेघनो आवीया, नवजो सुविशेष ॥ ४ ॥ राजकुअर ठे मुक घरे, चिता न करो चित्त, सुरे निम सुख होये, सार्थप हु सखी सित्त ॥ ५ ॥ पग न वहे पार्थिव कुमर विना मुक कोय, सवखाने ते सेनने, सार्थप आवी सोय ॥ ६ ॥ मेन कहे सार्थप सुणो, नरपति कहे ठे न्याय, कायरपणु नवि कीजे नरपति वयण न जाय ॥ ७ ॥ न करो वयण जो नृप तणु, निवृत्ति नवि थाय, वचन प्रमाण करी वदे, नवि तुम वचन लोपाय ॥ ८ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ अवसर पामीने रे, कीजे नव आंविलनी ओली ॥ ए देशी ॥

॥ अवसर देखीने रे, चाल्यो सारथवाह सुजाण ॥ वर्षाराउ अव तिण समे, निपन्या सघला धान ॥ अनुक्रमे वर्षा थयो व्यतिक्रम, नउ थया निवाण ॥ १ ॥ अव० ॥ कुमर पल्लीपति साजा हुआ, वखाणवा सार ॥ राय कुमरने कहे म मूरया, सोखगा नर तुझ ॥ २ ॥ अव० ॥ केटक आव्या ने केट नाव्या, इण अवसर नर सोम सूर नामे पण नवे, सावजो वात ते सोय ॥ ३ ॥ अव० ॥ नारी मनोगतु कारण, राय कहे कहो तेह ॥ सोम सूर कहे सीना, प्रियनेवक तीर्थ जेह ॥ ४ ॥ अव० ॥ तेहनी उत्पत्ति एहज अटवी माहि ॥ विशाखवर्द्धन नामे नगरे, नृप अजितसेन ॥ ५ ॥ अव० ॥ शेठ वसुंधर नामे कहो, प्रियमित्र सुत तास ॥ स्वप नेवना ठे पुत्री, निवुया कन्यानाम ॥ ६ ॥ अव० ॥ तेहने पण नवि परण्या, जोनो कौतक काज ॥ योवन पाम्या एहवे वरना, वनुं वन विनराज ॥ ७ ॥ अव० ॥ शेठ वसुंधर पोहोता परवश,

प्रियमित्र कुमार ॥ माने नहीं कोइ दलिद्रपणाथी, परिजन करे अप-
कार ॥ ८ ॥ अव० ॥ जे जे करे ते निष्फल जावे, पाम्यो मन विपवाद ॥
नीस्लीयो ते नयरने मूकी, मूकी तिहां आहाद ॥ ९ ॥ अव० ॥
शून्य समूर्छिमनी परे चाल्यो, उत्तरपथ सुजाण ॥ पथर भिक्षु नागदेव
नामे, मलीउं मित्र प्रमाण ॥ १० ॥ अव० ॥ भिक्षुए उंलखीने बोलाव्यो,
एह अवस्था तुज ॥ केम छे ने किहां जाय एकाकी, नाखे तु मुजने गुज
॥ ११ ॥ अव० ॥ प्रियमित्र कहे देवने पूछो, सघली माहारी वात ॥ ना-
गदेव कहे ताहरा तातने, छे के नहीं सुखशात ॥ १२ ॥ अव०॥ प्रियमित्र
कहे परजव पोहोता, तेहने नित्य सुखशात ॥ पण प्रियमित्र जघन्य
पुत्पना, देखो ए अवदात ॥ १३ ॥ अव० ॥ इह परलोक एके न सधाने,
एहवो अवसर आज ॥ नागदेव कहे शोक न धरीने, जमराजाने राज
॥ १४ ॥ अव० ॥ तास निवारक कोइ न लहीने, धर्मराय जिण जाण ॥
इत्यादिक उपदेश देइने, दीक्षा दीघे तिण ठाण ॥ १५ ॥ अव० ॥ गो-
रसत्याग प्रमुख करे किरिया, केटक दिन गया जाम ॥ निजुआ नारी
वात सुणीने, मनमा चिंते ताम ॥ १६ ॥ अव० ॥ जरतामारग चाले
नारी, एम चिंती करे धर्म्म ॥ विषय पिपासा विण जरतानु, दर्शन मन
थयु रम्म ॥ १७ ॥ अव० ॥ विरह थकी ते दुर्बल होइ, अनुक्रमे ते वि-
चरत ॥ तिणे नयरे आव्यो तस जर्ता, निजुआ जइ प्रणमत ॥ १८ ॥
अव०॥ ध्यानयोगमा दीठो तेहने, मूर्छा आवी ताम ॥ ध्यानयोग मूकी ते
जिक्षु, कहे शु थयु ए आम ॥ १९ ॥ अव० ॥ सखीउं कहे ए इसरख-
धनी, पुत्री निजुआ नाम॥ तुम्हने दीधी पण नवि परणी, मोहे मूर्छित
आम ॥ २० ॥ अव० ॥ सानली शोकातुर थयो तेहवे, लेह व गो गयुं
ध्यान ॥ पाणी कमरूलनु छांटीने, आणी तेहने शान ॥ २१ ॥ अव० ॥
राग घणो नारीनो देखी, वली कटाक्षना बाण ॥ अग उपाग जोता नारीना,
वींधाणा तस प्राण ॥ २२ ॥ अव० ॥ मदनविकार अति दुर्जय छे, रम-
णिक तरणी विलास ॥ एकांत थानक रजनु जाणी, चित्त विह्वल थयु
तास ॥ २३ ॥ अव० ॥ गुरुवच लोपु के एह राखु, दुष्कर बात ए दोय
॥ अथवा व्रत पालु तो ए मुज, जनमातरे पण होय ॥ २४ ॥ अव० ॥
मनवछित पामे व्रत पाले, एहवी गुरुनी वाच ॥ व्रत रहशे ने ए पण

मळशे, एहवु धार्यु साच ॥ २५ ॥ अन० ॥ सातमे खंडे तेरमी भाखी, पद्मे ढाल रसाळ ॥ समरादित्यना रासमां रूडी, सुणता मंगळमाळ ॥ २६ ॥ अन० ॥ सर्व गाथा ॥ ४०३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वळी विनताना वश थकी, चलीउं एहनु चित्त, बोलावु अवळा प्रत्ये, जोउं कपण रीति ॥ १ ॥ एम चिंती आखे इस्यु, मत दुःख आण मन, तुझ स्नेहे हुं तरफडुं, कहु ते सांभळ कन्न ॥ २ ॥ व्रत लीधुं किम परजीये, गुरुवच किम न गणाय, पण साभळ्युं गुरु पासथी, व्रतरी वर्जित थाय ॥ ३ ॥ उभय वात व्रतथी अछे, इह लोके गुरु आण, पर भव तुझ संगमपणु, मळशे एह प्रमाण ॥ ४ ॥ निसुणी कहे निरतु कमी, माहरे तुमे प्रमाण, अणसण विहुए आदर्यु, स्नेह परस्पर आण ॥ ५ ॥ नरना आशय कामिनी, नर आशय धरे नारी, जनमांतर होज्यो अम, एणी परे चित्त अवधारी ॥ ६ ॥

॥ ढाळ चौदमी ॥

॥ सुरती महिनानी देशी ॥ अथवा ॥ चैत्रे चतुर्भुज नाव्या, राधाजी करे रे विचार ॥ ए देशी ॥

॥ वृक्ष अशोकने हेठळ अणसण कीध उदार, वहु भारती सखीजन पण ते मन नवि धारी ॥ ते कोलाहल सांभळी आव्या गुरु नागदेव, आव्यो प्रियमित्र कुमर यद नया तनखेर ॥ १ ॥ मनवंछित तुम निरवा एणी परे दीये आशीष, मन चिंते कुण नारी ए रूप समान नरीश ॥ राग घणो प्रियमित्रने उपरे लगीयें एम, नव सखीए माभी कयो गुरथी निशी परे प्रेम ॥ २ ॥ नागदेव नर चितवे अहो अहो मदनविकार, मदन वेदाणा प्राणीआ सवे करे परकार ॥ उभसरीये हवे हाथी नहीं उपदेशनो लाग, चिंतवी कहे प्रियमित्रने मानस नु महाभाग ॥ ३ ॥ स्नेहाळु होय सज्जन तिणे न ए कर्युं काम, पण सारासार ठे तुझने मन नवि भरवुं आन ॥ गेह न करे करे नारना नहलविचार, एम कही नागदेव गयो हवे प्रियमित्र ने नारी ॥ ४ ॥ नर नारी नृप नरना गाम नाम वही जाय, देहव परिणामे करी काळ दो हिमर थाय ॥ गेह पुरे वर वरसियो आव्यो नेह उद्यान, पूजा करी उद्याननी कहु द०

वल तिण थान ॥ ५ ॥ देव अनंग ने निर्वृत्ति देवी थापी त्याहि
वन गया तिहांथी हर्ष धरी उछांहि ॥ तिहां एक दीठी विद्याध
प्रीतमनो विजोग, तिणे अति दूःखथी भमती वनमां धरती शोग
पूछे तेहने तुं कुण किम एकाकी एम, सा कहे मदनमंजुषा खे
हुं नेम ॥ प्रीतम रागथी विद्यादेवीनी पूजा न कीध, जत्तां विजो
राप छ मासनो तेणीये दीध ॥ ७ ॥ एह निमित्ते तुज पति केरो
विजोग, तिणे एकाकिणी वनमां भमीश तुं अरतिसंजोग ॥ चरणे
तव में कह्यु स्वामिनि करी सुपसाय, तव देवी कहे प्रेमथी नवि अ
देखाय ॥ ८ ॥ तिणे ते रुडुं काम न कीधडुं पण सुण वात, नंदन
तुं जायजे उपजशे सुखशात ॥ प्रियमेलक रूख उपरे धवल जमल
मलशे भरता एम सुणी आवी एथ, पण नवि लाधे थानक नवि जा
छे केथ ॥ किन्नर कहे धीरी था हुं तुज दाखुं तेह, अनुक्रमे खोली
खाड्युं थानक तिहां गइ नेह ॥ १० ॥ प्रियमेलक सामर्थ्यथी मलीउ
तस भरतार, निज पति आगले धुरथी सर्व कह्यो अधिकार ॥ विद्याध
किन्नरने प्रीति थइ ते अपार, कायक काल गमावी गया सहु निज निज
गार ॥ ११ ॥ किन्नरी कहे निज स्वामीने ए दुःख तो न समाय, निज
प्रिय विरह तणुं तिणे कीजे तास उपाय ॥ जन्म सफलातुं फल जे करीये पर
उपगार, तिणे ए वृक्ष छवो जिहां आपण मलीआ सार ॥ १२ ॥ सानली
प्रियमेलक छव्यो निज रत देवल पास, गाम गाम जणव्युं एम निर-
हीनी पूरे आश ॥ केइक विरही लोकनी आशा पूरण कीध, तिणे प्रिय-
मेलक तीरथ नाम थयुं प्रसिद्ध ॥ १३ ॥ ते कारण हुं जाणुं कुमर ए
तिहां जो जाय, तो तस शक्ति अचिंत्यथी नारीनुं मलवुं थाय ॥ राय
कुमर मन हरख्या वात ते मानी साच, नृप विचारे मोकलुं निज नरयुं
शुज राच ॥ १४ ॥ पल्लीपतिने पूछे नृपति तव कहे तेह, में पण सांभळ्युं
तपवन ढुंकडुं थानिक एह ॥ राय कहे तुमे परिकर लेइने जाउ तउ, पण
तुमे घरणी लहीने निश्चय आवजु इउ ॥ १५ ॥ सांभळी वयण ते चा-
लीउ करतो नित्य प्रयाण, अनुक्रमे नयोजन ढुंकडो पहोतो ले सुजाण
॥ तापसना उपरोधथी मोकले इह परिवार, जइ तापसने [illegible] सुनाए

झीप तिवार ॥ १६ ॥ पल्लीपति तेह थानक लाव्यो राजकुमार, बहु पावर ग्र
शोनित ते देवउने द्वार ॥ कल्पपादप नवि ओलखु पण सामान्ये ए गाय, पल्ली
पति मन साजली चित्त निराश ते थाय ॥ १७ ॥ मजारे शांतिमती नारी
दीर्घ निःश्वास, सा पण फल महीने जाती निज आवास ॥ नारी बा
पना जोगथी कर्म तणे परिणाम, बेठी विशामे तिहां प्रियमेलकने गाम ॥
॥ १८ ॥ नागरवेली आलिंगित दीठो तिहां अशोक, सजारे तव कुमरने
करती चित्तमां शोक ॥ वाम लोचन इण अवसरे फुरक्यु ताम कुमार, नमतो
नमतो आवीने ते प्रियमेलक गार ॥ १९ ॥ देखी जरता जाणी हरखी
मनथी जोर, बहु काले मळ्या तिणे उत्कंठित घन ज्यु मोर ॥ विरहमां
जीवती रही तिणे पामी लज्जा ताम, परीक्षा करु एम उद्दिक होश क
नहीं नाम ॥ २० ॥ किहांथी आव्या एम करती विचार अनेक प्रकार,
ल्यन हशे के किम ए पामी खेद अपार ॥ खरी प्रतीतथी खस्य थइ
निंग बहु रस नार, वेदती मूर्छा पामती देखी तापसी तार ॥ २१ ॥ गर
खडी अहो शु थयु रेमनी आसु नार, पाणीए सिंची पण नवि रोवे तद
अगार ॥ तव बहु आक्रंद करीने रोवा लागी तेह, रोवो कुमर आवी
कहे बोले कारण कह ॥ २२ ॥ ते कहे नय संसारनो गोत्रे ताम कुमार,
केम आक्रंद कर्यो तव वात कहे सरी प्यार ॥ सातमे खंडे ए पदमे ढाल ओ
टमी दाख, ज्ञान सुणता होजो सहुने मगडमान ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ ४३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ रायपुरपति नरवरपती, पुत्री पावन अंग, शांतिमती ए मोहामणी,
आरतिविरह प्रसंग ॥ १ ॥ प्राणत्याग पतिविरहथी, करती तापस दीठ
कुअरनिने आव्यो निकट, तो पण एम आदृठ ॥ २ ॥ तरना मउरा
बउी परे, तपोवनना तनगेर, कुसुम कारण रहा अनुक्रमे, रमती आवी
देव ॥ ३ ॥ बेठी तव रोहामणी, मूर्छा पामी एम, कारण तो कहीये न
हीं, पण अमने अति प्रेम ॥ ४ ॥ आक्रंद निणे कीधो अमे, सांभळी
तेन कुमार, हरख विषादने अनु करे, पामी दुःखनो पार ॥ ५ ॥ मूर्छा
वळी करे मानिनी, स्नेह नोचे मानी, कुअरनि रसण हृदय नगी, नगी
वळे नाम ॥ ६ ॥ वाळा कुअरनि चरणने, पामे परमाद राग तिम
ने कुअरनि, उदलागे ने अमद ॥ ७ ॥

॥ ढाऊ पत्नरमी ॥

॥ पारधीयानी अथवा मन ज्ञीश्रा ॥ ए देशी ॥

॥ तापसिणीर्ड चितवे रे, ए एहनो जरतार रे ॥ पुण्यवतो ॥ नहीं तो एम किम गोजती रे, सुदर अग आकार रे ॥ गुणवतो ॥ १ ॥ श्रहो गिशाना मेऊवे रे, जेहने जुगवु जेह रे ॥ पु० ॥ आणद श्रानुजर हवे रे, उठे शातिमती तेह रे ॥ २ ॥ गु० ॥ पल्लीपति जोइ रीजीयो रे, श्रहो श्रहो रूपनिधान रे ॥ पु० ॥ पुरुषरत्नने एहवी रे, नारी रतन घटमान रे ॥ ३ ॥ गु० ॥ विनय करी पल्लीपति रे, नारीने करे परणाम रे ॥ पु० ॥ स्वामिनि तुम्ह पति तुल्य तु रे, ग्रहण योग्य नहीं नाम रे ॥ ४ ॥ गु० ॥ सुदरी कहे स्वामी तणो रे, पामो तुमे सुपसाय रे ॥ पु० ॥ एम कही जोयु पति नणी रे, सैन कहे तिणे गाय रे ॥ ५ ॥ गु० ॥ एहने पसाय करीजीये रे एहवु नही काय सार रे ॥ पु० ॥ खाल्यो पल्लीपति घणु रे, हवे मन चिंते कुमार रे ॥ ६ ॥ गु० ॥ श्रणचितव्यु ए केम थयु रे, पादप दीठो ताम रे ॥ पु० ॥ अपुरव अति सोहामणो रे, हरख्यो लही विशराम रे ॥ ७ ॥ गु० ॥ पूछे पल्लीनाथने रे, शु ए वृक्षनु नाम रे ॥ पु० ॥ ते कहे हु जाणु नही रे, एह श्रपूरव स्वामी रे ॥ ८ ॥ गु० ॥ पूछे तापसिणी प्रत्ये रे, तिणे पण जाख्यु तेम रे ॥ पु० ॥ कुमर कहे तुम ढुकडो रे, एह न जाणो केम रे ॥ ए ॥ गु० ॥ तापसिणी कहे श्रावीया रे, थोमो काऊ ययो श्रान रे ॥ पु० ॥ एह हशे बहु काऊनो रे, कुमरने थयो विश्वास रे ॥ १० ॥ गु० ॥ निश्चय प्रियमेऊक खरो रे, धवऊ कुसुमजुग दीठ रे ॥ [illegible] पल्लीपतिने दाखव्यो रे, तिणे पण दीठ उक्किठ रे ॥ ११ ॥ [illegible] पूजा करु एह वृक्षनी रे, लावो उपगरण तास रे ॥ पु० ॥ [illegible] चित्य छे एहनी रे, पुगी श्रमची श्राश रे ॥ १२ ॥ [illegible] मगावीया रे, फूऊ चदन ने नीर रे ॥ पु० ॥ तिणे [illegible] रे, कल्पवृक्षने धीर रे ॥ ॥ १३ ॥ गु० ॥ आवर्ती [illegible] देवी श्रासन्न रे ॥ पु० ॥ कहे तुठी तुफ उपरे रे [illegible] रे ॥ १४ ॥ गु० ॥ यत ॥ ' श्रमोघा वासरे विद्युत, [illegible] श्रमोघा उत्तमा वाणी, श्रमोघ देवदर्शन ॥ ' [illegible] पठे रे, श्रधिकु छे मुफ श्राज रे ॥ पु० ॥ देवी [illegible] रे, [illegible]

॥ १७ ॥ सेन गया चपा भणी रे, महाजन आव्यु ताम रे ॥ साहामु॥ पाउ धारो अमे जेम सुख पामु ॥ १८ ॥ सेन कहे किम आवीने रे, विना विसेन भूपाल रे ॥ अमे ॥ महाजन कहे प्रभु शु कहो छो तुमे ॥ १९ ॥ अम भवितव्यता एहवी रे, एम चिंतवी कहे तेह रे ॥ परजा॥ अम पुण्ये अमे एहवाज सरजा ॥ २० ॥ नगर बाहिर आवासीआ रे, केइक दिन गया ताम रे ॥ आया ॥ विसेन पासे नर जे पठाया ॥२१॥ अमरगुरुने ते कहे रे, कयगला नयरीए तेह रे ॥ दीठो ॥ तिणे पण साभल्यो सेन जे उक्किठो ॥ २२ ॥ अमे पण जइने भाखीउं रे, तुमचे जे समाचार ते ॥ आगे ॥ साभली ते अगोअगथी रे लागे ॥ २३॥ दुभाणो मनथी घणु रे, कमलाणु मुख तास रे ॥ पापे ॥ मठरथी प्रद्य तेह सुणो आपे ॥ २४ ॥ बोली न शक्यो वयणथी रे, किम किम वर्र कहे एम रे ॥ वात ॥ पर भुजबलथी राज्य ए आयात ॥ २५ ॥ त नवि भोगवु हु किमे रे, जाउं तुमे निज गाम शाने ॥ आया ॥ फर्र मत आवजो शु कहु भाया ॥ २६ ॥ हवे जिम जाणो तिम करो रे,वि तये ताम अमात्य रे ॥ चित्ते ॥ राज्य योग्य नहीं एह अनिते ॥ २७ आवी कुमरने कह्यु रे, कुमर बोल्या ताम रे ॥ वाणी ॥ तात भाइ विन वातमी विराणी ॥ २८ ॥ अधकारमा नाचीआ रे, श्यो गुण राज्यम आज रे ॥ धारो ॥ अमरगुरु कहे बुद्धिनो भडारो ॥ २९ ॥ प्रजा पण पालवी रे, महापुरुषनो धर्म एह ॥ सारो ॥ कुमर कहे ए निज पुण्य विचारो ॥ ३० ॥ सातमे खडे सोहामणी रे, एह अढारमी ढाल रे भाखी ॥ पद्म श्रोता सुणो चित्त थिर राखी ॥ ३१ ॥ सर्व गाथा ॥५७०

॥ दोहा ॥

॥ हरिसेन राजऋपि हवे, काका सेन कुमार, सघलो व्यतिकर सा भली, चित्तमा करे विचार ॥ १ ॥ योग्य सजमने जाणीये, अधिकरण कह्यु एण, उद्धरीये एह आतमा, करुणा तस करणेण ॥ २ ॥ साथे साधु अनेकथी, आव्या तिणे उद्यान, वनपालके अवनीपति, विनवीयो धरी वान ॥ ३ ॥ दान देइ वदन भणी, अमरगुरुशु आय, नष्टशोक उद्यानमा, दीठा मुनि सुखदाय ॥ ४ ॥ ब्रह्मचारी वरुभागीया, सजत सहु शिरदार, आणा श्री अरिहतनी, निर्वेदेता निरधार ॥ ५ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ जंबु धाइ पुष्करा ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नत्रयी आराधता, मोह तिमिरजरनाश हो ॥ मुनिवर ॥ निरति-
चार चरण धरे, नवि पमता मोहपाश हो ॥ मुनि० ॥ १ ॥ एहवा मुनि
नित्य वंदीये ॥ ए आकणी ॥ जेह निरंजन शंख ज्यु, नावना नावता बार
हो ॥ मु० ॥ शारद जल ज्यु हृदयथी, प्रणमुं ते अणगार हो ॥ मु०
॥ २ ॥ एह० ॥ शिष्यने चिंतामणि समा, मुक्तिमारग मूर्तिमंत हो ॥ मु० ॥
शांति सुधारस जलनीधि, वंद्या ते नगवंत हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ एह० ॥
धर्मलान्न दीधो धुरे, रोमांचित ते कुमार हो ॥ मु० ॥ आणंद आंसु
आव्या तदा, मुनि कहे सुण तुं कुमार हो ॥ मु० ॥ ४ ॥ एह० ॥ जाव ध-
रम परे ताहरी, वात सुंदर सुविचार हो ॥ मु० ॥ तुऊ निर्वेदे मुनिपणुं,
आव्युं मुऊ ए वार हो ॥ मु० ॥ ५ ॥ एह० ॥ एह असार संसारमां,
संजम तेहज सार हो ॥ मु० ॥ जीवित एह मानव तणुं, केवल क्लेश
आधार हो ॥ मु० ॥ ६ ॥ एह० ॥ ऊव्य उपार्जन क्लेश जे, नवि लहीये
तस पार हो ॥ मु० ॥ देव दानवने पण सदा, मृत्यु तणो शिर मार हो
॥ मु० ॥ ७ ॥ एह० ॥ करनो प्रमाद जे योमलो, ते पण अनरथमूल हो
॥ मु० ॥ गुरुन्नावित कहुं तेहनो, संबंध आमूल चूल हो ॥ मु० ॥ ८ ॥ एह० ॥
एहज जंबु नरतमां, उत्तरपथ अपार हो ॥ मु० ॥ वर्द्धनापुरमां राजीयो, अ-
जितवर्द्धन अवधार हो ॥ मु० ॥ ९ ॥ एह० ॥ सद्धन नाम गाथापति,
चंदा तेहनी नार हो ॥ मु० ॥ सर्ग नामे सुत तेहनो, निर्धन तेह अपार
हो ॥ मु० ॥ १० ॥ एह० ॥ सद्धन मरण लह्यो हवे, कीधा मरणना काम
हो ॥ मु० ॥ आजीविका हेते करे, चंदा परघर काम हो ॥ मु० ॥ ११ ॥ एह० ॥
अटवी माहिथी लावतो, इंधण साग प्रमुख हो ॥ मु० ॥ विक्रयथी आजी-
विका, एम दिन काढे दुःख हो ॥ मु० ॥ १२ ॥ एह० ॥ एक पामोशी
तेहने, पालक नामे शेठ हो ॥ मु० ॥ आव्यो जमाइ तस घरे, तेहनी
करवा वेठ हो ॥ मु० ॥ १३ ॥ एह० ॥ बोलावी चंदा तदा, पाणी नरण
निमित्त हो ॥ मु० ॥ पुत्र नूख्यो घरे आवशे, चिंतन धारी चित्त हो ॥
मु० ॥ १४ ॥ एह० ॥ नोजन शींके थापीने, कटिका देइ दुवार हो ॥
मु० ॥ आनादिकना नय थकी, चंदा चाली जिवार हो ॥ मु० ॥ १५ ॥

कोइ रे नामे रे ॥ १७॥ माली वनवासीने पूछे रे, एहनो किहां रे चाल्यो रे ॥ ते कहे नवि दीठो कोइ रे, पण एक चोर झाल्यो रे॥२०॥ हमणा तस मार्यो जाइ रे, कदा तिहां रे गयो रे ॥ कौतुकनो लीधो जाय रे, सुणी शोक रे थयो रे ॥ २१ ॥ आकुल व्याकुल घणो थाये रे, जाइ ए रे शु कह्यु रे ॥ जाइ मुकने गाम देसाव्यो रे, मारुं हइडु रे दह्यु रे ॥२२॥ तव गाम देखाड्यु तिणे रे, तिहां कोनाणो आयो रे॥ शूलीए शेठपुत्रने दीठो रे, अरुणदेव रे जायो रे ॥ २३ ॥ एम कर्मविचित्रता जूउ रे, सा तमे सम्भे ते सुणो रे ॥ कहे पद्म वीशमी ढाले रे, करया कर्म ए रे मुणा रे ॥ २४ ॥ सर्व गाथा ॥ ६२७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर्मविपाक करुआ घणा, मूर्छा पामे मन्न, पडीयो पृथवी उपरे, तरफडतो ते तन्न ॥ १ ॥ प्रेक्षक लोक आव्या पछे, पूछे झाली पाणी, शो ए कह्यो सवध छे, आसो उत्तर आणी ॥ २ ॥ महेसर बहुले मा हथी, बोले गद्गद बोल, वाट उठी ए वातमी, अवलो थयो अतोल ॥ ३ ॥ तामलिप्तिए तिलक सम, कुमारदेव कहेवाय, तेहनो सुत तुमे जाणजो, अरुणदेव अभिधाय ॥ ४ ॥ इण नयरीवासी अवल जसादित्य जग जाण, जामाता तस जाणजो, आव्यो इणही ज ठाण ॥५॥ जिहाज भागु प्रिय जन गया, मनमा धरतो माम, न गयो सुसराने घर, अवसर जाणी आम ॥ ६ ॥ वेसाव्यो मे नाहिरे, पुरमा गयो पिछाण, आहार लेइने आवीउ, दीठो सोल्यो ठाण ॥ ७ ॥ पापउदय परगट थयो, आव्यो सोधतो आहि, दीठो एणी परे दृष्टियी, किहां ए शूळी क्याहि ॥ ८ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ इम म्हारा घणु सवाइ ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ एम कहेता मूरछा नमीउ, पृथवी उपरे ते पडीउ रे ॥ नविका कर्म तणी गति न्यारी, न शके कोइ कर्मने वारी रे ॥ न० ॥ पूरानी परे तर फडतो, उठ्यो केमहीक लडथडतो रे॥ १॥ न०॥ निज तन करवाने माठे, लेइ पत्थर शिरशु पछाडे रे ॥ न० ॥ प्रेक्षक लोके धरी राख्यो, इणी परे

जे सनध दाख्यो रे ॥ २ ॥ ज० ॥ नगरीमा थयो विस्तार, जसादित्ने सुण्यो अधिकार रे ॥ ज० ॥ निज पुत्री लेइ तिहा आयो, दीठो अरु-णदेव मन जायो रे ॥ ३ ॥ ज० ॥ अहो अहो ए वात ते केहवी, शेठ-पुत्रनी जोवा जेहवी रे ॥ ज० ॥ मूर्छा लह्या दुहिता ने तात, वाळ्या च-दन नीजणे वात रे ॥ ४ ॥ ज० ॥ काढो मुज कष्ट रे जाय, नवि शोक सताप खमाय रे ॥ ज० ॥ मरशु निश्चय ततकाल, सुणी वात ए पृथवी-पाल रे ॥ ५ ॥ ज० ॥ कोटवालशु करनो रीश, कोटवाल कहे सुणो ईश रे ॥ ज० ॥ चोरित वस्तुशु एह, पकड्यो अमे करीये केह रे ॥ ६ ॥ ज० ॥ जसादित्य पासे वरगाम, नरपति आवी जणे आम रे ॥ ज० ॥ जाइ देवनो ए अपराध, अम बुद्धि तणो नहीं वाध रे ॥ ७ ॥ ज० ॥ कोइ नावी जाव विचार, एम बोले नूजरलार रे ॥ ज० ॥ शूळीएथी उताख्यो तेह, पण वेदन अतिशय देह रे ॥ ८ ॥ ज० ॥ प्रतिबोधनो अवसर जाणी, आव्या सूरि चउनाणी रे ॥ ज० ॥ अमरेसर गणधर नाम, तप अ-तिशयथी अभिराम रे ॥ ९ ॥ ज० ॥ सुरनर पूजित गतपाप, सहुना गया शोक सताप रे ॥ ज० ॥ देवताए पृथवी समारी, गधोदक वरसे धारी रे ॥ १० ॥ ज० ॥ वली कनककमल पण विरचे, फूल वरसे ने मुनिने अरचे रे ॥ ज० ॥ तिहा बेसीने देशना देता, उपदेश माहि एम कहेता रे ॥ ११ ॥ ज० ॥ मोहनिद्रा म करो प्राणी, धर्म जागरणे जागो जाणी रे ॥ ज० ॥ तजो पापथानक अढारो, दशविध जतिधर्मने धारो रे ॥ १२ ॥ ज० ॥ तजीये वयरी अनरग, दुःख दीये परमाद प्रसग रे ॥ ज० ॥ थोनो पण करीने पमाय, तेहथी बहु कर्म बधाय रे ॥ १३ ॥ ज० ॥ दुःखदायक तास विवाग, मानस तनु दुःख अताग रे ॥ ज० ॥ देइ-पि ने अरुणदेव जेम, तव पूछे नरपति केम रे ॥ १४ ॥ तव सूरि पूर्व स-बध, विस्तारथी कहे प्रबध रे ॥ ज० ॥ जो एटला दुःकृत केरो, विपाक आव्यो अधिकेरो रे ॥ १५ ॥ ज० ॥ एम साजली केइ प्रतिबूझ्या, सवे-गथी कर्मशु जूझ्या रे ॥ ज० ॥ अरुणदेव देइणि दोय, सुगंगत तत-क्षण होय रे ॥ १६ ॥ ज० ॥ चेतना लही पाम्या ज्ञान, जातिसमरण शुभ ध्यान रे ॥ ज० ॥ आदान निदान सहु जाण्यो, शुभ परिणामे पर-माण्यो रे ॥ १७ ॥ ज० ॥ प्रभु जे तुमे जाख्यु तेम, [illegible] ज्ञाने दीठु

एम रे ॥ ज० ॥ अमे पाम्या जिनवर बोधि, अणसण देइ करो अम शोधि रे ॥ १८ ॥ ज० ॥ जरा जनम मरण रोग शोग, टालो ससार स जोग रे ॥ ज० ॥ गुरु कहे ए जुगती बात, दुर्गति जाये सद्गति थात रे ॥ १९ ॥ ज० ॥ सुर नर सुख साधे एह, निरवाण दीये वली जेह रे ॥ ज० ॥ अणसण दीये नृप शेठ साखे, सहु धन्य धन्य मुखे जाखे रे ॥ २० ॥ ज० ॥ कहे बिहु जण गुरुने स्वामी, वली कहो काय अतरजामी रे ॥ ज० ॥ गुरु कहे तुमे सघलु कीधु, मानवजवनु फल लीधु रे ॥ २१ ॥ ज० ज० ॥ वली टालो ममत दु खमूल, मैत्री सहुशु अनुकूल रे ॥ ज० ॥ पूर्व दु कृत दुगठो, एक रत्नत्रयीने वठो रे ॥ २२ ॥ ज० ॥ परमात्मसरूप वि चारो, सुणी तिमज करे सुप्रकारो रे ॥ ज० ॥ इण अवसर कहे जूपाल, सवग थकी सुरसाल रे ॥ २३ ॥ ज० ॥ एटलाना ए फल बतलावो, तो अमने दुर्ग गति जावो रे ॥ ज० ॥ परमादवशे अमे पमीआ, अमे कर्म्मजजीरु जमीआ रे ॥ २४ ॥ ज० ॥ गुरु कहे कर्मनी स्थिति एहवी, फले अधिक अधिक वरु जेहवी रे ॥ ज० ॥ जो अधिक अधिक वली बाधे, तो नरक तिरि गति साधे रे ॥ २५ ॥ ज० ॥ तिहा दु ख घणा जोगवशे, बहु काल लगे जोगवशे रे ॥ ज० ॥ ते लेखे ए थोडु जाणो, तिणे जाख त्रिजुवनराणो रे ॥ २६ ॥ ज० ॥ विष व्याधि जलण ने साप, शत्रुसग दीये दु ख व्याप रे ॥ ज० ॥ इह जव दु ख पण परमाद, इह परजव आप विषाद रे ॥ २७ ॥ ज० ॥ परमादथी करत अकाज, गुरुलाघव न गणे काज रे ॥ ज० ॥ एम तत्त्वातत्त्व विचार, गुरु उपर न करे प्यार रे ॥ २८ ॥ ज० ॥ एम मची बहुला पाप, सहे वेदन नरके आप रे ॥ ज० ॥ पूछे नृप तास उपाय, जव सम्यग् कहे गुरुराय रे ॥ २९ ॥ ज० ॥ एम सातमे खमे जाणो, एकवीशमी ढाल प्रमाणो रे ॥ ज० ॥ गुरु उत्तम एणी परे जाखें, नृप पद्मविजय चित्त राखे रे ॥ ३० ॥ ज० ॥ सर्व गाथा ॥ ६६६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सर्व आरंज तजे सदा, चारित्र पाले चित्त, आराधे अप्रमादने, नाणवृद्धि होय नित्य ॥ १ ॥ मिथ्यामत मुके नहीं, वर्द्धमान सवेग, पूरव सचित खेपवे, वली नासे अविवेग ॥ २ ॥ निमित्त विना बाधे नहीं, नवा कर्म निर्धार, अनुक्रमे केवल उपजे, शाश्वत सुख श्रीकार ॥ ३ ॥

राय कहे सूरीशने, कस्यो न केम अप्रमाद, एणे अप्रमाद आराधीउं, पण बहुलो परमाद ॥ ४ ॥ अतिशय अप्रमादीपणु, करे कर्मनो अंत, पण थोका अप्रमादथी, मोव्या कर्म महंत ॥ ५ ॥ आदरीउं अप्रमादने, अशुन्न टल्यो अनुबंध, वीज अप्रमादनु वोइयु, स्तवीचे ए संबंध॥ ६॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ मारे घरे आवजो रे रसिया ॥ ए देशी ॥

॥ तिणे कारण प्रजुजी नाखे, करजो नहीं परमाद सराखे ॥ छु कृत निंदा रे करीये, इणी परे जवसायर सुखे तरीये ॥ १ ॥ ति० ॥ आलोइये गुरु पासे, प्रायश्चित्त विधिपूर्वक अन्यासे ॥ एम सुणी बूझ्यो रे राय, कारागार विमुक्ति कराय ॥ २ ॥ ति० ॥ जसादित्य माहेश्वर साथे, चारित्र लीये नृप सजुरु हाथे ॥ एह सुणी अधिकार, कटक चोर आव्यो तिणे गार ॥ ३ ॥ ति० ॥ पश्चात्ताप रे करतो, गुरुने इणी परे तेह वदतो ॥ में पापीए ए काम, कीधु निऊंधस परिणाम ॥ ४ ॥ ति० ॥ धर्म ठवेखी रे सार, अधरमनो कीधो अधिकार ॥ मानवजव एहेळे खोयो, छुःखपरंपरानो मुख जोयो ॥ ५ ॥ ति० ॥ इयो बहु वचनविन्यास, प्राणत्याग करवो तुम पास ॥ कहो प्रजु जोग्य जे माहरे, दीधो गुरु उपयोग तिवारे ॥ ६ ॥ ति० ॥ लौकिक सुंदरता जाव्यो, पण नवि नव वैराग्य ते आव्यो ॥ एम विचारी रे तास, दीधु अणसण शुन्न अन्यास ॥ ७ ॥ ति० ॥ दीधो वली नवकार, चोरे पण कस्यो अंगीकार ॥ निंदी आतम आप, गुरु वंदीने धोया पाप ॥ ८ ॥ ति० ॥ अणदेवे कस्यो काल, देइणि तस्कर पण ततकाल ॥ त्रणे सुरवर रे थाय, तिणे सुण सेन कुमरजी राय ॥ ९ ॥ ॥ ति० ॥ राज्य असारने काम, कीधो शे कामे संग्राम ॥ जुगतु काम न कीधु, सेन कुमर पण बोल्यो सीधु ॥ १० ॥ ति० ॥ कुल परानव न सहाणो, तिणे असुंदर कार्य कराणो ॥ जाणयु हवे तुम पास, दीक्षानी उपशम होय तास ॥ ११ ॥ ति० ॥ आपो जोग्य जो जाणो, गुरु कहे योग्य तणे शिर आणो ॥ तजवा जोय संसार, कीजे उद्यु कारय निरधार ॥ ॥ १२ ॥ ति० ॥ सेन कुमर कहे साच, सुणो अमात्य गुरुनु वाच ॥ अनुमति यो तुमे सारी, बोल्यो ताम अमात्य विचारी ॥ १३ ॥ ति० ॥ विपन म होयो रे तुमने, आठ दिवस यो माग्या अमने ॥ अष्टाह्निकोत्सव रे

कीधो, दान अतुल जाचकने दीधो ॥ १४ ॥ ति० ॥ राज्य ठव्यो निज पु
अमरसेन राखे घरसूत्र ॥ शुज लगने शुज वार, शांतिमती पण साथे ना
॥ १५ ॥ ति० ॥ अमरगुरु सुखमती, शकुन सवे अनुकूल निपती ॥ हरि
सेन गुरुने रे पासे, दीक्षा लेइने श्रुतअज्यासे ॥ १६ ॥ ति० ॥ अनुक्र
सूत्र ने किरिया, अर्थ धस्यो हूआ गुणदरीआ ॥ तुलना जिनकल्प कर
करे गुरुआणा लहीय नलेरी ॥ १७ ॥ ति० ॥ पांच प्रकारनी तेह, त
१ सूत्र २ अर्थ ३ गुणगेह ॥ एकांत ४ बल ५ पंच जाणो, पाठांतर बी
परमाणो ॥ १७ ॥ यत ॥ "तवेण सुत्तेण अत्नेण, एगत्तेण बलेण य ॥
लणा पंचहा वुत्ता, जिणकप्प पन्निवज्जर्ठ ॥ १ ॥ अत्र पाठांतर विशेषा
श्यके ॥ तवेण सुत्तेण सत्तेण, एगत्तेण बलेण य ॥ इत्यादि ॥ तत्र स
जावना पंचधा' पहेली उपासरा माहिं, बीजी बाहिर धरत उछाहिं
त्रीजी चोकमां रहेतां, चोथी शून्य घरमां सहेतां ॥ १९ ॥ ति० ॥ पांच
समशाने जाय, सत्त्वजावना इणी परे थाय ॥ बृहत्कल्पमां विस्तार,
जो इहां थाय ग्रंथ अपार ॥ २० ॥ ति० ॥ यत ॥ "पढमा उवस्सयमी,
बिया बाहिं तईया चउकमी ॥ सुन्नहरमी चउत्थी, तह पंचमीया मसा
णमी ॥ १ ॥ कीधी तुलना रे एम, टाले संग सहुशुं प्रेम ॥ ग्रामे एकर
राति, नगरे पंच राति विख्यात ॥ २१ ॥ ति० ॥ एक दिन विचरतां आ
या, कोल्लाग सन्निवेशे मुनिराया ॥ काउस्सग्ग रह्या एक ठामे, प्रणमा
ए मुनि नित्य शिर नामी ॥ २२ ॥ ति० ॥ सातमे खंडे रे ढाल, बावीशमी
जाखी सुरसाल ॥ समरादित्यने रास, पद्मविजय कहे धरी उल्लास ॥
॥ २३ ॥ ति० ॥ सर्व गाथा ॥ ६९५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राज्य विना हवे रुखडे, नाम गिसेन कुमार, इण अवसर तिहां
आवीयो, धरतो रूप अपार ॥ १ ॥ मुनिवर दीठा मोटिका, पण कोइ कर्म
प्रमाण, कोपे चित्तमा कलकल्यो, बोले इणी परे वाणी ॥ २ ॥ दीठे वली दृष्ट
करी, नहीं मुफ पापनो पार, अथवा आ अवसर नलो, एकाकी अव
धारी ॥ ३ ॥ एकांते आयुरूं नहीं, पहोंचाडुं जम पाणि, मनोरथ पूरुं मन
तणा, अथवा मुफ एम हाणि ॥ ४ ॥ निज कुलपुत्रने निरखतां, कहो
मारुं कोण रीति, वध करशुं वली अवसरे, चाल्यो एम धरी चित्त ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ पट्टोधर पाटीये पधारो ॥ ए देशी ॥

॥ नवि कोइने व्यतिकर जाण्यो, ए डंप हैयामा राख्यो ॥ मुनि समतारस चित्त चाख्यो ॥ १ ॥ जविजन वंदीये मुनि जावे, जिम जव जव पातिक जावे ॥ जवि० ॥ ए आंकणी ॥ देवकुल पीठिकाए स्तो, सूरज केत्रांतरे पोहोतो ॥ आयो रातिने जाग निचतो ॥ २ ॥ ज० ॥ गयो खड्ग लेइ मध्यराते, मुनिवर पासे एकांते ॥ ध्यान निश्चल मुनिवर ध्याते ॥ ॥ ३ ॥ ज० ॥ एक अरति ने बीजु अज्ञान, उठल्यो क्रोधने दीप्यो मान ॥ काढ्यु खड्ग जुजग समान ॥ ४ ॥ ज० ॥ कहे सांजल रे डुराचार, जीवलोक नयणे अवधारी ॥ हु मारीश तुज निरधार ॥ ५ ॥ ज० ॥ ध्यानमा न सुणे मुनिराय, पण केत्रदेवी तिणे ठाय ॥ सुणे गुणरागिणी चित्त लाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ विसेन कुमारने कोपी, खड्ग वाहे जदा लाज लोपी ॥ अपहरी लीये टोप आरोपी ॥ ७ ॥ ज० ॥ थन्यो वली तेहज गाम, कहे धिग् संक्लेश परिणाम ॥ अनार्यपणानु धाम ॥ ८ ॥ ज० ॥ सम शत्रु मित्र मुनि एह, वासी चंदन सम देह ॥ ते उपर केम करे एह ॥ ए ॥ ज० ॥ तुज मुख नवि जोवु सार, दया आणीने मूक्यो तिवार ॥ पण तीव्र करम थया व्हार ॥ १० ॥ ज० ॥ न गणे ते देववचन्न, फरी मारण धाये तन्न ॥ देवताए जाणी शुन्न पन्न ॥ ११ ॥ ज० ॥ लोही वमतो नाख्यो तास, मुनि अवग्रह जाएयो पास ॥ कोजना लही उठव्यो तास ॥ १२ ॥ ज० ॥ अवग्रहथी काढ्यो वाहिरे, मूक्यो वनमा जइ ल्यारे ॥ अदृश थया देवता ज्यारे ॥ १३ ॥ ज० ॥ पापनी परिणति जुर्ज माहारी, नवि शकीर्ज एहने मारी ॥ विसेन ते एम विचारी ॥ १४ ॥ ज० ॥ एम करतो रुड ते ध्यान, अमरष धरतो अज्ञान ॥ थयु नारक आयुवधाण ॥ १५ ॥ ज० ॥ अजिनिवेशथी दृढ थाय, क्रमे कोइक काल गमाय ॥ परिजन सहु निज घर जाय ॥ १६ ॥ ज० ॥ पीमा वहु जूखनी खमतो, एकाकी मारग चलतो ॥ चोप्पीला अटवीमा जमतो ॥ १७ ॥ ज० ॥ चिल्ल रुध्र आवणने काज, मास लेतु करे तस व्याज ॥ माख्यो तिणे विसेण राज ॥ १८ ॥ ज० ॥ मरी ठठी नरगे जायो, मुनिआशातन फल पायो ॥ बावीश सागर तस आयो ॥ १९ ॥ ज० ॥ हवे सेनराय

गुडीए खरड्या कर वली रे, देखी प्रणमी तेह ॥ कहे एशु महाराजीया रे, कुमर कहे जुर्ड एह रे ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ देखी चमक्या चित्तमा रे, सर कह्या सावधान ॥ चित्रमा नार देखाडनो रे, मुशकल छे तेह तान रे ॥ ॥ ९ ॥ प्रा० ॥ चित्रशास्त्रमा एम कहे रे, जास न लहीये चरित्र ॥ गत कथा निण चित्रनो रे, जाणीये नार पवित्र रे ॥ १० ॥ प्रा० ॥ तेहजवि प्रकर घुर कह्यो रे, एण समे थयो नियाल ॥ कालनिवेदी बोलीया रे, सध्यासमय सनाल रे ॥ ११ ॥ प्रा० ॥ सध्या उपर नेहथी रे, अस्ताचल रवि जाय ॥ संकेत थानकनी परे रे, सुरगिरि गुजमा छाय रे ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ कुसुम सुगध ते विस्तर्यो रे, पूजे रमणी अनग ॥ दीपज्योति परगट थइ रे, मानवी तेह सुरग रे ॥ १३ ॥ प्रा० ॥ गुरुपद नमन समय थया रे, उठ्या ताम कुमार ॥ जननी जनकना चरणने रे, प्रणम्या विनय प्रकार रे ॥ १४ ॥ प्रा० ॥ मावित्रे बहु मानीया रे, गया निज वास भुवन ॥ आवी निद्रा अवसरे रे, रत्नवतीशु मन्न रे ॥ १५ ॥ प्रा० ॥ प्रात समय दीठु स्वप्नमा रे, दिव्य कुसुमनी माल ॥ आपी कोइक एम कहे रे, दया ए अति सुकमाल रे ॥ १६ ॥ प्रा० ॥ तुम मन गमती एह छे रे, साचवी धरी निज कठ ॥ तूर प्रभातना वाजीया रे, जाग्यो धरी उत्कठ रे ॥ ॥ १७ ॥ प्रा० ॥ कालनिवेदी बोलीयो रे, करतो तिमिर विनाश ॥ बहु बाल कुम टालनो रे, करतो रवि सुप्रकाश रे ॥ १८ ॥ प्रा० ॥ इत्यादिक सुणी हरखीउ रे, रत्नावतीनो लाह ॥ अन्यथा स्वप्न न परिणमे रे, मगल शब्द सनाह रे ॥ १९ ॥ प्रा० ॥ तुरत मली जोइये हवे रे, दृ निश्चित भवाव ॥ गुरुपदवदन प्रमुख जे रे, आवश्यक करे ताव रे ॥ २० ॥ ॥ प्रा० ॥ जनकादिक प्रणमी करी रे, बेठा नव निज ठाय ॥ आव्या मित्र वली पहवे रे, गोष्टि चतुर्थ गूढ थाय रे ॥ २१ ॥ प्रा० ॥ (विभावसुद्धि बोल्यो) ॥ यत- "सुरयर रमणस्म रइहरे, पिय ववनिर गुरु दइगा ॥ नम्हथ वनविगाहा' ॥ कुमर कहे फरी भाखीये रे, फरी बहु विवे जान ॥ ननहग पट निद्दा पुरीउ रे, रमण निगार थान रे ॥ २२ ॥ प्रा० ॥ चतुर्वेद यथा "रमणम्म कर निवारेइ ॥ ' ॥" विभावसुद्धि कहे स्पष्ट रे, पूरु पद तुमे भाखी ॥ चित्रमती कहे माहरु रे, पूरो पद हव कान रे ॥ २३ ॥ प्रा० ॥ यत- ' जाविय रुम्मार रमा, गन-

णिउ मुक्क बहुलतिक्कारा ॥ न तरड विवरीयरय, (कुमर बोल्या यथा) णिय वजारा ललासामा ॥ २ ॥ (नृपण बोल्यो) विउलम्मीमउवियठी, घणविस्सजस्स सामिणि सुचिर ॥ विवरीय सूरय सहिया, (कुमर बोल्या) विसमई उरम्मि रमणस्स ॥ ३ ॥' एम करता तिहां आवीउं रे, कहे एणी परे प्रतिहार ॥ नृप बोलावे तुम जणी रे, रहवासी परिवार रे ॥ २४ ॥ प्रा० ॥ अनुक्रमे कुमर गया तिहां रे, अश्व खेलाव्या जोर ॥ आव्या निज आवासमा रे, शेष कृत्य करे गोर रे ॥ २५ ॥ प्रा० ॥ एम विनोद करता थका रे, केइ दिवस वही जाय ॥ एक दिन रत्नवती तणु रे, रूप आलेख कराय रे ॥ २६ ॥ प्रा० ॥ चोथी आठमा खंडमा रे, पद्मविजय कही ढाल ॥ समरादित्यना रासमा रे, सुणता मंगलमाल रे ॥ २७ ॥ प्रा० ॥ सर्व गाथा ॥ १३७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रत्नवतीना रूपमा, परवश थयो अपार, उत्सुक जोता अछबरो, नयने ते निरधार ॥ १ ॥ देठी लखी गाहावली, इण अवसर तिहां आय, नृपण चित्रमती जला, चित्र जुवे चित्त लाय ॥ २ ॥ [illegible] वही वाची तदा, गाहा गुणजनार, धन्य कुअरी नृपनी धूआ, [illegible] चाहे कुमार ॥ ३ ॥ अचरिज अथवा नहीं इहां, जे बहु मानव [illegible] देवीने जइ दाखीवे, शुभ मलीउं संजोग ॥ ४ ॥ बुद्धिवंत तब [illegible] चित्रमती चित्त लाय, पकडदो ए अपूर्व ठे, अहो मुज [illegible] ॥ ५ ॥ दीठा विण ए दाखवी, नृपण बोल्यो जाय, एतादृश [illegible] कूरु नवि लखीयु काय ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ मनमोहन मनमोहन पावन देहडी जी ॥ ए [illegible]

॥ इणे अवसर इणे अवसर प्रतिहार आवीयो जी, नृप [illegible] ते सुणीये कुमार हो ॥ विश्वभूति विश्वभूति गधर्व [illegible] रिसप तुम दरिसणनो धरे प्यार हो ॥ १ ॥ स्वामी [illegible] एक अनंतपी जी ॥ ए आंकणी ॥ कहे इच्छर कहे इच्छा [illegible] तिणे मूक्यो तिणे मूक्यो आव्यो ताम हो ॥ करी [illegible] उपविशजी, कहे सुणीये कहे सुणीये वात ते [illegible]

नासे नृप नाखे इणी परे तुम जणी जी, गधर्व गधर्व विचार सदेह हो॥ प डीउं पमीउं ते गुणचन्द्र टालशे जी,सुणी हसीथ्या सुणी हसीथ्या कुमार तेह हो ॥ ३॥ स्वा०॥ सुतनो जुउं सुतनो जुउं राग ते केटलो जी, विभ्रमूति विभ्रमूति बोले तव एम हो ॥ गुण आदर गुण आदर जाणो पण नहीं जी, सुतमात्रे सुतमात्रे नृपनो प्रेम हो ॥ ४ ॥ स्वा० ॥ चित्रमती ने चित्रमती न भूपण दोय कहे जी, खरी वात खरी वात कही छे एण हो ॥ कहे कुमर कहे कुमर चालो आणा करु जी, उठी चाल्या उठी चाल्या विनये जेण हो ॥५॥स्वा०॥ विहु हरख्या विहु हरख्या निज भवने गया जी, नवि कहेवु नवि केहेवु कुमारने काय हो ॥ विज्ञान विज्ञान कुमारनु आलेखीने जी, कहे भूपण कहे भूपण चालो राय हो ॥६॥ स्वा०॥ चित्रमती कहे चित्रमती कहे कहीने जायता जी, शु थाये शु थाये तव कहे तेह हो ॥ नवि जाता नवि जाता दीये तुमने किमे जी, चित्रमइ कहे चित्रमइ कहे साचु एह हो ॥ ७ ॥ स्वा० ॥ आलेख्यु आलेख्यं रूप कुमारनु जी, कुमरे जे कुमरे ग्रहीउ हाथ हो ॥ अयोध्या अयोध्या माहिथी नीकल्या जी, लेइ चहुण लेइ वेहुण पट्टिका साथ हो ॥ ८॥ स्वा० ॥ शखपुरीए शखपुरीए पोहोता अनु क्रमे जी, कह्यु धुरथी कह्यु धुरथी कुमरवृत्तात हो ॥ सुणी राणी सुणी राणी विहु रूप देखीने जी, चित्त हरखी चित्त हरखी तेह एकात हो ॥ ९॥ ॥ स्वा० ॥ दान दीधु दान दीधु तास सतोषनु जी, रूप जोइ रूप जोइ करे विचार हो ॥ अहो रूप अहो रूप अवस्थान केहवु जी, अहो अतिशय अहो अतिशय देह आकार हो ॥ १० ॥ स्वा० ॥ रत्नवतीना रत्नवतीना रूप देखवा लागी जी, जेह गाहा जेह गाहा गाची तेह हो ॥ मन चिंते मन चिंते माहरी धूया जी, एम इछे एम इछे चित्तशु एह हो ॥ ११ ॥ स्वा० ॥ मोकलीयु मोकलीयु रूप कुमारनु जी, कुमरीने कुमरीने पासे ताम हो ॥ सखी मयण सखी मयणमजुषा निरा गर जी, चित्रपट्टिका चित्रपट्टिका दाखी जाम हो ॥ १२ ॥ स्वा० ॥ कहे कुमरी कहे कुमरी ए शु छे कहो जी, मोकल्यु तुम मोकल्यु तुम माते एह हो ॥ कदेवराव्यु कहेवराव्यु छे ए शीखजो जी, कहे कुमरी कहे कुमरी केहोनो ए छे हो ॥१३॥स्वा०॥ ते बोली ते बोली काय जाणु नहीं ना, ए रूप रूप होशे पन जाणी हो ॥ सदृस नेत्र सदृस नेत्र कहु सा तेहने नी,

ते नोली ते वोली होशे नाराण हो ॥१४॥ स्वा०॥ कुल वरणे कुल वरणे ते ठे तन कहे जी, सखी बोली सखी बोली त्यारे होशे चद हो॥ सा जाखे सा जाखे कनक ठे तेहने जी, सखी जाखे सखी जाखे कदर्प अमर हो ॥ १५ ॥ स्वा० ॥ बोली रयण बोली रयणवती तेह वालीयो जी, महादेवे महादेवे कहो केम होय हो ॥ सखी जाखे सखी जाखे कहो तुमे आपथी जी, अपूरव अपूरव दरिसण कोय हो ॥ १६ ॥ स्वा० ॥ कहे रयण कहे रयणवती ए नर अठे जी, चढती वय चढती वय रूप जमार हो॥ निकलकी निक्लकी सोनन कांति ठे जी, नेहाला नेहाला नयण अपार हो ॥ १७ ॥ स्वा० ॥ वोली मयण बोली मयणमजुषा जु कह्यु जी, एहमा नहीं एहमा नहीं काय सदेह हो ॥ हु तो जाणु हु तो जाणु ए तुम वर हुशे जी, कोइ एहवे कोइ एहवे कहे नि सदेह हो॥ १८॥ स्वा० ॥ हरखी ते हरखी ते लाजजी शकुनने जी, आलेरयो आलेस्यो प्रतिठद तेह हो॥ कहे सखीने कहे सखी मातने दाखवो जी, शीखी के शीखी के नहीं कहो एह हो ॥ १९ ॥ स्वा० ॥ जइ दाख्यु जइ दाख्यु तब घणु हरखती जी, निज धूया निज धूया धन्यविज्ञाण हो ॥ आलेखी आलेखी कुमरे जे कुमरी जी, लावी मूकी लावी मूकी तिणे तस ठाण हो ॥ २० ॥ स्वा० ॥ अनुरूप अनुरूप युगल देखी करी जी, मन हरखी मन हरखी राणी कहे एम हो ॥ कहो रतन कहो रतनवतीने ए ठीक ठे जी, नित्य करजो नित्य करजो एहशु प्रेम हो॥ २१ ॥ स्वा०॥ तुजने पण तुजने पण इणी परे कुयरे जी, आराधी आराधी ठे अनुरूप हो ॥ चित्रपट्टि चित्रपट्टिका निउए मोकली जी, तिणे पण जइ तिणे पण जइ कह्यु ते सरूप हो ॥ २२ ॥ स्वा० ॥ सखी वोली सखी वोली मं जे तुम कह्यु जी, राजकुमर राजकुमर तुमारे जोग्य हो॥ कलाआगर कलाआगर गुणनिधि देखीये जी, एह जोगे एह जोगे को नवि शोग हो ॥२३॥ स्वा०॥ फलठदा फलठदो देखी तुम तणो जी, जुउं केही जुउं केही रीते कह्यु रूप हो॥ जाणु निश्चय जाणु निश्चय मलशे एहशु जी, पाणिग्रहण पाणिग्रहण जोग अनूप हो ॥ २४ ॥स्वा०॥ पाचमी कही पाचमी कही ढाल ए आठमे जी, खने रुनी खने रुनी समरादित्य रास हो ॥ गुरु उत्तम गुरु उत्तमविजय कृपा थकी जी, पद्मविजने पद्मविजये हर्ष उल्लास हो॥२५॥ स्वा०॥ १६९॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरी चिंते किहा थकी, मलवु एहशु मुज, मद जाग्य जे मानवी सुरमणि नवि होये सुज ॥ १ ॥ थनक फुरस्यु इणी समे, वामा कर नाम, तुष्टमान थइ ते तदा, कहे मुज सरीयु काम ॥ २ ॥ मात हुइ मथी मानिनी, करे श्रावश्यक कर्म्म, जोजन करी चित्त जागवु, हुता रहेती हर्म्म ॥ ३ ॥ पकडदो लइ पाणिमा, वदे श्रहो श्रग विन्यास नयन नेह श्रहो निरगमीये, श्रहो श्रहो सर्वे श्रन्यास ॥ ४ ॥ एम कइ वासर श्रतिक्रम्या, गुणचद पण एम ग्यान, करता दिवस केता गया, धरत परस्पर ध्यान ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठठी ॥

॥ सुरपति सेवित त्रिजुवन धणी ॥ ए देशी ॥

॥ जाणे मैत्रीवल नरवरु, परस्परे वात मनोहरु ॥ मन चिंतवे वा नूपाल, ए योग्य वात मुरसाल ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ योग्य वात रसाल जाणी, कुशल नर नृप मूकीया ॥ रत्नवती पण कुमर केरु, ध्यान कवहु न मूकीया ॥ २ ॥ राजकन्या उचित करणी, सर्व वामी तेणीए ॥ राति दिन उदवेग करती, शून्यता करी जेणीए ॥ ३ ॥ राय वगासा श्रवसरडे, श्रावी तिहा मदनमजुश्रा ॥ चिरजीव तु स्वामीनि हे, सहु मनोरथ सजुश्रा ॥ ४ ॥ जिम कयु मे तिम निपजु छे, वर तुमारो ए थशे ॥ करिसूत्र श्रापी सावलीने, कहे वात ए किम हशे ॥ ५ ॥ मह मयणमजुश्रा तुम कनेथी, गइ देवी पास ए ॥ वर चित्रमती रूपवती बिहुने, दीवा ताम सखास ए ॥ ६ ॥ मुज कहे राणी जाउ कुमरी, पास जावो दर्णी परे ॥ महाराय मैत्रीवल तनुज जे, कुमर गुणचद गुणगिरे ॥ ७ ॥ दीधी तुने छे प्रार्थनाथी, रत्नवती कहे ताम ए ॥ केम थय वढ एह वारे, मत्री कहे सुणो श्राम ए ॥ ८ ॥ राणी करे श्रारातीत तिणे, प्रजापति तुठो वयु ॥ तिणे जोग मिलो ए सुणीने, दीर्घ काल श्रायनु ॥ ९ ॥ परमोद वरथी चित्तवे सा, एहनी घरणी थइ ॥ एह सम्द सुणी मनोरह, श्रापदा सघली गइ ॥ १० ॥ देव गुरुने पूजा रची, दान दीये महाराय ए ॥ एम निलय करता करत कडक, दिवस हरखे जाय ए ॥ ११ ॥ श्रयोध्या पुरी मोकले इहा, विवाद श्र

ए नरपति ॥ एक मासे तेह पोहोती, जाणे अयोध्या नृपति ॥ १२ ॥ कारागधन करे मोचन, नगर शणगारे तथा ॥ पात्र नाचे दान देवे, जनमे नवि खूटे यथा ॥ १३ ॥ वाची पत्र भंडारमाथी, काढे आभूषण पणा ॥ घोटकशाला तिम शणगारे, रथ ध्वजा मंडित तणा ॥ १४ ॥ अन्न शुन्न जोवरावतु जलेरु, देव गुरु प्रणमे वली ॥ गीत मंगल वाजित्र सुणतो, वंदिजन निरुदावली ॥ १५ ॥ एम खंड आठमे ढाल छठी, समरादित्यने रास ए ॥ पद्मविजये कही रुमी, सुणता लीलविलास ए ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥ १९० ॥

॥ दोहो सोरठी ॥

॥ करिवर चढगो कुमार, सहसनयन परे शोहतो, दीपे तस दीदार, आदित्य अभिनव उपनो ॥ १ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ केसरीया चढो वर घोडे ॥ अथवा ॥ सासनपति वदन जइये ॥ ए देशी ॥

॥ उज्ज्वल करिवर बेठो शोहे, लोक तणा चितडा अति मोहे, चंद सूर काम रामके कोहे के ॥ १ ॥ केशरीए वागे विराजे ॥ वागे विराजे ने सूपशु छाजे के ॥ के० ॥ ए आंकणी ॥ मित्र विशालबुद्धि मुख जेह, चाले पूठे धरी ससनेह, जानणी मंगल गीत कहेह के ॥ २ ॥ के० ॥ नयररामा अभिनंदना करती, चोके चोके जोवे संचरती, गुणचंदना गुण गावे फिरती तो ॥ ३ ॥ के० ॥ आव्या तोरण मंडप माहि, उत्तरीआ करिवरथी उछाहि, सासु करे पुंखणाविधि त्याहि तो ॥ ४ ॥ के० ॥ दीठी चित्र तणे अनुहार, रत्नवतीनु रूप अपार, अधर विंबफल सम मनोहार तो ॥ ५ ॥ के० ॥ चक्रवाक युग ज्यु कुच राजे, विस्तीरण नीलपंज गाजे, मुख देखी शशधर पण लाजे तो ॥ ६ ॥ के० ॥ करपदतल शोणित सम राता, सर्व अंग गुण जगविख्याता, खूबपणा करे लोक विधाता तो ॥ ७ ॥ के० ॥ सर्व अंगे घणु देखण जोग चित्त वाली जुवे मुनिवर लोग, देखता जावे सघला शोग के ॥ ८ ॥ के० ॥ देखी हरख्यो चित्त मझार, पाणिग्रहण करे शुभ वार, मनडे नमीया हर्ष अपार के ॥ ९ ॥ के० ॥ दिनकर आथमीउं शशी उगो, लेइ वधू वासभवने पुगो, साथे वधूसखी परिहत रुगो के ॥ १० ॥ के० ॥ फाउ जोतो

रही सही सहु जाये, अग यंगे मली क्रीमा कराये, सुख ससार विलसाय के ॥ ११ ॥ के० ॥ सुख निद्रा करता गइ राति, परजाती, कमलनी ताम विकस्वर थात के ॥ १२ ॥ के० ॥ प्रात श्यक कीधा काम, चाख्या उद्यान जोवा अनिराम, क्रीमा करी निज गाम के ॥ १३ ॥ के० ॥ देवपूजा नोजन विधि सारी, नवती निज नारी, नोगवे सुख नर दु ख निवारी के ॥ १४ ॥ एम करता केइ दिन वही जाय, एक दिन हवे वलमैत्री राय, राय निज सेवक प्राय के ॥ १५ ॥ के० ॥ श्राण न माने ते निन सेना मोकली ताम उद्दाम, जींत्यो विग्रह करी सग्राम के ॥ १६ ॥ जाणी कोप्यो वलमैत्री नूप, स्वयमेव चढवा कीधी चूप, जाणु तेह स्वरुप के ॥ १७ ॥ के० ॥ सिंह उपर नवि गाजे शीयाल, श्याल समो नूपाल, कहे नृपने एम वयण रसाल के ॥ १८ ॥ तिणे तुमे तातजी द्यो मुऊ श्राण, जिम तुम कोप अगनिने पतग ते राय अजाण के ॥ १९ ॥ के० ॥ राय दीये तव लशकर कुमर कहे सानलो नरनाथ, दोनाणो विग्रह सहु साथ के ॥ २० ॥ जव लगे जींतु न एह नरींद, तव लगे तात पराजव वृंद, विषयसग सुखकद के ॥ २१ ॥ के० ॥ एम चिंती मूकी तिहा नारी लशकर कीधी असवारी, एक मासे पोहोतो अगधारी के ॥ २२ ॥ श्राव्यो कुमर विग्रह एम जाणी, गढ रूंहो करी बेठो ताणी, वींट्यो जिम द्वीपने पाणी के ॥ २३ ॥ के० ॥ निण सनलावे तास मार, विग्रह उपरे रोष अपार, एह चाकरनो स्यो ठे नार के ॥ के० ॥ वलीयो नाथ अठे निज पास, तिणे सहु सेना धरीश माड्यु जुऊ अजय सरास के ॥ २५ ॥ के० ॥ दुर्गवले ते नवि तोहि मानथी अधिक नराये, महा सग्राम करे चित्त लाय के ॥ के० ॥ जाणी कुमर हवे कहेवरावे, मत करो जुऊ तुमे इण दाव, हनो यल विना जय थावे के ॥ २७ ॥ के० ॥ जाणी असाध्य पेठो ट माहे, नींट्यो ए चोक फेर ए प्राहे, नासशे ए कहो कणे ॥ २८ ॥ के०॥ वाहाला प्राणथकी तमो राय, तेह निनाश सहनम ए पण नूपने सेवक गाय के ॥ २९ ॥ के० ॥ नीतिमा पहेली

खाणो, युद्ध करणनो नहीं एह टाणो, स्वामी सेवक संबंध पीछाणो के ॥ ३० ॥ के० ॥ अविनय नाशनो कीधो उपाय, तिणे पराक्रम एहशु नवि थाय, महारा नम तुमने देइ जाय के ॥ ३१ ॥ के० ॥ हवे मत करजो एहवु काम, तेह कहे जिम तुमे कहो स्वामि, तिमहीज करशु प्रभु शिर नामी के ॥ ३२ ॥ के० ॥ आठमे खंडे ए सातमी ढाल, पद्मविजय कहे पुण्य विशाल, साजलता होय मंगलमाल के ॥३३॥के०॥स०॥२७४॥

॥ दोहा ॥

॥ विशालबुद्धि नामे वली, इणी परे करे उपाय, राजपुत्रने रीझीशुं, वेहंची दीये बताय ॥ १ ॥ चोकी मूकी चिहु दिशे, रुधे आहार ने नीर, केइक दिन एम काढीआ, धरतो साहस धीर ॥ २ ॥ इण अवसर तिहां आवीओ, वाणमतर वन माहि, रहवासी रमतो कुमर, देखी उपनो दाह ॥ ३ ॥ अहो गुरुता एहनी, वीरयचत विशेष, मुझ सरिखो पण मारवा, अवसर न लहे अशेष ॥ ४ ॥ पण दुःख देवा पाधरो, ए अवसर छे आज, एम विचारी आवीयो, विग्रह पासे व्याज ॥ ५ ॥ प्रासाद तले बेठो प्रगट, विग्रह करे वखाण, किम आव्या पूछे कहो, वलती बोले वाणी ॥ ६ ॥ मलय जाता अमे मारीयु, दीठो विचमा दाव, गुणचंद वयरी मुझ घणो, तुझ पण तेह जमाव ॥ ७ ॥ उदय समाय न एहनो, साहाय्य करु तुझ साच, नयणे आज ए निरखीओ, मनमा तु हवे माच ॥ ८॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ तुमे तो भले बिराजो जी शखेशरके वासी साहिब भले बिराजो जी ॥ ए देशी ॥

॥ तुमे तो भले पधारथा जी, देवाशी कोइ दीसो ॥ तुमे तो भले पधारया जी ॥ ए आकणी ॥ एहवु जाणो साहाय्यज कीजे, तो करीये इम काम ॥ विग्रह कहे मुझ तिहां जइ मूको, गुणचंदनु जिहां ठाम ॥ १ ॥ तु० ॥ रयणी माहि करवु एहवु, वाणमतर कहे ताम ॥ ए तो आयत माहरे दीसे, जाशे जव दो जाम ॥ २ ॥ तु० ॥ चार जणाशु सज्ज थइने, विग्रह रहीयो जाम॥ विद्या परभावे पण जणने, लेइ चाल्यो धरी माम ॥ ३ ॥ तु० ॥ गुणचंद शय्या पासे मूक्या, दीठो ताम कुमार॥ गुणचंदने बोलावे एहवे, विग्रह धरी अहंकार ॥ ४ ॥ तु० ॥ मुझ साथे

॥ ढाल नवमी ॥

॥ साहेबजी ॥ श्रीविमलाचल नेटीए होजी ॥ ए देशी ॥

॥ कुअरजी ॥ एह नरतमा जाणीये होजी, मिथिला नयरी वि
रयात ॥ कुअरजी ॥ कु० ॥ विजयधर्म तिहा राजीयो होजी, राज
करु अवदात ॥ कु० ॥ १ ॥ कु० ॥ वात सोहामणी साजलो होजी ॥
ए आकणी ॥ कु० ॥ अम्र महीपी माहरे होजी, चन्द्रधर्मा नाहाली नारी
॥ कु० ॥ कु० ॥ किणहिक अपहरी तेहने होजी, स्त्रीरयण मन धारी॥
कु० ॥ २ ॥ कु० ॥ वात० ॥ कु० ॥ मन्त्रसाधनने कारणे होजी, मनशि
रूना काम ॥ कु० ॥ कु० ॥ विजयदेवीए मुज नासीयो होजी, सावली
मूर्छा हु पामी ॥ कु० ॥ ३ ॥ कु० ॥ कु० ॥ शीतल चदने सिचीया होनी,
कीधा वीजणे वाय ॥ कु० ॥ कु० ॥ चेतना लही डु खीयो घणु होजी,
देखी पण न शकु काय ॥ कु० ॥ ४ ॥ कु० ॥ कु० ॥ एम करता त्रण
दिन गया होजी, आव्यो चोथे दिन्न ॥ कु० ॥ कु० ॥ एक जटाध
मानवी होजी, तीव्र तपे परिखिन्न ॥ कु० ॥ ५ ॥ कु० ॥ कु० ॥ भूति
लगावी अगम होजी, मन्त्रसिद्ध कहे आय ॥ कु० ॥ कु० ॥ जे कान
तुमे आकुला होजी, नारी हरी मे राय ॥ कु० ॥ ६ ॥ कु० ॥ कु० ॥
मन्त्रसाधनने कारणे होजी, तेहनो एहनो जीत ॥ कु० ॥ कु० ॥ विण
नासे लेइ जायवी होजी, पण शीले सुपवित्त ॥ कु० ॥ ७ ॥ कु० ॥ कु०
॥ पीमा पण नही उपजे होजी, तिणे मत कर सताप ॥ राजनजी ॥
रा० ॥ मास वए मलशे सही होजी, कहीने अदश थयो आप ॥ कु०
॥ ८ ॥ कु० ॥ कु० ॥ मूर्छा लही पूरव परे होजी, चित्त वले कहु एम ॥
कु० ॥ कु० ॥ दीर्घ विरह किम सही शकु होजी, वो प्रतिवचन ते प्रम
॥ कु० ॥ ए ॥ कु० ॥ कु० ॥ मोहवशे जे जे कह्या होजी, ते ते करु आ
लाप ॥ कु० ॥ कु० ॥ राज्य तज्यु काय नवि गमे होजी, निशिदिन
करु विलाप ॥ कु० ॥ १० ॥ कु० ॥ कु० ॥ क्षण क्षणमा मूर्छा लहु होजी, डुख
सहु नरक समान ॥ कु० ॥ कु० ॥ पच मास किमे वही गया होनी,
पच पल्य उपमान ॥ कु० ॥ ११ ॥ कु० ॥ कु० ॥ एक दिन निण कारण
गयु होजी, माहारु डुख असराल ॥ कु० ॥ कु० ॥ अगोअग आणद
थयो होजी, चित्त प्रसन्न ते काल ॥ कु० ॥ १२ ॥ कु० ॥ कु० ॥ हु मुज

चित्तमा चिंतवु होजी, क्हो शु कारण हेव ॥ कु० ॥ कु० ॥ वधा
आवी तदा होजी, आव्या तिथकर देव ॥ कु० ॥ १३ ॥ कु० ॥ कु
रोम रोम हरस्यो घणु होजी, सांजली तेहनी वाणी ॥ कु० ॥ कु
ऊठी प्रभु सनमुख गयो होजी, सतोपी देइ दाण ॥ कु० ॥ १४ ॥ कु०
कु० ॥ वंदना करी नृप हृदयशु होजी, दीधी सहुने आण ॥ कु० ॥ कु
॥ हय गय रह सहु सज करो होजी, जिनवर वदन टाण ॥ कु० ॥ १५
कु० ॥ कु० ॥ नव भूषण पहेरो सहु होजी, शोजा करो सुर जेम
॥ कु० ॥ कु० ॥ समवसरण रचे देवता होजी, जाखु कायक तेम
॥ कु० ॥ १६ ॥ कु० ॥ कु० ॥ नयरीथी उत्तर दिशा होजी, नंदन वननो
वाय ॥ कु० ॥ कु० ॥ वायुकुमर जोजन लगे होजी, अपहरे तृण ससु-
दाय ॥ कु० ॥ १७ ॥ कु० ॥ कु० ॥ मेघकुमार तिहा वरसता होजी,
सुरजि शीतल नीर ॥ कु० ॥ कु० ॥ षटु सुर वरसे फूलने होजी,
वरणना रुचिर ॥ कु० ॥ १८ ॥ कु० ॥ कु० ॥ रयण प्राकार वेमाणीआ होजी,
बीजो कनक प्राकार ॥ कु० ॥ कु० ॥ ज्योतिषी सुर विरचे तिहा होजी,
ने त्रीजो गढ सार ॥ कु० ॥ १९ ॥ कु० ॥ कु० ॥ रजतनो जवनपति
करे होजी, हवे व्यंतर करे काम ॥ कु० ॥ कु० ॥ प्रत्येके तोरण ठवे
होजी, मध्ये अशोक अजिराम ॥ कु० ॥ २० ॥ कु० ॥ कु० ॥ भ्रमर से-
वाणा लोजशु होजी, कुसुमजरे नमी जाल ॥ कु० ॥ कु० ॥ रयणतिहा-
सण मानीआ होजी, पादपीठ सुविलास ॥ कु० ॥ २१ ॥ कु० ॥ कु० ॥
त्रण छत्र वर उजला होजी, मुकाफलनी जाल ॥ कु० ॥ कु० ॥ त्रिभुर-
ननाथ ते साहिबो होजी, विकसित कुंद ज्यु जाल ॥ कु० ॥ २२ ॥ कु०
॥ कु० ॥ कनकमय तोहामणो होजी, परने नाचतो नेह ॥ कु० ॥ कु०
॥ सिद्धचक्र ध्वज मोटको होजी, गगनचुंबन करे तेह ॥ कु० ॥ २३ ॥
कु० ॥ कु० ॥ चामर गगने चालता होजी, उज्ज्वल जिपी परे हंस ॥ कु० ॥
कु० ॥ देवडुंदुजि घन गाजती होजी, सहु जन करे परशंस ॥ कु०
२४ ॥ कु० ॥ कु० ॥ रविमंडल परे दीपतुं होजी, धरमचक्रपुर जास
कु० ॥ कु० ॥ जामंडल तेजे तपे होजी, ज्ञवनरटन तणि ज्ञान ॥ कु०
२५ ॥ कु० ॥ कु० ॥ विभुवन नायकनु रचे होजी, नमस्तर पम
॥ कु० ॥ कु० ॥ कनककमल पगला ठवे होजी, ते पग नव प्रति

॥ दोहा ॥

॥ जनपति एम जिनराजनी, स्तवना करी सनाह, प्रणमे गणधर मुनिपति, एम अणगार उछाह ॥ १ ॥ उचित थानके उपविशे, पृथ्वीपति परिवार, दीये प्रजुजी पण देशना, जवजयजजणहार ॥ २ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ हस्तिनागपुर वर जलो, जिहां पाँडु राजा सार रे ॥

॥ प्राणी जिनवाणी सुणो, तुमे बांमी मोहजजाल रे ॥ पामी नरजव दोहिलो, मत खोवो आलपपाल रे॥१॥ मत खोवो आलपपाल, फिरी फिरी दोहिलो जिनधर्म रे॥ जिनधर्मनो मर्म लही करी, जिण परे पामीयेशिवशर्म रे ॥ ए आंकणी ॥ जीव अनादि अनंत बे, कर्म संजुत्त परवाह रे॥ पावडु मीडं धर्मथी, सुखीडं सवि दर्शन राह रे ॥ २ ॥ सुखी० ॥ चारित्र श्रुत दोय जेदथी, धर्म परखीजे त्रण जेय रे ॥ एक कस ने बीजो बेदवो, ताप कनक परे परखेय रे ॥ ३ ॥ ताप० ॥ जिहां सावद्य निषेध बे, गत रागादिक जिहां ध्यान रे ॥ एह कसोटीए शुद्ध बे, जिम कनक कसोटीए वान रे॥ ४ ॥ जिम० ॥ सूदम बादर जीवनी, जिहां हिंसाना नहीं त्याग रे ॥ तेह अशुद्ध धर्म जाणीये, वली रागादिक नहीं त्याग रे ॥ ५ ॥ वली० ॥ जिहां संयम अप्रमत्तता, लीये आहारादिक निर्दोष शुद्ध रे ॥ बेद शुद्ध ते धर्म बे, इणी परे जांपे स्वयंबुद्ध रे ॥ ६ ॥ इणी० ॥ पंच सुमति त्रण गुप्ति जे, सदा काल पाले सविशुद्ध रे ॥ एहथी विपरीत जे होये, ते बेदथी धर्म अशुद्ध रे ॥ ७ ॥ ते बे० ॥ जोजन परघर जायवु, वली स्नानादिक वरे जेह रे ॥ तेह धर्म उवेदवा, जुक्ति नवि थापे तेह रे ॥ ८ ॥ जुक्ति० ॥ जीवादिक स्याद्वादथी, बंधादिक सद्भाव रे ॥ ते जुगते वली थापवु, ए शुद्ध धर्म बे ताव रे ॥ ९ ॥ ए शु० ॥ एह जुक्ति न खमी शके, ते ताप अशुद्ध विचार रे॥ तिणे नित्यानित्य जाणीये, जीव अस्तिनास्ति प्रकार रे ॥ १० ॥ जीव० ॥ धर्म अनेक एम जीवना, बरे सुख डुःख जव ने मोरक रे ॥ धर्म अनेक न मानीये, तो उबटा होये दोष रे॥ ११ ॥ तो उ० ॥ अस्तिस्वरूपे जाणीये, पररूपे नास्तिस्वजाव रे ॥ नहीं तो विशिष्ट अजावनी, सवि एकरूप होय जाव रे ॥ १२ ॥ सवि० ॥ नित्य एकांते जाणीये, तो किम

दु खक्षयने हेत रे ॥ अनुष्ठान करे लोक ए, सुख लेहेवाने संकेत रे ॥ १३ ॥ सुख० ॥ कहीये एकाते अनित्य जो, तो च्यवन अनंतर नाश रे ॥ जीव परिणामी अजावथी, केहने सुख दु खनी आश रे ॥ १४ ॥ केह० ॥ जेदाजेद एम जाणीये, तिम एक अनेक विचार रे ॥ स्याद्वाद रीते करी, उंजखो आतम निरधार रे ॥ १५ ॥ उंख० ॥ मिथ्यात्वादिक बंधना, हेतुए करी बांधे कर्म रे ॥ सम्यक्तादिक जावथी, क्षयकरी लहे शाश्वत शर्म रे ॥ १६ ॥ क्षय० ॥ जेदाजेद जीव ने तनु, रूपी ने अरूपी तेम रे ॥ कर्त्ता जोक्ता उजय ठे, वधादिक पण घटे एम रे ॥ १७ ॥ वधा० ॥ जीव शरीर पण जिन्न ठे, जे कारण ऽण जव पाप रे ॥ अन्य शरीरे आतमा, परजव जोगवे संताप रे ॥ १८ ॥ पर० ॥ अन्य करे अन्य जोगवे, ते तो न घटे सर्व प्रकार रे ॥ तेणे अजेद कोइ रीति ठे, एम जेदाजेद उदार रे ॥ १९ ॥ एम० ॥ बंध अनादि प्रवाहथी, कंचन पंकर सम तेह रे ॥ नहीं तो शुद्ध स्वरूपने, कर्म वलगे इष्ट न एह रे ॥ २० ॥ कर्म० ॥ तेहनो अंत पण जव्यने, होवे पुत्र पिता परे जाण रे ॥ कूकडी अंम परे वली, अजव्यने नित्य वखाण रे ॥ २१ ॥ अज० ॥ तास विनाश उपायने, सेवी क्रीया सिद्धि अनंत रे ॥ तेह तणो नवि अंत ठे, प्रध्वंस अजाव परे तंत रे ॥ २२ ॥ प्रध्व० ॥ तेह कारण जवि कीजीये, तेह कर्मविनाश उपाय रे ॥ समकित धुरे अंगीकरो, जिम सवि गुण थिरता थाय रे ॥ २३ ॥ जिम० ॥ देव गुरु ने धर्मनी, रुचि ते समकित कहेवाय रे ॥ वीतराग सर्वज्ञ जे, ते देवपणे ठहराय रे ॥ २४ ॥ ते दे० ॥ परिग्रह आरंज जिणे तज्या, ते तरण तारण समरठ रे ॥ उपगरण धर्मना जेह ठे ते चारित्ररक्षण अठ रे ॥ २५ ॥ ते चा० ॥ केवलीए जे जे जाखीयो, ते धर्म कहीजे सत रे ॥ ए समकित व्यवहारथी, निश्चय निज आतमतत रे ॥ २६ ॥ निश्च० ॥ एम समजी अंगीकरो, तुमे सफल करो अवतार रे ॥ देशना सांजली एणी परे, लही परपदा हर्ष अपार रे ॥ २७ ॥ लही० ॥ हाथ जोमी प्रणमी करी, कहे प्रजु तुम वचन प्रमाण रे ॥ तुम सम देशक को नहीं, घरे जावे इम करती वखाण रे ॥ २८ ॥ घरे० ॥ केइक समकित पामीआ, केइ देशविरति लहे सत्व रे ॥ सरूब संग ठांमी करी, केइ चारित्र लीने लही तत्व रे ॥ २९ ॥

उठयो धरी साहसपणु रे लो ॥ १९ ॥ हो सु० ॥ धनुष तीर लीये हाथ जो, कहे मत बीहे नारी तु एक शरे हणुं रे लो ॥ हो सु० ॥ श्रीमती बोले ताम जो, एहमा नहीं संदेह पराक्रम तुम तणु रे लो ॥ २० ॥ हो ॥ सु० ॥ पण गुरुवयण पलाय जो, गुरुए कह्यु प्राणात करे कोइ वध प्रते रे लो ॥ हो सु० ॥ ते समजो चित्त माहि जो, किम गुरुवयण वृथा करीये समरण ठते रे लो ॥ २१ ॥ हो सु० ॥ परजव वधुजूत जो, ते गुरु वयण रसायण करीने जाणीये रे लो ॥ हो सु० ॥ नारीने कहे एम विज जो, सत्य कह्यु ते वयण गुरु बहु मानीये रे लो ॥ २२ ॥ हो सु० ॥ तुज मोहे कह्यु एम जो, मूक्यु धनुष्य तीर मे गुरुवयणे रह्यो रे लो ॥ हो सु० ॥ इण अवसर ते सिंह जो, उठाली लागुलने ते सन्मुख थयो रे लो ॥ २३ ॥ हो सु० ॥ ते चिंत्यु मन माहि जो, गुरुआणा परिपाउप कशवटि ए खरो रे लो ॥ हो सु० ॥ उपगारी एह सिंह जो, एम चिंतन शुज करता आव्यो डुहकरो रे लो ॥ २४ ॥ हो सु० ॥ दंपती दोय वि नाश जो, कीधो रे उपसर्ग ते तुमे अहियासीआ रे लो ॥ हो सु० ॥ सोहम देवलोक माहि जो, दंपती उपना ऋद्धिवंत आवासीआ रे लो ॥ ॥ २५ ॥ हो सु० ॥ पल्योपम एक आय जो, नोगवता अग्यारमी ढाउ सोहामणी रे लो ॥ हो सु० ॥ आठमे सर्गे एह जो, पद्मविजय कहे वात सुणो आगे घणी रे लो ॥ २६ ॥ ३०६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जंबुद्वीपमा विहु जणा, अपर विदेह अनूप, नयर चक्रपुर निरखीये, नलो कुरुमृगाक नूप ॥ १ ॥ कामिनी बालचंदा कही, तस कूखे अवतार, समरमृगाक ठवे सुखे, नाम गुरु निरधार ॥ २ ॥ शालो नृपना सोहतो, सुजूपण शिरदार, कुंम्मती नारी रूपमा, तुज नारी अवतार ॥ ३ ॥ अशोक देवी एहनु, थाप्यु नाम थिर थाय, कला ग्रहण करता विहु, यौवन पाम्या जाय ॥ ४ ॥ तुम विवाह थयो विहु तणो, परणया दिन सुपसठ, सुख नोगवता स्वर्गना, जाणे काल न जठ ॥ ५ ॥ राग घणो स्त्री रमणने, एम करता एक दिन्न, पछि देखे पृथवीपति, परसंग प्रपन्न ॥ ६ ॥ राज्य देइ तुज राजीउं, देवीशु लीये दीक्ष, राज्य पाउ तु रगशु, सहु अरिने दीये शीख ॥ ७ ॥ माख्या निर्दय मन करी, वली नि

यंच विजोग, हवे विपाक सुण तेहना, सघला कटुक सयोग ॥ ८ ॥
॥ ढाल बारमी ॥
॥ पहेलीने वाडे होजी वीर जिनवर कहे ॥ ए देशी ॥
॥ तिणहीज विजये होजी गगा नयरीए, सिरिबल राजा रे राज्य करे तिहा जी ॥ तेहशु सहजे होजी विग्रह तुझ थयो, सुजट सनूरा रे गया सिरिबल जिहा जी ॥ १ ॥ तोपण तेहशु होजी सग्राम मारुीउं, शेष सैन्य पण तिणे मारुयु यदा जी ॥ तुझ पण मार्यो होजी काल करी तिहा, रौद्र ध्यानथी रे गयो नरगे तदा जी ॥ २ ॥ सत्तर सागर होजी आउखु ताहरु, ताहरी राणी रे मरण ते साजली जी ॥ मूर्छा पामी होजी चेतना वली लही, करे नियाणु रे इणी परे ते वली जी ॥ ३ ॥ जिहा मुझ स्वामी होजी होये उपना, तिहा मुझ होजो रे उपजवु खरु जी ॥ एम कही पेठी होजी बलती अग्निमा, क्लिष्ट चित्तथी रे कष्ट सहु आकरु जी ॥ ४ ॥ सत्तर सागर होजी आउखे उपनी, महा दुःख सहेता रे अनुक्रमे विहु जणा जी ॥ तिहाथी नीकली होजी पुष्करा अर्द्धमा, जरत क्षेत्रमा रे निरधन जे घणा जी ॥ ५ ॥ ते विहु उपना होजी जिन्न जिन्न घरे, विहु जण परण्या रे अनुक्रमे दपती जी ॥ आजीविकानु होजी दुःख तुमे अनुजवो, जिक्षाए आव्या रे एक दिन महा सती जी ॥ ६ ॥ देखी तेहने होजी सरधा वाधते, प्रासुक जिक्षा रे रोमाचित थइ जी ॥ आपीने पूछ्यु होजी किहा रहो गे तुमे, तव ते बोली रे मुख्य जे सजइ जी ॥ ७ ॥ वसु शेठ घरने होजी पासे उपाश्रे, नयरमा रहीये रे एम सुणी हरखीआ जी ॥ साफे लेइ होजी फुल तिहा गया, सुव्रता गणिणी रे नामे निरखीआ जी ॥ ८ ॥ पुस्तक साहामी होजी दृष्टि ठवी करी, तनु जस नाला रे जमर ते लोयणा जी ॥ सुवयण कमला होजी शोहे ज्यु कमलिनी, हरखे वद्या रे विस्मित दोय जणा जी ॥ ९ ॥ अग अग्यारे होजी जीजने टेरुवे, धर्मलाज दीधो रे कर उंचो करी जी ॥ प्रजुजी वदो होजी कुसुमवृष्टि करी, ससार सागर सुखे जाउं तरी जी ॥ १० ॥ एम सुणी जिनघर होजी वदी देहरे, गणिणी समीपे रे आवी उपविशे जी ॥ गणिणी पूछे होजी किहा तुम वास ठे, गोचरीआ कहे एहु तो इहा वसे जी ॥ ११ ॥ आमे गगा नो-

चरी होजी एह तणे घरे, श्रद्धावंत घणा छे सामिनी जी ॥ जके थाना होजी जिनवर वादवा, गणिणी वोख्या रे वात करी कामनी जी ॥१२॥ धर्म ते जगमा होजी शरण आधार छे, धर्मने मूकी रे दुःख टाळे नहीं जी ॥ इंद्रजाल सम होजी के सुपना समो, चल ने असार रे नरजन्म लही जी ॥ १३ ॥ धर्म करे नहीं होजी विषयनो लोलपी, जन्म वाली रे अगारा करे जी ॥ धर्मथी लहीये होजी शाश्वत सुख घणा, थोडे काले रे कह्यु इम जिनवरे जी ॥ १४ ॥ तिणे तुमे आव्या होजी ते रुडु कह्यु, जिन मुनि दरिसण अति पावन कह्यु जी ॥ एम तुम सांभली होजी शुद्ध हृदय थकी, मास ने मधुनु रे पचरकाण तुमे ग्रह्यु जी ॥ १५ ॥ उठवा वेला होजी गणिणीए कह्यु, नित्य नित्य आवजो रे सुणवा धर्मने जी ॥ दुःख सहु जाशे होजी तुमचा अगथी, वचन ते मान्यु रे जाणी मर्मने जी ॥ १६ ॥ घरे हवे आव्या होजी धर्म ते नित्य करो, अनुक्रमे तुमने रे शुद्ध श्रावकपणु जी ॥ विषय विमुखथी होजी पाली धर्मने, मरी ब्रह्मलोके रे लह्यु सुख सुर तणु जी ॥ १७ ॥ सात सागरनु होजी ऊकेरु आउखु, तिहांथी चवीने रे आव्या नृपघरे जी ॥ सवर जनममा होजी कर्म कर्या तुमे, दुःख तस नरगे रे सहीया परे जी ॥ १८ ॥ मनुजना जनमा होजी दुःख काय जोगव्या, उदय आव्यु रे शेष रह्यु तिके जी ॥ एम जाणीने होजी कर्म न कीजीये, तास उदयथी नर वीहे जिके जी ॥ १९ ॥ लोकनायनी होजी सांभळी जाणीने, परम सवेगे रे आतम भावीयो जी ॥ कहे जिनवरजी होजी धर्म भलो कह्यो, प्रभुजी पसाये रे वैराग आवीयो जी ॥ २० ॥ दीक्षा लेशु होजी प्रभुजी पाछले, जगगुरु बोले रे प्रतिबंध मत करो जी ॥ लीधी दीक्षा रे भुवन गुरु कने, एह वृत्तांत रे कह्यो मे माहरो जी ॥२१॥ कनकपुरे मे होजी ते तुमने कह्यो, सवेग उपन्यो रे साभळी वातडी जी ॥ गुणचंद्र चिंते होजी दुष्ट विपाक छे, धिग् धिग् कहीये रे मोहनी जातनी जी ॥ २२ ॥ आठमे खडे होजी ढाल ते बारमी, भाखी एम मे रे पद्मविजय कहे जी ॥ समरादित्यने होजी रासे सोहामणी, सुणता मगलमाल भवि लहे जी ॥ २३ ॥ ४१७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुणचंद कुमर कहे गुणी, अमने कस्यो उपगार, कहेता आप कथा तुमे, प्रगट उतास्या पार ॥ १ ॥ धर्म अमे धास्यो खरो, पामी तुम पसाय, मिथ्या विकल्प सवि मिट्या, अमने व्रत इछाय ॥ २ ॥ पण गिही धरम पसाय करी, विग्रह कहे तव वाणी, महेर करी तुमे मुझने, आपो अनुवृत्त जाणी ॥ ३ ॥ विधिए श्रावकव्रत लीआ, वद्या गुरु वहु मान, गुरु धर्मवाज्ञ देइ गदे, सुण तु वात सयान ॥ ४ ॥ आव्या अवसर उंलखी, अमे तुझ बोधन आज, रत्नपुरीथी राजीआ, कहे सीधु अम काज ॥ ५ ॥ पातु तिहा जइ पोहोचवु, मुनिवर तिहा वहु मुझ, वाट जोता होशे वली, तिणे साजल कहु तुझ ॥ ६ ॥ अयोध्यामा अम तणुं, मलवु थशे कुमार, दृढव्रत होजे दाखवी, अद्भुत हवे अणगार ॥ ७ ॥ सहु साधुशु सचस्या, गगनपथ गुरुराय, वदे कुमर विग्रह विहु, अनुक्रमे अदृश थाय ॥ ८ ॥ हवे अयोध्या हर्पेशु, चाल्या चतुर विचारी, वाणमतरनी वातनो, पभणु हवे प्रकार ॥ ९ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ हु वारी रग ढोलना ॥ ए देशी ॥

॥ तेहज दिवसे तिहा गयो हो राज, वाणमतर खग जेह रे ॥ उनावे एहवी वातडी ॥ कुमरना परिजन आगले हो राज, कूड प्रपच करे तेह रे ॥ १ ॥ उ० ॥ विग्रह राये मारीयो हो राज, सग्रामे गुणचद रे ॥ उ० ॥ श्रवण परपरा सानले हो राज, मैत्रीबल जे नरींद रे ॥२॥ उ० ॥ नरपति ते नवि सरदहे हो राज, रत्नवती सुणे जाम रे ॥ उ० ॥ मूर्छा लही धरणी ढली हो राज, आश्वासे परिजन ताम रे ॥ ३ ॥ उ० राय सुणी तिहा आवीउं हो राज, नयणे नीर न माय रे ॥ उ० ॥ रत्नवती चरणे नमी हो राज, कहे सुणीये महाराज रे ॥ ४ ॥ उ० ॥ हु मदभाग्य शिरोमणि हो राज, पेसुं अग्नि मझार रे ॥ उ० ॥ आणा द्यो जीवित तजु हो राज, गयो मुझ प्राणआधार रे ॥ ५ ॥ उ० ॥ प्राण निठोर हजी रह्या हो राज, द्यो आणा मुझ आज रे ॥ उ० ॥ सुरलोके सगम होये हो राज, आर्यपुत्रशु काज रे ॥ ६ ॥ उ० ॥ शोहागण सुणी वातडी हो राज, नृप कहे म करो शोक रे ॥ उ० ॥ सनव नहीं

एह वातनो हो राज, माने कोइ न लोक रे ॥ ७ ॥ उ० ॥ सिहने मारे शी आलीयो हो राज, एह मनाये केम रे ॥ उ० ॥ सिद्धादेशे राज, पुत्रजनम एम नेम रे ॥ ८ ॥ उ० ॥ वचन अलीक न तेहतु ह राज, नहीं मुफ आकुल चित्त रे ॥ उ० ॥ स्वप्न दीतु में सोहामणु हा राज, अविधवा तुफ दित्त रे ॥ ए ॥ उ० ॥ जनमातर कोइ वेरीप हा राज, कूम कपट कस्यु एह रे ॥ उ० ॥ तिणे ए वात न कीनी रे हा राज, जिण वाते जाये गेह रे ॥ १० ॥ उ० ॥ देवनी वात अचिंत्य छ हा राज, वात होशे एह साच रे ॥ उ० ॥ तो अमे पण किम जीवशु हो राज, मान तु साची वाच रे ॥ ११ ॥ उ० ॥ पवनगति काशिद प्रते हो राज सोकलायो वे आज रे ॥ उ० ॥ पाच दिवसमा आवशे हो राज, पछ तुम करेशु काज रे ॥ १२ ॥ उ० ॥ तिणे मत था उतावली हो राज, मन इ रजे सताप रे ॥ उ० ॥ रत्नवती कहे तातजी हो राज, जिम तुम्ह होय वाप रे ॥ १३ ॥ उ० ॥ पण जो तुम आणा होये हो राज, तो द्य निल दान रे ॥ उ० ॥ शातिकर्म वली तिम करुं हो राज, देवपूजा ब मान रे ॥ १४ ॥ उ० ॥ कुशल वात आर्यपुत्रनी हो राज, साजलीए त्य सीम रे ॥ उ० ॥ माहरु मन वे एहवु हो राज, आहार तणा नीम रे ॥ १५ ॥ उ० ॥ राय कहे करीये सुखे हो राज, एहमा कोइ दोप रे ॥ उ० ॥ रत्नवती हवे तिम करे हो राज, धर्म तणो वर पोष ॥ १६ ॥ उ० ॥ नृपति निज थानक गयो हो राज, सा गइ पूजनहे ॥ उ० ॥ इणे अवसर तिणे निरखीआ हो राज, पूरव पुण्य सकेत रे ॥ १७ ॥ सजमवती साधवी ॥ ए आकणी ॥ विचार भूमिथी आवता हो राज, नहीं कोइ चित्त विकार रे ॥ स० ॥ ज्ञानी तपसी उपशमी हो राज सुदर अग आकार रे ॥ १८ ॥ स० ॥ जावना जावे परिणम्या हो राज साहुणीने परिवार रे ॥ स० ॥ श्वेताविका नृपनी धूआ हो राज, का नृपनी नारी रे ॥ १९ ॥ स० ॥ चरणसीरीए विग्रह धस्यु हो राज, सगता जस नाम रे ॥ स० ॥ देखता रत्नवती तणो हो राज, नाठो उद्दाम रे ॥ २० ॥ स० ॥ मनमा आणद उपनो हो राज, आतमवीर ल्लास रे ॥ स० ॥ चिंतवे अहो जगवती तणो हो राज, रूप ने उदास रे ॥ २१ ॥ स० ॥ अहो कुशलता एहनी हो राज, कृतारथ अहो

ह रे ॥ स० ॥ मुजने दरिसण ए थयु हो राज, धन्य थइ मुज देह रे ॥ ॥ २२ ॥ दरिसण मात्रे जेहना हो राज, पापपमल जाये दूर रे ॥ स० ॥ साधवी पासे ते गइ हो राज, शुभ ध्याने सपूर रे ॥ २३ ॥ स० ॥ विनयी गणिणी वांदीया हो राज, धर्मलाज दीयो ताम रे ॥ स० ॥ फरी वांदीने बोलती हो राज, विनति सुणो एक श्राम रे॥ २४ ॥ स० ॥ दुःखी जन वत्सल छो तुमे हो राज, कीजे एक पसाय रे ॥ स० ॥ मुज घर आवो स्वामिनी हो राज, जो न विरोध कोइ थाय रे ॥ २५ ॥ स० ॥ दुःख उपशम कायक थयो हो राज, तुम दरिसणथी आज रे ॥ स० ॥ सजलावो मुज धर्मने हो राज, जिम होवे मुज काज रे ॥ २६ ॥ स० ॥ धर्मशीला सुण वातनी हो राज, एहमा काय न विरोध रे ॥ स० ॥ गुरुणी कहे अमे आवशु हो राज, जेहथी होय तुम बोध रे ॥ २७ ॥ स० ॥ कोइने अप्रीति न उपजे हो राज, रत्नवती कहे ताम रे ॥ स० ॥ धर्मी मुज गुरुजन अछे हो राज, नहीं कोइ अप्रीतिठाम रे ॥ २८ ॥ स० ॥ गणिणी कहे तो आवशु हो राज, सा कहे कीध पसाय रे ॥ स० ॥ चाल्या सहु साथे हवे हो राज, रतनवती घर जाय रे ॥ २९ ॥ स० ॥ आठमे खंडे ए कही हो राज, तेरमी ढाल रसाल रे ॥ स० ॥ पद्मविजय कहे साजलो हो राज, सुणता मंगलमाल रे ॥ ३० ॥ स० ॥ ४५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विनय करी विधिशु वली, उत्तम आसन आपी, अलवे आगल उपविशे, सुणवाने सलाप ॥ १ ॥ परिवार पण बेठो पछे, सुणवा धर्म संकेत, ज्ञानी तव गुरुणी कहे, हवे करवा तस हेत ॥ २ ॥ ए संसार असारमा, जनम महा दुःखखाण, जरा वली जीरण करे, मरण दुःख असमाण ॥ ३ ॥ मोह विषय ने मान तिम, मत्सर क्रोध ने माय, लोभ सायर खल दुःख दीये, इंद्रिय विषय उजाय ॥ ४ ॥ सुखीयो नहीं संसारमा, परमारथनी पेख, मुनिवर मूकी मानिनी, दक्षपणे तु देख ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ सुंदर ॥ पापथानक तजो सोलमु ॥ ए देशी ॥

॥ सुंदर ॥ रोगी जिम वरवैद्यने, करीय गवेषणा सार हो ॥ सु० ॥ निज दुःख तास निवेदीने, करे तेहनो उपचार हो ॥ १ ॥ सुंदर ॥ ध-

ए थानक ते कह्यो, अलीक न एह्मा अथ ॥ २ ॥ सऊकतार ए सा धुजी, पछिम दिश तुम पथ, अथवा देखाडु अमे, एह्मा अलीक न अथ ॥ ३ ॥ मार्ग देखाडे मानिनी, चिंते विस्मित चित्त, अहो अणगार अमत्सरी, प्रियचारी सुपवित्त ॥ ४ ॥ सग करे एह साधुनो, तेहनो धन्य अवतार, शुन परिणामे एम सयल, कर्म खप्या एक तार ॥ ५ ॥ धर्मलाज सुणी धर्मिणी, प्रणमी मुनिवर पाय, आरज परिग्रह तस अ लप, मार्दव वली अमाय ॥ ६ ॥ ते कारण बांध्यु तिहां, मनुज आयु महाजाग, विहार कस्यो तिहां मुनिवरे, मुनिवर एहज माग ॥ ७ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ आज आणद थयो, प्रेमना वादल वरस्या दारू सोहेला ॥ ए देशी ॥

॥ आज आनद थयो, मुनिवर दरिसण दीवु धन्य दिन आजनो ॥ ए आकणी ॥ मुनिवर निरख्या पण नारी तणो, शुज जाव न हूदो नेह घणो ॥ आ० ॥ श्वेतांबिका नयरीराय तणे, लही मरणने उपनी पुत्री पणे ॥ १ ॥ आ० ॥ कोशला नयरी नृपे परणी, यौवन वय आवी तस करणी ॥ आ० ॥ ते कर्म रह्यु जे तुऊ शेप, जऊणी तस कारण सुवि शेप ॥ २ ॥ आ० ॥ तुऊ रूपे करीने नृप वलीउं, तुऊ कर्मशेप जे रह्यो वलीउं ॥ आ० ॥ तस उदये कदर्थना बहु पामी, परिव्राजिका लाव्यारी स्वामी ॥ ३ ॥ आ० ॥ इम सांजली मोहतिमिर गयो, तव जातिसम रण मुऊ थयो ॥ आ० ॥ संवेगथी गुरु प्रणमी कहु, कव एह कर्मज अंत लहु ॥ ४ ॥ आ० ॥ गुरु कहे ए एकज अहोरात, तव पूछ्यु म वली सुप्रजाते ॥ आ० ॥ नृप जऊणी कह्यो जाणशे क्यारे, वलतु गुरुनी बोल्या त्यारे ॥ ५ ॥ आ० ॥ राते जव जऊणी पासे, नरपति जाशे अति उल्लास ॥ आ० ॥ पण तुऊ स्वजावथी फेरफार, देखी शंकाशे सुविचार ॥ ६ ॥ आ० ॥ मंत्रीश्वरने ते कहे वात, तव परीक्षा करवा अवदात ॥ आ० ॥ देवघरे जिन प्रतिमा जाम, जऊणीनु कपट लह्यु ताम ॥ ७ ॥ आ० ॥ मार मार करे लेइ करवाल, अदृश्य जऊणी थइ ततकाल ॥ आ० ॥ पछे नृप करशे पश्चात्ताप, अहो राणी कदर्थी में आप ॥ ८ ॥ आ० ॥ म रह्यु जगवन् नहीं नृपदोष, ए कर्म कस्या तेहनो रोष ॥ आ० ॥ गुरु कहे

साधु पण मोहवशे, आवशे इहां विहाणुं वाय तिसे ॥ ए ॥ आ० ॥ तुफ देखी तुऊशुं सुखी होशे, ते पण सहुए नयणे जोशे ॥ आ० ॥ तिणे मत करजे मन संताप, मैं कह्युं प्रजु गया माहारा पाप ॥ १० ॥ आ० ॥ तुम दरिसणथी जवजय टलीयो, संयोग वियोग थकी मलीयो ॥ आ० ॥ नृप आवे पण मुऊ नहीं रंग, जरा मरण पीम्नित किम सुखसंग ॥ ११ ॥ आ० ॥ गुरु कहे अत्यंत सुखी कहीये, नवि लोक नीतिनु ए वहीये ॥ आ० ॥ जरा मरण दोष जेहथी जाशे, वीतराग वचन तुम थिर थाशे ॥ १२ ॥ आ० ॥ तिणे तत्त्वथी लहेशो सुखशात, एम कही रह्या जव गुरु विख्यात ॥ आ० ॥ में जाण्युं धन्य नरपति एह, गुरु कहे साजल तुं ससनेह ॥ १३ ॥ आ० ॥ पंच परमेष्ठीनो नवकार, ते परम मंत्र चित्तमां धार ॥ आ० ॥ सवि जव टाले शिवसुख आपे, गुणगण आवी अंगे व्यापे ॥ १४ ॥ आ० ॥ तव में कह्युं किरपा करो सारी, हुं जाउं तुमची बलिहारी ॥ आ० ॥ पूरव साहामी मुऊ वाम दिशे, गुरु कहे तुं रहे शोजन वेशे ॥ १५ ॥ आ० ॥ हुं विनये नमती एमज रही, जिनवर संजारे गुरुजी सही ॥ आ० ॥ अखवितादिक गुणशुं दीधो, उपयोगे में अंगी कीधो ॥ १६ ॥ आ० ॥ मुऊ जय जाणुं सवि दूर गयो, मानुं मोक्ष ते मुऊ सनमुख थयो ॥ आ० ॥ राति काढजे ए समरण करता, गिरिदरीमां एक पासे रहेता ॥ १७ ॥ आ० ॥ मत धरजे जय मनमां काय, हवे अम दरिसण विहाणे थाय ॥ आ० ॥ एम कही गुरु पोहोता निज गाम, हुं हरखी उपनो विश्राम ॥ १८ ॥ आ० ॥ रयणी गइ एक पलक परे, नृप खोलतो आव्यो परपरे ॥ आ० ॥ कहे कोप न करशो रे राणी, अपराध करेशो न अन्नाणी ॥ १९ ॥ आ० ॥ में कह्युं तव कोप समय नाहि, पूर्वकृत शेष करम आहि ॥ आ० ॥ नृप कहे हुं निमित्त थयो ताहारो, में जारयो कर्मविपाक माहारो ॥ २० ॥ आ० ॥ बहु जव जोगवीउ बहु रीत, तिहां तो तुमे नाहि निमित्त ॥ आ० ॥ तिणे सर्वथा मुऊ कर्मनो दोष, इहां करवो नहीं कोइशुं रोष ॥ २१ ॥ आ०॥ नृप कहे सामान्ये हुं जाणुं, तुऊ नाण विशेष हुं परमाणुं ॥ आ० ॥ तव धुरथी कही में सवि वात, नृप विस्मय पाम्यो सुविख्यात ॥ २२ ॥ आ० ॥ गुरुजी किहां ठे ते देखावो, में कह्युं पासे ठे तुमे

हवे विहु जण सांजले रे, देशना नित्य तिहां ॥ जाय धर्म आराधता रे, कोइक काल इहां ॥ १३ ॥ रत्नवतीने उपनो रे, सुत एक सोजागी॥ राजे ठवे राजा रे, गुणचंद नडजागी ॥ मैत्रीबल राजा रे, के दीक्षा आदरे॥ धर्मथी सहु सामंत रे, आणा रायनी धरे ॥ १४ ॥ गु० ॥ निष्कंटक पाले रे, अलंकृत राज्य गुणे ॥ त्रण वर्गने साधे रे, अन्योन्य अबाधपणे॥ सहु जन सुप्रशंसे रे, के देव गुरु सेवे ॥ एम राज्य पालता रे, के दान अतुल देवे ॥ १५ ॥ गु० ॥ एणे अवसरे आव्यो रे, के जलदकाल रुडो ॥ इस नाग फूरे रे, विरहीने अति कूडो ॥ मोरका तिहां नाचे रे, के गरजारव थाय ॥ हररया वप्पइया रे, के विजली चमकाय॥ १६ ॥ गु० ॥ दादुर बहु वोले रे, के पृथिवी नीर वहे ॥ नदीउं थइ माती रे, सरोवर लहेर वहे॥ वगलानी पंक्ति रे, पंथी घर चाल्या ॥ महिषी ने गायो रे, के टाढक वही माहाल्या ॥ १७ ॥ गु० ॥ सरितापूर जोवा रे, नीकलीयो राजा ॥ निज परिवार साथे रे, अवलवेश ताजा ॥ तृण काष्ठ तणाणा रे, के सरितामां आवे ॥ कलुषित वहु पाणी रे, के कांठे नवि मावे ॥ ॥ १८ ॥ गु० ॥ बिहु तट तिहां पाडे रे, लहे विस्तार घणो ॥ आराम विनाशे रे, पार न पूर तणो ॥ जलचर बहु दीसे रे, के जमरी जल खावे ॥ मरजादा मूकी रे, के वालने वीहावे ॥ १९ ॥ गु० ॥ एम देखी तमासो रे, के आव्या निज गेह ॥ ढाल आठमे खंडे रे, के अढारमी एह ॥ गुरु उत्तमविजयनो रे, के पद्मविजय शिश॥ सांजलजो श्रोता रे, के सुणता सुजगीश ॥ २० ॥ गु० ॥ सर्व गाथा ॥ ६०८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ केइक दिन वली व्यतिक्रम्या, शरद समय सनाली, अश्ववाहनी आवीयो, नृप ते सरिता जाली ॥ १ ॥ मूल स्वजावे निरमली, पूर न चलचर कोय, बुधजन सेवित ते वहु, साजलु देखी सोय ॥ २ ॥ संवेग नृप सवरी, चित्तमा करे विचार, ऋद्धि आडंबर नवि रहे, करे निज पर अपकार ॥ ३ ॥ नदीदृष्टांते निरखीये, पुरुषनो एह प्रकार, जोवन तट पाडे नवी, आतम मलिन अपार ॥ ४ ॥ वली आरंज परिग्रह वधे, करे उन्माद कल्लोल, चरण धर्म वामी चले, तजे कुल सीम अतोल ॥ ॥ ५ ॥ मोह तणी जमरी महा, परमारथ अणपामी, अबुद्ध लोक घणु

अभयने, देखी अद्भुत ठाम ॥ ६ ॥ सरिता परे स्वजावथी, अलगी जाये उपाधि, अनुक्रमे तारी आतमा, अनुजवे अव्याबाध ॥ ७ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ जूल्यो मन जमरा रे काइ जमे ॥ ए देशी ॥

॥ आप स्वजाव माहि रमे, आवे जो रे विवेक ॥ पाप मित्रने परिहरे शुन परिणामनी टेक ॥ १ ॥ गुणचंद राय संवेगीउं ॥ ए आकणी ॥ अध्यवसाय जला होवे, अर्थ अनर्थनो कार ॥ अंतराय परलोकनो, मिथ्याजिमान विस्तार ॥ २ ॥ गु० ॥ क्लेश होय जेहथी घणो, ज्ञाननी परिणति नाश ॥ कपट करे वली आकरु, लोजथी सर्व विनाश ॥ ३ ॥ ॥ गु० ॥ कर्मादान व्यापारने, सेवे पाप अनेक ॥ कुशल जोग जाये वेगलो, पापमति अतिरेक ॥ ४ ॥ गु० ॥ द्रव्य उपगार छे यद्यपि, पण अल्प कालिक एह ॥ परपीमा होवे घणी, किम आदरीये तेह ॥ ५ ॥ ॥ गु० ॥ द्रव्य जाव उपकारमा, जाव ते जाणो प्रधान ॥ एम चिंतवता वाधीउं, शुज परिणाम निदान ॥ ६ ॥ गु० ॥ आवी मंदिर नरपति, सजावे तेह वात ॥ रत्नवती मंत्री प्रत्ये, वोले ते अवदात ॥ ७ ॥ गु० ॥ जिम जास्यु तुमे स्वामीजी, कीजे इच्छित काज ॥ काउक्षेप इहां नवि घटे, चंचल जीवित राज ॥ ८ ॥ गु० ॥ जाये धर्ममा जे घमी, तेह प्रशंसवा लाग ॥ सानंदी उद्घोषणा करी, देतो दान अथाग ॥ ९ ॥ गु० ॥ सर्व देहरे विरचावतो, पूजा अनेक प्रकार ॥ ज्ञाता कल्पसूत्रे कही, रायपसेणी मझार ॥ १० ॥ गु० ॥ जीवाजिगम माहे वली, पूजा कहे जिनराय ॥ तेह उवेखे जे प्राणीआ, मूढा दुर्गति जाय ॥ ११ ॥ गु० ॥ धृतिबल पुत्र राज्ये ठवी, सहुने देइ सन्मान ॥ नगर गुरुनी कढावतो, जाणी तेहनु थान ॥ १२ ॥ गु० ॥ रतनवती साथे लेइ, सामंत ने परधान ॥ चाल्या काशीदेशमा, संयमनु धरी ध्यान ॥ १३ ॥ गु० ॥ वाणारसी नयरी वसे, विजयधर्म सूरिराय ॥ धर्मलाज सूरीसर दीये, नर वंदया गुरुपाय ॥ १४ ॥ गु० ॥ पूछ्या पछी संयम कहे, आगम कारण सार ॥ वाणारसीपति बहु करे, द्रव्य थकी उपचार ॥ १५ ॥ गु० ॥ सद साथे महामहोत्सवे, वधते शुज परिणाम ॥ संजम लेवे नरवरु, [illegible]ध्यान ॥ १६ ॥ गु० ॥ सूत्र [illegible] क्रिया अन्यसी,

एकल विहार अंगीकस्यो, पूछ्या श्रीगुरुराय ॥ १७ ॥ गु० ॥ आण जब गुरुजी करे, तव सूत्रादिक जेह ॥ तुलना पच प्रकारनी, करे पूर्वे कही तेह ॥ १८ ॥ गु० ॥ यत "मुत्तेण अत्तेण ॥ इत्यादि तथा पढमा उवस्स यमी, बीया बाहि तईया चउक्कमी ॥ सुन्नघरमी चउत्थी, तह पचमीय मसाणमी ॥ १ ॥" एणी परे सत्व तोली करी, एकलमल्ल विहार ॥ सूत्रविधे अगीकरे, पाले निरतिचार ॥ १९ ॥ गु० ॥ काल गयो एम कटलो, एक दिन करत विहार ॥ कोल्लाग सन्निवेशे गया, रहीया एकात गार ॥ २० ॥ गु० ॥ काउस्सग्ग करीने रह्या, आठमे सर्गे ढाल ॥ उंगणीशमी पदमे कही, सुणता मंगलमाल ॥ २१ ॥ गु० ॥ सर्व ॥ ६३२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मलय जता वाणमतरो, मलीया मुनि माहत, कोप चढ्यो चित कलकल्यो, चित्तमा एम चिंतत ॥ १ ॥ पापी दीठो पापथी, कपट कर जुर्ड केम, मूकु शिला इहा मोटकी, तुरत मरे ए तेम ॥ २ ॥ मारे एहने माहरु, सफल नियाकुल सार, रौद्रध्याने अति रोपथी, वतित कर विकार ॥ ३ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ नरमी वाडे निवास्यो रे, साधुजी शणगार ॥ ए देशी ॥

॥पासे पर्वतथी शिला रे, नियानजथी रे लीध ॥ मूकि गगनथी मुनि शिरे रे, पीडा अतिशय कीध ॥ १ ॥ पण नवि नागथी पीडीया रे, जोव खेचर तेह ॥ जीवता देखी कोपीयो रे, चितवे अहो जुर्ड एह ॥ २ ॥ जीवनशक्ति अहो घणी रे, अहो परनव पक्षपात ॥ अवज्ञा मुक उपरे रे, एहनी अपूरव वात ॥ ३ ॥ मूकी मोहोटी शिला वली रे, तेहथी पीडी रे काय ॥ पण नवि नाव पीडाइर्ड रे, देखी क्रोध भराय ॥ ४ ॥ त्रीजी वार तुरत निणे रे, मूकी एक महत ॥ पण तिमहीन देखी फरी रे, अतिशय खेद लहत ॥ ५ ॥ चितवे मारी नवि शकु रे, करु धर्ममा अतराय ॥ कोइकनु घर मूपीने रे, मूकु एहने रे पाय ॥ ६ ॥ लोकने कहु महापापीयो रे, जुर्ड केहवा करे काम ॥ लोक ते करशे कदर्थना रे, आपदा लहेशे रे ताम ॥७॥ जिम चिंतव्यु तिमहीज कस्यु रे, सजलारे कोटवाल ॥ आव्यो तलार दीठा मुनि रे, परम दयाल मयाल ॥ ८ ॥ तपशोपित तनु

एहनु रे, दीसे मूरति शांत ॥ चित्त आकुल नहीं एहनु रे, जोगरहित एकांत ॥ ९ ॥ ए केम करशे एहवु रे, अथवा कपट विचित्त ॥ करु परीक्षा एहनी रे, यद्यपि दीसे पवित्त ॥ १० ॥ जाम निकुंजे निहाळीयु रे, उपनी शंका रे ताम ॥ पूछ्यु पण नवि बोलीआ रे, तर्जना करता प्रकाम ॥ ११ ॥ तोपण नवि बोले यदा रे, तव खेचर हरखंत ॥ अध्यवसायनी क्रूरता रे, नरक आयु बंधंत ॥ १२ ॥ रौद्रध्याने निकाचीयु रे, हवे चिंतवे कोटवाल ॥ कहीये नृपने जे गमे रे, तेह करो नरपाल ॥ १३ ॥ सजावव्यु भूपालने रे, आव्यो विश्वसेन राय ॥ दीठा तव तेणे उलख्या रे, प्रणम्या जक्ते रे पाय ॥ १४ ॥ पूछे कोटवालने तुमे रे, कीधुं छे प्रतिकूल ॥ ते कहे तेहवु काय नहीं रे, तव नृप कहे अनुकूल ॥ १५ ॥ राजऋषि ए अम तणा रे, स्वामी गुणचंद राय ॥ निरुपसर्ग भूपालने रे, नरजव सफल कराय ॥ १६ ॥ सयल संग त्यागी गुरु रे, वरते छे एह ध्यान ॥ अप्रतिबंधपणे रहे रे, कीधा छे अनुष्ठान ॥ १७ ॥ एकल विहार अंगीकर्यो रे, बोल्यो ताम तलार ॥ धन्य धन्य करी स्वामीउ रे, नृप कहे स्यो ए विचार ॥ १८ ॥ कोटवाल कहे जिणे कह्यु रे, ते नर छे इण ठार ॥ नृप कहे किहां छे दाखवो रे, अदृश्य थयो तेणी वार ॥ १९ ॥ न जड्यो तव भूपति जणे रे, कोइक उपसर्गकार ॥ सुर खेचर होशे सही रे, दुष्ट तणो ए प्रकार ॥ २० ॥ कह्यो अंतेउरने तुमे रे, जनपदने सुविशेष ॥ आव्या स्वामी तुम तणा रे, गुणचंद जेह नरेश ॥ २१ ॥ धर्ममूर्त्ति धरी आवीउ रे, दीठे पाप पलाय ॥ शिवसुख कारण स्वामीजी रे, निःसंगी मुनिराय ॥ २२ ॥ विजव जक्ति शक्ति घणी रे, वंदो निज उपगार ॥ कोटवाले जणव्यु सवे रे, सहुने हर्ष अपार ॥ २३ ॥ आवी सहुए वंदीआ रे, पूजा करी विस्तार ॥ गुणस्तवना वली वली करे रे, दरिसण विस्तरकार ॥ २४ ॥ आठमे खंडे ए कही रे, समरादित्यने रास ॥ पद्मविजय ए वीशमी रे, सुणता लीलविलास ॥ २५ ॥ सर्व ॥ ६६४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आव्यो कवाली इण समे, सुणो कहे वात सरूप, ए अणगारने उपरे, नाखी शिला अनूप ॥ १ ॥ आवी मार्ग आकाशथी, नवि दीठो नयणेण, नवि नाठा ने नवि चढ्या, कोण जाणे क्लु केण ॥ २ ॥ तस

निर्घाते त्रासीयो, मूर्छा लह्यो महाराय, आगल नवि जाणु अन्न, कीधु मुनिने काय ॥ ३ ॥ एह शिलाकुग अपर जे, ते पण नाखी तेण, महापापी विण मानवी, जुर्जने न करे जेण ॥ ४ ॥ गाढा तुर थया साजली, राणी पुरजन राय, अहो अहो ऋषिरायने, पुष्ट महा फुखदाय ॥ ५ ॥ अहो क्लिष्टकर्मा अहो, अहो अलौकिक एह, अहो निर्दयता एहनी, नहीं विवेक ने नेह ॥ ६ ॥ अहो गुणद्वेषी आ करो, मुनिवर महाव्रतवत, अज्ञानीशु न आचरे, मोहे सहु मुकत ॥ ७ ॥ पृथिवीपति एम विलपतो, जाणी मुनिवर जाण, पूरे ध्याने पारीया, काउस्सग्ग एम कहे नाण ॥ ८ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ जरत नृप जावशु ॥ ए देशी ॥

॥ मुनिवर कहे सुणो राजीआ ए, कीधा कर्म न जाय, आपोआप जोगवे ए ॥ एह अल्प फुख राय ॥ १ ॥ नमो मुनिरायने ए, धन धन एहनी माय ॥ नमो० ॥ ए आकणी ॥ एह अनादि ससारमा ए, कर्म सतान अनादि, फुखे व्यापी रह्यो ए ॥ निज गुण रुद्धि आगारी ॥ २ ॥ नमो० ॥ जन्म जरा मरणे जर्यो ए, दीनता इष्ट विजोग, शोग बहु उपजे ए ॥ वली तनुमा अति रोग ॥ ३ ॥ नमो० ॥ एम जाणी वैराग्यनी ए, समकित मूल व्रत बार, वली चारित्र लीये ए ॥ ठामी निज आगार ॥ ४ ॥ नमो० ॥ ठठ अठमादिक तप करे ए, सीलग सहस्स अढार, पाली सुरजव लहे ए ॥ शिवसुख अनुक्रमे सार ॥ ५ ॥ नमो० ॥ कइक क्लीव पुरुष वली ए, कामजोग लपटाय, बहु फुख जोगवे ए ॥ नीचनी सेव कराय ॥ ६ ॥ नमो० ॥ जीम सग्राम माहे अडे ए, पेसे समुद्र मफार, मित्रादिकने ठगे ए ॥ विषयाजिलाष प्रकार ॥ ७ ॥ नमो० ॥ पर जव नरगें सचरे ए, ठामी चचल आय, लह्या मे फुख घणा ए ॥ वार अनती प्राय ॥ ८ ॥ नमो० ॥ जिन्न जिन्न साते धराए, फुख तणो नहीं पार, कुजीपाके पच्यो ए ॥ तीव्र शस्त्रे लह्यो मार ॥ ९ ॥ नमो० ॥ करवत्री वेहेरयो वली ए, काष्ठने जिम सूत्रधार, जेयो त्रिशूले करी ए ॥ जव्रे पील्यो अपार ॥ १० ॥ नमो० ॥ वज्रतुड पखी थइ ए, साधो करतारीत, ताता जोतर ए ॥ मूस्या माहारी ग्रीव ॥ ११ ॥ नमो० ॥ एम करी

वद्देवरावीउं ए, तिल तिल खड कस्यो कापी, दिशोदिश वलि करे ॥ हिंसाना ए पाप ॥ १२ ॥ नमो० ॥ जीज तालुथी काढता ए, ए जीक बोल्यानो जेद, वली परद्रव्य लीयो ए ॥ कान नाक करे बेद १३ ॥ नमो० ॥ धगधगती लोहपुत्रिका ए, आलिंगन दीये देव, वेत-रणीमा ठवे ए ॥ उष्ण नीर निलमेव ॥ १४ ॥ नमो० ॥ ठाय जाणी सा-ली तले ए, वेसवा जाउ जाम, पक्के तस पत्र जे ए ॥ कान नाक ठेदे तम ॥ १५ ॥ नमो० ॥ ताढ १ ताप २ जूख ३ तरशनी ४ ए, खरज ने ५ परवशताय ६, शोग ७ जय ८ ज्वर ९ घणो ए ॥ दाह १० अतिशय याय १६ ॥ नमो० ॥ ए दश वेदना नरगमा ए, वली कंक शुनक ने काक, चिंता चूंटे घणु ए॥ पापकर्म परिपाक ॥ १७ ॥ नमो० ॥ आरत मिची उ-पजावीये ए, नहीं सुख तेती वार, तिरीगतिमा वली ए ॥ पाम्यो डुःख अ-पार॥१८॥नमो०॥दहन बठन ने वध होये ए, बहु वहेरावे जार, सभी जूख तरशने ए ॥ नवि करे कोइ सुसार ॥ १९ ॥ नमो० ॥ नरजवमा परवशपणु ए, निरधन ने वली क्लीव, तिणे नरपति सुणो ए ॥ शोक न करीये अतीव ॥ २० ॥ नमो० ॥ राय कहे तुमे स्वामीजी ए, कीधो स-फल अवतार, कस्यो थिर आतमा ए ॥ अतररिपु जयकार ॥ २१ ॥ नमो० ॥ शोचण योग्य तुमे नहीं ए, ठाड्यो प्रमाद प्रसंग, अगी तप-सीरी करी ए ॥ प्रायप्राय शिवसंग ॥ २२ ॥ नमो० ॥ शोचवा योग्य ते ते थयो ए, जिणे कीधो उपसर्ग, गुरु कहे तव सुणो ए ॥ पद्दनो ससार ससर्ग ॥ २३ ॥ नमो० ॥ परचिंता तु शु करे ए, कर निज आतम चिंत, सुणी नृप उच्चरे ए ॥ आपो वरा जगवंत ॥ २४ ॥ नमो० ॥ वो पाचे व्रत आदरु ए, विजयधर्म गुरु पास, मुनि पवी परे कहे ए ॥ वस्तु प्रमाण पच तास ॥ २५ ॥ नमो० ॥ गुणचद मुनि हवे विचरीया ए, वाणमतर हवे तेह, करी नदा कर्मने ए ॥ रोग थइ हीण देह ॥ २६ ॥ नमो० ॥ इन्द्रिय हाणि बल पमु ए, अशुन उदय थयो तास, सचार फर्यो रह्यो ए ॥ करे आक्रंद वेन्हास ॥ २७ ॥ नमो० ॥ वैद्य निपुण उपदेशथी ए, दिठा प्रमुख मुख दीप, स्तंभ नाम्या करी ए ॥ पम जावक मुख सिद्ध ॥ २८ ॥ -

ध्यान दीपे करी ए, तेत्रीस सागर आय, १

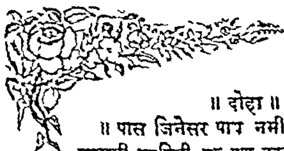
महा डुखनो समुदाय ॥ २९ ॥ नमो० ॥ गुणचंद्र पण कुविरानीउं ए, पाली संजम शुद्ध, करी संलेषणा ए ॥ नावना नावी विशुद्ध ॥ ३० ॥ ॥ नमो० ॥ कर्मराशि बहु क्षय करी ए, खामी सघला जीव, नमी वीत रागने ए ॥ थानक जोइ निर्जीव ॥ ३१ ॥ नमो० ॥ पादपोपगम अणसण करी ए, पाली निरतिचार, रुंधी चेष्टा प्रत्ये ए ॥ बहु वंदे अणगार ॥ ॥ ३२ ॥ नमो० ॥ गाये देवागना गीतमा ए, स्तवना करे नरदेव, तजी निज देहने ए ॥ थया सर्वारथे देव ॥ ३३ ॥ नमो० ॥ तेत्रीश सागर आउखे ए, सुखसागर ऊीलत, ए नरनव आवमो ए ॥ आवमो खम ए हुत ॥ ३४ ॥ नमो० ॥ एकवीश ढाले सोहामणो ए, समरादित्यने रास अढार वेंतालीशे ए ॥ सुदि दशमी नाद्रव मास ॥ ३५ ॥ नमो० ॥ श्रीवि जयसिंह सूरीशना ए, अंतेवासी मुख्य, क्रियाउद्धार कस्यो ए ॥ सत्य विजय सुशिष्य ॥ ३६ ॥ नमो० ॥ कपूरविजय तस पाटवी ए, खिमावि जय तस शिष्य, क्षमागुणथी जस्या ए ॥ जिनविजय सुजगीश ॥ ३७ ॥ ॥ नमो उत्तमविजयजी तेहना ए, शिष्य शिरोमणि सार, पंमित गुण आगला ए ॥ समतारस नंमार ॥ ३८ ॥ नमो० ॥ कल्याण पास पसायथी ए, पद्मविजय कहे एम, निसलनगरे रही ए ॥ समरादित्य गुण प्रेम ॥ ॥ ३९ ॥ नमो० ॥ सर्व गाथा ॥ ७११ ॥

॥ इति श्रीसंविग्नपक्षीयपंमितप्रवर श्रीमडुत्तमविजयगणिशिष्यपंमि त श्रीपद्मविजयगणिविरचिते श्रीसमरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे गुणच ंद्रनृपवाणमंतराभिधानविद्याधरयो अष्टमो नरनव समाप्त ॥ ८ ॥ सर्व गाथा ॥ ७११ ॥ उक्त गाथा ॥ ५ ॥



॥ अथ ॥

॥ नवमः खड. प्रारम्यते ॥



॥ दोहा ॥

॥ पास जिनेसर पाय नमी, शांति सदा सुखकार, समरी सरसती स्वामिनी, गुरु गुण ज्ञान दातार ॥१॥ आठ खंम कह्या इणी परे, दिन दिन चढते दाव, नवमो खम हवे निर्मलो, जाखु आणी जाव ॥२॥ समरादित्य सोहामणा, गुणचंद्रपी गिरिसेण, नृपसुत ने चमाल नर, सातलीपे सपणेण ॥३॥ इणे जंबुद्वीप अछे, जरतक्षेत्र जरऋद्धि, उजेणी नयरी अवल, पृथिवी माहि प्रसिद्ध ॥४॥ मंदिर गढ मढ मालीआ, विहार आराम विशेष, पोल पागार मारग प्रचु, अमर जुवे अनिमेष ॥५॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ उन्नी जावलदे राणी अरज करे ठे, अब को वरसालो घर कीजे हो ॥

॥ गढबुंदीरा हाडा ॥ वाल्हा चलण न देशु ॥ ए देशी ॥

॥ लखमी चल जाणी परिखामी सवि पीये, रज्जु परे सानु वाधी हो॥ सुणो जविअण जावे ॥ गुण गुणवंत केरा ॥ सहु जन गुणरयणे करी जूषित, रूपकला सहुए साधी हो ॥ १ ॥ सु० ॥ जेहनी सीमा सरोवर सोहे, नलिनीवने सर सोहे हो ॥ कमले नलिनीने कमल ते जमरे, ज्रमर गुंजारवे मोहे हो ॥ २ ॥ सु० ॥ नामे पुरीससिंह तेहनो राणो, सुंदरी राणी जाणो हो ॥ त्रण वर्ग साधता काल गमावे, दंपती दोय वखाणो हो ॥ ३ ॥ ॥ सु० ॥ इण समे सुर सरवारथवासी, तिहांथी चव्या आयु पाली हो ॥ सुंदरीकुखे उपनो जिहांरे, जागी सुपने रवि जाली हो ॥ ४ ॥ सु० ॥ पतिने कहे मे स्वप्न लह्ने, दीठो आज प्रजाते हो ॥ कमलाकर विकस्वर करतो, किन्नर तस गुण गाते हो ॥ ५ ॥ सु० ॥ गगन विजूषे तिमिर विणासे, लोक करे परणाम हो ॥ आतपे सौम्य ते पेसतो उदरे, तेहनु फल [illegible] स्वामी हो ॥ ६ ॥ सु० ॥ नृप हरखी कहे तुज सुत होशे, नि...

तहत्ति करी पतिवचन प्रमाणी, अनुक्रमे जन्म ते जात हो ॥ ७ ॥ सु० ॥
रुडे नखेतरे करण मुहूर्त्ते, विण संक्लेशे आयो हो ॥ सिद्धिमती दासीए
वधायो, नृप मन हरख न मायो हो ॥ ८ ॥ सु० ॥ दासीने दान देइने
करावे, बंदिमोचन राय हो ॥ अनिवारित दानने देवरावे, नयर महा
त्सव मंडाय हो ॥ ए ॥ सु० ॥ पद्मराय सुख जे नरदेवा, तेहने करता
जाप हो ॥ वहु उछव नित्य नित्य प्रते करता, हुउं मास प्रमाण हो ॥
॥ १० ॥ सु० ॥ स्वप्न प्रमाणे पितामह केरु, समरादित्य दीये नाम हो॥
इण अवसर जीव वाणमतरनो, नारक नीकल्यो ताम हो ॥ ११ ॥ सु०॥
नाना जव तिरिगतिमां जटकी, बहु दु:ख खमतो तेह हो ॥ कर्मवश
वीशावीश हुउं, मरण लही वली एह हो ॥ १२ ॥ सु० ॥ इणहीज न
यरीए चमालपाडे, गबिग नाम चमाल हो ॥ जक्कदेवा नामे तस नारी,
तास कुखे तिण काल हो ॥ १३ ॥ सु० ॥ गिरिसेन नामे पुत्र हुओ,
जन्मथी दुःखीयो दीन हो ॥ कुरूपीपणे काल गमावे, पापराशि धन
हीन हो ॥ १४ ॥ सु० ॥ समरादित्य पुण्यफल अनुभवता, पूर्व सुख
अन्यासे हो ॥ सयल कला थोडाकाले शीख्यो, साखी मात्र गुरु पासे हो
॥ १५ ॥ सु० ॥ कुमरपणे पण पूर्व अन्यासे, शास्त्रचिंतन घणु रातो हो
॥ तत्त्वयुक्ति वात करावे, जावे जावना अवदातो हो ॥ १६ ॥ सु० ॥
जातिस्मरण जावना गुणथी, उपनो लोक प्रसन्न हो ॥ पुण्यानुबंधी पुण्य
उदयथी, कुशल जावमा मन्न हो ॥ १७ ॥ सु० ॥ नाण निर्मल ने त्याग
विषयथी, आसन्नसिद्धि संपत्ति हो ॥ उत्कट जीव वीर्य नही दुःख
तिणे एहवा गुणव्रत्ति हो ॥ १८ ॥ सु० ॥ राज्यलक्ष्मी उपर नही
आदर, न करे शरीरसत्कार हो ॥ चित्रक्रीडा ने विषय न सेवे, महा वै
रागी कुमार हो ॥ १९ ॥ सु० ॥ जात कुमरनी एहवी देखी, चिंतवे म
नमां नृप हो ॥ रूपे कंदर्प ने चित्त अतुल छे, यौवन वय अनूप हो
॥ २० ॥ सु० ॥ रोगरहितने इंद्रिय प्रबल, रायकन्या बहु छे हो ॥
मुनिदरिसण न करी पण मुनि परे, मनमां विकार न थाये हो ॥ २१ ॥
॥ सु० ॥ गीत कला नवि सेवे न पहेरे, जूषण न करे मानो हो ॥ अं
गना न मूके पर्ल न मूके, पुत्र मजार अमानो हो ॥ २२ ॥ सु० ॥ वे
दिनथी वचनो ते दिनथी, वचनो सवि सुख चोज हो ॥ नृप कहे सवि

सुख मुझने होशे, एह कल्याणनु वीज हो ॥ २३ ॥ सु० ॥ पहेली ढाल ए नवमे खंके, समरादित्यने रासे हो ॥ शिष्य उत्तमविजयनो जपे, आगल वात विलासे हो ॥ २४ ॥ सु० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ छुल्लित गोष्ठि देखीये, सोपु तेहने संग, कलावंत क्रीडानिपुण, मदन विशिष्ट मत्तंग ॥ १ ॥ उत्तम कुलमां उपना, तस संगे ततकाल, अति प्रमोद उपजावशे, मुझने तेह मयाल ॥ २ ॥ अशोक कामांकुर अठे, ललितांग नाम लहंत, चतुर चूडामणि चिंतवी, कहे तेमी भूकंत ॥ ३ ॥ जतन करी तुमे जोपशु, समरादित्य सुजाण, लोक मारगमां लावीये, ए ठे अमची आण ॥ ४ ॥ आण प्रमाण करी अधिक, केतोक वीतो काल, सहु नेला विचरे सदा, खेले नव नव ख्याल ॥ ५ ॥

॥ ढाल वीजी ॥

॥ वीजाजी हो रल कूर्ढ ने मुख साकडु हो वीजा,
केम करी करु प्रवेश ॥ वयण वाल्हा सयण रूडा ॥ ए देशी ॥

॥ वाहालाजी हो ॥ चालोने रमवा जाइये हो मित्ता, एम करी चाल्या तेह ॥ ठेल वाल्हा, सयण रूडा ॥ वा० ॥ वीणा प्रयोगे देखावता हो मित्ता, काव्य विनोद करेह ॥ ठे० ॥ १ ॥ वा० ॥ जलक्रीडा करे मोदशु हो मित्ता, जोवे सरोवर शोह ॥ ठे० ॥ वा० ॥ कामशास्त्र वोले घणा हो मित्ता, जे सुणी उपजे मोह ॥ ठे० ॥ २ ॥ वा० ॥ नाचे हिंचोला रंगशु हो मित्ता, हिंचे तिहां धरी प्रीति ॥ ठे० ॥ वा० ॥ गीत गाये अति रुयडा हो मित्ता, कामशास्त्र विरचित ॥ ठे० ॥ ३ ॥ वा० ॥ कुसुम साथरा पाथरे हो मित्ता, वरणवता पचराय ॥ ठे० ॥ वा० ॥ ते देखी चित्त चिंतवे हो मित्ता, समरादित्य सुजाण ॥ ठे० ॥ ४ ॥ वा० ॥ रचते सवेगे करी हो मित्ता, अहो एह केम बोधाय ॥ ठे० ॥ वा० ॥ मूढदशा अति आकरी हो मित्ता, किम उपगार ते थाय ॥ ठे० ॥ ५ ॥ वा० ॥ पण तेहना उपरोधथी हो मित्ता, नवि कहे काय प्रतिकूल ॥ ठे० ॥ वा० ॥ तस प्रतिबोधन कारणे हो मित्ता, थाचशु तस अनुकूल ॥ ठे० ॥ ६ ॥ वा० ॥ प्रीति परम उपजावतो हो मित्ता, उपजाव्यो विश्वास ॥ ठे० ॥ वा० ॥ एक दिन सहु [illegible] हो मित्ता, माड्यो वातविलास ॥ ठे० ॥ ७ ॥ वा० ॥ वोले [illegible] गमी परे हो

त्तग्रहण अवलोकीये, जाखे जिनवर नाथ ॥ ५ ॥ यत ॥ " त नाम होः सठ, ज हियमठ जणस्स दसेइ ॥ ज पुण अहियत्ति सया, त णुक्तो चय सछ ॥ १ ॥ ताज कामुद्दिरण, समवसठ न त वुहजणेण ॥ सुमिणेत्रि ज पियव, पससियव च डवयण ॥ २ ॥ " सुखदायी सहु सत्वने, उपजावे उपशम्म, परशसवु ने जपवु, हृदये जाणो रम्म ॥ ६ ॥ यत ॥ "पस माइ जावजणय, हियमेगत्तें सव सत्ताण ॥ निउणेण ज पियव, पससि यव सुविसुरू ॥ ३ ॥' साजली विस्मय सहु लह्या, चित्तमा करे विचार, अहो विवेक अहो जावना, अहो वैराग्य अपार ॥ ७ ॥ कृतज्ञ गुण अहो केहवो, एहवा अध्यवसाय, नवि होये मुनिवर मने, एम चित्त अ चरिज थाय ॥ ८ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ आवो हरि लाहरीआ वाहाला ॥ ए देशी ॥

॥ करे सहु मित्र मली वातो ॥ तेहमा अशोक कहे रयातो, सुणो कुमार कहु अवदातो ॥ १ ॥ करे० ॥ तुमे कह्यु लोकोत्तर एह, इहा अधिकार कहो केह, लौकिकमा कामशास्त्र गुणगेह ॥ २ ॥ करे० ॥ कहे कामाकुर ए सारु, कह्यु अशोके अवधारु, कहे ललिताग लागे प्यारु ॥ ३ ॥ करे० ॥ वोले हवे कुमर सुणो वाणी, लहे नहीं तत्व वात प्राणी, घणा कदर्थी वाल अन्नाणी ॥ ४ ॥ करे० ॥ होये कर्मवधहेतु काम, नहीं तेहशु माहारे काम, जाणी परे कूपकहो कुण थाम ॥ ५ ॥ करे० ॥ देजणा न उत्तर तिहा केणे, कह्यु अगीकार सहु तेणे, गया केइ दिन नेहजर नयणे ॥ ६ ॥ करे० ॥ सहु मली एम विचार कीधो, ए कुमार तो त पसी सम सीधो, आपणनो ए किम जाये लीधो ॥ ७ ॥ करे० ॥ अठे उपाय इहा एक, दाक्षिण्यरत ए ठे ठेक, आपण मित्रशु कीधा विवेक ॥ ८ ॥ करे० ॥ पाणिग्रहण करो कहीये एम, माने जो वचन धरी प्रेम, सहुए धारी एह- वो नेम ॥ ९ ॥ करे० ॥ वेसी एक दिन इणी परे जासे, अशोक सुणो मित्र सहु साखे, एक पूतु धरी मन अभिलाखे ॥ १० ॥ करे० ॥ मा- नवी के नहीं मित्रनी वाच, कहे कुमर मित्रना त्रण ताच, अधम मध्यम उत्तम साच ॥ ११ ॥ करे० ॥ एक मित्र घणु लाड्या पाड्या, कोइ ना- वयी नवि अलगा टाड्या, पण आपदाए दूरे चाड्या ॥ १२ ॥ करे० ॥

र तो तुमे अधम मित्र जाणो, हवे सुणो पर्व मित्र शाणो, मळे कोइ र्व उत्सव टाणो ॥ १३ ॥ करे० ॥ नवि हावभाव करवो तास, पण कष्टे करे वेखास, राखे काय लौकिक सुविलास ॥ १४ ॥ करे० ॥ काय वेलपी विलव करी मूके, ए तो मध्यम मित्र नवि चूके, हवे उत्तम धिर रेडे थूके ॥ १५ ॥ करे० ॥ एक लटक सलाम होये तेह, मूकावे दुःख यकी एह, गोरवपणु दाखवे बहु जेह ॥ १६ ॥ करे० ॥ थोडे उपगार ते बहु माने, सपइ पण ते तस घर आवे, आपदाए पण राखे छाने ॥ १७ ॥ करे० ॥ एहमा उत्तम सरिखु थावु, कहे कामाकुर न रहस्य पावु, ए तो जगतजीव जाणे गावु ॥ १८ ॥ करे० ॥ ललिताग कहे कचु गभीर, कह्यो हवे ज्यु लहीए तीर, कहे कुमर सुणो सहु थइ धीर ॥ १९ ॥ करे० ॥ परमार्थ मित्रना त्रण भेय, देह सुजन धरम जाणेय, जघन्य मित्र देहने वेय ॥ २० ॥ करे० ॥ देहनी क्षण क्षण करो सभाल, भूख तरश ने टाढ ताप काल, सभालता पण होय विकराल ॥ २१ ॥ करे० ॥ निरालवन मूकीने जाय, हवे मध्यम मित्र सज्जन थाय, माय ताय कलत्र भगिनी भाय ॥ २२ ॥ करे० ॥ क्लेश अवसरे करता विलाप, प्रस्तावे ते सभारे आप, जाये परभव पुण्य तथा पाप ॥ २३ ॥ करे० ॥ हवे धर्म मित्र उत्तम जाणो, ते तो कोइक अवसर मन आणो, पण थाय सखाइ सपराणो ॥ २४ ॥ करे० ॥ ते तो सघला जय साथे टावे, फरी फरी ते पुरुषने सभाले, अनुक्रमे शाश्वत सुख आले ॥ २५ ॥ करे० ॥ एम जाणी विषयना सुख छानो, ए असारशु मत तुमे रढ मानो, ए आतम सुख करे खानो ॥ २६ ॥ करे० ॥ पामी मानवनो भव श्रीकारो, मोक्षमारग पामी मत हारो, वीतराग वयण चित्त अवधारो ॥ २७ ॥ करे० ॥ उत्तम नरसेवित धर्म करो, भव भवना पातक दूर हरो, ससारसायर सुख माहि तरो ॥ २८ ॥ करे० ॥ नवमे खडे त्रीजी ढाल, कही पद्मविजय अति सुरसाल, आगले होशे मगलमाल ॥ २९ ॥ करे० ॥ सर्व गाथा ॥ १८२ ॥

॥ दोहा ॥

किथी, कर्मराशि कृतक्षीण, उपशम मिठत आवीयु, परिणति शुभ थइ पीण ॥ ३ ॥ मोहवासना मटी गइ, अशुभ तूटो अनुबंध, गुणवंत गठी जेदता, शुद्ध समकित संबंध ॥ ४ ॥ अशोक कहे सरु एह छे, नहीं संदेहनु नाम, शोजनथी पण शोजन, कामांकुर कहे काम ॥ ॥ ५ ॥ अथवा शोजन एहज छे, निश्चय कांय न अन्य, ललितांग कहे सव लोकमां, अमचा पुण्य अगन्य ॥ ६ ॥ अन्नाण निद्राए उंघीया, अमने जगव्या आज, हेतुवाद अम हित करी, कुमरे कीधु काज ॥ ७ ॥ आतमहित अमे आदरु, शिक्षा तुम्ह सनाली, अशोक कहे ए अति जलु, नाव्यु अवसर जाली ॥ ८ ॥ कुमर कहो करवु जिके, ततक्षण बोल्या ताम, संक्षेपे सुणजो तुमे, साधुसंग विश्राम ॥ ९ ॥ विषय राग नवी वर्जजो, जवसरूपने जाणी, कुसंग त्याग नित्य कीजीये, दानादिक चउ दाव ॥ १० ॥ साधु साधु एम सहु कहे, कह्यु अमे अंगीकार, कुमर कहे कृतपुण्य छो, सफल जन्म तुम सार ॥ ११ ॥ धर्मी थया तिणे धन्य छो, तेह बोल्या तिणी वार, आपनु दरिसन अधन्यने, न होये एम नि रधार ॥ १२ ॥ कुमर प्रशंसा एम करी, गया ते निज निज गेह, केटक दिन एम अतिक्रम्या, इण अवसर हुउं एह ॥ १३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ कठमारा आया गुरुजी प्राहुणा ॥ ए देशी ॥

॥ आइ वसंत रुतु अन्यदा, वनसीरी अति विलसंत ॥ मारा साजन वाल्हा, चालो वसंत जोवा जाइये ॥ आंबे मंजरीउं नइ, अतिमुक्तक उल्लसंत ॥ १ ॥ मा० ॥ तिलकादिक फूल्या वणु, मलयाचल वाया वाय ॥ मा० ॥ भ्रमर गुंजारव करी रह्या, कोकिल शब्द सुणाय ॥ २ ॥ मा० ॥ मदन पीडे बाउ वृद्धने, विकसित कमलिणी थाय ॥ मा० ॥ कानन सेवे बहु जना, विरह न दंपती खमाय ॥ ३ ॥ मा० ॥ नगर महर्द्धिक आवीया, इण समे नृपनि पास ॥ मा० ॥ विनवे इणी परे रायने, पूरो अमारी आस ॥ ४ ॥ मा० ॥ नित्य उत्सव छे यद्यपि, तोपण आज विशेष ॥ ॥ मा० ॥ उत्सव उपरे होयशे, उत्सव जनने अशेष ॥ ५ ॥ मा० ॥ पाउ धारो [illegible] राजीया, तव चिंते महाराय ॥ मा० ॥ मोकलु समरादित्यने, देख ॥ तो समीदिन अम नीपजे, उपने कामविकार

॥ मा० ॥ एम विचारी तेहने, जाखे सुणे परकार ॥ ७ ॥ मा० ॥ उंठव बहु देखावीआ, ह लह्यो परमाणंद ॥ मा० ॥ हवे देखावो कुमरने, तुमचो एह नरींद ॥ ८ ॥ मा० ॥ कहे महर्द्धिक रायने, कीधो अम सुपसाय ॥ ॥ मा० ॥ इम कही ते निज घर गया, तेडावे कुमरने राय ॥ ९ ॥ मा० ॥ वत्स स्थिति ए आपणी, मधुउंठव थाये आज ॥ मा० ॥ जोवा जाये नरपति, एम जाखे महाराज ॥ १० ॥ मा० ॥ ए मारग तुमे आचरो, मे जोवु बहु वार ॥ मा० ॥ हर्ष थशे प्रजालोकने, तिम स्वजन परिवार ॥ ॥ ११ ॥ मा० ॥ कुमर प्रमाण करे हवे, हरख्यो राय अत्यंत ॥ मा० ॥ आण करे प्रतिहारने, जइ सजबाणो तंत ॥ १२ ॥ मा० ॥ ज्ञानगरग सुख मंत्रिने, रथवर प्रमुख तयार ॥ मा० ॥ करीने कुमरशु नीकल्यो, एह आणा अवधार ॥ १३ ॥ मा० ॥ प्रतिहारे जइ हर्षथी, सजलाव्यो अवदात ॥ मा० ॥ ते पण हरखे तिम करे, रथवर तेह विख्यात ॥ १४ ॥ मा० ॥ यंत्रयोध थाप्या तिहां, वली वेजयंती पताक ॥ मा० ॥ घूघरी चिहुं दिश रणकणे, पुण्य तणा परिपाक ॥ १५ ॥ मा० ॥ छत्र चामर घणु सोहता, लटके रयणनी दाम ॥ मा० ॥ आसन मांड्यु तिहां किणे, इण अवसर तिणे ठाम ॥ १६ ॥ मा० ॥ कुंकुम वस्त्र पहेरी करी, पात्र लोक तिहां आय ॥ मा० ॥ विविध थान बेसी वली, आवे भुजग जन प्राय ॥ १७ ॥ मा० ॥ कुमर जोवाने कारणे, बहु तिहां राजकुमार ॥ मा० ॥ गोखे रही अंतेउरी, कुमर दर्शनने सार ॥ १८ ॥ मा० ॥ नृप आणाथी परिवर्यो, नीकल्यो ताम कुमार ॥ मा० ॥ मित्र अशोकादिक सहु, चाल्या कुमरनी ल्हार ॥ १९ ॥ मा० ॥ वेग रथवर उपरे, मित्रनी साथे तेह ॥ मा० ॥ रथ चाल्यो हवे जेटले, जय जय शब्द करेह ॥ २० ॥ मा० ॥ पात्र ते नाचे पगे पगे, पूठे राजकुमार ॥ मा० ॥ कौतुक विविध प्रकारना, देखता अति विस्तार ॥ २१ ॥ मा० ॥ राजमारग माहि आवीआ, निज निज लेइ समुदाय ॥ मा० ॥ ऋद्धि विशेषे शोहे घणु, अचरिज विबुधने थाय ॥ २२ ॥ मा० ॥ वाजित्र विविध प्रकारना, देखता लहे वेराग ॥ मा० ॥ भावना भावे एहवी, अहो अहो मोह अनाग ॥ २३ ॥ मा० ॥ अहो अकार्यमा धीरता, अहो चेष्टा परमाद ॥ मा० ॥ अहो दीर्घदर्शी नहीं, अहो अणाजोचित वाद ॥ २४ ॥ मा० ॥ अहो भवनी अशुद्धता, अहो संसारनो संग ॥ मा० ॥ एम चिंतवता चा

नरमा पण जोय रे ॥ २ ॥ शी० ॥ राय कहे नारकनर तेडो, शोच करेवा जाउ रे ॥ गुजकर सुणी चित्त विचारे, मरण अवश्य इहां पावु रे ॥३॥ शी०॥ मरण धीक लही पड्यो सघासे, महा दुर्गंध अधकारो रे॥ विष्टाकूप कृमिकुळे व्यापित, पमीयो तेहमा किनारो रे ॥ ४ ॥ शी० ॥ अशुचिनरीजे कृमिए खाग, दृष्टि प्रसार रोकाणो रे ॥ अग संकोच्यु वेदन पाम्यो, व्याकुल होय निप टापो रे ॥ ५ ॥ शी० ॥ अगरकक नृपने तिहां जोयु,आव्यो नृप तिण गया रे ॥ शरीरस्थिति करीने फरी आयो, राणीशु काल गमायो रे ॥ ६ ॥ ॥ शी० ॥ सांजे राय सनामा पोहोतो, राणी तव जोवराजे रे ॥ नवि दीठो तव कहे एम राणी, कहो नाइउ किहां जावे रे ॥ ७ ॥ शी० ॥ दासी कहे ए मरणना जयथी, पमीयो कूप मझारो रे ॥ चितातीन थइ तव राणी, मूत्र जाएयो निरधारो रे ॥ ८ ॥ शी० ॥ तेह गुजकर दु खथी पीड्यो, जवितव्यताने जोगे रे ॥ आयुबले कोइ काल गमावे, अशुचि रस पान जोगे रे ॥ ९ ॥ शी० ॥ विष्टाकूप शोधनने काजे, उघाड्यु त द्वार रे ॥ अशुचि निर्गम मारगे नीकल्यो, राति समय तिणी वार रे॥ ॥ १० ॥ शी० ॥ देहतणी विणठीने नाठा, नख ने केश विरूप रे ॥ तिम हीज अंग पखाली निज घर, पोहोतो कष्ट सरूप रे ॥ ११ ॥ शी० ॥ बीहीनो परिजन जयथी कोण ए, तेह कहे मत बीहो रे ॥ गुजकर इ पिता तव पूछे, विमलमती मति लीहा रे ॥ १२ ॥ शी० ॥ सुत कीधु निपे एम हुउं, तव कहे पुत्र विचारो रे ॥ मरण लह्यो मत जाणो वि ताजी, तेहज हु अवतारो रे ॥ १३ ॥ शी० ॥ पण जे करणीथी एम हुउं, ते सघलु अवजाग रे ॥ करी एकांतने नाख्यु सघलु, सांजली तात वि रागी रे ॥ १४ ॥ शी० ॥ वानरहित घरमा नख आपे, सहस्रपाकादिक तेले रे ॥ परिमर्दन करीने तस तावे, मूळ सरूप करी मेले रे ॥ १५ ॥ ॥ शी० ॥ एक दिन देवनायनने जाता, रति राणीए दीठो रे ॥ पूरवनी परे जालिणी मूकी, तेनारे कहीमीठो रे ॥ १६ ॥ शी० ॥ मोहदोषे करी ते पण आव्यो, थयुं वली पूरव रीते रे ॥ कूपथी नीकल्यो वली सज हुउं, केटक काल व्यतीते रे ॥ १७ ॥ शी० ॥ वली एणी रीते कतु हरी जोयो, एम वहुवार गयो आव्यो रे ॥ ए दृष्टांत कह्यो वली पुत्र, कहो चिननो जो नाव्यो रे ॥ १८ ॥ शी० ॥ रतिने राग हतो ते नाठो, ना-

निनी कहे परमार्थ रे ॥ राग नहीं नली बुद्धिरहित सा, कुमर कहे तस अर्थे रे ॥ १९ ॥ शी० ॥ राग नहीं मुझ उपरे एहनो, परमार्थे बुद्धिहीन रे ॥ ईर्ष्याकारण चपल स्वभावे, जोग वाहे ए दीन रे ॥२०॥ शी० ॥ वस्तुतत्त्व न समझे कोइ, दुर्लज नर अवतार रे ॥ नवसमुद्रमां पामी न करे, धर्म ते मूढ गमार रे ॥ २१ ॥ शी० ॥ सहरे त्रण जुवनने मृत्यु, सहेजे क्रूर स्वनाव रे ॥ न विचारे एहने वश आपण, किम धरे विषय विनाव रे ॥ २२ ॥ शी० ॥ अहिते वरतावे ते कारण, मुझ उपर नहीं राग रे ॥ एम सानली वहूर्ड दोय बूझी, लहे संवेग विराग रे ॥ २३ ॥ ॥ शी० ॥ शुद्ध नावनाए कर्म खप्यां बहु, पामी देश चारित्त रे ॥ श्रद्धा अतिशये कुमरना पदजुग, प्रणमे अति सुविनीत रे ॥ २४ ॥ शी० ॥ विभ्रमवती कहे मोह गयो अम, उपनुं सम्यग् नाण रे ॥ विषयराग टलीर्ड नवनयथी, पीयु तुम वचन प्रमाण रे ॥ २५ ॥ शी० ॥ कामलता पण एमहीज नाखे, तव समरादित्य नापे रे ॥ नले तुमे मानवनो नव पाम्या, कुशल बुद्धि जिणे पाखे रे ॥ २६ ॥ शी० ॥ तिणे तुम विषयत्याग घटे करवो, मोहजनित मोहहेतु रे ॥ मोहस्वरूप मोहानुबंधी, संक्लेश तिम समवेतु रे ॥ २७ ॥ शी० ॥ संक्लेशजनित ने संक्लेशहेतु, तिम संक्लेश अनुबंधे रे ॥ जावजीव गमो मोह चेष्टा, कुशल बुद्धिने संधे रे ॥ २८ ॥ शी० ॥ इत्यादिक वयणा सुणी श्रवणे, बोले वधूटी दोय रे ॥ जावजीव पचस्तु अमे अब्रह्म, हरख्यो कुमर ते सोय रे ॥ २९ ॥ शी० ॥ नवमे खंडे ढाल अनोपम, आठमी अद्भुत नाखी रे ॥ पद्मविजय कहे धन्य ए दंपती, जिणे एहवी मति राखी रे ॥ ३० ॥ शी० ॥ २९८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरख्यो कुमर हैया थकी, कहे अहो हलुआ कर्म, धन्यता उपशम धीरता, धारक अहो पतिधर्म ॥ १ ॥ इह लोकनी ईहा नहीं, अहो गनीर अपार, एम चिंती आले इस्युं, साधु कहु सुखकार ॥२॥ म पण जावजीव सुणो, चोथु व्रत कहु चित्त, अहो अहो शोनन आदरु, सुखथी कहे सहु मित्त ॥ ३ ॥ कुसुमवृष्टि देवे करी, उत्तम अध्यवसाय, चिंते कुमर विचार एम, शुन परिणाम सुहाय ॥ ४ ॥ [illegible]वरण क्षये तेहने, अवधिज्ञान उत्पन्न, निहु काल जाणे तदा, [illegible] संवेग प्रपन्न

॥ ५ ॥ व्यतिकर सुणी पृथवीपति, प्रातहारने पास, साजली राणी पण सवे, वलतो करे विरवास ॥६॥ अणघटतु यवनीपति, कहे काम ए कीध, राणी कहे रोती थकी, लाइविषय नवि लीध ॥ ७ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ पूछे प्यारीने धन्नो प्रेमशु हो ॥ ए देशी ॥

॥ इण समे आवी देवागना हो ॥ सुणो नृपति ॥ हैये विराजे हार॥ सहु मन मोहे जिहो राज ॥ मुकुट कुंडल कटके करी हो ॥सु०॥ कटि मेखला खलकार ॥ १ ॥ सहु० ॥ देवदुष्यथी शोहती हो ॥सु०॥ मणि नेउर रणकार ॥ स० ॥ वावनाचदन लीपीयु हो ॥ सु० ॥ सुरतरु कुसुमन धारी ॥ २ ॥ स० ॥ मणि दीवा परे दीपती हो ॥ सु० ॥ सोमवदन अत्यत ॥ स० ॥ देखी विस्मय पामीया हो ॥ सु० ॥ हरष विषादे नमत ॥ ३ ॥ स० ॥ बोले ताम देवागना हो ॥ सु० ॥ म करो चित्त विषाद ॥ ॥ स० ॥ कुमरे घणु जुगतु कर्यु हो ॥ सु० ॥ टाल्यो नव विखवाद ॥ ॥ ४ ॥ स० ॥ मोक्षमार्ग इणे साधीयो हो ॥ सु० ॥ अमृत मलु तरु फेर ॥ स० ॥ आपदा दूरे करी इणे हो ॥ सु० ॥ पुरुषातन इणी पेर ॥ ॥५॥स०॥ शुद्धता टाली उदारता हो ॥सु०॥ कीधी अगीकार ॥स०॥ तिणे कृतारथ एह छे हो ॥ सु० ॥ धन्य तुम कुल अवतार ॥ ६ ॥ स०॥ राणी तुमे पण शोकी थो हो ॥ सु० ॥ नहीं शोचवा योग्य जेह ॥ स० ॥ शाश्वत सुख इणे आदर्यु हो ॥सु०॥ धन्य तुझ कुख जिहा एह ॥ ७ ॥ स०॥ वहु जनने शिवसुख तणु हो ॥ सु० ॥ कारण तुझ सुत नेम ॥ स० ॥ तिणे वेरवास दूरे करो हो ॥ सु० ॥ नरपति कहे तव एम ॥ ८ ॥ स० ॥ कोण तुमे शो ते कहो हो ॥ सु० ॥ देवी कहे सुण राणी ॥ स० ॥मह प्रहरणे छेजवी हो ॥सु०॥ सुदरिसणा अनिहाण ॥९॥ स० ॥ तुझ सुतगु पथ्यनुरागिणी हो ॥ सु० ॥ रहु तुझ नगर मझार ॥ स० ॥ राय राणी सुणी हरखीया हो ॥ सु० ॥ धन्य गुणवत कुमार ॥ १० ॥ स० ॥ देवता पण रागी होय हो ॥ सु० ॥ देवता बोले ताम ॥ स० ॥ कुमर प्रभाव घणो अछे हो ॥ सु० ॥ चालो जइये ते ठाम ॥ ११ ॥ स० ॥ धर्मविनिद्राजीने हो ॥ सु० ॥ कहे ते करीने काम ॥ स० ॥ देवी प्रणमीने चालीया हो ॥ सु० ॥ कुमर समीप जाम ॥ १२ ॥ स० ॥ अवने कुमरे ना

णीयु हो ॥ सु० ॥ हरखे ऊना थाय ॥ स० ॥ प्रणम्या मावित्र पाउवे हो ॥ सु० ॥ वेगा आसण ठाय ॥ १३ ॥ स०॥ प्रणमी पूछे तातने हो॥ सु०॥ केम आव्या तुमे एथ ॥ स० ॥ अणघटतु ए कीधलु हो ॥ सु० ॥ मुक नवि तेड्यो तेत्र ॥ १४ ॥ स० ॥ नृप कहे देवीए जाणीयु हो ॥ सु० ॥ तुम वृत्तात अशेष ॥ स० ॥ राणी कहे गुणवत तु हो ॥ सु०॥ किम दीजे आदेश ॥ १५ ॥स०॥ कुमर कहे तुमे गुरुजना हो ॥ सु० ॥ तुम आणा करु जेह ॥ स० ॥ गुणवतपणु मुक तो रहे हो ॥ सु० ॥ राय कहे सुणो एह ॥ १६ ॥ स० ॥ दुःकर काम तुमे कस्यु हो ॥ सु० ॥ समरादित्य कहे वाणी ॥ स०॥ नहीं दुःकर इहा मानजो हो ॥ सु० ॥ चार पुरुषनु कहाण ॥ १७ ॥ स० ॥ केडक चार पुरुष हता हो ॥ सु० ॥ द्रव्य इछक तिहा दोय ॥ स० ॥ दोय विषयना लोलुपी हो ॥ सु० ॥ मार्ग पडिवज्या सोय ॥ १८ ॥ स० ॥ कोइक स्थानक पेखीउं हो ॥ सु० ॥ मणिरत्न कनक-नी राशि ॥ स० ॥ नारी दोय रजा समी हो ॥ सु० ॥ करती अति सुविलास ॥ १९ ॥ स० ॥ जे पामवु ते पामीआ हो ॥ सु० ॥ सन्मुख चाल्या ताम ॥ स० ॥ वाणी थइ इण अवसरे हो ॥ सु० ॥ मा साहस करो आम ॥ २० ॥ स० ॥ मस्तक उपरे पेखजो हो ॥ सु० ॥ पर्वत प-डशे एह ॥ स० ॥ ऊचु जोता देखीउं हो ॥ सु० ॥ रौद्रदर्शनथी जेह ॥ २१ ॥ स० ॥ व्यापी रह्यो आकाशने हो ॥ सु० ॥ नारी न शकीये लेह ॥ स० ॥ ते पण पडतो पेखीयो हो ॥ सु० ॥ तास उपाय न रेह ॥ ॥ २२ ॥ स० ॥ इण समे वाणी सुणी तिहा हो ॥ सु० ॥ जे इछे अव-काश ॥ स० ॥ मरण लहे ते इणी परे हो ॥ सु० ॥ वळी वळी लहे दुःख ठाम ॥ २३ ॥ स० ॥ जेह निरीह ए दोयथी हो ॥ सु० ॥ नारे अला-रता तास ॥ स० ॥ तो क्रमे क्रमे दूरे खसे हो ॥ सु० ॥ कार्ये उपद्रव नाश ॥ २४ ॥ स० ॥ तव एकेक ते चितवे हो ॥ सु० ॥ जे थानार ते थाय ॥ स० ॥ पण ए तो नवि लेनीये हो ॥ सु० ॥ शीघ्र ते ऊंचा जाय ॥ २५ ॥ स० ॥ बीजा पण मन चितवे हो ॥ सु०॥ अर्थ विषयशु न काज ॥ स० ॥ जेहना कटुक विपाक छे हो ॥ सु० ॥ पण करी करता तात ॥ ॥ २६ ॥ स० ॥ दुःकर कार केहा कहो हो ॥ सु० ॥ तात विचारो चित्त ॥ स० ॥ राय कहे जे प्रवृत्तिया हो ॥ सु० ॥ ऊंचा विषय ने वित्त ॥

उवेखे छे केम ॥ पिता० ॥ थाय संतान नाश वली, सांभल्यु विप्रे एम ॥ पिता० ॥ २४ ॥ कु० ॥ सांभलीवाकुर चिंतवे, एम जाखे छे मात ॥ पिता० ॥ प्राणप्रिया ए नारी छे, किम होशे ए वात ॥ पिता० ॥ २५ ॥ कु० ॥ दशमी नवमा खंडमा, पद्मविजय कही ढाल ॥ पिता० ॥ समरादित्य रासमा, आगल वात रसाल ॥ पिता० ॥ २६ ॥ कु० ॥ सर्व गाथा ॥ ३५९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सासु वहूने सप नहीं, एहनो पण अवदात, वली विशेषथी गुण वती, मत्सर नहीं मुज मात ॥ १ ॥ एटला काल लगे अहीं, जेर न जाण्यो जाय, नारी पण छे निर्मली, श्यो कीजे व्यवसाय ॥ २ ॥ च नारी ते चिंतवी, एम जाखे अणगार, ते पण नवि थाये निवृ विषमा कामविकार ॥ ३ ॥ परीक्षा करु निश्चे पाधरी, एम चिंती एकांत जाखे नर्मदा जामिनी, समजो मन धरी सात ॥ ४ ॥ महीपति आणा माहरे, जवु माहेसर जाण, शीघ्र आवीश हु सुंदरी, केइक दिन छे काम ॥ ५ ॥ रहेजो रुडी रीतिशु, नर्मदा कहे तव नारी, आर्यपुत्र हु आ वशु, नहीं रहु हु निरधार ॥ ६ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ अट प्रीतमशु एकवार,सगुणी वोलो हो ॥ ए देशी ॥

॥ तुम विण हु नवि रही शकु रे, एम कही रुदन करेय ॥ पुरुष कहे सुंदरी, स्नेहे कायरता म धरेय ॥ १ ॥ चरित्र नहीं कहु हो ॥ अहो कोइ न लहे एहनो पार ॥ चरि० ॥ माहरे तिहा काय दुःख नथी रे, तव कहे वचन प्रमाण ॥ पण जो मोडा आवशो तो, माहरा जाण प्राण ॥ २ ॥ चरि० ॥ बीजे दिवसे नीकल्यो रे, बाहिर दिवस गमार ॥ रजनीए पेठो गेहमा, करी माया रह्यो एक वाय ॥ ३ ॥ चरि० ॥ मध्य राते वासगेहमा रे, मूना दीवा दोय ॥ सुरतप्रयासना खेदथी रे, नि ज्ञाना आव्या सोर ॥ ४ ॥ चरि० ॥ कोपे अति बहु कलकल्यो रे, नारी दूरे विवेक ॥ चिंतवे चतुरु पावरी, नारीने ते आपनी टेक ॥ ५ ॥ चरि० ॥ पच अर्जुन ए दुष्ट छे रे, जोगवे माहरी नारी ॥ मारु एहने नि नथी, कर्यो मूनाने पम्हार ॥ ६ ॥ चरि० ॥ मारी ते वामना गेहनी रे, रहीने पर एक देश ॥ जोवु नारी हवे शु करे, निद्रा नवि पाम वश

लेश ॥ ७ ॥ चरि० ॥ तेहथी जागी जोइनु रे, मरण लह्यु ते जार ॥ चिंतवे हाहा मरी गयो, मुक जेहशु अतिशय प्यार ॥ ८ ॥ चरि० ॥ म दनागिणी हु घणी रे, किणे मास्या मुक स्वामी ॥ मारी न मुकने पापीए, किम जीवती रहु इण ठाम ॥ ९ ॥ चरि० ॥ गइ हवे रतिसुखनी कथा रे, एम चिंती खणे खाड ॥ घाल्यो अर्जुनने तिहां, दुःख धरती अति गाढ ॥ १० ॥ चरि० ॥ जोइने हवे नीकल्यो रे, पोहोतो ठवित गण ॥ सा पण तिण थानक करे, वेदिका तस तनु अहिनाण ॥ ११ ॥ चरि० ॥ नारी नहीं रूडी हो ॥ ए आकणी ॥ दीप करे ने बलि दीये रे, पुजे प्रतिदिन तास ॥ आलिंगन वली तिहां करे, एम लेहे अन्नाण विलास ॥ १२ ॥ नारी० ॥ आव्यो पुरंदर अन्यदा रे, देखाड्यो न विकार ॥ केइक दिन एणी परे जता, देखे पूजा नित्य जार ॥ १३ ॥ नारी० ॥ चिंतवे अहो ए मूढता रे, अहो केहवो छे राग ॥ अथवा एहवी शास्त्रमा, नाखी छे नारी अत्याग ॥ १४ ॥ नारी० ॥ पण सुधाधार नारी कही रे, कुविए शास्त्र मझार ॥ निणे मन माने ते करो, मुक काज न तास लगार ॥ १५ ॥ नारी० ॥ एम चिंतवी प्रश्न परे रे, नोगवे तेहशु नोग ॥ बार वरस एम वही गया, ए तो मोहनीकर्मना जोग ॥ १६ ॥ नारी० ॥ एम करता गत पाचमे रे, दिवसे राध्यु अन्न ॥ ब्राह्मणने जमाडवा, पण नारीनु जारमा मन्न ॥ १७ ॥ नारी० ॥ ब्राह्मण जमता पूरवे रे, निद्रा कह्यु बलिनु दान ॥ तव पुरंदर देखी करी, हसीने कहे इणी परे वाणी ॥ १८ ॥ नारी० ॥ हजीअ ए शुं करो सुंदरी रे, साजली करे विचार ॥ निश्चय मास्यो मुक पति, तिणे बोले ए इणे प्रकार ॥ १९ ॥ नारी० ॥ जो मार ए हाथशु रे, तो लेनाये वेर ॥ एम चिंतीने आपीयु रे, नोजन माहि केर ॥ २० ॥ नारी० ॥ ए व्यतिकर सुणी पूठीयु रे, नूपे एम कुमार ॥ ध्याननें शे कारण दीठ रे, जेर कहो ते विचार ॥ २१ ॥ नारी० ॥ कुमर कहे ए कूतरो रे, आवी बेसे ते ठाम ॥ निज प्रिय उपद्रव जाणीने रे, एहने पण दीठ ताम ॥ २२ ॥ नारी० ॥ सात वार अर्जुन जणी रे, मास्यो इण नारी ॥ ते सुणजो हवे प्रथमथी, कृमि उपनो देह मझार ॥ २३ ॥ नारी० ॥ तिहांथी गृहकोकिल थयो रे, उदर ने नखी जेक ॥ नखी अ[illegible]नु तिम, सरप-

पणे अविवेक ॥ २४ ॥ नारी० ॥ सातमे जव ते कूतरो रे, मारे सवि नारी ॥ विषय थकी एम दुःख लहे, अहो धिक् धिक् ए संसार ॥ २५ ॥ नारी० ॥ रागे रागीने मारती रे, ते पण निज अन्नाण ॥ थानक नवि मूके किमे, अहो मोहशक्ति अप्रमाण ॥ २६ ॥ नारी० ॥ ज्ञान तणा व्यतिकर सुणी रे, नृपति लह्यो संवेग ॥ अहो संसार असारता, कर्म विचित्रपणु अतिरेग ॥ २७ ॥ नारी० ॥ नवमा सर्गमा ए कही रे, अ गीआरमी ए ढाल ॥ पद्मविजये एह रासमा, सुणता होय मंगलमाल ॥ २८ ॥ नारी० ॥ सर्व गाथा ॥ ३९२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देव आव्या इण अवसरे, जीवाव्यो कहे जाम, उद्योत थयो इण अवसरे, देवदुंदुभि नदे ताम ॥ १ ॥ साजते गीत सोहामणा, कहे कहां रायकुमार, एह किशु अद्भुत अछे, वली कहे कुमर विचार ॥ २ ॥ पूरण शेठनो सुत गुणी, जिनधर्म नामे जाण, आजज सुरमा अवतर्या, निश्चय अवधिनाण ॥ ३ ॥ मित्रनारी समकावता, इहां ते आव्या एह प्रतिबोधी पाछा जता, ऋद्धि देखाडी तेह ॥ ४ ॥ सुरपद पाम्यो किम सखर, प्रतिबोध्या केणी पेर, कुमर कहे ए केम कहु, तात्य नहीं ए वेर ॥ ५ ॥ तुम आमहथी तातजी, पभणु तास प्रकार, जिनमत वासित चित्तवरम, वसे न विषयविकार ॥ ६ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ जबु भरत तू नामिनी ॥ ए देशी ॥

॥ भावना भावे भावशु, न गमे मनमा संसार रे ॥ धनदत्त मित्र एक तेहने, वसुआ नामे मित्र नारी रे ॥ १ ॥ पण ते धनदत्तशु रमे, बहु काम गमावो एम रे ॥ जिनधर्म तो इह लोकनी, नवि राखे अपेक्षा प्रेम रे ॥ २ ॥ निज मातापिताने कहुवने, शून्य घरमा काउस्सग्ग राते रे ॥ रहीया ते वसुआ, धनदत्त संकेत रह्यो राते रे ॥ ३ ॥ ते शून्य घरमा [illegible] एक पल्लक [illegible] ते दुःख रे ॥ पाडये खीला लोहना, ढाळ्या पल्लक पाये पूत्र रे ॥ ४ ॥ जिनधर्मना पग उपरे, आव्यो खीलो पग [illegible] ते दुखे [illegible] करे आलिंगन अन्नाणो रे ॥ ५ ॥ मैथुन [illegible] तन मांहे वेदना [illegible] रे ॥ खीलो पेठो पृथिवीना, निनवन

दना अनत रे ॥ ६ ॥ कुशलबुद्धि तिहा चितवे, अहो विषय मुझावे तीव रे ॥ शील जावे दुरगति पडे, तिहा दु ख सहे अतीव रे ॥ ७ ॥ अन्य मुनि सम सुख वस्या, दूरे छड्या नारीना सग रे ॥ हु तो न तजुं ए सगने, घरमा रह्यो राखु रग रे ॥ ८ ॥ मित्र ने निज जार्या जणी, न करी शकु जाव उपगार रे ॥ तो बीजानी शी वारता, श्रात्मजरी थाउं असारो रे ॥ ए॥ अहो अहो दु ख हेतु थयो, अहो मुझ सगति पण एह रे॥ क्लिष्ट चेष्टा करे एहवी, इह लोके पण दु ख जेह रे ॥ १० ॥ परजव जावे दुर्गति, हु शानो कल्याणमित्रो रे॥ कल्याणमित्र मगल करे, ते तो हु थयो एम अमित्तो रे॥ ११॥ चार नहीं मुझ एहमा, तेणे समरु पच नवकार रे ॥ एम करी समरे तेहने, वळी सत्तारे देव अणगार रे ॥ १२ ॥ पडम इवइ मगल, कहेता तुटा तस प्राण रे ॥ ब्रह्मलोकमा उपनो, प्रयुजतो अवधिनाण रे ॥ १३ ॥ देवकृत्य कीधा विना, आव्यो करुणा मन आणी रे ॥ मित्र नारी प्रतिबोधवा, करे एम विचार सुजाण रे॥ १४॥ राग अति एहने अछे, तस जय विण नहीं प्रतिबोध रे ॥ एम करी माया मूकतो, वेदना अति सुख विरोध रे ॥ १५ ॥ ग्रहेवाणी विशूचिकाए, अशुचि चीकणु जवाळ रे॥ दुर्गंध अशुचि जडक जणी, पण लागे अति विकराल रे ॥१६॥ टोच पासा जेदाइआ, हाहा मरण लहु तु एम रे॥ वलगे धनदत्तने वळी, जवाळे खरनावे ते तेम रे ॥ १७ ॥ पाप परे लींपाइउं, महा अरति उपनी अगे रे ॥ अहो अहो ए शु बनी गयु, एम चिंतवे मनने जगे रे ॥ १८ ॥ उंलखवा काय मारीयु, सा चितवे नेहशु ए तो रे ॥ बोले मरु बहु वेदना, अग जागे दुःख समेतो रे ॥ १९ ॥ ते कहे हु शु करु इहा, माहारो नहीं काइ चारो रे ॥ सा कहे शरीर उंजाशीये, उंजासे तव निर्णी वारो रे ॥ २० ॥ कहे मुझ हाथ चाले नहीं, कोइ मूर्त्तिमत ए पाप रे ॥ ए सरिखु तो दीठु नहीं, अरते ग्रहेवाणो आप रे ॥ २१ ॥ सा चिंते मुझ पापथी, ए उदये आव्या रोग रे ॥ देव समो पति वंचीयो, कसु विरुद्ध उजय लोग रे ॥ २२ ॥ पामी सवेगने रोवती, हा आर्यपुत्र एम कहेती रे ॥ धनदत्त पण एम चिंतवे, अहो दु ख समुदाय वहेती रे ॥ ॥ २३ ॥ ए ससार असार छे, एह काया अशुचिजनार रे ॥ प्रिय मित्र वयण ते सानल्या, सुख जोगव्यां तस उपगार रे ॥ २४ ॥ जेहवी में

तम गयु ने रवि उगीउं, वाया प्रनातनना जाय वे ॥ निरह टल्यो चक्र वाकनो, मलीया अमात्य समवाय वे ॥ १५ ॥ कु० ॥ कुमरचरित्र मन लावीयु, नृपे कह्यो निज अजिप्राय वे ॥ ते पण हरख्या सानली, घरतु कीधु राय वे ॥ १६ ॥ कु० ॥ कुमर चिंतामणि सारिखा, नूप कहे ए एम वे ॥ विलंब न कीजे एहमा, उचित करो धरी प्रेम वे ॥ १७ ॥ ॥ कु० ॥ आण प्रमाण करी तिणे, वरवरीआ घोषाय वे ॥ सहु देहरे पूजा रची, दान महा देवाय वे ॥ १८ ॥ कु० ॥ पुरजनने सनमानीउं, प्रतिदान मूकाय वे ॥ राज्य ठवे नाणेजने, मुनिचंद नाम सुहाय वे ॥ ॥ १९ ॥ कु० ॥ गुरुजननी पूजा करी, शुन दिन करण मुहुत्त वे ॥ राय राणी मित्रवृंदशु, नारी निहु संजुत्त वे ॥ २० ॥ कु० ॥ नद्द पुरदरशु नर्खी, पुरिजनने परधान वे ॥ वेगा शिबिकाए सहु, वली सामंत रा जान वे ॥ २१ ॥ कु० ॥ मंगल तूर वजावते, नाचते नर पात्र वे ॥ नरि निरुद बोली नते, लोकने हर्ष अमात्र वे ॥ २२ ॥ कु० ॥ अ परसाय वधते थके, विस्मय पामे लोक वे ॥ पापराशिने ग्पावतो, जोवे जन थोके थोक वे ॥ २३ ॥ कु० ॥ सहु आकवरे नीकल्यो, नयरी नाहिर कु मार वे ॥ पुप्फकरंक उद्यानमा, आवे सहु परिवार वे ॥ २४ ॥ कु० ॥ नाव प्रनाम सूरि तदा, पाउ धार्या तिणे वार वे ॥ चौनाणी चारित्री या, वडे तिहा अणगार वे ॥ २५ ॥ कु० ॥ सुरवर तस पूजा करे, वि धिपूर्वक नम पाम वे ॥ दीक्षा जिननी आदरे, पामी गुरुनो पास वे ॥ ॥ २६ ॥ कु० ॥ इंडे तिहा पूजा करी, निम मुनिचंद राजान वे ॥ पुरमा सहु देहरे करे, अठाई महोत्सव नान वे ॥ २७ ॥ कु० ॥ पकह अमारि वजावीया, हरख्या पुरिजन माय वे ॥ समरादित्य प्रमुख सहु, आव दाखे जगनाय वे ॥ २८ ॥ कु० ॥ नवमे नवे तेरमी, ढाल अधिक उल्ला- स वे ॥ नाखी पद्मविजये इमी, समरादित्यने रास वे ॥ २९ ॥ कु० ॥ सर्व गाथा ॥ ४३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ओक प्रनमा धन्य रहे, मानवी ने गिरिणा, स्तुति जिन कोरे पदो, जाणे इमी दरे जेम ॥ १ ॥ मूलांक मातु हर, मुगतु सहु नान- कुराचार व देखीने, अधिक होय अनिमान ॥ २ ॥ मात एह

मूलथी, तो सुख शाता थाय, हाथे माहरे ए हवे, निश्चय आवशे
ाय ॥ ३ ॥ ठाना खोले ठिडने, गिरिसेन ते गमार, मुनिवर सजम
ाळता, गुरुचरणे गुण धार ॥ ४ ॥ पूर्वाभ्यासपणे करी, अल्प काले
अद्भुत, जणीआ द्वादशांगी जला, पूरव चोद प्रभूत ॥ ५ ॥ क्रियाक-
ाप सहु कथा, वाचक पद ठावत, विहार करता मुनिवरु, ग्रामानु-
ाम गमत ॥ ६ ॥ साधुना समुदायथी, करता जनि उपगार, अयोध्या
पुरी आवीआ, श्रावक साथे सार ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोदमी ॥

॥ टेक रही रे शहेर जरुचके मेदान ॥ ए देशी ॥

॥ मुनिवर आया रे, नयरी अयोध्या मेदान ॥ सघ सहु लाया रे,
नमवा चेत्य निदान ॥ ए आकणी ॥ शकावतार चेत्य मनोहार, ऋषभदेव
प्रतिमा अवधार, दीठु ते उयान मकार, नयरी शोहे रे, इण देहरे नि-
रधार ॥ उज्ज्वल दीपे रे, शख कुद अनुहार ॥ गगने अनीआ रे, ध्वज-
पट अतिहि विस्तार ॥ १ ॥ मुनि० ॥ दीसे मानु देव विमान, तोरण
मणिमय यत्र सुवान, शालिभजिका करती तान, रयण समूहे रे, बाध्यु
कोटिम तास ॥ शोहे गभारो रे, रयणना दीव प्रकाश ॥ सुरतरु फूले
रे, पूज्या जिनवर खास ॥ २ ॥ मुनि० ॥ सेवा करता सुरवर थाय,
तिम चारण जाणो ऋषिराय, नारी मधुर स्वरे गीत गाय, कृष्णागरुना
रे, धूप अतिशय थाय ॥ दश दिश व्यापे रे, मुनि करे स्तवना जिन-
राय ॥ सिद्धजन सुणता रे, परमारथ निरमाय ॥ ३ ॥ मुनि० ॥ देखी
मणिमय तिहां सोपान, चढीने वदे जिन जगवान, लोकालोक जाणे
जेह ज्ञान, वदी बेठा रे, समरादित्य एक देश ॥ चारण मुनि रे, विद्या-
धर सुविशेष ॥ आवी नमीया रे, मुनिवर चरण अशेष ॥ ४ ॥ मुनि० ॥
इण अवसरे परसन्नचंद राय, स्वामी अयोध्यानो ते थाय, समरादित्य
आव्या मुनिराय, जाणी राजा रे, लेइ निज परिवार ॥ वदवा आवे रे,
देखंडे हरख अपार ॥ प्रभुजी पूजी रे, आव्यो जिहां अणगार ॥ ५ ॥
॥ मुनि० ॥ प्रणमी बेठो मुनिवर पास, पूछे प्रश्न धर्म नजुआम, नार्की-
नदन इहां सुपीचे नास, धर्मना चक्री रे, प्रथन तेह ॥ नांगु
पहेला रे धर्म हतो नहीं एह ॥ जो हतो पहेला ... तेह

॥ ६ ॥ मुनि०॥ मुनि कहे जरत केत्रमां जोय, इणी अवसर्प्पिणी पहेलां होय,
पण धर्म नहोतो मत खहो कोय, ठे अनादि रे, तीर्थंकर जगवन ॥
तेहनो जाख्यो रे, धर्म अनादि वहंत ॥ नूपति जाखे रे, जाखो करुणा
रे वंत ॥ ७ ॥ मुनि० ॥ सहु खेत्रे अवसर्प्पिणी एम, मुनि कहे नहु क
हीये केम, जरत ऐरवते पचे नेम, महाविदेहे रे, ठे अवस्थित काल
॥ जिनपति निख्ये रे, षट जीवना प्रतिपाल ॥ अंतर नाहि रे, चक्री
वासुदेव नाली ॥ ८ ॥ मुनि० ॥ जरत ऐरवते अनियत काल, चार आरे
राधारूक विशाल, चडतो पडतो होय नरपाल, सागर वीश रे, होवे
नाम प्रमाण ॥ अवसर्प्पिणी रे, ठ आरे करी जाण ॥ उत्सर्प्पिणी रे, त
हना रीति वखाण ॥ ९ ॥ मुनि० ॥ अवसर्प्पिणीमां पहेलो जेह, चार
कोडाकोडि सागर तेह, सुसम सुसमा नामे एह, सुसम बीजो रे, त्रण
कोडाकोडि मान ॥ सुसम डुसमा रे, बे कोडाकोडि मान ॥ त्रीजा आरा
रे, केरु ए अनिधान ॥ १० ॥ मुनि० ॥ ऊणा बेतालीश हजार, वरस सा
गर कोडाकोडि चार, डुसम सुसमा एण परकार, पाचमो आरो रे, वरस
सहस एकवीश ॥ डुसमा नामे रे, ठठ पण एकवीश ॥ डुसम डुसमा रे,
महा डु खवन मनीश ॥ ११ ॥ मुनि० ॥ पहेले आरे त्रण पल्य आय, त्रण
गाउ उंची तन काय, कल्पवृक्ष मनवंछित दाय, दश ठे जाति रे, पहीला
मत्तंग नव ॥ मदिरा मरवी रे, तिणहीन नामे पसव ॥ जगमां
दीने रे, नाननी विधि जव ॥ १२ ॥ मुनि० ॥ त्रुटितांगे वाजित्र अनेक,
दीपशिखा नामे वली एक, दीव परे दीपे सुविवेक, जोइस नामे रे, रत्ना
तेह उद्योत ॥ चित्रांग वृक्ष रे, कुसुमाय मधि होत ॥ चित्र रसे नाना
रे, जोजनविधि सुख मोत ॥ १३ ॥ मुनि० ॥ मणि अंगमां होये अलंकार,
जवन कल्पना गेह प्रकार ॥ अनिगणमां सहु वस्त्र विचार, मद्दा नाहि
रे, स्नांपले विशेष ॥ आरानी आदि रे, नाणो एह अशेष ॥ घटतु जाये
रे, तिहांथी सहु उवशेष ॥ १४ ॥ मुनि० ॥ बीजे आरे होय पल्य आय,
होय गाउनु शरीर ने पाय, उदकगमनाने निरमाय, वरना आयु रे, रक्ष
प्रमाण शरीर ॥ त्रीजानी आदे रे, मानव नु शरीर ॥ एक पल्य आयु
रे, एक गाउ तनु धीर ॥ १५ ॥ मुनि० ॥ तेहने अंते पहेलागार, जगत
वणा स्थिति सहु मनजार, सुर असुर सहु पूजनिक थाय, स्नेना नहीं

रे, पहेला अरिहा जिणद ॥ निहु विधे धर्म रे, उपदेशे सुखकद ॥ अनुक्रमे पामे रे, शिवसुख परम आणद ॥ १६ ॥ मुनि० ॥ नवमे खडे चौदमी ढाल, जाखे उत्तमविजयनो वाल, समरादित्यनो रास रसाल, सुणता होवे रे, घर घर मगलमाल ॥ साजलो आगे रे, जविका थइ उजमाल ॥ जिम तुमे पामो रे, लीला लछी विशाल ॥ १७ ॥ मुनि० ॥ ॥ सर्व गाथा ॥ ४७५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आरो चोथो आदि ते, पचसें धनुष प्रमाण, काया आयु पूरव कह्यु, चुलसी लक्ख पहिचाण ॥ १ ॥ रागरता अन्न वारीने, धर्माधर्म ते धार, तीर्थंकर चक्री तथा, वल वासुदेव तिवार ॥ २ ॥ पचम आरो पामता, आयु वरस शत एक, सातज हाथ शरीर छे, वारु धर्मविवेक ॥ ३ ॥ तीरथ अविहिन जिन तणु, चाले रुडी चाल, छठे आरे छटकीयु, शरीर आयु सचाल ॥ ४ ॥ वरष सोल आयु वधु, उचु कर ततु एक, मासाहारी अति मलिन, वली नहीं धर्मविवेक ॥ ५ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ सरवर सूका वे लाल, हसा दुःख धरे ॥
सरोवर ठरे वे लाल, जाइ चित्त धरे ॥ ए देशी ॥

॥ अवटी जाणो वे लाल, उत्सर्पिणी वली ॥ कालचक्र जाणो वे लाल, इणी परे दोय मली ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ दोय मली धारो मत विचारो, धर्म न हतो पूरवे ॥ मोह टाल्यो कह्यो अनुग्रह, जूप इणी परे विनवे ॥ २ ॥ इण समे आयो वे लाल, माहण एक जलो ॥ इन्द्रशर्मा नामे वे लाल, मघठ गुणनिलो ॥ ३ ॥ त्रु० ॥ गुणनीलो गरढो बुद्धिवतो, वदी पूछे इणी परे ॥ जगवान तुमचा शास्त्र माहि, कर्म जारया जिनवरे ॥ ४ ॥ ते कर्म वे लाल, वाधे किम कहो ॥ गुरु कहे सुणजो वे लाल, सुणीने सरदहो ॥ ॥ ५ ॥ त्रु० ॥ सरदहो नाणनी प्रत्यनीकता, उलवे करे अतराय ए ॥ आशातना करे ज्ञानी उपरे, द्वेष करतो धाय ए ॥ ६ ॥ जाखे अवतु वे लाल, ज्ञानावरणने ॥ वाधे कर्म वे लाल, नवि लहे करणने ॥ ७ ॥ ॥ त्रु० ॥ दरशन तणी प्रत्यनीकता एम, जाव अवतु जाखतो ॥ दर्शनावरणी कर्म वाधे, चित्त थिर नवि राखतो ॥ ८ ॥ करे अनकपा वे लाल,

डुःख नवि आपतो ॥ शोक संताप वे लाल, परना कापतो ॥ ए॥ ॥ त्रु० ॥ कापतो परनी वली पीमा, बाधे शाता सुख जणी ॥ विपरीतथी अशात बाधे, वात साजलो मोहणी ॥ १० ॥ क्रोध ने मान वे लाल, माया लोहने ॥ मिथ्याचरण वे लाल, तीव्र करे मोहने ॥ ११ ॥ ॥ त्रु० ॥ बाधे मोहनीकर्म इणी परे, हवे पंचिंदि वध करे ॥ आरंज परिग्रह महा मेले, मास वली जे वावरे ॥ १२॥ नारक आयु वे लाल, बाधे ते नरा ॥ माया अलीक वे लाल, वचना तत्परा ॥ १३ ॥ त्रु० ॥ तत्परा कूमा मान करवा, कूमा तोल करे घणा ॥ आयु तिरयंच केरु बाधे, डुःख तणी जिहा नहीं मणा ॥ १४ ॥ प्रकृति विनीत वे लाल, पश्चात्ता पीउं ॥ मछर न करे वे लाल, मनुजायु थापीउं ॥ १५ ॥ त्रु० ॥ बाल तप अकाम निर्जर, सराग संजम जाणीये॥ देशविरति थकी बाधे, देवआयु गणीये ॥ १६ ॥ कायने जाव वे लाल, ऋजुता जेहने ॥ अविसंवादन वे लाल, योग होये तेहने ॥ १७ ॥ त्रु० ॥ तेहने बंध शुज नाम केरो, अशुज विपरीत एहथी ॥ आठ जातिना मदे जे नीचज, गोत्र बाधे तेहथी ॥ ॥ १८ ॥ जाति कुलने वे लाल, ॥ रूपने तप तणो ॥ श्रुत बल लाज वे लाल, ऐश्वर्य मद घणो ॥ १९ ॥ त्रु० ॥ मद एहनो जो करे नाहि, उंच गोत्र बाधे सही ॥ दानादिक अंतराय करतो, अंतराय बाधे वही ॥ २०॥ एणी परे बाधे वे लाल, जीव विशेषथी ॥ आठ प्रकारे वे लाल, कर्म अशेषथी ॥ २१ ॥ त्रु० ॥ एम सुणी कहे इंडशर्मा, स्वामीजी साचु कह्यु ॥ हवे मोक्षनु बीज जाखो, तेह किम जाये लह्यु ॥ २२ ॥ पाठक बोले वे लाल, बीज कहीजीये ॥ सुरमणि सरिखु वे लाल, सम्यक्त्व लहीजीये ॥ २३ ॥ त्रु० ॥ लिंग तेहनु सम संवेगा, दिक ते टाले कर्मने ॥ हवे लहीये तेह सुणजो, साजले जिनधर्मने ॥ २४ ॥ गुणीनी संगति वे लाल, गुणपक्षपातीउं ॥ तथाजव्यता वे लाल, जोगे अघातीउं ॥ २५ ॥ त्रु० ॥ अनुकंपादिक जावना करे, कर्मक्षय उपशमे लहे ॥ इंडशर्मा कहे साचु, जेह पाठकजी कहे ॥ २६ ॥ पण प्रजु जाखो वे लाल, मोक्षमा सुख घणु ॥ संजम डुःखथी वे लाज, किम लहे ते पणु ॥ २७ ॥ त्रु० ॥ किम लहे तव गुरु कहे साजल, जिम औषधथी नीरोगता ॥ अथवा परमार्थ संजम, डुःखनी नहीं जोगता ॥

शुज परिणाम वे लाल, शुज लेश्या वली ॥ शाखे जाखे वे लाल,
सुख केवली ॥ २ए ॥ जु० ॥ केवली जाखे वार मासह, चरण हूर्ते
॥ अनुत्तर विमान सुर जे, सुख उंलघे तेहनु ॥ ३० ॥ यत ॥ जे
यताए समणा निग्गया, एएण कस्स तेउलेस ॥ विश्वयति, मास
ए समणे निग्गथे ॥ वाणमतराण देवाण, तेउलेस विश्वयति, एव
न परिआए, समणे निग्गथे ॥ असुरिंद वज्जिआण जवणवासीणं
णं, तेउलेसं विश्वयति, तिमास परिआए, समणे निग्गथे ॥ असुर
राण देवाणं,तेउलेस विश्वयति ॥ चउमास परिआए,समणे निग्गथे॥
गण नस्कत्त तारारूवाण, जोईसीयाण ॥ तेउलेस विश्वयति, पचमास
रिआए, समणे निग्गथे ॥ चदिम सूरियाण, जोईसिंदाण जोईसरायाण
तेउलेस विश्वयति, उमास परिआए, समणे निग्गथे ॥ सोहम्मीसाण
त्ताण तेउलेस विश्वयति ॥ सत्तमास परिआए समणे निग्गथे, सणक्कुमार
माहिंदिदाण देवाण तेउलेस विश्वयति ॥ अठमास परिआए, समणे नि-
ग्गथे ॥ वज्ज लोग लतगाण, देवाण तेउलेस विश्वयंति ॥ नवमास परिआए,
समणे निग्गथे, महा सुक्कसहस्साराण देवाणं तेउलेस विश्वयति, दसमास
परिआए, समणे निग्गथे आरणच्चुआण देवाण तेउलेस विश्वयति, इ-
क्कारसमास परिआए समणे निग्गथे, गेविद्याण देवाण तेउलेसं विश्व-
यति, वारमास परिआए समणे निग्गथे, अणुत्तरोववाइण ॥ देवाणं ते-
उलेस विश्वयति, तेण पर सुके सुक्काजिजाई जविचा, सिचई बुचई मु-
चई सवडुस्काणमंत करेई, इति जगवतीसूत्रे" तेह उपरे वे लाल, शुक्क-
सुख चाखीयु ॥ शुक्काजिजात्य वे लाल, सुख एम दाखीयु ॥ ३१ ॥ जु० ॥
दाखीउ तिणे मुनिराज सुखीआ, परमार्थे एम धारजे ॥ कहे इंडशर्मा
वहृत्ति स्वामी, कीधो अम उपगार जे ॥ ३२ ॥ इण अवसर वे लाल,
पूर्वे आवीउं ॥ नाम चित्रागद वे लाल, प्रथमे जारीउं ॥ ३३ ॥ जु० ॥
आवीउं कहे एम खम नवमे, ढाल पचरली जली ॥ पद्म कहे प
सांजलीने, बुद्धि कीजे निरमली ॥ ३४ ॥ सर्व गाथा ॥ ५३४

॥ दोहा ॥

कृति

॥ कुण प्राणी पिति

सफल कहो सबध ॥ १ ॥

धारी, सात करम बांधे सदा, आठ बांधे जब आय ॥ २ ॥ बांधे आयु विना, सूक्ष्म जे संपराय, बंध छनो बाकी रह्यो, एक बंध आय ॥ ३ ॥ शाताबंध उपशांतने, मुनिवर जे क्षीणमोह; सयोगी शांतने, बांधे एम पडिमोह ॥ ४ ॥ दाखी समय थिति जेहनी, नहीं पाय जस नाम, शैलेशीगत साधुजी, अबंधी अभिराम ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु दाखीउं, कर्मपयडी अधिकार, जाणो सूत्र थकी जिके, थाये विस्तार ॥ ६ ॥ चित्रांगद सही चित्तने, मोह दल्यो महाराय, अ मने प्रभु अनुग्रह कर्यो, शिक्षा धरु शिर गाय ॥ ७ ॥ कालवेला अ अनुक्रमे, प्रणमी गुरुना पाय, राय प्रमुख बहु रीझयी, गया पोहोता गाय।

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ जात्रा नवाणु करीये ॥ विमल गिरि ॥ जात्रा० ॥ ए देशी ॥

॥ जिनशासनभगति न्यारी ॥ भविक जन ॥ जिन० ॥ समरादित्य मुनिराज उचित निज, क्रिया करे अति सारी ॥ भवि० ॥ तेहज चैत्यमां बीजे दिवसे, बेठा आसन धारी ॥ १ ॥ भवि० ॥ अग्निभूति ब्राह्मण तिहां आयो, विधिशुं वंदनकारी ॥ भवि० ॥ चैत्य वांदी पावकजी प्रणमी, बेठो निज कुं स्व धारी ॥ २ ॥ भवि० ॥ विनय विशेषथी कहे मुरु नामी, देवविशेष निरधारी ॥ भवि० ॥ भक्ती तेहनी सेवाविधि दाखो, तस फल कहो सुखकारी ॥ ३ ॥ भवि० ॥ गुरु कहे देव सुणो तुमे पहेलां, सर्वेद्र परमोपगारी ॥ भवि० ॥ रागद्वेष वर्जित सुरपूजित, कृतकृत्य अ नियम चारी ॥ ४ ॥ भवि० ॥ जन्म जरा नहीं महिमा अचिंतित, देशना वन अनुकारी ॥ भवि०॥ जस वयणे भवसायर उतरे, अज्ञानत नर नारी ॥ ५ ॥ भवि० ॥ तेहनी सेवानो विधि सुणजो, अपरसाय शुभ करीजे ॥ भविक जन, जिनसेवा एम करीये ॥ ए आकणी ॥ यथाशक्ति निस्पृहता चित्ते, जिम आणाशु करीये ॥ ६ ॥ भवि० ॥ तप करीये वली वर्तीये शासन, निरतिचार व्रत चरीये ॥ भवि० ॥ आशातना बहु न कीजे, तस फल मर्म स्मरीजे ॥ ७ ॥ भवि० ॥ देवमहर्द्धिक विमाने, अप्सराशु परवरीजे ॥ भवि० ॥ दिव्यभोग भोगवी उत्तम कुल, अवतरीने अवतरीजे ॥ ८ ॥ भवि० ॥ रूप सुंदर विशिष्ट भोग वली, अ नुक्रमे सर्व आदरीजे ॥ भवि० ॥ केवलज्ञान वली दूर करमे, शैलेशीए

वरीने ॥ ए ॥ नवि०॥ पण लघु अक्षर उच्चरण काजे, शिवसुंदरी व
वरीने ॥ नवि० ॥ सांजली पाठकजीना वयणा, हर्ष अग्निभूति वरीने ॥
॥ १०॥ नवि० ॥ वली पूछे ते मध्यस्थ होवे, जेह थया वीतराग ॥ नवि-
क जन, सांजलो तुमे महाजाग ॥ ए आंकणी॥ ते उपगार करे नहीं
पने, केम सवि जीवहित लाग ॥ ११ ॥ नवि० ॥ गुरु कहे सुणो
दाना देवे, तेहथी होवे मोहलाग ॥नवि०॥ एहथी उपकार
होटो, कोइ जीवनो नहीं जाग ॥ १२ ॥ नवि० ॥ अग्निभूति
उपगारह, उपदेशनी एक वाग ॥ नवि० ॥ गुरु कहे जो उपदेश
फल वहे ते वरुजाग ॥ १३ ॥ नवि० ॥ चिंतामणि मंत्र ने
सेवन जो करे राग ॥ नवि० ॥ जतनाए सेवे फले तेहने
ते सराग ॥ १४ ॥ नवि० ॥ पण न दीधु एम नवि कहेवाय
वह्यो वैराग ॥ नवि० ॥ कहे स्वामी मुफ मोह गयो हवे,
तोजाग ॥ १५ ॥ नवि० ॥ इण अवसर एक अजितव
सर परिवार ॥ नविक जन, जिनशासन शोहकार ॥ ए
नइऋद्धि नाम करे प्रजुपूजा, डौपदी परे निरधार ॥ १६
वाचकजीने प्रणमी, पूछे प्रश्न उदार ॥ नवि० ॥ मुनि
नत पच्चक्खे, अनुमति पण परिहार ॥ १७ ॥ नवि०
रावे यूलथी, अणुव्रतनो उच्चार ॥ नवि० ॥ तव मुनिने
जाखे तव अणगार ॥ १८ ॥ नवि० ॥ विधि देता
अविधि अनर्थनकार ॥ नवि० ॥ शेठ कहे विधि
होय मुफ उपगार ॥ १९ ॥ नवि० ॥ गुरु कहे
रूप कहे संसार ॥ नवि०॥ डु खपरपर कारण
हार ॥ २० ॥ नवि० ॥ अक्षेपे शिवसुख वर्जी
॥ नविक जन, जिनशासन मनाण ॥ ए
वनथी करीये, इणी परे चरण वखाण ॥ २१ ॥
कदि तेहनो होवे, कर्मउदय परिणाम ॥
उजमालह, जाणी अवसर जाण ॥ २२ ॥
जनने, जोइ प्रशस्त क्षेत्र ठाण ॥ नवि०
आप मध्यस्थ विनाण ॥ २३ ॥ नवि०

॥ दोहा ॥

अजयदान एक आखीउ, उपष्टज वली अन्य, एहमा कोण कहु अवश, पाठक कहो कयपुण्य ॥ १ ॥ वाचकजी कहे परवडु, प्रथम अ जय परधान, चोर दृष्टांत सुणो चतुर, कहीये ते देइ कान ॥ २ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ उंधव माधवने कहेजो ॥ ए देशी ॥

॥ नह्मपुर नयरे नरराय, कुलध्वज नामे निस्याय, कमलुआ पटरा णी थाय के ॥ १ ॥ नवि तुमे अजयदान देजो, म हणो म हणो एम कहेजो ॥ नवि० ॥ ए आकणी ॥ तारावली प्रमुख राणी, बीजी पण रूपनी खाणी, क्रीडे ज्यु इन्द्र इन्द्राणी रे ॥ २ ॥ नवि० ॥ सहु राणीशु एक दिन्न, बेठो गोखे धरी मन्न, शोगठ पासे रमे धन्न के ॥ ३ ॥ नवि० ॥ चोर आव्यो निहा कोटवाल, नाख्यो गाढ बंधन जाल, कस प्रमुखे अति दु खाउ रे ॥ ४ ॥ नवि० ॥ विनति करे नृपने एम, परधन लीधु दणे नेम, करीये स्वामी कहो तेम के ॥ ५ ॥ नवि० ॥ नृपति कहे एहने मारो, चाओ तरवार तिणी वारो, तसकर रोयो दुःख नारो रे ॥ ६ ॥ ॥ नवि० ॥ प्रथम चोरी मारयो जाउ, मनना मनोरथ नवि पाउ, ए मन अधन्य जाये थाउ रे ॥ ७ ॥ नवि० ॥ सुणी कहे राणीउ सुणो राय, चोरना मनोरथ नवि थाय, पण जो करो तुमे सुपसाय रे ॥ ८ ॥ नवि० ॥ एक राणी कहे मुक आज, आपो जेम पूरु काज, तवहता आपे महाराज रे ॥ ए ॥ नवि० ॥ सहस्रपाकथी मरदाव्यो, सुगंध उष्ण जले न्हवराव्यो, कोमलुगल तस पहेराव्यो रे ॥ १० ॥ नवि० ॥ दश सहस द्रव्य एहने लागो, एटलोज द्रव्य माहारे पागो, बीजीए तेव्या धरी रागो के ॥ ११ ॥ नवि० ॥ कामित जोजन तेणे दीधु, थासरजान वली लीधु, जक्ष्कर्दम लेपन कीधु के ॥ १२ ॥ नवि० ॥ आप्यो वली एक कचोरो, कीधो वली तेहने मोहरो, एटलोज द्रव्य माहारे कोरा के ॥ १३ ॥ नवि० ॥ एहने दीधा सहस गणीउं, वली बीजीए पण एम जणीउं, आनुपूर्वी तनु मर्णीउं के ॥ १४ ॥ नवि० ॥ नगीउ थार वली सारो, खान द्रव्य एहे उगारो, एटयु मुक उ अवधारो के ॥ ॥ १५ ॥ नवि० ॥ पटराणीने नृप वापे, तु काइ नवि दीये इहां आपे,

सा कहे काय न मुज पासे के ॥ १६ ॥ जवि० ॥ राय कहे तु पटराणी, जीव अधिक तु मुज जाणी, ताहरे शी वातनी हाणि के ॥ १७ ॥ जवि० ॥ जे मागे ते तुज आपु, ताहरु वयण हृदय थापु, कहे तेहना दु खना कापु के ॥ १८ ॥ जवि० ॥ सा कहे कीधो सुपसाय, आपु एहने मन जाय, जेम सुख तिम करो कहे राय के ॥ १९ ॥ जवि० ॥ सा कहे चोरने सुण जाइ, उग्या अकारय फूउ थाइ, दीठ कह्यो ए चित्त लाइ के ॥ २० ॥ जवि० ॥ पश्चात्तापपरी कहे चोर, नवि करु एहवु कोइ ठोर, जिणथी दु ख होय घोर के ॥ २१ ॥ जवि० ॥ दीधु अजय कहे देवी, नृप कहे को न करे एहवी, चोर कहे तु मा जेहवी के ॥ २२ ॥ जवि० ॥ राणी हरखी ततखेव, बीजी तो हसती हेव, दान दीधु बहु करी सेव के ॥ २३ ॥ जवि० ॥ राणी कहे किम करो हासी, पूछो चोरने सुविलासी, कहे चोरने कहो विमासी के ॥ २४ ॥ जवि० ॥ चोर कहे में नवि जाण्यु, मरणना जयथी सुख टाण्यु, सत्य थयो हवे परमाण्यु के ॥ २५ ॥ जवि० ॥ साजली सहु राणी माने, ए उपनय कह्यो व्याख्याने, हरख्यो त्रिलोचन सुणी काने के ॥ २६ ॥ जवि० ॥ स्वामी सत्य कह्यु एह, एहमा काय न संदेह, सहुए गया निज निज गेह के ॥ २७ ॥ जवि० ॥ नवमे खंडे ए ढाल, अढारमी कही सुविशाल, उत्तमविजय तणो बाल के ॥ २८ ॥ ॥ जवि० ॥ सर्व गाथा ॥ ६२२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देश देशे एम देशना, देता तेह दयाल, काल केतोएक अतिक्रम्यो, करुणावत कृपाल ॥ १ ॥ अवंतीदेशे आवीया, रेफवाह पुरसार, शिष्य संपदा सुगुणहु, उद्याने अवधार ॥ २ ॥ एकाते जइ आदर्यो, अशोक वने अजिराम, काउस्सग्ग तिहां जावन करे, एकज आतमराम ॥ ३ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ टोमरमल्ल जींत्यो जी ॥ ए देशी ॥

॥ एकाते काउस्सग्ग रह्यो रे, तिहां आव्यो चनाल ॥ मोहराय जींत्यो जी, जींत्यो जींत्यो वीर्यउल्लास ॥ मोह० ॥ जींत्यो जींत्यो चरणविलास ॥ मोह० ॥ जींत्यो जींत्यो नाणप्रकाश ॥ मोह० ॥ ए आकणी ॥ गिरिसेन दुष्ट ते चिंतवे रे, कोपे थइ विकराल ॥ १ ॥ मो० ॥ मुज बहु दिन रखडावीयो

रे, आज दीठो नयणेण ॥ मो० ॥ इहा मारु अवसर अछे रे, जिम मरे अति डु खेण ॥ २ ॥ मो० ॥ लाव्यो जूना लुगडा रे, विटु कुपितु अग ॥ मो० ॥ अलसी तेल वली रेडीयु रे, रौद्रध्यान एकग ॥ ३ ॥ मो० ॥ अग्नि प्रजाल्यो तिहा किणे रे, मुनिवर ध्यानमा लीन ॥ मो० ॥ जाणु पण नहीं चित्तमा रे, दाह थयो जब दीन ॥ ४ ॥ मो० ॥ ध्याननो स क्रम थयो तदा रे, चितवे तव मुनिराय ॥ मो० ॥ अहो ए शु अनरथ तणो रे, हेतु थयो इण ठाय ॥ ५ ॥ मो० ॥ डुर्गति कारण तेहने रे, अहो दारुण परिणाम ॥ मो० ॥ अथवा ए चिता किशी रे, समतानु इहा काम ॥ ६ ॥ मो० ॥ सामायक छे माहरे रे, वलगा निर्मल ध्यान ॥ मो० ॥ महा सामायक उपनु रे, अपूर्वकरणे तान ॥ ७ ॥ मो० ॥ क्षपकश्रेणी तिहा उल्लसी रे, वाध्यो वीर्यउल्लास ॥ मो० ॥ हणतो कर्मशत्रु प्रत्ये रे, सनारी डु ख तास ॥ ८ ॥ मो० ॥ ध्यान अनले मोह इधणा रे, वाली कीधा राख ॥ मो० ॥ विविध लब्धि तिहा उपनी रे, जोग महिमा ए दाख ॥ ए ॥ मो० ॥ निर्मल थयो निज आतमा रे, घातीकर्म खपाय ॥ ॥ मो० ॥ केवलनाण ते पामीआ रे, समरादित्य कृपिराय ॥ १० ॥ मो० ॥ सहु प्रयास सफलो थयो रे, कृतकृत्य थया अणगार ॥ मो० ॥ उछव रग वधामणा रे, प्रगट्या निज आगार ॥ ११ ॥ मो० ॥ मुनिवरना महिमा थकी रे, तेह क्षेत्र आसन्न ॥ मो० ॥ वेलधर कुमारनु रे, चलीयु तिहा आसन्न ॥ १२ ॥ मो० ॥ अवधिनाणथी जोइने रे, लेइ कुसुमनी राशि ॥ ॥ मो० ॥ देव अनेकशु परिवर्यो रे, आवे तिहा उल्लास ॥ १३ ॥ मो० ॥ प्रणमी कुसुमवृष्टि करे रे, उलवे अग्निने ताम ॥ मो० ॥ काढी नाख्या चूथरा रे, करतो वली परणाम ॥ १४ ॥ मो० ॥ कोजाणो गिरिसेन तदा रे, ए श्यो वात विचार ॥ मो० ॥ वेलधर कहे पापीआ रे, रे रे डुष्ट आ चार ॥ १५ ॥ मो० ॥ रे पुत्पाधम नीच तु रे, तु महाशोचण जोग ॥ मो० ॥ मुख ननि जोइये ताहरु रे, होवे पाप सयोग ॥ १६ ॥ मो० ॥ एह काम ते शुं कर्यु रे, नहीं आरजनु काम ॥ मो० ॥ इण अवसर तिहा आवीउ रे, मुनिचद राय उद्दाम ॥ १७ ॥ मो० ॥ नर्मदा प्रमुखा राणीउ रे, साथे महा सामत ॥ मो० ॥ भक्ति जाव धरी वदीया रे, आणद अग अनत ॥ १८ ॥ मो० ॥ वेलधरने पूछीयुं रे, श्यो ए वात बनाव ॥ मो० ॥ वेलधर

कहे पापीने रे, निज आतम दुःख दाव ॥ १९ ॥ मो० ॥ अमृतजूत शत्रु नहीं रे, मुनिने अगनि प्रयोग ॥ मो० ॥ प्राणांत अध्यवसायथी रे, नहीं एहने देवलोग ॥ २० ॥ मो० ॥ राय कहे मातु कलु रे, कारण कहो इहां राय ॥ मो० ॥ वात्सल्य सहु जतु तणा रे, मोदहेतु मुनिराय ॥ २१ ॥ ॥ मो० ॥ पीना न करे कोपने रे, शीतलता जिम चंद ॥ मो० ॥ नवि ठहीने कारण कीधु रे, कहे वेलधर इंद ॥ २२ ॥ मो० ॥ नवमे खंडे ए कही रे, ढंगणीशमी वर ढाळ ॥ मो० ॥ विघ्न थया सवि वेगला रे, पद्मने मंगलमाळ ॥ २३ ॥ मो० ॥ सर्व गाथा ॥ ६४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जाणुं अशुभ उदय जिके, दुःख हेतु दुःखरूप, भव अनंत करवा थकी, कारण दुर्गतिकूप ॥ १ ॥ नृप कहे शुभ नहीं जरा, पण पूछो मुनिपाय, वेलधर कहे वर कह्यु, सुपजो सहु समवाय ॥ २ ॥

॥ ढाळ वीशमी ॥

॥ राग रामग्री ॥ चोसठ मण्डु मोती कगमगे रे ॥ ए देशी ॥

॥ सोहम इंदो आवे इणी समे रे, ऐरावण हाथी शिर वेठो तेह रे ॥ केवळज्ञानना महिमा कारणे रे, देवसमूहे परवरीउं वळी जेह रे ॥ १ ॥ ऋषिजी चरित्रे सहु जन मोहीउं रे ॥ ए आकणी ॥ किन्नर गाय ने नाचे अप्सरा रे, हरखे आवी कीधो पृथवी शोध रे ॥ गंधोदक सिंची कुसुमे पूजता रे, कनककमळ ठवे करता विघ्न निरोध रे ॥ २ ॥ ऋषि० ॥ देवना ने देवी आवया सहु रे, वेगा पद्मे समरादित्य मुणींद रे ॥ सोहम इंदो स्तवना एम करे रे, हे स्वामी तुम नाठो मोह नरिंद रे ॥ ३ ॥ ॥ ऋषि० ॥ जीत्या कर्मशत्रु क्लेश दूरे गया रे, कृतारथ हुआ तुमो भगवान रे ॥ त्रोडी भवजाळ शिवपुर पामीया रे, उग्यो रवि जलहळतो केवळज्ञान रे ॥ ४ ॥ ऋषि० ॥ सानंदी एम स्तवना राय ने देवता रे, निम सानत प्रभुत्व वंदे मुनिना पाय रे ॥ अहो अहो मुनिवरना कारय नीपना रे, अप्सरा नाचे किन्नर सुर गुण गाय रे ॥ ५ ॥ ऋषि० ॥ जनपदना लोक ते आव्या साजली रे, हरखित राणा वंदे मुनि महाराज रे ॥ गिरिसेन चिंते महानुभावना रे, अहो एहनी में कीधु कान अकाज रे ॥ ६ ॥ ऋषि० ॥ आक्रोष्यु वीज कुशल पहनु रे, मोटानी सगति निष्फळ नवि थाय रे ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिद्धसरूप बहु शास्त्रमां, वचन अगोचर वात, तेहनो लव मा
तया, जेहनु सुख निज जात ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रेत्रीशमी ॥

॥ चादलीउने उग्यो रे, हरिणी आथमी रे ॥ ए देशी ॥

॥ भवि तुमे वंदो रे सिद्धस्वामी भणी रे, गुण प्रगट्या एकत्रीश
ज्ञानावरणक्षये पण गुण थया रे, ज्ञान अनंत जगीश ॥ १ ॥ भवि०
दरशनावरण क्षये गुण नव थया रे, वेदनी नाशथी दोय ॥ क्षायक द
शन चारित्र गुण तथा रे, मोहक्षये दोय होय ॥ २ ॥ भवि० ॥ आ
अक्षय चउ गुण निपना रे, नाम ने गोत्रनो नाश ॥ दो दो गुण पण अंतरा
क्षय थया रे, एम एकत्रीश गुणराशि ॥ ३ ॥ भवि० ॥ वरण गंध रसफ
अभावथी रे, गुण पण दोय पण आठ ॥ पांच संठाण गयाथी पण
रे, ए पण आवश्यक पाठ ॥ ४ ॥ भवि० ॥ वेद गयाथी त्रण गुण
नीपज्या रे, वली अशरीर असंग ॥ अरुह थया एम एकत्रीश जाणीये
ध्यान करो एक रंग ॥ ५ ॥ भवि० ॥ अथवा सामान्ये गुण आठ छे
केवलज्ञान अनंत ॥ केवलदर्शन अव्याबाधने रे, क्षायिक समकि
तंत ॥ ६ ॥ ॥ भवि० ॥ अक्षयस्थिति ने अरूपी जे थया रे, अगुरुल
अवगाह ॥ वीर्य अनंतु विघ्न विनाशथी रे, कीने एहज नाह ॥ ७
॥ भवि० ॥ त्रण काल सुखसुख तेनु करी रे, वर्गीये नभपरदेश ॥
सहु नभदेशे वली तेहनो रे, कीजे वर्ग विशेष ॥ ८ ॥ भवि० ॥ एण
वर्ग अनंत वेला करो रे, करीये सहु समुदाय ॥ पण अव्याबाध सु
अंशो नहा रे, जेह विजाति कहाय ॥ ९ ॥ भवि० ॥ सिद्ध एक सि
तथा अवगाहना रे, सिद्ध रहे सिद्ध अनंत ॥ फरसित वली निज
प्रदेशने रे, असंख्य गुणा भगवंत ॥ १० ॥ भवि० ॥ पण नवि बाध
ते पानी नवी रे, एह अरूप स्वभाव ॥ अविनाशी शाश्वत सुखनो
रे, न रहे ते परभाव ॥ ११ ॥ भवि० ॥ अजर अमर अकलंकी जे
रे, भवि गुण आविरभाव ॥ नवि निज आतमदेशे परमाणुओ रे,
एह स्वभाव ॥ १२ ॥ भवि० ॥ अनंत अनंत संवेगी सकल थया रे,
अजोगी अणाहार ॥ मान्य रूप भवि भवजन शुद्धने रे, नवमावर

पार ॥ १३ ॥ भवि० ॥ योग वियोग सयोग ते वेगला रे, अनंत चतुष्टयी धार ॥ आतम गुणनी पूरणता लह्या रे, प्रणमो तुमे वारवार ॥ १४ ॥ भवि० ॥ थिरता पण निज गुण मांहे थइ रे, तिणे चारित्र स्थिर रूप ॥ अफुसमाण गति लोकाग्रे गया रे, सादि अनंत सरूप ॥ १५ ॥ भवि० ॥ वाच्य नहीं सवाण तिणे करी रे, कहु अनिठ सठाण ॥ सिद्ध अनंतर प्रथम समय कह्या रे, परंपर पछे परमाण ॥ १६ ॥ भवि० ॥ चरम भवे जे निज अवगाहना रे, तेहना सुषिर पूराय ॥ त्रीजो भाग घटाडी घन कह्यो रे, प्रणमो तेहना पाय ॥ १७ ॥ भवि० ॥ बंधन छेदादिक कारण थकी रे, जावु समये सात राज ॥ ज्योतिमां ज्योति मली जस निर्मली रे, पाम्या निज गुणराज ॥ १८ ॥ भवि० ॥ व्यवहारे लोकाग्र पदे रह्या रे, निश्चये आतम खेत ॥ सूक्ष्म बादर त्रस थावर नहीं रे, कर्म तणा ए संकेत ॥ ॥ १९ ॥ भवि० ॥ सिद्धशिलाथी जोजन छेहडे रे, जाणी त्रणसे तेत्रीश ॥ उत्कृष्टी जघन्य अवगाहना रे, अंगुल जास बत्रीश ॥ २० ॥ भवि० ॥ गुण अनंत अनंत छे जेहना रे, किम कही शकीये रे तेह ॥ जाणे केवली पण न कही शके रे, जवमा सव्यपुर जेह ॥ २१ ॥ भवि० ॥ नवमे खडे त्रेवीशमी ढालमां रे, समरादित्यने स्वरूप कहे रास ॥ समरादित्य सिद्धु रे, पद्म कहे सुविलास ॥ २२ ॥ भवि० ॥ सर्व ॥ गाथा ॥ ७३९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नगर दृष्टांत इहां सुणो, शुद्ध करी सरधान, नहीं उपम त्रण भुवनमां, परगट को परधान ॥ १ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ दिठ लागा रे पायल परणी ॥ ए देशी ॥

॥ तुमे ध्यावो रे साहिब ध्यानमां ॥ ए आंकणी ॥ जेहना गुण न शके कही वयणे, ज्ञानी देखे पण ज्ञानमां ॥ १ ॥ तुमे० ॥ क्षितिप्रतिष्ठपुर जितशत्रु राजा, जगश्री राणी प्रधानमां ॥ तुमे० ॥ एक दिन आहेडे नृप चाल्यो, अश्व एरी गयो रानमां ॥ २ ॥ तुमे० ॥ तुरग खलायो विषम प्रदेशे, एक नगर तिण ठाणमां ॥ तुमे० ॥ एम [illegible] कोइ मोहोटो नर ए, छु खमो पमीयो अधानमां ॥ ३ ॥ तुमे० [illegible] उपचार छु कायक, चो [illegible] ऐ सब पाणमां ॥ तुमे [illegible] अश्वने

रे ॥ २ ॥ हम० ॥ सीरोही नडुलाइ पाटण, राजनगर सजात ॥ जिणे वहु जिन प्रतिष्ठा कीधी, गाम गाम विख्यात रे ॥ ३ ॥ हम० ॥ विजयसेन सूरि तस पाटे, पातसाहने आगे ॥ पट् दरिसणमा जयसीरी जेहने, वरी स्वयवरा रागे रे ॥ ४ ॥ हम० ॥ सवाइ गुरु विरुद लह्या तव, गीता रथ गुणरागी ॥ तस पाटे विजयदेव सूरीश्वर, कीरति चिहु दिश जागी रे ॥ ५ ॥ हम० ॥ विजयप्रभ सूरि तस पट्टे, सोजागी शिरदार ॥ विज यरत्न सूरि पाटे तेहने, विजयखिमा सूरि सार रे ॥ ६ ॥ हम० ॥ चोस ठमे पाटे जवी हुआ, विजयदया सूरिराय ॥ विजयधर्म सूरि जस राज्ये, प्रारंभ रासनो थाय रे ॥ ७ ॥ हम० ॥ अढार एकताले कार्त्तिक वदिमा, स्वर्ग तेह सिधाया ॥ तस पट्टे श्री जिनेंद्र सूरीश्वर, पुण्ये पदवी पाया रे ॥ ॥ ८ ॥ हम० ॥ तस राज्ये ए पूरण कीधो, अढार वेताला वरषे ॥ श्री फड्याण पास सुपसाये, नसत पचमी दिवसे रे ॥ ९ ॥ हम० ॥ श्री विजयदेव सूरीश पटोधर, श्री विजयसिंह सूरीश ॥ सवत् सोल एकाशीआ वर्षे, सूरिपदे मुजगीश रे॥ १० ॥ हम० ॥ राणो जगसिंह जिणे प्रतिबोध्यो, जस कीरति जग व्यापी ॥ जेहनी परपदमा वहु गीतारथ, कीधा आरर थापी रे ॥ ११ ॥ हम० ॥ वरप अठावीश आचारयपद, युवराज जे पाली ॥ राजनगरमा स्वर्ग पधार्या, दुःख दोहग सवि टाली रे ॥ ॥ १२ ॥ हम० ॥ तेहना शिष्यसमूहमा शोहे, सत्यविजय पन्यास ॥ आचारय गुरु आणा पामी, कर्यो क्रिया अन्यास रे॥ १३ ॥ हम०॥ क पूरविजय पन्यास तेहना, खिमाविजय तस जाणो ॥ नदिषेण परे देशना जेहनी, करे नवि नव पचरकाणो रे ॥ १४॥ हम० ॥ नगी नगी वहु प्रति बोध्या, सोजागी शिरदार ॥ तस जिनविजय पन्यास कहाया, करता वहु उपगार रे॥ १५ ॥ हम० ॥ गीतारथ सज्ञान घणु सुदर, लक्षण लक्षित देह॥ जेहनी मुद्रा देखी पूरव, मुनिवर सावरे तेह रे ॥ १६ ॥ हम० ॥ तास शिष्यसमुदायमा जाणो, उत्तमविजय पन्यास ॥ ज्ञानी ध्यानी ने नहीं मानी, दश दिश कीरति जास रे ॥ १७ ॥ हम० ॥ पयन्नि पचसमह मुख्य ग्रथ, जाणे तस आगनाय ॥ नक्क उपगारी मुफ मोहोटा, ज्ञात दान गुणराय रे॥ १८॥ हम० ॥ मुफ मतिन्या पत्ररनव पल्लव, कीधा अति हित आणी ॥ एलो दलो वहु उपगार गुरुनो, जाणी जास प्रमाणी रे ॥ १९ ॥ हम० ॥

विशलनगर विराजे रुडु, जिहां जिनचैत्य ठे दोय ॥ जिहां अति च-क्किवता बहु श्रावक, प्रभुपूजा घणी होय रे ॥ २० ॥ इम० ॥ ते गुरु उत्तमविजय पसावे, पद्मविजय लघु शिष्ये ॥ विशलनगर चोमास रहीने, चाल्यो निशवावीश रे ॥ २१ ॥ इम० ॥ जिहां लगे महगण तारा मेरु, चंद सूर्य परकाश ॥ तिहां लगे एह रास थिर रहेजो, जय जयकार विलास रे ॥ २२ ॥ इम० ॥ समरादित्यनो रास ए भणशे, लखशे जाग्य-विशाल ॥ तेह महोदय पदवी लेहेशे, होशे मंगलमाल रे ॥ २३ ॥ ॥ इम० ॥ सर्व गाथा ॥ ७५७ ॥

॥ इति श्रीसंविग्नपक्षीय पंडितप्रवर श्रीमदुत्तमविजयगणि शिष्य पंडित श्री पद्मविजयगणिविरचिते श्रीसमरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे समरादित्य-गिरिसेनयो नवमो नरजव समाप्त ॥ तत्समाप्तौ च समाप्तोऽयं नवम खंड ॥ तत्समाप्तो च समाप्त श्रीसमरादित्यचरित्र ॥ नवम खंडे ॥ सर्व गाथा ॥ ७५७ ॥ तथा काव्यादि जुदा जाणवा ॥ समग्र ढाल ॥१९९॥ ते ढालोमां प्रथम खंडे ॥ गाथा ॥ ४५१ ॥ द्वितीय खंडे ॥ गाथा ॥ ६६७ ॥ तृतीय खंडे ॥ गाथा ॥ ४३७ ॥ चतुर्थ खंडे गाथा ॥ ७७३ ॥ पंचम खंडे ॥ ॥ गाथा ॥ ३४१ ॥ षष्ठ खंडे ॥ गाथा ॥ ३११ ॥ सप्तम खंडे गाथा ॥ ३२७ ॥ अष्टम खंडे ॥ गाथा ॥ ३११ ॥ नवम खंडे ॥ गाथा ॥ ७५७ ॥ समग्र गाथा ॥ ६२२० ॥ शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ ॥

॥ इति श्री संविग्नपक्षीय पंडितवर्य श्री-
मदुत्तमविजयगणि शिष्य पंडित श्री
पद्मविजयजी विरचित श्री समरादि-
त्यकेवलीनो रास समाप्त ॥

रे ॥ २ ॥ हम० ॥ सीरोही नडुलाइ पाटण, राजनगर रजात ॥ जिणे बहु विंब प्रतिष्ठा कीधी, गाम गाम विख्यात रे ॥ ३ ॥ हम० ॥ विजयसेन सूरि तस पाटे, पातसाहने आगे ॥ पट् दरिसणमां जयसीरी जेहने, वरी स्वयवरा रागे रे ॥ ४ ॥ हम० ॥ सवाइ गुरु विरुद लह्या तव, गीता रथ गुणरागी ॥ तस पाटे विजयदेव सूरीश्वर, कीरति चिहु दिश जागी रे ॥ ५ ॥ हम० ॥ विजयप्रन सूरि तस पट्टे, सोजागी शिरदार ॥ विज यरत्न सूरि पाटे तेहने, विजयखिमा सूरि सार रे ॥ ६ ॥ हम० ॥ चोस ठमे पाटे वली हुआ, विजयदया सूरिराय ॥ विजयधर्म सूरि जस राज्ये, प्रारज रासनो थाय रे ॥ ७ ॥ हम० ॥ अढार एकताले कार्त्तिक वदिमा, स्वर्गे तेह सिधाया ॥ तस पट्टे श्री जिनेन्द्र सूरीश्वर, पुण्ये पदवी पाया रे ॥ ॥ ८ ॥ हम० ॥ तस राज्ये ए पूरण कीधो, अढार बेताला वरषे ॥ श्री कल्याण पास सुपसाये, वसत पचमी दिवसे रे ॥ ९ ॥ हम० ॥ श्री विजयदेव सूरीश पट्टोधर, श्री विजयसिंह सूरीश ॥ सवत् सोल एकाशीआ वर्षे, सूरिपदे सुजगीश रे॥ १० ॥ हम० ॥ राणो जगसिंह जिणे प्रतिबोध्यो, जस कीरति जग व्यापी ॥ जेहनी परषदमा बहु गीतारथ, कीधा आदर आपी रे ॥ ११ ॥ हम० ॥ वरष अठावीश आचारयपद, युवराजे जे पाली ॥ राजनगरमा स्वर्ग पधार्या, दुःख दोहग सवि टाली रे ॥ ॥ १२ ॥ हम० ॥ तेहना शिष्यसमूहमा शोहे, सत्यविजय पन्यास ॥ आचारय गुरु आणा पामी, कर्यो क्रिया अन्यास रे॥ १३ ॥ हम० ॥ कपूरविजय पन्यास तेहना, खिमाविजय तस जाणो ॥ नदिषेण परे देशना जेहनी, करे नवि व्रत पच्चक्खाणो रे ॥ १४ ॥ हम० ॥ नगी जगी बहु प्रति बोध्या, सोजागी शिरदार ॥ तस जिनविजय पन्यास कहाया, करता बहु उपगार रे॥ १५ ॥ हम० ॥ गीतारथ सज्ञान घणु सुदर, लक्षण लक्षित देह ॥ जेहनी मुद्रा देखी पूरव, मुनिवर सांजरे तेह रे ॥ १६ ॥ हम० ॥ तास शिष्यसमुदायमा जाणो, उत्तमविजय पन्यास ॥ ज्ञानी ध्यानी ने नई मानी, दश दिश कीरति जास रे ॥ १७ ॥ हम० ॥ पयन्नि पचसग्रह मुख ग्रथ, जाणे तस आमनाय ॥ नङक उपगारी मुझ मोहोटा, शांत दांत गुणराय रे॥ १८ ॥ हम० ॥ मुझ सरिखा पथ्थरनव पल्लव, कीधा अति हित आणी ॥ इयो इयो कहु उपगार गुरुनो, वाणी जास प्रमाणी रे ॥ १९ ॥ हम० ॥

विशलनगर विराजे रूडु, जिहां जिनचैत्य ते दोय ॥ जिहां अति जक्तिवंता बहु श्रावक, प्रजुपूजा घणी होय रे ॥ २० ॥ हम० ॥ ते गुरु उत्तमविजय पसाये, पद्मविजय लघु शिष्ये ॥ विशलनगर चोमास रहीने, जाख्यो विशवावीश रे ॥ २१ ॥ हम० ॥ जिहां लगे महगण तारा मेरु, चंद्र सूर्य परकाश ॥ तिहां लगे एह रास थिर रहेजो, जय जयकार विलास रे ॥ २२ ॥ हम० ॥ समरादित्यनो रास ए जणशे, लखशे जाग्यविशाल ॥ तेह महोदय पदवी लेहेशे, होशे मंगलमाल रे ॥ २३ ॥ ॥ हम० ॥ सर्व गाथा ॥ ७५७ ॥

॥ इति श्रीसंविज्ञपक्षीय पंमितप्रवर श्रीमदुत्तमविजयगणि शिष्य पंमित श्री पद्मविजयगणिविरचिते श्रीसमरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे समरादित्य गिरिसेनयो नवमो नरजव समाप्त ॥तत्समाप्तौ च समाप्तोऽयं नवम खंम ॥ तत्समाप्तौ च समाप्त श्रीसमरादित्यचरित्रं ॥ नवम खंडे ॥ सर्व गाथा ॥ ७५७ ॥ तथा काव्यादि जुदा जाणवा ॥ समग्र ढाल ॥१९९॥ ते ढालोमां प्रथम खंडे ॥ गाथा ॥ ४५१ ॥ द्वितीय खंडे ॥ गाथा ॥ ६६७ ॥ तृतीय खंडे ॥ गाथा ॥ ४६७ ॥ चतुर्थ खंमे गाथा ॥ ७७६ ॥ पंचम खंडे ॥ ॥ गाथा॥ ७४१ ॥ षष्ठ खंमे ॥ गाथा॥ ७११ ॥सप्तम खंडे गाथा॥ ७२७ ॥ अष्टम खंमे ॥ गाथा ॥ ७११ ॥ नवम खंमे ॥ गाथा ॥ ७५७॥समग्र गाथा ॥ ६११० ॥ शुजं जवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ ॥

॥ इति श्री संविज्ञपक्षीय पंमितवर्य श्रीमदुत्तमविजयगणि शिष्य पंमित श्री पद्मविजयजी विरचित श्री समरादित्यकेवलीनो रास समाप्त ॥

रे ॥ २ ॥ हम० ॥ सीरोही नडुलाइ पाटण, राजनगर खम्भात ॥ जिणे बहु बिंब प्रतिष्ठा कीधी, गाम गाम विख्यात रे ॥ ३ ॥ हम० ॥ विजयसेन सूरि तस पाटे, पातसाहने आगे ॥ पट्ट दरिसणमा जयसीरी जेहने, वरी स्वयवरा रागे रे ॥ ४ ॥ हम० ॥ सम्राड गुरु बिरुद लह्या तव, गीतारथ गुणरागी ॥ तस पाटे विजयदेव सूरीश्वर, कीरति चिहु दिश जागी रे ॥ ५ ॥ हम० ॥ विजयप्रज्ञ सूरि तस पट्टे, सोजागी शिरदार ॥ विजयरत्न सूरि पाटे तेहने, विजयखिमा सूरि सार रे ॥ ६ ॥ हम० ॥ चोसठमे पाटे वली हुआ, विजयदया सूरिराय ॥ विजयधर्म सूरि जस राज्ये, प्रारंभ रासनो थाय रे ॥ ७ ॥ हम० ॥ अढार एकताले कार्त्तिक वदिमा, स्वर्गे तेह सिधाया ॥ तस पट्टे श्री जिनेन्द्र सूरीश्वर, पुण्ये पदवी पाया रे ॥ ॥ ८ ॥ हम० ॥ तस राज्ये ए पूरण कीधो, अढार वेताला वरषे ॥ श्री कल्याण पास सुपसाये, वसत पचमी दिवसे रे ॥ ९ ॥ हम० ॥ श्री विजयदेव सूरीश पट्टोधर, श्री विजयसिंह सूरीश ॥ सवत् सोल एकाशीआ वर्षे, सूरिपदे सुजगीश रे॥ १० ॥ हम० ॥ राणो जगसिंह जिणे प्रतिबोध्यो, जस कीरति जग व्यापी ॥ जेहनी परपदमा बहु गीतारथ, कीधा आदर आपी रे ॥ ११ ॥ हम० ॥ वरष अठावीश आचारयपद, युवराजे जे पाली ॥ राजनगरमा स्वर्ग पधारया, दुःख दोहग सवि टाली रे ॥ ॥ १२ ॥ हम० ॥ तेहना शिष्यसमूहमा शोहे, सत्यविजय पन्यास ॥ आचारय गुरु आणा पामी, कस्यो क्रिया अभ्यास रे॥ १३ ॥ हम०॥ कपूरविजय पन्यास तेहना, खिमाविजय तस जाणो ॥ नदिषेण पेरे देशना जेहनी, करे व्रति व्रत पच्चक्खाणो रे ॥ १४ ॥ हम० ॥ जगी जगी बहु प्रतिबोध्या, सोनागी शिरदार ॥ तस जिनविजय पन्यास कहाया, करता बहु उपगार रे॥ १५ ॥ हम० ॥ गीतारथ सज्ञान घणु सुंदर, लक्षण लक्षित देह ॥ जेहनी मुद्रा देखी पूरव, मुनिवर सांभरे तेह रे ॥ १६ ॥ हम० ॥ तास शिष्यसमुदायमा जाणो, उत्तमविजय पन्यास ॥ ज्ञानी ध्यानी ने नहीं मानी, दश दिश कीरति जास रे ॥ १७ ॥ हम० ॥ पयन्नि पंचसग्रह मुख ग्रथा, जाणे तस आमनाय ॥ नडूक उपगारी मुझ मोहोटा, शात दात गुणराय रे॥ १८ ॥ हम० ॥ मुझ सरिखा पथरनव पल्लव, कीधा अति हित आणी ॥ श्यो श्यो कहु उपगार गुरुनो, वाणी जास प्रमाणी रे ॥ १९ ॥ हम० ॥

नगर बिराजे रुडु, जिहां जिनचैत्य ठे दोय ॥ जिहां अति पं-
वता बहु श्रावक, प्रभुपूजा घणी होय रे ॥ २० ॥ दृम० ॥ ते गुरु
नविजय पसावे, पद्मविजय बधु शिष्ये ॥ विशलनगर चोमास रहीने,
स्यो विशवावीश रे ॥ २१ ॥ दृम० ॥ जिहां लगे महगण तारा मेरु,
द्र सूर्य परकाश ॥ तिहां लगे एह रास थिर रहेजो, जय जयकार
ाल रे ॥ २२ ॥ दृम० ॥ समरादित्यनो रास ए भणशे, सुखशे भाग्य-
ाश ॥ तेह महोदय पदवी वेदेशे, होशे मंगलमाल रे ॥ २३ ॥
दृम० ॥ सर्व गाथा ॥ ८५३ ॥

॥इति श्रीसंविज्ञपक्षीय पंडितप्रवर श्रीमदुत्तमविजयगणि शिष्य पंडित
ी पद्मविजयगणिविरचिते श्रीसमरादित्यचरित्रे प्राकृतप्रबंधे समरादित्य-
गिरिसेनयो नवमो नरजव समाप्त ॥तत्समाप्तौ च समाप्तोऽयं नवम खंड
॥ तत्समाप्तौ च समाप्तं श्रीसमरादित्यचरित्रं ॥ नवम खंडे ॥ सर्व गाथा
॥ ८५३ ॥ तथा काव्यादि जुदा जाणवा ॥ सर्वं ढाल ॥१९९॥ ते ढालोमां
प्रथम खंडे ॥ गाथा ॥ ४५१ ॥ द्वितीय खंडे ॥ गाथा ॥ ६६७ ॥ तृतीय
खंडे ॥ गाथा ॥ ४६७ ॥ चतुर्थ खंडे गाथा ॥ ७०६ ॥ पंचम खंडे ॥
॥ गाथा ॥ ३४१ ॥ षष्ठ खंडे ॥ गाथा ॥ ३११ ॥ सप्तम खंडे गाथा ॥ ३२७ ॥
अष्टम खंडे ॥ गाथा ॥ ३११ ॥ नवम खंडे ॥ गाथा ॥ ८५३ ॥ सर्वं गाथा ॥
॥ ६२२० ॥ शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥

॥ इति श्री संविज्ञपक्षीय पंडित पं श्री
मदुत्तमविजयगणि शिष्य पंडित श्री
पद्मविजयजी विरचित श्री समरादि-
त्यकेवलीनो रास समाप्त ॥

श्रीजैनकथा रत्नकोष भाग ४ थो

कर्ता आचार्य रत्नशेखरसूरि

आ पुस्तकमा श्रावकना अतिचारोनु निरूपण करता दर्शनीओने बोध पमाडवा माटे घणा स्थले अनेक विषयोना ७८ तेमना अर्थोना ठेकाणे ठेकाणे घणाएक श्लोको दाखल कीधा छे ध्यात्वी लोकोना होली प्रमुख अनेक पर्वोथी उपजता दोष पण छे

आ ग्रंथ वाचनारा साहेबोने व्रत लेवानी तथा लीधेला व्रतने चार रहित पालवानी पुष्टि करवानी साथे विचित्र प्रकारना रसने उत्पन्न करनारी तथा पूर्वेना जमानामा थइ गयेला राजा व्यापारीओनी चालचलगत दर्शावनारी होवाथी अत्यत आनदनी स मत्कार उपजावे एवी मोटी तथा नानी रसिक कथाओ सहित प्रतिक्रमणसूत्र अथवा वंदितासूत्र अपर नाम अर्थदीपिका ग्रथ तथा बालावबोध सहित छे आ ग्रथ वाचवाथी धर्मपुष्टि थवानी बुद्धिनो विस्तार पण बहुज थशे किमत रु. ३-०-०

श्री जैनकथा रत्नकोष भाग ५ मो ॥

मूल आ ग्रथ पडितवर्य श्री रूपविजयजीए सस्कृत भा. चार सर्ग करी रचेलो छे अने तेनुंज गुजराती भाषातर करी छपाउ

आ ग्रथमा अत्युतम धर्मधुरी महाप्रतापी अने मोक्षगामी एवा थ्वीचद्र अने गुणसागरना जीवो प्रथम भवमा शखराजा अने कला राणीना भव पामीने त्याथी एकवीशमे भवे पृथ्वीचद्र अने ऊ थया तेओनु चरित्र छे

आ ग्रथमा तेमना एकवीशे भवनी विस्तार सहित कथाओ थावी छे वली तेओ दरेक भवमा पूर्वोपार्जित पुण्यपुजना उदयथी सुख अने सपत्ति पाम्या, कया कया भवमा केवा केवा श्रावकना अने केवु केवु सयम पाल्यु, वली ते ते भवमा सयम पाली समाधिमरण स्वदेहनो त्याग करी कया कया देवलोकमा उत्पन्न थइने त्या केवु सुख केटलु केटलु आयुष्य भोगव्यु ए सघलु सविस्तर वर्णवेलु छे आ मुख्य तो जीवने ससार उपर वैराग्य थवा माटे आपेलो उपदेश, दृणथी थता लाभो, अरिहत धर्ममहत्ता वगेरे वर्णवेलु छे आ वथी केटलो आनद उपजे छे ते आ ग्रथ वाचनारोज जाण थशे कि १२

जाहेर खबर.

श्रीजैनकथा रत्नकोष भाग ४ थो

कर्ता आचार्य रत्नशेखरसूरि

आ पुस्तकमा श्रावकना अतिचारोनु निरूपण करता ग्रथकर्ताए आ दर्शनीओने बोध पमाडवा माटे घणा स्थले अनेक विषयोना उदाहरण तेमना ग्रथोना ठेकाणे ठेकाणे घणाएक श्लोको दाखल कीया छे तेमज मि थ्यात्वी लोकोना होली प्रमुख अनेक पर्वोथी उपजता दोष पण देखाड्या

आ ग्रथ वाचनारा साहेबोने व्रत लेवानी तथा लीधेला व्रतने अति चार रहित पालवानी पुष्टि करवानी साथे विचित्र प्रकारना नवनव रसने उत्पन्न करनारी तथा पूर्वना जमानामा थइ गयेला राजाओ अने व्यापारीओनी चालचलगत दर्शावनारी होवाथी अत्यत आनदनी साथे च मत्कार उपजावे एवी मोटी तथा नानी रसिक कथाओ सहित श्रावक प्रतिक्रमणसूत्र अथवा वदितासूत्र अपर नाम अर्थदीपिका ग्रथ मूळ तथा बालावबोध सहित छे आ ग्रथ वाचवाथी धर्मपुष्टि थवानी साथे बुद्धिनो विस्तार पण बहुज थशे किमत रु ३–०–०

श्री जैनकथा रत्नकोष भाग ५ मो ॥

मूल आ ग्रथ पडितवर्य श्री रूपविजयजीए सस्कृत भाषामा अगि यार सर्गे करी रचेलो छे अने तेनुज गुजराती भाषातर करी छपाव्यु छे

आ ग्रथमा अत्युतम धर्मधुरी महाप्रतापी अने मोक्षगामी एवा पृ थ्वीचद्र अने गुणसागरना जीनो प्रथम भवमा शखराजा अने कलावती राणीना भव पामीने त्याथी एकवीशमे भवे पृथ्वीचद्र अने गुणसागर थया तेओनु चरित्र छे

आ ग्रथमा तेमना एकवीशे भवनी विस्तार सहित कथाओ लखवामा आवी छे वली तेओ दरेक भवमा पूर्वोपार्जित पुण्यपुजना उदयथी केवु सुख अने सपत्ति पाम्या, कया कया भवमा केवा केवा श्रावकना व्रत अने केवु केवु सयम पाल्यु, वली ते ते भवमा सयम पाली समाधिमरणथी स्वदेहनो त्याग करी कया कया देवलोकमा उत्पन्न थइने त्या केवु सुख अने केटलु केटलु आयुष्य भोगव्युं ए सघलु सविस्तर वर्णवेलु छे आ ग्रथमा मुख्य तो जीवने ससार उपर वैराग्य थवा माटे आपेलो उपदेश, सयमम

जाहेर खबर.

श्रीजैनकथा रत्नकोष भाग ४ थो
कर्ता आचार्य रत्नशेखरसूरि.

आ पुस्तकमा श्रावकना अतिचारोनु निरूपण करता ग्रंथकर्ताए अन्य दर्शनीर्उने बोध पमाडवा माटे घणा स्थले अनेक विषयोना उदाहरणमा तेमना ग्रंथोना ठेकाणे ठेकाणे घणाएक श्लोको दाखल कीधा छे तेमज मिथ्यात्वी लोकोना होली प्रमुख अनेक पर्वोथी उपजता दोष पण देखाड्या छे

आ ग्रंथ वाचनारा साहेबोने व्रत लेवानी तथा लीधेला व्रतने अतिचार रहित पालवानी पुष्टि करनारी साथे विचित्र प्रकारना नवनवा रसने उत्पन्न करनारी तथा पूर्वेना जमानामा थइ गयेला राजार्उ अने व्यापारीर्उनी चालचलगत दर्शावनारी होवाथी अत्यंत आनंदनी साथे चमत्कार उपजावे एवी मोटी तथा नानी रसिक कथार्उ सहित श्रावक प्रतिक्रमणसूत्र अथवा वंदितासूत्र अपर नाम अर्थदीपिका ग्रंथ मूल तथा बालावबोध सहित छे आ ग्रंथ वाचवाथी धर्मपुष्टि थवानी साथ बुद्धिनो विस्तार पण बहुज थशे किमत रु ३-०-०

श्री जैनकथा रत्नकोष भाग ५ मो ॥

मूल आ ग्रंथ पंडितवर्य श्री रूपविजयजीए संस्कृत भाषामा अगियार सर्ग करी रचेलो छे अने तेनुज गुजराती भाषांतर करी छपाव्यु छे

आ ग्रंथमा अत्युत्तम धर्मधुरी महाप्रतापी अने मोक्षगामी एवा पृथ्वीचंद्र अने गुणसागरना जीवो प्रथम भवमा शंखराजा अने कलावती राणीना भव पामीने त्यांथी एकवीशमे भवे पृथ्वीचंद्र अने गुणसागर थया तेर्उनु चरित्र छे

आ ग्रंथमा तेमना एकवीशे भवनो विस्तार सहित कथार्उ लखवामा आवी छे. वली तेर्उ दरेक भवमा पूर्वोपार्जित पुण्यपुंजना उदयथी कुसुख अने संपत्ति पाम्या, कया कया भवमा केवा केवा श्रावकना व्रत अने केवु केवु संयम पाळ्यु, वली ते ते भवमा संयम पाली समाधिमरणथी स्वदेहनो त्याग करी कया कया देवलोकमा उत्पन्न थइने त्यां केवु सुख अने केटलु केटलु आयुष्य भोगव्यु ए सघळु मनोहर वर्णवेलु छे आ ग्रंथमा मुख्य तो जीवने संसार उपर वैराग्य थवा माटे आपेलो उपदेश, संयमग्रहणथी थता लाभो, अरिहंत स्नेमहता वगेरे वर्णवेलु छे आ ग्रंथ वांचवाथी केटलो आनंद उपजे छे ते आ ग्रंथ वाचनारार्उने जाण थशे कि रु२-८-०

जाहेर खबर.

श्रीजैनकथा रत्नकोष भाग ४ थो

कर्ता आचार्य रत्नशेखरसूरि

आ पुस्तकमा श्रावकना अतिचारोनु निरूपण करता ग्रंथकर्ताए अन्य दर्शनीउने बोध पमाडवा माटे घणा स्थले अनेक विषयोना उदाहरणम तेमना ग्रंथोना ठेकाणे ठेकाणे घणाएक श्लोको दाखल कीधा छे तेमज मि थ्यात्वी लोकोना होली प्रमुख अनेक पर्वोथी उपजता दोष पण देखाड्या छ

आ ग्रंथ वाचनारा साहेबोने व्रत लेवानी तथा लीधेला व्रतने अति चार रहित पालवानी पुष्टि करवानी साथे विचित्र प्रकारना नवनव रसने उत्पन्न करनारी तथा पूर्वना जमानामा थइ गयेला राजाउ अने व्यापारीउनी चालचलगत दर्शावनारी होवाथी अत्यंत आनदनी साथे च मत्कार उपजावे एवी मोटी तथा नानी रसिक कथाउ सहित श्रावक प्रतिक्रमणसूत्र अथवा वंदितासूत्र अपर नाम अर्थदीपिका ग्रंथ मूल तथा बालावबोध सहित छे आ ग्रंथ वाचवाथी धर्मपुष्टि थवानी साथे बुद्धिनो विस्तार पण बहुज थशे किमत रु ३–०–०

श्री जैनकथा रत्नकोष भाग ५ मो ॥

मूल आ ग्रंथ पंडितवर्य श्री रूपविजयजीए संस्कृत भाषामा अगि यार सर्ग करी रचेलो छे अने तेनुंज गुजराती भाषांतर करी छपाव्यु छे

आ ग्रंथमा अत्युतम धर्मधुरी महाप्रतापी अने मोक्षगामी एवा पृ थ्वीचंद्र अने गुणसागरना जीवो प्रथम भवमा शखराजा अने कलावती राणीना भव पामीने त्यांथी एकवीशमे भवे पृथ्वीचंद्र अने गुणसागर थया तेउनु चरित्र छे

आ ग्रंथमा तेमना एकवीशे भवनी विस्तार सहित कथाउ लखवामा आवी छे वली तेउ दरेक भवमा पूर्वोपार्जित पुण्यपुजना उदयथी केवु सुख अने संपत्ति पाम्या, कया कया भवमा केवा केवा श्रावकना व्रत अने केवु केवु संयम पाल्यु, वली ते ते भवमा संयम पाली समाधिमरणथी स्वदेहनो त्याग करी कया कया देवलोकमा उत्पन्न थइने त्या केवु सुख अने केटलुं केटलु आयुष्य भोगव्यु ए सघलु सविस्तर वर्णवेलु छे आ ग्रंथमा मुख्य तो जीवने संसार उपर वैराग्य थवा माटे आपेलो उपदेश, संयमग्र हणथी थता लाभो, अरिहंत धर्ममहत्ता वगेरे वर्णवेलु छे आ ग्रंथ वाच वथी केटलो आनद उपजे छे ते आ ग्रंथ वाचवाथीज जाण थशे कि रु ३४-०

जाहेर खबर.

श्रीजैनकथा रत्नकोष भाग ४ थो
कर्ता आचार्य रत्नशेखरसूरि

आ पुस्तकमा श्रावकना अतिचारोनु निरूपण करता ग्रथकर्ताए अन्य दर्शनीओने बोध पमाडवा माटे घणा स्थले अनेक विषयोना उदाहरणमां तेमना ग्रथोना ठेकाणे ठेकाणे घणाएक श्लोको दाखल कीधा छे तेमन मि थ्यात्वी लोकोना होली प्रमुख अनेक पर्वोथी उपजता दोष पण देखाड्या त

आ ग्रथ वाचनारा साहेबोने व्रत लेवानी तथा लीधेला व्रतने अति चार रहित पालवानी पुष्टि करनानी साथे विचित्र प्रकारना नवनवा रसने उत्पन्न करनारी तथा पूर्वेना जमानामा थइ गयेला राजाओ अने व्यापारीओनी चालचलगत दर्शावनारी होवाथी अत्यत आनदनी साथे च मत्कार उपजावे एवी मोटी तथा नानी रसिक कथाओ सहित श्रावक प्रतिक्रमणसूत्र अथवा वदितासूत्र अपर नाम अर्थदीपिका ग्रथ मूल तथा बालावबोध सहित छे आ ग्रथ वाचवाथी धर्मपुष्टि थवानी साथे बुद्धिनो विस्तार पण बहुज थशे किमत रु ३-०-०

श्री जैनकथा रत्नकोष भाग ७ मो ॥

मूल आ ग्रथ पडितवर्य श्री रूपविजयजीए सस्कृत भाषामा अगि यार सर्गे करी रचेलो छे अने तेनुज गुजराती भाषांतर करी छपाव्यु छे

आ ग्रथमा अत्युतम धर्मधुरी महाप्रतापी अने मोक्षगामी एवा पृ थ्वीचद्र अने गुणसागरना जीवो प्रथम भवमा शखराजा अने कलावती राणीना भव पामीने त्याथी एकवीशमे भवे पृथ्वीचंद्र अने गुणसागर थया तेओनु चरित्र छे

आ ग्रथमा तेमना एकवीशे भवनी विस्तार सहित कथाओ लखवामा आवी छे वली तेओ दरेक भवमा पूर्वोपार्जित पुण्यपुजना उदयथी केवु सुख अने सपत्ति पाम्या, कया कया भवमा केवा केवा श्रावकना व्रत अने केवु केवु सयम पाल्यु, वली ते ते भवमा सयम पाली समाधिमरणथी स्वदेहनो त्याग करी कया कया देवलोकमा उत्पन्न थइने त्या केवु सुख अने केटलु केटलु आयुष्य भोगव्यु ए सघलु सविस्तर वर्णवेलु छे आ ग्रथमा मुख्य तो जीवने ससार उपर वैराग्य थवा माटे आपेलो उपदेश, सयमग्र हणथी थता लाभो, अरिहत धर्ममहत्ता वगेरे वर्णवेलु छ आ ग्रथ वाच वथी केटलो आनद उपजे छे ते आ ग्रथ वाचनाथीज जाण थशे कि रु ३-४-०